सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : चेला

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 3

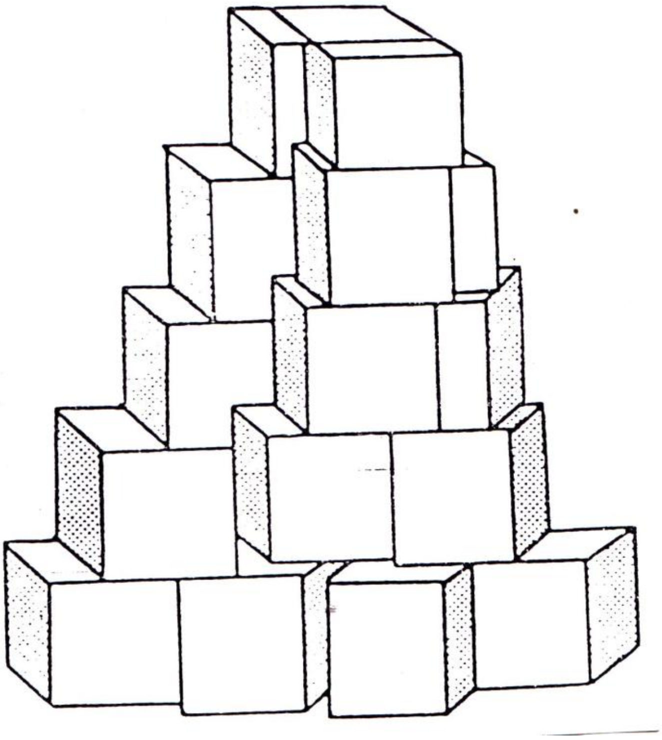

स्तरः

5. सेवक

4. अगुवा / पास्टर

3. समूह या सेल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

उद्देश्य:

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

(विकसित होना / परिपक्व होना)

- यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"
- 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"
- 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"
- कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

(गुणा / पुनरुत्पादन)

- 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"
- 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"
- इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"
- 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

सिद्धान्त : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक नं.: 3

पृष्ठ

क्रमाँक

- भक्तिपूर्ण फैसले कैसे करें और परमेश्वर की इच्छा जानना 294
- सुसमाचार प्रचार शुरू करनेवाले / सुसमाचार प्रचार पर कुछ लेख 302
- खोए हुओं के पास जाएँ और आप भी आत्माओं को जीतने वाले बन सकते हैं (11 अध्याय) 308

  (1) आत्माओं को जीतने की बुद्धि

  (2) एक आत्माओं को जीतनेवाला क्या है ?

  (3) मनुष्यों के मछुवे

  (4) मनुष्यों को जीवते पकड़ना

  (5) आर्दश केस अध्ययन, आओ शुरू करें

  (6) एक व्यक्ति तक पहुँचने के कुछ तरीके

  (7) एक व्यक्ति को मसीह में लाना

  (8) मामले की तह तक पहुँचना

  (9) बाइबल पर आधारित आश्वासन पाना

  (10) एक से ज्यादा तरीके हैं

  (11) तुम मसीही हो! - अब क्या ?

- मसीह की देह में हमारा एक दूसरे के प्रति रवैया कैसा होना चाहिए 352
- मसीह की देह में अपना स्थान पाना और सक्रिय होना 354
- अनुग्रह के वरदान – वे क्या हैं ? 361
- आत्मिक अधिकार और अधीनता: परिचय 366
- बाइबल का परिचय 369

  (बाइबल की सब पुस्तकों का संक्षेप साराँश)

- स्वयं वचनों की खोज कैसे करें 408
- मृत्यु के बाद क्या होता है उसका अध्ययन 414
- सम्बंध, व्यवहार, परिपक्वता और रवैया 419
- नये स्वभाव की स्वतंत्रता में जीना 426
- एक अच्छा रवैया बनाना 432

भक्तिपूर्ण फैसले करना

आप कैसे कह सकते हैं कि आप एक सही नैतिक फैसला कर रहे हैं? बाइबल के ये मार्गदर्शक आपके चुनावों को जाँचने में मदद कर सकते हैं।

1. क्या यह बाइबल का उल्लंघन करता है? "जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से। ... मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।" (भजन 119:9-11)

2. क्या मैंने इसके बारे में प्रार्थना की है? "किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ" (फिलिप्पियों 4:6)। जब इस्राएल के राजा ने यहोशापात को उसके साथ युद्ध में जाने के लिए कहा, तब उसने राजा को कहा, "आज यहोवा से मालूम कर ले" (1 राजा 22:5)। हमारे लिए भी यह एक अच्छी सलाह है!

3. मैं इस फैसले से किसे खुश करने की कोशिश कर रहा हूँ? "अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूँ या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूँ? यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता" (गलातियों 1:10)

4. क्या यह फैसला मुझे अधिक अच्छा भक्त बनाएगा? या मेरे सोच-विचार में और ज्यादा सांसारिक? "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार की ओर से है" (1यूहन्ना 2:15-17)।

5. क्या यीशु इसे करेगा? "पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो" (1 पतरस 1:15)।

6. क्या मुझे शर्मिन्दा होना पड़ेगा जब दूसरों को पता चलेगा कि मैंने यह किया है? "अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन् उन पर उलाहना दो। क्योंकि उनके गुप्त कामों की चर्चा भी लज्जा की बात है" (इफिसियों 5:11-12)।

7. क्या मैं परमेश्वर पर भरोसा कर रहा हूँ? "तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा" (नीतिवचन 3:5-6)। एक प्रचारक ने बताया, "अन्त में, मसीहियों में अनैतिकता के तमाम मामले विश्वास और भरोसे की कमी दिखाते हैं कि चाहे कुछ भी हो परमेश्वर उनकी जरूरतें पूरी करेगा।" "जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह गिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नए पत्ते के समान लहलहाते हैं" (नीतिवचन 11:28)।

8. क्या मैं कानून और अपने मालिक की नज़र में निर्दोष ठहरूँगा? "हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे, क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं" (रोमियों 13:1)।

9. क्या मैंने भरोसेमन्द सलाह ली है? क्या आपको लगता है कि आपके हालात में एक अच्छा न्यायी होने के लिए आपने अपना आत्मिक, शारीरिक, या भावनात्मिक सन्तुलन खो दिया है? "जहाँ बुद्धि की युक्ति नहीं, वहाँ प्रजा विपत्ति में पड़ती है, परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है" (नीतिवचन 11:14)।

10. इस फैसले का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? "इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो" (मत्ती 7:12)। "हो नहीं सकता कि ठोकरें न लगें, परन्तु हाय, उस मनुष्य पर जिसके कारण वे आती हैं!

उसके लिए यह भला होता कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह समुद्र में डाल दिया जाता" (लूका 17:1-2)।

11. क्या इसे पूरा करने के लिए मुझे सच को कमजोर करना या झूठ का सहारा लेना पड़ेगा? एक मतगणना से पता चला कि सर्वेक्षण किए गए में से 66% ने कहा कि लोग नौकरी में आगे बढ़ने के लिए अक्सर झूठ बोलते हैं। "झूटों से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु जो विश्वास के काम करते हैं, उन से वह प्रसन्न होता है" (नीतिवचन 12:22)।

12. इसका आगे चलकर क्या प्रभाव होगा? "दुष्टों के रखे हुए धन से लाभ नहीं होता, परन्तु धर्म के कारण मृत्यु से बचाव होता है" (नीतिवचन 10:2)।

13. इसका मेरी गवाही पर क्या प्रभाव पड़ेगा? "अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो; ताकि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपा-दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें" (1 पतरस 2:12)।

परमेश्वर की इच्छा जानना

परिचय

बाइबल बताती है कि परमेश्वर सर्वसामर्थी और सर्वज्ञानी दोनों है, यानि कि वह सबकुछ कर सकता है और सबकुछ जानता है। यशायाह की पुस्तक में हम देखते हैं कि "जातियाँ तो डोल में की एक बून्द" के समान हैं और "पृथ्वी के रहनेवाले टिड्डी के तुल्य हैं" (यशायाह 40:15,22)। हमें यह भी बताया गया है कि "उसकी बुद्धि अगम है" (यशायाह 40:28)।

जब हम परमेश्वर की महानता पर गौर करते हैं, तब हम समझते हैं कि दाऊद ने क्यों कहा "तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधी ले?" (भजन 8:4)। वह केवल हमें याद ही नहीं रखता है बल्कि हम हर एक के जीवन के लिए उसके पास एक उद्देश्य और योजना है।

इस अध्ययन में हम देखेंगे कि परमेश्वर चाहता है कि हम सब उसकी इच्छा को जानें। हम उन अलग-अलग तरीकों को भी देखेंगे जिन्हें वह हम पर अपनी इच्छा प्रकट करने के लिए इस्तेमाल करता है।

क्या हम परमेश्वर की इच्छा जान सकते हैं?

हाँ! हर एक मसीही को परमेश्वर की इच्छा जानने का अधिकार और जिम्मेदारी दी गई है। हम न केवल इसे जान सकते हैं, बल्कि हम से उम्मीद की गई है कि हम जानें। हमें इफिसियों 5:17 में बताया गया है "इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है।"

हमें, उसके अनन्त परिवार में गोद लिए जाने के द्वारा परमेश्वर की इच्छा जानने का सौभाग्य और योग्यता प्राप्त है (गलातियों 4:5-6)। इस गोद लिए जाने का चिन्ह वह पवित्र आत्मा है जो हमारे अन्दर रहता है जो तुम्हें "सब सत्य का मार्ग बताएगा" (यूहन्ना 16:13)। यह हमारे अन्दर रहनेवाला पवित्र आत्मा ही है जो हमारे जीवन के हर पहलू के लिए परमेश्वर की इच्छा जानने की योग्यता देता है। यीशु ने उसके बारे में यूहन्ना 16:14 में कहा कि "वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।"

एक मसीही को इन दो सामान्य बातों के लिए परमेश्वर की इच्छा जानने की आवश्यकता पड़ती है:

1) मैं जीवन कैसे जीऊँ? – यह प्रश्न हमारे नैतिक और आत्मिक व्यवहार से सम्बंधित है। हमें जानने की आवश्यकता है कि हम किस प्रकार से जीवन जीएँ जो परमेश्वर को पसन्द है।

2) मुझे क्या करना चाहिए? – इस क्षेत्र में वो फैसले किए जाते हैं जो हमारे जीवन की दिशा से सम्बंधित होते हैं। इनमें शामिल हैं नौकरी-धंधा, सम्बंध, समस्याओं को कैसे सम्भालें, कहाँ रहें, सेवकाई में शामिल होना, वगैरा के विकल्प।

हम किस प्रकार जीवन जीएँ इसके उत्तर बाइबल में साफ-साफ बताए गए हैं। जीवन की दिशा के बारे के फैसलों में परमेश्वर की इच्छा जानना कुछ कठिन हो सकता है। यहाँ पर हम देखेंगे कि इस प्रकार के फैसलों में परमेश्वर की इच्छा हम कैसे पता लगाएँ।

परमेश्वर की इच्छा का महत्त्व

पहाड़ी उपदेश में एक जगह, यीशु प्रार्थना के सही तरीके के बारे में निर्देश देने लगा था। प्रभु की प्रार्थना में दूसरी पँक्ति में ये शब्द पाए जाते हैं "तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो" (मत्ती 6:10)। यह प्रार्थना करने में, यीशु बताते हैं कि परमेश्वर की इच्छा है कि जो पृथ्वी पर हैं वे उसकी इच्छा को उसी प्रकार प्रकट करें जैसे स्वर्ग में होती है।

यह प्रार्थना तब पूरी होगी जब मसीह अपने शत्रुओं को कुचलने और अपने राज्य को पृथ्वी पर स्थापित करने लौटेगा (प्रकाशित. 19 और 20)। तब तक, उसकी कलीसिया ही वह जगह है जहाँ उसका राज्य प्रकट होगा। हर नया जन्म पाया विश्वासी उसकी कलीसिया का सदस्य है, और उसे अपना जीवन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीना है।

हम नीचे दिए कारणों में परमेश्वर की इच्छा को करने के महत्त्व को देख सकते हैं:

क) यह हमें अनन्त जीवन का आश्वासन देता है, "जो मुझ से 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (मत्ती 7:21)।

ख) यह हमें और सच्चाई जानने देता है, "यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा" (यूहन्ना 7:17)।

ग) यह हमें गारंटी देता है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनेगा, "परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है" (यूहन्ना 9:31)।

घ) यह हमारे लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को सुरक्षित करता है, "... ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ" (इब्रानियों 10:36)।

परमेश्वर की इच्छा की प्राथमिकता

यीशु ने नमूना पेश किया है कि विश्वासी किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा से सम्बंध रख सकता है। यूहन्ना 5:30 में। वह अपनी वचनबद्धता इस प्रकार प्रकट करता है, "मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।" एक और जगह वह कहता है, "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ" (यूहन्ना 4:34)। इस वचनबद्धात के कारण, अपने क्रूस पर जाने से पहले वह यह कह सका, "जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है" (यूहन्ना 17:4)।

हर विश्वासी की परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए उसी प्रकार की वचनबद्धता होनी चाहिए। हमें कहा गया है, "पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो" (मत्ती 6:33)। हमें, जो परमेश्वर हमारे जीवनों के लिए चाहता है के अनुसार अपने जीवन जीने चाहिए और अपने फैसले करने चाहिए।

अगर परमेश्वर की इच्छा की हमारे जीवन में प्राथमिकता होनी हो तो हमें नीचे दिए समझौते करने होंगे:

1) हम में ईमानदारी से उसकी इच्छा करने की लालसा होनी चाहिए - "... मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो" (इफि. 6:6)। परमेश्वर दिल को देखता है। अगर हमारा आज्ञापालन दिल से नहीं होता है तो यह केवल धार्मिक कार्य बन कर रह जाएगा।
2) हमें जीवन की आदतों को बदलने के लिए इच्छुक होना चाहिए - "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे" (मत्ती 16:24)। इसका मतलब हो सकता है मित्रों, कार्यो और वचनबद्धताओं को बदलना।
3) हमें दुख उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए - "पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो" (1 पतरस 4:16)। परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञापालन का अर्थ हो सकता है कठिनाइयाँ, उपहास या सताव भी। यीशु ने कलवरी का इस घोषणा से सामना किया, "तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो" (मत्ती 26:29)।

आज्ञापालन के लिए उसका ईनाम

"देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है" (प्रकाशित. 22:12)।

परमेश्वर की इच्छा का पालन करने के लिए जरूरी है कि हम इस संसार के अनुसार जीने का सामना करें। हमें अपने जीवन इस प्रकार जीना है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है! धार्मिकता और आज्ञापालन का जीवन जीने के लिए अनुसासन और बलिदान की जरूरत पड़ती है। हालाँकि हर कोशिश और वचनबद्धता ईनाम पाएगी। प्रभु उनको आशीष देता है जो उसके साथ वाचा के सम्बंध में जीवन जीते हैं। परमेश्वर लगातार हमारे व्यवहार और चुनावों की जानकारी रखता है। प्रभु के लौटने पर विश्वासी और आज्ञापालन करनेवाले के लिए एक बड़ा ईनाम है और वह हर एक को "उसके काम के अनुसार" फल देगा।

उसकी इच्छा कैसे जानें – बारह तरीके:

अपने जीवन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीना तय करने के बाद भी, हम एक फैसले के सही विकल्प के बारे में उलझन में हो सकते हैं।

क्या मुझे यह नौकरी लेनी चाहिए? क्या संडे स्कूल में सिखाऊँ? क्या प्रभु चाहता है मैं घर बदलूँ? यह उन अनेक प्रकार के कई चुनावों में से हैं जिनका हमें फैसला करना होता है।

यहाँ हम उन भिन्न-भिन्न प्रकार के संकेतों को देखेंगे जिन पर हमें विचार करना होता है जब हम परमेश्वर की दिशा की खोज में होते हैं। उसकी इच्छा का पता लगाना हमेशा आसान नहीं होता है। वह अपनी इच्छा हम पर प्रकट करने के लिए नीचे दिए हुओं में से कोई एक संकेत इस्तेमाल कर सकता है। नियम के तौर पर, वह एक से ज्यादा इस्तेमाल करेगा। याद रहे, परमेश्वर की इच्छा की खोज प्रार्थना से शुरू हो। हम केवल सोच कर परमेश्वर के मन को नहीं जान सकते हैं। इसके बदले, हमें प्रार्थना के द्वारा उसकी उपस्थिति पैदा करनी चाहिए।

1. एक मजबूत आत्मिक जीवन

"इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:2)।
एक मजबूत आत्मिक जीवन परमेश्वर से सुनने के लिए सबसे उत्तम योग्यता है। हमें इस संसार के जैसा बनने को ठुकराना चाहिए, और अपने मनों को हर दिन परमेश्वर के आत्मा और वचन के द्वारा नया होने देना चाहिए। 1 कुरिन्थियों 2:14 में, हम सीखते हैं कि परमेश्वर की बातों की जाँच "आत्मिक रीति" से होती है। अगर हमें परमेश्वर की अगुआई के प्रति संवेदनशील होना है तो हमें अपने आत्मिक जीवन को विकसित करना होगा। यह विकास आज्ञापालन, वचनबद्धता, प्रार्थना और बाइबल अध्ययन के जीवन के द्वारा हो सकता है।

2. भक्तिपूर्ण अभिप्राय

"सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।" नीतिवचन 4:23
परमेश्वर की इच्छा जानने में सबसे पहला काम जो हमें करना चाहिए वह है अपने अभिप्रायों का पता लगाना। मेरे दिल में क्या अभिप्राय काम कर रहा है? क्या मैं वाकई परमेश्वर को खुश करना चाहता हूँ, या क्या मैं स्वार्थी बना हुआ हूँ? क्या मेरा दिल बुरे रवैयों से आज़ाद है? क्या मैं प्रेम से कार्य करूँगा? एक गलत कारण से किया गया चुनाव परमेश्वर का चुनाव नहीं हो सकता है। हमारे फैसले हमेशा प्रभु को खुश करने के मन से किए जाने चाहिए। हमें कहा गया है कि हम इस प्रकार जीएँ जो "मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो मनों को जाँचता है, प्रसन्न करते हैं" (1 थिस्स. 2:4)। अगर हमारे दिल बुरे अभिप्रायों से आज़ाद हैं तब हम परमेश्वर से सुनने के सही हालात में हैं।

3. लिखा हुआ वचन

"सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है" (2 तीमुथियुस 3:16)।
बाइबल परमेश्वर के मन और इच्छा की साफ-साफ घोषणा है। हमारे कई फैसले बाइबल के वचनों के द्वारा किए जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक बच्चे को प्रशिक्षण और अनुशासन के लिए छड़ी से मारने के हमारे प्रश्नों का उत्तर नीतिवचन 29:15 दे सकता है। यह कहता है, "छड़ी और डाँट से बुद्धि प्राप्त होती है, परन्तु जो लड़का योंही छोड़ा जाता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है।" बाइबल नियमों और सिधान्तों से भरी पड़ी है जो हमें हमारे फैसलों के लिए बुद्धि देते हैं। परमेश्वर जो उसने पहले ही बाइबल में कहा है का खण्डन नहीं करेगा। बाइबल के वचनों का पालन न कर पाना परमेश्वर की इच्छा पर न चल पाना है (याकूब 1:22)।

4. पवित्र आत्मा की गवाही

"आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं" (रोमियों 8:16)।
पवित्र आत्मा विश्वासी को उसे हर सत्य में ले चलने के लिए दिया गया है। उसका उद्देश्य प्रभु से लेना और हमें दिखाना है (यूहन्ना 16:14-15)। उसके कार्यों में से एक कार्य हमारे अन्दर एक गवाही पैदा करना या परमेश्वर के मन और इच्छा का संकेत देना है।
जैसे जैसे हम परमेश्वर के साथ अपने सम्बंध में सयाने होते जाते हैं, हम पवित्र आत्मा की अगुआई को ज्यादा ज्यादा महसूस करते जाते हैं। जब हमारा फैसला परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होता है तो यह आत्मिक गवाही शान्ति और समर्थन की एक अन्दरूनी भावना होती है। लेकिन जब हम परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध चल रहे होते हैं तो इस गवाही की कमी होती है। फिर भी, हमें सावधान होना चाहिए कि कहीं यह शान्ति, जो हम करना चाहते हैं का नतीजा नहीं है। इस गवाही को उचित तरीके से पाने के लिए, हमें जो भी परमेश्वर की इच्छा है करने के लिए पूरी तरह वचनबद्ध होना जरूरी है, चाहे इसमें बलिदान ही क्यों न देना पड़े।

5. रीमा

'"वचन तेरे निकट है, तेरे मुँह में और तेरे मन में है," यह वही विश्वास का वचन है, जो हम प्रचार करते हैं' (रोमियों 10:8)।

"वचन" के लिए यूनानी शब्द "रीमा" का अर्थ है: एक "खास कथन या कहना"। इसे यह बताने के लिए इस्तेमाल किया जाता है जिस प्रकार परमेश्वर एक अलग और भिन्न तरीके से एक व्यक्ति से बात करता है। दूसरे शब्दों में, एक "जीवित" बाइबल का वचन। मरकुस 1:11 में ऐसा एक उदाहरण है जहाँ पिता मसीह से यह कहते हुए बात करता है, "तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूँ।"

कुछ लोग ही परमेश्वर की श्रव्य आवाज सुन पाते हैं। उसके बदले, हमें शायद लगे कि हमने अपने मन में उठते हुए एक विचार के साथ विश्वास को अनुभव करने के द्वारा परमेश्वर से एक "रीमा" सुना है। हमें यह "रीमा" बाइबल के कोई वचन का अपने हालात में इस्तेमाल होने से विश्वास की भावना से भी मिल सकता है।

परमेश्वर से एक "रीमा" सुनने के बारे में हमें कुछ सावधानी बर्तनी चाहिए:

* परमेश्वर उसका खण्डन नहीं करेगा जो पहले से उसके वचन में है - जो कुछ भी हम परमेश्वर से सुनते हैं बाइबल से सहमत होना चाहिए। यह परमेश्वर के स्वभाव के अनुसार भी होना चाहिए। प्रकाशितवाक्य 22:18 उनके लिए एक कठोर चेतावनी देता है जो उसके वचनों में "बढ़ाएगा"।
* हमें दूसरी पुष्टियों की खोज भी करनी चाहिए - व्यक्तिगत भावनाओं का और जो हम परमेश्वर से सुनना चाहते हैं की इच्छाओं के आ जाने की काफी सम्भावनाएँ हैं। इस कारण से, एक "रीमा" की दूसरे संकेतों द्वारा पुष्टि होनी चाहिए।
* हमें घमण्ड पर नज़र रखनी चाहिए - जब हम सोचते हैं कि हमने परमेश्वर से सुना है तब घमण्ड के चुपके से आ जाने की सम्भावना होती है। "ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है" (नीतिवचन 16:18)। इस प्रवृत्ति के प्रति सावधान रहो!

6. भक्तिपूर्ण सलाह

"मूढ़ को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है, परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्धिमान है" (नीतिवचन 12:15)।

परमेश्वर की इच्छा जानने का एक सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण कदम दूसरों से सलाह लेना है। ऊपर दिया वचन बताता है कि यह एक मूर्ख व्यक्ति ही है जो अच्छी सलाह को अनदेखा करता है। हम खुद से, पूरी तस्वीर का शायद एक भाग ही देख सकें। दूसरे हमारी समझ को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। हमारी व्यक्तिगत भावनाएँ और भेद-भाव भी हमारे विचारों को धुँधला कर देते हैं। दूसरे एक निष्पक्ष स्थिति से वास्तविक सलाह दे सकते हैं। इसीलिए हमें कहा गया है कि "सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है" (नीतिवचन 11:14)।

हमें भक्तिपूर्ण सलाहकारों को खोजना चाहिए जिनका नाम है कि वे बुद्धिमान हैं। हमें उन लोगों से सलाह लेने से बचना चाहिए जो हमें केवल वही बातें बताएंगे जो हम सुनना चाहते हैं। आत्मिक अगुओं को कलीसिया में परमेश्वर के लोगों को निर्देश और मार्गदर्शन देने के लिए रखा गया है। उनके लिए एक मुख्य फैसले में जो हमें करना होता है एक खास सलाह देने की भूमिका होनी चाहिए।

नीचे कुछ वचन दिए गए हैं जो हमारे जीवन में भक्तिपूर्ण सलाहकारों की जगह को दिखाते हैं:

- "अपने अगुओं की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं" (इब्रानियों 13:17)।
- "हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुए हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उनका सम्मान करो, और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो" (1 थिस्स. 5:12-13)।

कलीसिया के अगुए अक्सर बुद्धिमान और गुणी होते हैं जिनकी हमें महत्त्वपूर्ण फैसलों में सलाह लेनी चाहिए।

7. परिस्थितियाँ

"परन्तु मैं पिन्तेकुस्त तक इफिसुस में रहूँगा, क्योंकि मेरे लिए वहाँ एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है, और विरोधी बहुत से हैं" (1 कुरिन्थियों 16:8-9)।

हम ऊपर दिए वचन से देखते हैं कि पौलुस ने इफिसुस में रहने का फैसला किया क्योंकि वर्तमान हालातों में लगा कि सुसमाचार के लिए "एक बड़ा .. द्वार" खुला था। हालात अक्सर हमारे लिए परमेश्वर के निर्देश का एक मजबूत संकेत हो सकता है। एक नई नौकरी का प्रस्ताव, उन्नति के लिए एक अवसर, रुपये-पैसों की कमी, या दूसरे हालात उस चुनाव की ओर ईशारा करते हैं जो हमें करना होता है।

फिर भी, हमें हालातों को परमेश्वर की इच्छा का एक मात्र संकेत बनाने से सावधान रहना चाहिए। दूसरे संकेत, जैसे कि भक्तिपूर्ण सलाह या एक अन्दरूनी गवाही भी उपस्थित होने चाहिए। ऐसे अवसर होते हैं जब हालातों के लिए जरूरी होता कि आगे कदम उठाकर परमेश्वर की इच्छा की जाँच की जाए। ऐसा करने से, हम उस दिशा के लिए जहाँ परमेश्वर चाहता है हम बढ़ें एक स्पष्ट गवाह की आशा करते हैं। हमें इसका पौलुस से प्रेरितों 16:7 में एक उदाहरण मिलता है, "उन्होंने मूसिया के निकट पहुँचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया।"

इससे पहले कि हम आगे कदम बढ़ाकर प्रभु की इच्छा की जाँच करें, हमें सावधान होना जरूरी है कि ऐसा करने के लिए हमारे पास सही अभिप्राय, अच्छी सलाह और काफी अन्दरूनी गवाह है। आगे कदम बढ़ाकर, हमें हालातों और मिले हुए अन्दरूनी गवाह का विशलेषण करना चाहिए, और आगे की दिशा के लिए भक्तिपूर्ण सलाह लेनी चाहिए।

8. भविष्यवाणी

'जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैं ने उन्हें बुलाया है"' (प्रेरितों 13:2)।

परमेश्वर की इच्छा एक व्यक्तिगत, निदेशक भविष्यवाणी के द्वारा भी प्रकट हो सकती है। नए नियम में कई अवसर हैं जहाँ ऐसा हुआ है।

फिर भी, व्यक्तिगत भविष्यवाणी से सम्बंधित कुछ सावधानियाँ बरतने की जरूरत है। पहला, भविष्यवाणियाँ जाँची जानी चाहिए (1 कुरिं. 14:29)। व्यक्तिगत भविष्यवाणियाँ परिपक्व अगुआई सेवकाइयों की उपस्थिति में बोली जानी चाहिए ताकि उन पर विचार किया जाए और उनकी पुष्टि की जाए। दूसरा, व्यक्तिगत भविष्यवाणी केवल उन्हीं से ली जानी चाहिए जिनकी प्रमाणित भविष्यवाणी या अगुआई की सेवकाई है। तीसरा, भविष्यवाणी पा रहा व्यक्ति परखा जाता है और उसकी पुष्टि की जाती है, तब ही परमेश्वर की इच्छा का यह उचित संकेत है।

9. दर्शन और स्वपन

'वहाँ पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ उससे विनती करके कह रहा है, "पार उतरकर मकिदुनिया में आ, और हमारी सहायता कर"' (प्रेरितों 16:9)। परमेश्वर हमसे दर्शनों या सपनों के द्वारा बात करता है (2 कुरिं. 12:4; प्रेरितों 9:10; 10:10; 22:17 भी देखें)।

फिर भी, दर्शनों और सपनों के बारे में कुछ सच्चाइयाँ जानना जरूरी है:

1. वे विरले हैं - बाइबल के समय को ध्यान में रखते हुए, उनकी बारम्बारता की कमी, साबित करती है कि वे विरले हैं।
2. वे बहुत स्पष्ट होते हैं - जो बाइबल में देखे हुए हैं दोनों सजीव और असाधारण थे। वे अनुमान या साधारण सपने देखने का काम नहीं हो सकता है।
3. उनका संदेश प्रकट और सही था – परमेश्वर ने हमेशा उनका अर्थ प्रभावित व्यक्ति पर प्रकट किया था।

दर्शनों और सपनों की खोज नहीं करनी चाहिए। अगर परमेश्वर आपसे इस प्रकार बात करना चाहता है तो यह प्रकट हो जाएगा।

10. ऊन

"तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा .... तो सुन, मैं एक भेड़ी की ऊन खलिहान में रखूँगा, और यदि ओस केवल उस ऊन पर पड़े ... तो मैं जान लूँगा कि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल को मेरे द्वारा छुड़ाएगा" (न्यायियों 6:36-37)।

न्यायियों 6 में वर्णन की गई इस घटना ने परमेश्वर की इच्छा का पता लगाने के एक तरीके को जन्म दिया है जिसे "प्रभु के आगे ऊन रखना" कहते हैं। इसमें एक शर्त रखना शामिल है जिसे परमेश्वर को पूरा करना होता है ताकि पता चले कि वह किसी का एक खास दिशा में मार्गदर्शन कर रहा है। प्रभु ने गिदोन की शर्त पूरी की, फिर भी "प्रभु के आगे ऊन रखने" के विचार के बारे में कुछ खास सावधानियाँ हैं। पहला, गिदोन के हालात अनोखे और असाधारण थे। दूसरा, परमेश्वर की इच्छा का पता लगाने का बाइबल में यह एक विरला तरीका लगता है। अन्त में, ऊन रखना अनुमान लगाना हो सकता है। यह मान कर चलता है कि हम परमेश्वर को बता सकते हैं कि वह किस प्रकार हम से बात करे। इन कारणों की बजह से ऊन रखना गलती की ओर ले जा सकता है। इसलिए हमें दूसरे संकेतों की भी जरूरत पड़ती है।

11. कोई प्रमाण नहीं परमेश्वर का प्रमाण है

"तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा" (नीतिवचन 3:5-6)।

एक फैसले में परमेश्वर की इच्छा का पता लगाने में यह आम बात है कि कोई भी प्रमाण न मिले। इन उदाहरणों में, हमें शायद वास्तव में एक बहुत स्पष्ट प्रमाण मिल रहा हो। कोई भी प्रमाण नहीं अक्सर परमेश्वर का हमें बताने का तरीका है कि हम अपने वर्तमान हालात में बने रहें। उसकी प्रकट चुप्पी हमें हतोत्साहित कर सकती है और हम मानने लगते हैं कि वह मार्गदर्शन के लिए हमारी प्रार्थना नहीं सुन रहा है। वास्तव में, उसकी चुप्पी उसका हमें बताने का तरीका है कि किसी बदलाव की जरूरत नहीं है।

फिर भी, हमें "प्रमाण नहीं" को उसकी इच्छा के रूप में तुरन्त स्वीकार करने में सावधान रहना चाहिए। और अधिक प्रार्थना की जरूरत हो सकती है, या हो सकता है यह समय उचित न हो। ऐसे हालातों को सलाह के लिए कलीसिया के अगुओं के हाथों में सौंपना चाहिए।

12. दो या अधिक गवाह

"... दो या तीन साक्षियों के कहने से बात पक्की ठहरे" (व्यवस्थाविवरण 19:15)।

बाइबल हमें परमेश्वर की इच्छा का पता लगाने का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त देता है। यह दो या तीन गवाहों का नियम है। पुराने नियम में एक व्यक्ति को किसी गुनाह के लिए एक ही गवाह की साक्षी के आधार पर सजा देना मना था (व्यवस्था. 17:6; 19:15)। वही सिद्धान्त नए नियम में भी पाया जाता है, और माँग करता है कि किसी के प्रति लगाया गया दोष दो या तीन गवाहों द्वारा प्रमाणित किया जाए (मत्ती 18:16; 2 कुरिं. 13:1 देखो)।

इस नियम को एक मामले में परमेश्वर की इच्छा स्थापित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। जब परमेश्वर आपकी अगुआई कर रहा है, तो वह इसे दो या तीन गवाहों द्वारा प्रमाणित करेगा। उदाहरण के तौर पर, एक व्यक्तिगत भविष्यवाणी की अगुओं की गवाही के द्वारा पुष्टि की जा सकती है। परमेश्वर की इच्छा खोजने में दो या तीन गवाहों की जरूरत हमें गलत फैसला करने से रोक सकता है।

निचोड़

परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी इच्छा को जाने भी और उसमें चलें भी। हमने संक्षेप में भिन्न-भिन्न तरीकों को देखा है जिन्हें वह अपनी इच्छा हम पर प्रकट करने में इस्तेमाल करता है। फिर भी, परमेश्वर की इच्छा का पता लगाना हमेशा आसान नहीं होता है। अक्सर, वह पहले हमारे जीवनों में गलत अभिप्रायों या रवैयों से निपटता है, या उसे हमारे जीवन में लोगों या हालातों की व्यवस्था करने में समय लग सकता है जो अन्त में उसकी इच्छा की समझ हम में लाते हैं।

फिर भी, हमें परमेश्वर की ओर से प्रतिज्ञा मिली है कि वह उत्तर देगा। यिर्मियाह 29:13 में वह घोषणा करता है, तुम मुझे ढूँढोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।" अगर हम ईमानदार और सावधान हैं तो उचित समय में वह अपनी इच्छा हम पर प्रकट करेगा।

सुसमाचार प्रचार शुरू करनेवाले

लेखक बैठे अपनी खाली कम्प्यूटर स्क्रीन को ताक रहे हैं: लेखक की बाधा। चालक अपने आगे मीलों लम्बे बम्पर को देखते रहते हैं: चालक की बाधा। खोए हुओं के लिए दिल वाले लोग एक खाली कुर्सी को ताक रहे हैं: सुसमाचार प्रचार बाधा। इस प्रकार के लोग आपकी की कलीसिया में हैं ... और यह आप भी हो सकते हैं।

यहाँ कुछ विचार दिए गए हैं जिनसे आप अपनी कलीसिया में सुसमाचार प्रचार की कोशिशें शुरू कर सकते हैं। यह आपके लिए सहायक हों और आपकी मण्डली के लिए उनके प्रचार प्रयासों में प्रोत्साहन हों।

परमेश्वर से माँगो कि वह गैर-मसीही लोगों के साथ नए सम्बंध बनाने में आपकी मदद करे और जो सम्बंध पहले से हैं वे गहरे हों।

- इन मित्रों के लिए नाम लेकर प्रार्थना करो, माँगो कि परमेश्वर उनके हृदय उसके प्रेम और सच्चाई के लिए खोल दे, और इस प्रक्रिया में आपको सामर्थ दे और इस्तेमाल करे।
- एक गैर-मसीही मित्र को खाने पर या चाय पर बुलाओ।
- अपने जीवन में किसी को उत्साहित करने के लिए एक पत्र लिखो जो कठिनाई से गुज़र रहा है और अभी मसीह को नहीं जानता है।
- एक पुराने मित्र को जिसे आप काफी समय से नहीं मिले हैं फोन करो - चाहे वे देश के किसी दूसरे कोने में क्यों न रहते हों - और अपने जीवनों में क्या चल रहा है के बारे में परिचित हो जाओ।
- इस सप्ताह अपने आफिस, स्कूल, या पड़ोस में किसी से जिससे आपको अभी तक बात करने का मौका नहीं मिला है, मिलने को जाओ।
- तीन लोगों के नाम लिख लो जिनके लिए आप प्रार्थना करोगे और मिलोगे।
- एक आत्मिक वार्तालाप शुरू करने के यूहन्ना 4 में यीशु के उदाहरण पर नज़र डालो, और फिर यीशु के जैसे किसी व्यक्ति के साथ जिसे आप जानते हो एक आत्मिक विषय पर बातचीत शुरू करो। उनसे पूछो कि उस मामले पर उनके विचार क्या हैं और फिर उनकी बात को सुनो।
- उससे दोबारा मिलो जिसके साथ कुछ समय पहले आपने मसीहियत के बारे में बातचीत की थी। पता लगाओ कि अपने आत्मिक सफर में वे कहाँ पहुँचे हैं और किस प्रकार आगे कदम बढ़ाने में आप उनकी मदद कर सकते हैं।
- परमेश्वर से पूछो कि किस प्रकार के आत्मिक खतरे वह चाहता है आप लें।
- उन विश्वास से सम्बंधित विषयों का अध्ययन करो जिनके बारे में आपको लगता है आपके मित्र को जरूरत है और फिर उनके बारे में बात करने को अवसर ढूँढो।
- एक मसीही पुस्तर या टेप जो आपके लिए बहुत उपयोगी रही है और आपको लगता है आपके मित्र के लिए भी उपयोगी साबित होगी, उन्हें दे दो।
- लूका 15 पढ़ो, और कुछ समय विचार करने में लगाओ कि परमेश्वर अपने परिवार के बाहर वालों को किस नज़र से देखता है। परमेश्वर से माँगो कि वह आपको उनके लिए अपने हृदय भी दे दे।
- किसी पुस्तक के एक या दो अध्याय पढ़ो जो आपको सुसमाचार प्रचार के लिए उत्साहित करेंगे। आप शायद इनमें से कोई पुस्तक अपने संडे स्कूल या छोटे दल में भी पढ़ना और चर्चा करना चाहेंगे।
- कुछ एक मसीही मित्रों के साथ मिलो और उन लोगों के लिए मिलकर प्रार्थना करो जिन तक आप सब पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं।
- जिस किसी के साथ आपने पहले ही आत्मिक बातचीत की है, उनके साथ बातचीत आगे बढ़ाओ और उन्हें बताओ कि आप खुद किस प्रकार मसीह के पास आए थे।
- एक गैर-मसीही मित्र को अपनी कलीसिया या अपने समाज में एक उचित मसीही सभा में बुलाओ।

सुसमाचार प्रचार

क. सुसमाचार प्रचार क्या है?

सुसमाचार है "अच्छी खबर"। यह एक प्रेमी परमेश्वर की ओर से नष्ट हो रहे संसार के लिए अच्छी खबर है (यूहन्ना 3:16-17; मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15-20)।

ख. सुसमाचार प्रचार की किस्में

मुख्य रूप से नए नियम में दो प्रकार के ही सुसमाचार प्रचार हैं। वे हैं व्यक्तिगत और भीड़ सुसमाचार प्रचार – प्रेरितों 20:20।

1) भीड़ सुसमाचार प्रचार (मत्ती 4:23, 25; 9:35; 11:1; मरकुस 1:36-39; लूका 10:1; प्रेरितों 8:4-8)

भीड़ सुसमाचार प्रचार में बहुत से लोग होते हैं और बहुत पैसा लगता है। यह उस प्रकार का सुसमाचार प्रचार है जहाँ प्रचारक लोगों से आँगनों, सड़कों, बाजारों, बसों में, खुले में और कमरे के अन्दर सभाओं में, वगैरा निपटता है। इसलिए इसमें लाऊड स्पीकर, रोशनी और सहायकों की जरूरत पड़ती है।

2) व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार (यूहन्ना 1:40-42, 45-47; प्रेरितों 8:26-37; यूहन्ना 4:1-30)

इस प्रकार के सुसमाचार प्रचार में सुसमाचार एक समय में एक व्यक्ति को सुनाया जाता है। ऐसा बुद्धि और धीरज के साथ किया जाता है। कभी कभार जिसे आप सुसमाचार सुनाना चाहते हैं उसके साथ मिलने का समय तय करना पड़ता है। इस प्रकार का भेंट का समय तय करने से पहले उनके साथ अच्छा सम्बंध बनाना जरूरी है। ऐसा करने से संदेश अच्छे ढंग से स्वीकार होने में मदद मिलती है। व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार जब सही तरीके से किया जाए तो बहुत अच्छे परिणाम लाता है। इसमें नीचे दिए नियम होते हैं:

- खुद पापी के पास जाना
- पापी के लिए परवाह और दिल्चस्पी दिखाना
- किसी भी कीमत पर उन्हें प्रभु के लिए जीतना निश्चय करना

अन्त में, सुसमाचार प्रचार केवल उनके हाथों में ही नहीं छोड़ा जाना चाहिए जो पूरे समय सेवा करते हैं। परमेश्वर के राज्य में सब मसीहियों का यह सबसे महत्त्वपूर्ण काम है – यूहन्ना 15:16।

इस महान नियुक्ति की कोई भौगोलिक सीमाएँ नहीं हैं। इसे सारे संसार में बिना किसी जातीय रुकावटों के इस्तेमाल में लाना है, और किसी प्रकार के भी वर्ग अन्तर नहीं होने चाहिए। (प्रेरितों 1:8; मरकुस 16:15)

ग. सुसमाचार की अत्यावश्यकता

1. फसल सच में बहुत है। किसी भी प्रकार की देरी से यह सड़ सकती है या नाश हो सकती है (मत्ती 9:36-37; यूहन्ना 4:35)।
2. समय की कमी और अनन्तकाल की अंतहीनता (यूहन्ना 9:4; 1 कुरिं. 7:29-31)।
3. यीशु मनुष्यों को जीतनेवाला था, मसीही का अर्थ है मसीह-जैसा। इसलिए हर मसीही मनुष्यों को जीतनेवाला होना चाहिए।
4. पापी के खून के जिम्मेदार आप ही होंगे (यहेजकेल 33:6-8)।
5. तुम खोए हुए थे और मसीह के बलिदान के द्वारा उद्धार पाए हो। इसीलिए तुम्हें दूसरों के उद्धार के लिए बलिदान होना है।
6. मसीह के लौटने के बारे में पूरी न हुई भविष्यवाणियों के कारण – मत्ती 24:14।
7. नर्क की असलीयत की सच्चाई।
8. नर्क उन सब का इन्तज़ार कर रहा है जो मन नहीं फिराते हैं, और आपको उन्हें प्रेम करने की और सुसमाचार सुनाने की जरूरत है (प्रकासित. 21:8; 20:15; गलातियों 5:19-21; लूका 16:19-31)।

घ. मनुष्यों को जीतनेवाले की योग्यता

1. मनुष्यों को जीतनेवाले को पहले मसीह में नया जन्म अनुभव करना चाहिए, और अपने उद्धार का सच्चा फल दिखाना चाहिए (यशायाह 52:11; 2 तीमुथियुस 2:19-21)।
2. उसे जोशीला और जानकार होना चाहिए (नीतिवचन 19:2; लूका 10:38-42)।
3. तुम्हें बपतिस्मा पाया हुआ और पवित्र आत्मा के सामर्थ से भरा हुआ होना चाहिए (प्रेरितों 1:8; लूका 24:46-49)।
4. तुम्हें आत्मा के फल लाने चाहिए (गलातियों 5:20-22; मत्ती 12:33; मत्ती 7:15-20)।

5. एक मनुष्यों को जीतनेवाले को मनुष्यों को जीतने के इस महान कार्य में एक मजबूत अटल दृढ़ निश्चय होना चाहिए (यूहन्ना 5:9-11; प्रेरितों 21:8-14; 26:22-24; 1 कुरिं. 9:16)।

च) मनुष्यों को जीतने की पहुँच

लोगों को मसीह के लिए जीतने की आपकी कोशिश एक अच्छा सम्बंध स्थापित करने पर और व्यक्ति के जीवन की स्थिति की जानकारी पर भी निर्भर करती है। आपके सफल पहुँच के लिए नीचे दी गई बातें पेश की गई हैं:

1. आपको पवित्र आत्मा के प्रति बहुत ही संवेदनशील होना चाहिए ताकि आपको पता चल सके कि व्यक्ति उद्धार पाया हुआ है, मसीह को त्यागा हुआ है या उद्धार नहीं पाया हुआ है। यीशु ने कहा कि उसी समय तुम्हारे पिता का आत्मा तुम से बात करेगा।
2. बाइबल कहती है कि उनके फल से तुम उन्हें पहचानोगे (मत्ती 7:18-20)। इसलिए प्रभु में उनकी स्थिति का पता लगाने के लिए तुम उनके रूप-रंग और उनके कार्यों पर ध्यान दे सकते हो।
3. तीसरा काम जो आप कर सकते हो वह है उस व्यक्ति को कुछ सोचे-समझे प्रश्न करो। अगर वह उनका उत्तर दे सके तो इसका मतलब है कि उसके अन्दर प्रमाण है।

   पहला प्रश्नः

   अगर कोई आपसे पूछता है कि, क्या तुम एक मसीही या परमेश्वर की सन्तान हो, तो तुम क्या कहोगे?

   स्वभाविक है कि, व्यक्ति हाँ कहेगा। हमें चुप नहीं हो जाना चाहिए। बल्कि, प्रश्न जारी रखें।

   दूसरा प्रश्नः

   इसलिए अगर व्यक्ति आपको पूछता है कि, तुम्हारा उद्धार कैसे हुआ या तुम मसीही कैसे बने, तो तुम क्या जवाब दोगे?

   दूसरे प्रश्न के उसके उत्तर में नीचे दी बातें होनी चाहिएः

   - उसका खुद का एहसास कि वह पापी पैदा हुआ था और नर्क की अनन्त सजा की ओर जा रहा था (रोमियों 5:12-14; 3:23)।
   - सुसमाचार सुनने के बाद सच्चे पश्चाताप में उसका परमेश्वर की ओर फिरना और उसके हृदय में विश्वास करना और यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता कबूल करना, और उसे अपने सम्पूर्ण जीवन पर उसे प्रभु बनाना (रोमियों 10:9-10)।

छ) मनुष्यों को जीतनेवाले का संदेश

ऊपर की प्रक्रिया के बाद, आपको एहसास हुआ होगा कि जैसा नीचे दिया है उस तरीके से लोगों को सुसमाचार का संदेश सुनाने की जरूरत है:

1. मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की प्रारंभिक योजनाः उनकी सिद्ध स्थिति में, मनुष्य परमेश्वर का जीवन, महिमा, आदर और अधिकार का आनन्द ले रहा था (उत्पत्ति 1:26-31; भजन 8:4-8)।
2. पाप के परिणामस्वरूप मनुष्य का पतनः जब पहले पुरुष और स्त्री को शैतान ने साँप के द्वारा धोखा दिया, तो वे उस स्थिति से जहाँ परमेश्वर ने उन्हें रखा था गिर गए (रोमियों 3:12-14; 3:23; उत्पत्ति 3:16)।
3. पाप का प्रभावः पाप ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच अलगाव लाया। मनुष्य अनेक प्रकार के शापों के अधिकार में आ गया जैसे कि बीमारी, गरीबी, जीवन में असफलताएँ जिन्हें शैतान ने उन्हें गुलाम बनाने के लिए इस्तेमाल किया (रोमियों 3:23; 6:23; यशायाह 59:1-2; 1 यूहन्ना 3:8)।
4. पाप के और अधिक प्रभावः पापी अनन्त सजा नर्क की आग में सहते रहेंगे (प्रकाशित. 20:11-15; 21:7-8)।
5. परमेश्वर का ईलाजः हर पापी के लिए उद्धार के संदेश में यूहन्ना 3:16 मुख्य केन्द्र होना चाहिए। परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है और इसलिए उसने अपने बेटे, यीशु मसीह के द्वारा बचाव का मार्ग बनाया है (रोमियों 5:8; यूहन्ना 3:17; लूका 19:10)।

उद्धार कैसे पाएँ / परमेश्वर के इलाज को कैसे स्वीकार करें?

अ) मन फिराओ - यीशु ने लूका 13:2-5 में कहा, "यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नष्ट होगे।" यह एक बुलावा है जहाँ हम अपने जीवन से, जो प्रभु को महिमा नहीं लाता है पूरी तरह फिरते हैं और यीशु के पीछे चलने लगते हैं (लूका 15:17-19; 19:8-9)।

आ) स्वीकार करो - तुम्हें हर चीज में यीशु को अपने जीवन का मालिक होने देने का इच्छुक होना है। इस इच्छा के साथ-साथ, तुम्हें अपने मुँह से स्वीकार करना है कि यीशु तुम्हारा मालिक हो। तुमने पहले ही विश्वास कर लिया है कि उसके अलावा

कोई दूसरा उद्धारकर्त्ता नहीं है। इसलिए तुम उसे अपने जीवन राज्य करने दे रहे हो। (रोमियों 10:9-10; भजन 23:1-3; 1 यूहन्ना 5:1)।

इस संदेश को पेश करने के बाद, जैसे व्यक्ति यीशु को स्वीकार करने की इच्छा प्रकट करता है, तुम नीचे दी गई पापी की प्रार्थना में उसकी अगुआई कर सकते हो:

"स्वर्गीय पिता, तेरे वचन को सुनने के ऐसे अवसर के लिए मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ। धन्यवाद करता हूँ कि तू ने यीशु को मेरे पापों के लिए मरने के लिए भेजा। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं एक पापी हूँ और मैं खुद को बचा नहीं सकता हूँ। प्यारे यीशु, इसलिए मैंने तुझे अपने जीवन का उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करने का फैसला किया है।"

प्रार्थना के द्वारा यीशु को स्वीकार करने में अगुआई के बाद, उसे शान्त रहने दें और अपने जीवन में शैतान की हर योजना को नष्ट करने के लिए प्रार्थना करने दें। तुम परमेश्वर से माँगो कि वह उसे अपनी शान्ति, आनन्द और उसके पीछे चलने के लिए दृढ़ इच्छा से भर दे। इसके साथ साथ, यूहन्ना 1:11-12 खोलो और नीचे दिए प्रश्न पूछो:

1. इस वचन के अनुसार, कौन परमेश्वर की सन्तान बन सकता है?
2. क्या तुमने अब विश्वास किया है और यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार किया है?
3. अब जैसे तुमने यीशु को स्वीकार करने के लिए प्रार्थना की है तो तुम क्या बन गए हो?

<u>फालो-अप</u>

क. परिचय

सुसमाचार प्रचार में, इसके प्रचार के बाद जो इसे स्वीकार करते हैं उनमें दिलचस्पी रखना और उनसे मिलते रहने का कार्य सबसे बड़ा कार्य है। एक प्रभावशाली फालो-अप के बिना, किया गया काम व्यर्थ है।

ख. यह महत्त्वपूर्ण है

स्वभाविक है कि मसीह के लिए जीता गया हर व्यक्ति मसीही समाज से कुछ ध्यान और अच्छी देखभाल चाहता है, और इसके बिना, वे इसके बारे में जल्दी ही भूल जाएँगे। फालो-अप सुसमाचार प्रचार के गुणा होने को जन्म देता है, जिससे कलीसिया की वृद्धि होती है। इसका अर्थ यह है कि अच्छा फालो-अप और ज्यादा लोगों को चेले बनाता है। वे बदले में सुसमाचार प्रचार के फल को बढ़ाते हैं। आओ हम मत्ती 13:1-23 पढ़ें।

यीशु ने कहा कि चार प्रकार की भूमि होती है जो मनुष्यों के भिन्न-भिन्न प्रकार के हृदयों को दर्शाती है जो परमेश्वर के वचन को ग्रहण करते हैं। वह कौन कौन सी है?

प्र – 1. मार्ग किस भाग को दर्शाता है?

प्र – 2. पथरीली भूमि कौन सा हृदय दर्शाता है?

प्र – 3. कुछ झाड़ियों में गिरे। यह भूमि किस बारे में है?

प्र – 4. अन्त में, कुछ अच्छी भूमि पर गिरे। वे कौन से हैं?

अब, आओ हम सच्चाई का सामना करें। इन भूमियों का निष्फल होने का कारण क्या था? सुसमाचार के प्रचार में इनको जब लोगों के जीवनों के सम्बंध में देखते हैं तो पता चलता है कि स्वभाविक तौर पर लोग अपने जीवन परमेश्वर के लिए तब तक पूरी तरह समर्पित नहीं करते जब तक वे परमेश्वर के आत्मा द्वारा छुए नहीं जाते। इसका एक उदाहरण नतनएल है (यूहन्ना 1:45-46)। कुछ आँखें बंद करके भी काम करते हैं (प्रेरितों 26:20; 2 कुरिं. 4:3-6)। दूसरे भी आत्मिक तौर पर कमज़ोर हैं – शैतान के बंधन या कैद में (यशायाह 61:1-2)।

यह हालात हमें बताते हैं कि एक नया जन्म पाए व्यक्ति के पास हमें कई बार जाना होता है जब तक कि वह प्रभु में अपने पैरों पर अच्छी तरह खड़ा नहीं हो जाता। (मत्ती 25:31-46; 5:43-48; लूका 13:6-9)।

ग. एक विश्वासी के लिए फालो-अप के उपयोगी कदम

1. एक समाज में रह रहे लोगों की संख्या का पता लगाओ जो उद्धार पाए हैं लेकिन जिनका फालो-अप नहीं किया जा रहा है।
2. उनके लिए गम्भीरता से, मध्यस्थता की प्रार्थना करने लगो (कुलु. 1:3-13; जकर्याह 4:6-7; याकूब 5:16-17)।

3. लूका 10:1-7 में दिया दो-दो का तरीका अपनाओ (दो लोग का एक जगह एक समय में इकट्ठे जाना)।
4. उनकी आत्मिक और शरीरिक समस्याओं का पता लगाकर और जितनी तुम मदद कर सकते हो करके एक असली परवाह दिखाओ।
5. जिनका आप फालो-अप कर रहे हो वे आपको फालो-अप करने से रोकने के लिए कई प्रकार के बहाने बना सकते हैं। इसलिए आपको उनके साथ धीरज रखना है (यूहन्ना 13:14; लूका 10:31-37)।
6. इस प्रकार की जीवन-शैली बनाओ जिससे लोग आपके पास आसानी से आ सकें और आप भी सब प्रकार के लोगों के पास पहुँच सको।
7. अपने आप को ग्रहणयोग्य ठगराने की कोशिश कर और अपने फालो-अप के दौरान प्रार्थना का एक योद्धा बन।
8. अन्त में जैसे तुम लोगों से बातें करते हो तो पवित्र आत्मा की अगुआई के प्रति संवेदनशील बने रहो।

मनुष्यों को जीतनेवालों के लिए दस मार्गदर्शक
इन मार्गदर्शकों को ध्यान में रखना जरूरी है:

1. **मुझे इसे जीना है।** मैं दूसरों से नहीं कह सकता, "जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो, लेकिन वैसा मत करो जैसा मैं करता हूँ।" उन्हें मुझ में मसीह को देखना चाहिए (1 कुरिं. 4:9)। मेरी सबसे पक्की गवाही मेरा रोजाना का जीवन है।
2. **मुझे लोगों से प्रेम करना है।** मैं ढोंग नहीं कर सकता हूँ। दूसरा व्यक्ति मेरे अभिप्राय को तुरन्त भाप लेता है। सुसमाचार प्रचार का सामर्थ के बारे में प्रकाशित. 22:17 में बताया गया है, 'आत्मा और दुल्हान दोनों कहती हैं, "आ!"' जब दूसरों के लिए मेरी परवाह मनुष्यजाति के लिए पवित्र आत्मा की परवाह के जैसी है तो व्यक्ति के लिए एक ऐसी दिलचस्पी पैदा होती है जो सुसमाचार प्रचार में परिवर्तित होती है।
3. **मुझे लोगों से मिलना चाहिए।** यीशु इस बात में स्वर्ग का कलाकार था। उसके लिए कोई भी अजनबी नहीं था। पौलुस ने गवाही दी, "मैं सब मनुष्यों के लिए सबकुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ" (1 कुरिं. 9:22)। कृपा द्वार खोलती है (इफि. 4:32)। यह एक स्वीकारात्मक प्रतिक्रिया लाएगी।
4. **मुझे जरूरत को ढूँढना चाहिए।** यीशु ने कहा, "भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है : मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ" (मरकुस 2:17)।
   आपको आश्चर्य होगा कि कितने लोग बात करने के लिए तैयार हैं। उन्हें केवल किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जिसमें वे भरोसा कर सकते हैं। जकई संकट में था। बिना बुलाए, यीशु उसके पाप के बारे में बात करता है। मनुष्य की जरूरत के साथ यह सम्पर्क की जगह है।
5. **मुझे सूचित करना चाहिए।** वादविवाद में फँसने से इन्कार करो। सामरी स्त्री ने कहा, "हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ आराधना करनी चाहिए यरूशलेम में है" (यूहन्ना 4:20)। उसका सर उसे नहीं सता रहा था। यह उसका दिल था। कलीसिया से पहले उसे मसीहा की जरूरत थी; धर्मविधि से पहले उसे उद्धारकर्त्ता चाहिए था। "मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।" यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ" (यूहन्ना 4:25-26)।
6. **मुझे मसीह पर एकाग्र रहना चाहिए।** मैं अपनी गवाही में "मैं" में इतना खो सकता हूँ कि आत्मिक घमण्ड व्यक्ति को जिसे हम गवाही दे रहे हैं नाराज़ कर सकता है। यूहन्ना बपतिस्मादाता का सिद्धान्त अभी भी लागू होता है, "अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ" (यूहन्ना 3:30)। मेरा काम यीशु को प्रस्तुत करना है (यूहन्ना 12:32)। मसीह आकर्षण का केन्द्र है।
7. **मुझे व्यवहार-कौशल इस्तेमाल करना चाहिए।** यह दूसरे व्यक्ति की भावनाओं के प्रति एक संवेदनशीलता प्रकट करता है। यह परख की एक आत्मा है। "पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी" (याकूब 1:5)। स्वभाविक रहें। एक अच्छा सुननेवाला बनें। विवेकी प्रश्न पूछो।
8. **मुझे व्यक्ति को एक फैसले तक लाना है।** यह पवित्र आत्मा के सामर्थ और उपस्थिति के द्वारा ही किया जा सकता है (यूहन्ना 16:8)। दूसरा मौका शायद कभी न मिले। अवसर परमेश्वर द्वारा दिया होता है। इसे दाँव पर मत लगाओ। फैसले के लिए जोर दो। "तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि माँगते नहीं" (याकूब 4:2)। लोग न्याय के दिन आपके बारे में कहने न पाएँ, "इसने मुझे कभी भी मसीही बनने के लिए नहीं कहा।"
9. **मुझे उन्हें परमेश्वर की आवाज सुनना सिखाना है।** मेरा काम उन्हे मसीहा के पास लाना है। कितनी बार प्रचारक अपना ही परिचय करवाता है। "उस से मेलमिलाप कर तब तुझे शान्ति मिलेगी; और इससे तेरी भलाई होगी" (अय्यूब 22:21)। जिस

व्यक्ति के साथ तुम बात कर रहे हो पहली बार परमेश्वर की आश्वासन और शान्ति की आवाज सुनने पाए, और तुमने शक्ति प्रदान कर दी है।

यह व्यक्ति को बाइबल के दो या तीन मूल वचनों को सिखा कर किया जा सकता है। खोजी को परमेश्वर के वचन के पास लाओ। तुम्हारे मित्र को तुम्हारे उसके पास से चले जाने से पहले पता चल जाए कि परमेश्वर ने उससे बात की है। इन शब्दों की अपनी एक गारंटी है।

एक उदाहरण:

"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है" (यूहन्ना 5:24)। यह परमेश्वर के पुत्र के वचन हैं। वे तुम्हारे लिए बोले गए हैं। वे अन्तिमता और अधिकार के साथ बोले गए हैं।

10. **मुझे यह बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहिए कि परमेश्वर को जानने और परमेश्वर के बारे में जानने में अन्तर है।** अफवाहें काफी नहीं हैं। जन्म कुछ ऐसा नहीं है जो सुना-सुनाया है। "जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं, क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं। परन्तु वे पराए के पीछे नहीं जाएँगी, परन्तु उससे भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानतीं।" (यूहन्ना 10:4-5)।

मैं परमेश्वर को तब जानता हूँ जब मैं उसके साथ गम्भीर हो जाता हूँ। "परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा" (याकूब 4:8)। परमेश्वर ने अपनी इच्छा एक वाचा, समझौता, या करार में व्यक्त की है। इस पर यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा हस्ताक्षर हुए हैं। जिस क्षण मैं इस लिखित वचन की ओर विश्वास दिखाता हूँ और समझौते में व्यक्तिगत रूप से शामिल हो जाता हूँ, उसी क्षण सारा समझौता, या वाचा मेरे लिए लागू हो जाती है।

अगर मैं खोजी का परमेश्वर के वचन के साथ मिलाप नहीं करवाता हूँ तो वह खो जाएगा। शैतान नाश्ते से पहले ही खोजी को निगल जाएगा। वह इतनी चतुराई से झूठ बोलेगा कि खोजी दिन ढलने से पहले ही अपने सांसारिक साथियों के सामने क्षमा माँगता होगा।

<u>याद रखें: अधिकार परमेश्वर के वचन में है!</u>

खोए हुओं तक पहुँचें और आप एक मनुष्यों को जीतनेवाले हैं! (मनुष्यों को जीतने के मूल पाठ)

पाठ एक – मनुष्यों को जीतने की बुद्धि

मसीही पृथ्वी पर सबसे ज्यादा धन्य और विशेषाधिकृत लोग हैं। मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल होने के लिए धन्य। दूसरों को उसी सम्बंध में लाने के लिए विशेषाधिकृत।

हम में से कई पृथ्वी पर सबसे बुद्धिमान लोगों में भी हैं, हालाँकि यह शायद हमेशा प्रकट नहीं होता है, खासकर हमारे गैरमसीही सहकर्मियों और बराबर के लोगों की ओर, क्योंकि यह सच है कि हम में अक्सर कुछ चीजों में बुद्धि की कमी होती है। यीशु ने खुद कहा कि "इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति-व्यवहार में ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं" (लूका 16:8)। वह प्रकट बात पर जोर दे रहा था कि संसार के कई लोग कई मसीहियों की तुलना में कुछ चीजों में बहुत ही बुद्धिमान हैं। फिर भी, उनकी बड़ी बुद्धि में एक गम्भीर कमी है। यह बुद्धि इस जीवन तक ही सीमित है, यानि, वे ज्योति की कई सन्तानों की तुलना में अपनी पीढ़ी में ही बुद्धिमान हैं।

हम मसीही शायद हमेशा उतने चालाक नहीं होते हैं जितना हमें होना चाहिए, लेकिन हम अन्त में अपने गैरमसीही बराबर वालों से बुद्धिमान साबित होंगे, क्योंकि अनन्तकाल बता देगा कि हमारी बुद्धि समय में या इस वर्तमान समय तक ही सीमित नहीं थी। यह एक ऐसी बुद्धि जान पड़ेगी जिसने अनन्तकाल के बारे में सोचा था। प्रकट हो जाएगा कि हमने कुछ अच्छे फैसले किए थे जिन्होंने हमारे अनन्त भविष्य पर अनुग्रहपूर्वक प्रभाव डाला था।

इन फैसलों में से पहला और सबसे बड़ा फैसला था मसीह की प्रभुता के अधीन समर्पित होना। यह वो है जिसे बाइबल कहती है "जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है" (2 तीमुथियुस 3:15)।

दूसरा बड़ा फैसला जो हम कर सकते हैं वह है मसीह का एक राजदूत बनना और जहाँ कहीं भी हम हों, जिस किसी से भी हम मिलें, विश्वासयोग्यता से उसका प्रतिनिधि होना। इसमें हमारा मसीही चरित्र और जीवन-शैली शामिल है जैसे जैसे हम अपनी वचनबद्धता के सिद्धान्तों को विश्वासयोग्यता से जीने लगते हैं। इसमें मसीह के बारे में बोलना, उसके प्रति अपनी स्वामिभक्ति स्वीकार करना, और दूसरों को उसके बारे में गवाही देना भी शामिल है। उन्हें बताना कि मसीह संसार में क्यों आया और उसने उनके लिए क्या किया है। इस प्रकार हम उसके गवाह बन जाते हैं। हम उन में गिने जाते हैं जो अपने साथियों में मसीह की जानकारी देते हैं, और परमेश्वर की सहायता से उनको उद्धार में लाने की कोशिश करते हैं।

वे सब जो यह फैसला करते हैं और दृढ़ निश्चय के साथ ऐसा करते रहते हैं उन में से हैं जिनके बारे में बाइबल कहती है, "जो बुद्धिमान है, वह आत्माओं को जीत लेता है" (नीतिवचन 11:30)। दूसरों को मसीह के बारे में बताना और उन्हें परमेश्वर के उद्धार में लाना इस जीवन के सबसे बड़े रोमांचों में से है। लोगों के जीवनों को बदलते और परिवर्तित होते देखना, वर्णन से परे उत्तेजना से भरा हुआ और लाभप्रद दोनों है। यह वो बुलावा और सेवकाई है जो सब विश्वासियों के लिए है। इस आनन्दपूर्वक विशेषाधिकार से कोई भी वंचित नहीं रहना चाहिए। बेशक आप भी इस खास दल में गिने जाएँगे। आपका इस अध्ययन सामग्री का पढ़ना इस सेवकाई में आपकी रुची प्रकट करता है और मुझे भरोसा है कि जैसे जैसे आप इसे पढ़ते और अध्ययन करते जाएँगे तो इस प्रकार परमेश्वर की सेवा करने की आपकी इच्छा और योग्यता भी विकसित और बढ़ती जाएगी।

अब पैंतीस साल से ज्यादा हो गया है जब मैं मसीह के उद्धार में आया था। इसके तुरन्त बाद मैं दूसरों को अपने अनुभव के बारे में बताने लगा था और मुझे अब भी कई लोगों का मसीह को उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करने की वह उत्तेजना और रोमांच साफ साफ याद है। उन्हें उनके नए विश्वास में बढ़ते हुए देखना कितना लाभप्रद था। उन्हें भी दूसरों को मसीह में लाता, और सुसमाचार का जीवनों को छूते और बदलते देखना कितना संतोषजनक था। इन सारे वर्षों के बाद भी रोमांच बना हुआ है। यह अब भी सबसे बड़े अनुभवों में से है जो कोई पा सकता है। परमेश्वर के अनुग्रह से जीवनों को प्रभावित और बदलते होते, और सबसे महान कहानी का लगातार विजयी होते देखना। आओ हम मिलकर मनुष्यों को जीतने की बुद्धिमता पर विचार करते हैं।

सकारात्मक मार्ग अपनाओ:

जैसे हम इस उत्तेजक सेवकाई के प्रभावों पर विचार कर रहे हैं तो मैं आप को उत्साहित करना चाहता हूँ कि आप इसे एक बड़े सकारात्मक तरीके से देखें। विश्वास करें कि जो कुछ भी बाइबल इस विषय पर कहती है व्यक्तिगत तौर पर आप पर लागू होता है। कोई भी वैध कारण नहीं है कि आप इस सेवकाई में क्यों सफल और प्रभावशाली न हों। हर सकारात्मक आपत्ति जो आप खड़ी करें उसका उत्तर और हल परमेश्वर के पास है। ऐसी कोई बाधा नहीं है जिसे वह दूर नहीं कर सकता है। अगर आप इच्छुक हैं तो परमेश्वर आपको, हर रुकावट जो आपको रोकने की कोशिश करेगी, को जीतने के लिए मदद करेगा। वह आपकी इच्छा और दृढ़

निश्चय को लेगा और इसे मनुष्यों को जीतने की सफलता में बदल देगा। आपके जीवन और गवाही के द्वारा कई उद्धार में लाए जाएँगे और परमेश्वर का राज्य बहुत बढ़ता जाएगा।

कुदरती तौर पर, उपलब्धि और सफलता के लिए एक मात्र सबसे शक्तशाली कारण होता है विश्वास। उपलब्धि और सफलता के लिए स्थिर भरोसा और सकारात्मक आशा अत्यावश्यक और अनिवार्य चाबियाँ हैं। अगर तुम विश्वास नहीं करते कि तुम एक खास काम कर सकते हो, तो संकेत हैं कि तुम कभी नहीं कर सकोगे। सफलता बेखबर को कभी नहीं मिलती है। लोग लगभग हमेशा वही पाते हैं जो वे जीवन से आशा करते हैं। यह मनुष्यों को जीतने में भी उतना ही सच है जितना जीवन की दूसरी बातों में है, क्योंकि यह जीवन का एक कभी न बदलने वाला नियम है कि "मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा" (गलातियों 6:7-8)। अगर तुम शक और निराशावाद के नकारात्मक विचार अपने मन में रखते हुए बोते हो तो तुम कभी भी सकारात्मक, प्रभावशाली, और फलदायक फसल नहीं काटोगे। इसलिए, जैसे आप इन पाठों का अध्ययन करो तो सकारात्मक और आश्वस्त रहो कि परमेश्वर दूसरे लोगों को अपने राज्य में जीतने के लिए आपको एक असाधारण तरीके से इस्तेमाल करने वाला है। याद रहे कि परमेश्वर आपके साथ है! उसने आपको नियुक्त किया है! वह चाहता है कि आप सफल हों!

परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने वाला है, और अगर आप इच्छुक हैं तो वह उन्हें आपके द्वारा पूरा करेगा।

परमेश्वर का पवित्र आत्मा अब आपके अन्दर काम कर रहा है। वह आपको उन्हीं लोगों के पास ले जाएगा जिनसे वह चाहता है आप बात करें। वह आपके मुँह में सही शब्द डालेगा। वह उन शब्दों को अधिकार प्रदान करेगा और उन्हें सकारात्मक तौर पर प्रभावशाली बनाएगा। पवित्र आत्मा सब बातों को सही समय पर और सही अवसर पर आपको याद दिलाएगा। वह लोगों की जरूरतों में जिनको आप सुसमाचार सुना रहे हैं आपको अन्तर्दृष्टि देगा। आप खुद को बुद्धि के शब्द बोलते हुए सुनोगे, वो शब्द जिनको आपने पहले न तो तैयार किया था और न पहले उनके बारे में सोचा ही था। यह परमेश्वर का काम है जिसमें आप शामिल हो जाओगे और अगर आप इच्छुक माध्यम हैं तो वह अपने उद्देश्य हासिल करने के लिए आपके द्वारा काम करेगा।

बुद्धिमानों के लिए एक शब्द

कुछ हद तक बुद्धि चुनने का मामला है। अगर आपके पास थोड़ी बुद्धि है तो आप और बुद्धिमान बनना चुन सकते हो क्योंकि बुद्धि में बढ़ने की प्रक्रिया में सही चुनाव करना शामिल है। जब परमेश्वर एक रात एक सपने में उसको प्रकट हुआ और कहा, "जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूँ, वह माँग" (1 राजा 3:3-15) तो सुलेमान को इसकी जानकारी थी। क्या मौका था! सुलेमान वह सबकुछ माँग सकता था जो उसका दिल चाहता था लेकिन जो थोड़ी बुद्धि उसके पास थी उसने उसे और बुद्धि पाने के लिए इस्तेमाल किया। उसने दीन होकर विनती की कि जैसे वह शासन करने वाला है वह अपनी प्रजा का सही न्याय करने और भले बुरे को परखने के लिए "समझने की शक्ति" पाए।

इस अध्ययन में आप कुछ सही फैसले करने के अवसर पाओगे जो बहुत ही बुद्धिमान साबित होंगे। परमेश्वर की एक नए जोश और दृढ़ निश्चय के साथ सेवा करने के फैसले। अपने विश्वास के बारे में बताने के हर अवसर को इस्तेमाल करके और दूसरों को परमेश्वर के लिए प्रभावित करके समय का सही उपयोग करने के फैसले। जैसे आप इस नए संकल्प को शुरू करते हैं तो परमेश्वर लगातार आपकी बुद्धि में जोड़ता रहेगा। आप परमेश्वर और अपने साथी व्यक्ति के बारे में कितना कुछ सीखते जाएँगे। आप और ज्यादा बुद्धि पाते जाएँगे और आप अपना नाम उनमें पाएँगे जिन्हें परमेश्वर बुद्धिमान मानता है। क्योंकि उसके विचार में "जो बुद्धिमान है, वह आत्माओं को जीत लेता है।"

बुद्धि और मनुष्यों को जीतना

"धर्मी मनुष्य का फल जीवन का वृक्ष है, और जो बुद्धिमान है, वह आत्माओं को जीत लेता है" (नीतिवचन 11:30)।

बुद्धि और मनुष्यों को जीतना साथ साथ चलते हैं क्योंकिः मनुष्यों को जीतने में परमेश्वर की बुद्धि अनिवार्य है। हम अपनी स्वभाविक बुद्धि में लोगों को मसीह के लिए जीतने के बारे में आशा नहीं कर सकते हैं। "परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है" (1 कुरिं. 2:14)। इसलिए जब कभी कोई किसी को मसीह में लाता है तो वे ऐसा परमेश्वर की बुद्धि से कर रहे हैं – परमेश्वर की बुद्धि उनके द्वारा कार्य कर रही है।

मनुष्यों को जीतना बुद्धिमानी क्यों मानी जाती है?

1. क्योंकि वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर रहा है। स्वर्ग में जाने से पहले जो आन्तिम आज्ञा यीशु ने दी थी उसे "महान कार्यधिकार" कहा जाता है। इसमें विश्वासियों को सारे संसार में हर व्यक्ति को सुसमाचार सुनाने के लिए भेजने के कलीसिया के प्रयाण (मार्चिंग) आदेश हैं।

2. परमेश्वर की बुद्धि उनमें प्रकट रूप से कार्य कर रही है जो सफलतापूर्वक लोगों को परमेश्वर के पास लाते हैं क्योंकि इस प्रकार का कार्य मनुष्य की बुद्धि से कभी भी पूरा नहीं किया जाता है।
3. मनुष्यों को जीतनेवाला प्रक्रिया के दौरान और ज्यादा मसीह के जैसा बन रहा है क्योंकि यीशु मसीह खुद सबसे बड़ा मनुष्यों को जीतनेवाला था।
4. मनुष्यों को जीतनेवाले में मसीह का सामर्थ कार्य कर रही है। यीशु ने पतरस और उसके साथियों को कहा, "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा" (मत्ती 4:19)। हर मसीही में जो लगातार सुसमाचार सुनाता है और लोगों को जीतता है मसीह का सामर्थ प्रकट होता है। यीशु उनके अन्दर कार्य कर रहा है, वो कर रहा है जो उसने कहा करेगा - उन्हें मनुष्यों को पकड़नेवाले बनाना!
5. मनुष्यों को जीतनेवाला बुद्धिमान है क्योंकि वह काम कर रहा है, केवल इसी समय के लिए ही नहीं बल्कि अनन्तकाल के लिए कर रहा है। वह "स्वर्ग में धन इकट्ठा कर रहा है।" उसकी मेहनत का फल न केवल यहाँ उसके जीवन भर फायदेमन्द रहेगा बल्कि अनन्तकाल में भी उसके साथ चलेगा।
6. वह एक ऐसा काम कर रहा है जो इस संसार के सबसे बुद्धिमान (अविश्वासी) कभी नहीं कर सकते हैं। यह उसे संसार के किसी भी अविश्वासी से बुद्धिमान बनाता है।
7. मनुष्यों को जीतनावाला हर व्यक्ति जिस तक वह सुसमाचार के साथ पहुँचता है उसकी अनन्त प्रशंसा पा रहा है क्योंकि वह व्यक्ति शैतान, पाप और अनन्त मृत्यु की शक्ति से बचाया गया है। वे परमेश्वर के साथ अनन्त संगति में लाए गए हैं।
8. मनुष्यों को जीतनेवाले बुद्धिमान हैं क्योंकि उन्होंने स्वर्गीय पिता की अनन्त सराहना जीत ली है और उसके हृदय को अनन्त आनन्द लाया है।

बाइबल इसे बहुत स्पष्ट कर देती है कि परमेश्वर मनुष्यों के जीतनेवालों को एक खास सम्मान देता है। केवल इस बात को ही हमें एक मनुष्यों को जीतनेवाला बनने की शक्तिशाली इच्छा से भर देना चाहिए, लेकिन और भी कई दूसरे कारण हैं और जैसे हम अपना अध्ययन जारी रखें हम उनका भी पता लगाएँगे।

याद रखें: "जो बुद्धिमान है, वह आत्माओं को जीत लेता है।"

पाठ 2 – मनुष्यों को जीतनेवाला क्या है?

बाइबल स्पष्ट रूप से दिखाती है कि यह परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य है कि हर मसीही अपने विश्वास की गवाही दे और फलस्वरूप दूसरों को मसीह के लिए जीते। लेकिन दुख के साथ हमें कहना पड़ता है कि ऐसा नहीं होता है और करोड़ों ऐसे मसीही हैं जो दूसरों को जीतते नहीं हैं। अगर ऐसा होता तो अब तक सारा संसार परमेश्वर के लिए जीता गया होता। इस अध्ययन में आगे चलकर हम उन कुछ कारणों को देखेंगे कि क्यों कई अपने विश्वास के बारे बताते नहीं हैं और कि ये आपत्तियाँ या डर किस प्रकार जीते जा सकते हैं।

इतने में आओ हम खुद से पूछें, **"एक मनुष्यों को जीतनेवाला क्या है?"**

1. एक मनुष्यों को जीतनेवाला एक मसीही है, जिसे मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार का एक असली अनुभव प्राप्त है, और परमेश्वर के आत्मा के द्वारा नया जन्म होने का एक मजबूत आश्वासन है। जब तक यह सच नहीं है, तब तक गवाह के पास कहने को कुछ भी नहीं है। जब तक हमने खुद अपने लिए उद्धार की सच्चाई को अनुभव नहीं किया है, हमारे पास कुछ भी कीमती दूसरों को देने के लिए नहीं है। फिर भी, एक बार जब हमने मसीह पर विश्वास किया और उसे स्वीकार किया है, परमेश्वर उम्मीद करता है कि हम तुरन्त अपना विश्वास दूसरों के सामने स्वीकार करने लगें और उन्हें भी उसी अनुभव में लाने की हर कोशिश करें।

यह बात एक सुन्दर तरीके से लूका 8:26-40 में गिरासेनियों की कहानी में बताई गई है। यह नाटकीय वर्णन एक मनुष्य के बारे में है जिसमें "दुष्टात्माएँ थीं", जिसकी यीशु के साथ एक शक्तिशाली मुठभेड़ हुई। वह अपने सतानेवालों से एक नाटकीय तरीके से छुड़ाया गया और 35 आय में हम उसे "यीशु के पाँवों के पास कपड़े पहिने और सचेत बैठे हुए" देखते हैं। उसने बड़ी उत्सुकता

से आग्रह किया कि वह यीशु के साथ रहे, शायद उसने आशा की होगी कि उसे उसके साथ भ्रमण करने दिया जाए, लेकिन यीशु ने उत्तर दिया, "अपने घर को लौट जा और लोगों से बता कि परमेश्वर ने तेरे लिए कैसे बड़े बड़े काम किए हैं।"

"सामरी स्त्री" भी एक व्यक्ति की आदर्श घटना है जो यीशु से अपनी मुलाकात के तुरन्त बाद एक प्रभावशाली गवाह बन जाती है। (यूहन्ना 4:1-42)। यीशु के उसके जीवन में काम करने के तुरन्त बाद वह अपने गाँव में गई और अपने लोगों से कहने लगी, "आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?" उसकी गवाही का सीधा परिणाम यह हुआ कि "उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री के कहने से यीशु पर विश्वास किया" (आय. 39)। उन्होने यीशु से आग्रह किया कि वह उनके गाँव में दो दिन तक रहे और "उसके वचन के कारण और भी बहुत से लोगों ने विश्वास किया" (आय. 40-41)।

2. <u>एक मनुष्यों को जीतनेवाला खोई हुई मनुष्यजाति के लिए "प्रभु का बोझ" "महसूस" करता है और उसकी इच्छा में भागीदार होता है कि सब मनुष्य सत्य को जो यीशु मसीह में है भली भाँति पहचान लें।</u> (1 तीमु. 2:4)। जैसे जैसे हम परमेश्वर के साथ अपने सम्बंध में बढ़ने लगते हैं, वह अपने हृदय की बातें हमें बताने लगता है और हम उन चीजों का बोझ अनुभव करने लगते हैं जो उसका बोझ है। प्रार्थना की घनिष्ठता, बातचीत, और परमेश्वर के साथ संगति के द्वारा, हम जीवन और लोगों की ओर एक नई संवेदनशीलता बनाना शुरू करते हैं। हमारे पुराने विचार और दृष्टिकोण फेंक दिए जाते हैं और हम "चीजों को वैसे देखने लगते हैं जैसे परमेश्वर उन्हें देखता है, और महसूस करने लगते हैं जैसे परमेश्वर उन्हें महसूस करता है।" सच्चाई यह है कि परमेश्वर का स्वभाव और चरित्र हमारे स्वभाव और चरित्र के साथ गूथने लगते हैं। हम उसके स्वरूप और समानता में बढ़ना शुरू कर रहे हैं।

इस नई आत्मिक बढ़त का एक नतीजा यह है कि हम अब लोगों को एक भिन्न नज़र से देखते हैं। हमारा उनके बारे में एक नया दृष्टिकोण, एक नया विचार है। जहाँ पहले हमने किसी व्यक्ति के बारे में शायद ही परवाह की होगी, अब हम उसी व्यक्ति को वैसे ही देखते हैं जैसे यीशु उसे देखता है। हम उसके लिए महसूस करते हैं जैसे यीशु उसके लिए महसूस करता है। हमें उन पर तरस आता है, जैसे उसे उन पर तरस आता है। और हम उन्हें मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार के सुसमाचार को सुनाने के लिए उनके पास जाने लगते हैं।

हम खोई हुई मनुष्यजाति के लिए मध्यस्तता की प्रार्थना भी करने लगते हैं। किसी कानूनी या धार्मिक बन्धन की भावना से नहीं, बल्कि क्योंकि मसीह का जीवन और स्वभाव अब हमारे मनों और दिलों में है। जब हम लोगों को उनके पापों और अपराधों के कारण परमेश्वर से अलग देखते हैं तो हमारे दिल दुखते हैं। हम उनकी लालसा करते हैं, तरसते हैं कि वे सत्य की पहचान में आ जाएँ। हम बड़ी उत्सुकता से इच्छा करते हैं कि परमेश्वर उन्हें "अन्धकार के वश से छुड़ाकर, अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश" कराए।

3. <u>एक मनुष्यों को जीतनेवाला दूसरों को यीशु और जो उस पर भरोसा करते हैं उनको मिलनेवाले अदभुत उद्धार के बारे में बताने के अवसरों की उद्देश्यपूर्ण खोज में रहता है।</u> एक सच्चा मनुष्यों को जीतनेवाला न केवल दूसरों को मसीह के बारे में बताने के हर अवसर का भरपूर लाभ उठाता है, बल्कि वह ऐसा करने के अवसर बनाता भी है। जीवन में उसका मुख्य उद्देश्य सुसमाचार सुनाना और पुरुषों और स्त्रियों को मसीह के उद्धार में लाना है। फलस्वरूप वह अपना जीवन इस मुख्य आधार-वाक्य के ईर्द-गिर्द बनाता है। वह एक सफल व्यवसायी हो सकता है, लेकिन जीवन में उसका असली व्यवसाय मसीह के बारे में बताना है। उसका व्यवसाय उसकी और उसके परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए है, लेकिन जीवन में उसका असली उद्देश्य और उसके दिल की भस्म करनेवाली धुन पृथ्वी पर के सबसे महान कार्य में जुटना है, जो है लोगों को मसीह में लाना।

हालाँकि यह व्यक्ति अपने विश्वास के बारे में बताने में बहुत उत्सुक है, फिर भी वह पागलों की तरह इधर-उधर नहीं भागता रहता है और हर व्यक्ति पर जिससे वह मिलता है मसीह के दावों को थोपता नहीं है। वह हर दिन प्रार्थना करता है कि पवित्र आत्मा पुरुषों और स्त्रियों को उसके सामने लाएगा जिन्हें मसीह के बारे में सुनने की जरूरत है। फिर वह उन अवसरों के प्रति सतर्क और जाग्रत रहता है जिनका आत्मा उपाय करेगा। मनुष्यों को जीतनेवाला पवित्र आत्मा की धीमी आवाज अपने दिल में यह कहते सुनता है "यहाँ एक व्यक्ति है जिसे सुसमाचार सुनने की जरूरत है।" जैसे हम शान्ति और धीरज के साथ अपने दिल में पवित्र आत्मा की आवाज को सुनते हैं, वह हमें उन शब्दों की प्रेरणा देगा जिन्हें हमें बोलना चाहिए। वह हर मनुष्य के दिल और हालातों को जानता है और हमें उस सही तरीके के बारे में बताता है जिसके द्वारा अनन्त बातों की बातचीत शुरू की जा सकती है।

4. <u>एक मनुष्यों को जीतनेवाला जान-बूझकर दूसरों को गवाही देता है, अपना अनुभव उन्हें बताता है और उन्हें भी मसीह के साथ उसी अदभुत सम्बंध में लाने का प्रयास करता है।</u> कई सच्चे मसीही मनुष्यों को जीतने का काम कभी नहीं करते हैं क्योंकि वे भूल

से महसूस करते हैं कि उन्हें बाइबल और सम्बंधित विषयों का बहुत ही विस्तृत और व्यापक ज्ञान होना जरूरी है। वे भूल से विश्वास करते हैं कि दूसरों को मसीह में लाने के लिए एक सेमीनरी शिक्षा की जरूरत है। हालाँकि ऐसा नहीं है। सबसे प्रभावशाली साधन जो किसी भी मनुष्यों को जीतनेवाले के पास होता है वह है उनकी अपनी गवाही। अपने जीवन की कहानी बताना कि जब यीशु उसके जीवन में आया तो क्या हुआ था सुसमाचार की असलीयत के बारे में दूसरों को निश्चय दिलाने का बहुत ही शक्तिशाली और प्रभावशाली साधन है। हमने देखा है कि यही बात यीशु ने गिरासेनियों के दुष्टात्माओं से पीड़ित व्यक्ति से करने को कहा था जब उसे कहा - "अपने घर को लौट जा और लोगों से बता कि परमेश्वर ने तेरे लिए कैसे बड़े बड़े काम किए हैं।"

प्रकट है कि महान प्रेरित पौलुस ने व्यक्तिगत गवाही के प्रभाव को समझा था। जैसे हम नए नियम के वर्णन में उसकी यात्राओं को देखते हैं तो हम अक्सर उसे अपनी व्यक्तिगत गवाही बताते हुए सुनते हैं। उसने ऐसा फेलिक्स के सामने (प्रेरितों 24:1-23), फेस्तुस के सामने (प्रेरितों 25:1-9), और अग्रिप्पा के सामने (प्रेरितों 25:13-27) किया।

पौलुस एक बहुत ही भाषणपटु व्यक्ति, अच्छा शिक्षित, वाक्पटुता के सिद्धान्त सीखा हुआ और कुशल, और एक महान प्रचारक था, फिर भी उसने अपने दमिश्क की जीवन बदलनेवाली यात्रा के दौरान हुआ अनुभव बताने में लगातार व्यक्तिगत गवाही का साधारण वर्णन इस्तेमाल किया है (प्रेरितों 9:1-19)। अपने व्यक्तिगत अनुभव को बताने में कुछ बुनियादी तौर पर और शक्तिशाली तौर पर प्रभावी है। हम इसके बारे में इस अध्ययन में कुछ विस्तार से देखेंगे।

बिल्ली ग्रहम का प्रेरणात्मक उदाहरण

मुझे अभी भी एक महान सौभाग्य साफ-साफ याद है जिसका मैंने कई वर्ष पहले अपने विदेश यात्रा के दौरान एक बार आनन्द लिया था। मैं एक ईस्टर कैम्प में कई सौकड़ों नौजवानों को प्रचार कर रहा था। ऐसा हुआ कि डॉ. बिल्ली ग्रहम जो बड़े बड़े सुसमाचार प्रचार सभाएँ चला रहे थे, वहाँ अपने दल के साथ एक छोटी छुट्टी के लिए आए हुए थे। उनके एक बड़े अधिकारी कैम्प में आए जहाँ मैं प्रचार कर रहा था और इसके फलस्वरूप मुझे डॉ. ग्रहम और उनके दल के साथ होटल में खाना खाने के लिए बुलाया गया। जिस बात ने मुझे और चीजों से सबसे ज्यादा प्रभावित किया वह थी डॉ. ग्रहम ने जो एक जोशभरा भाषण अपने दल को दिया जिसमें उन्होंने बहुत जोर दिया कि व्यक्तिगत आधार पर मसीह के लिए गवाह होने के वे हर अवसर के लिए संवेदनशील रहें। उन्होंने कहा कि क्योंकि वे कुछ दिन की छुट्टियों पर हैं उसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें मसीह के बारे में जानकारी देने के अवसरों के लिए सतर्क नहीं रहना है। उन्होंने यह भी कहा कि हालाँकि वे विशाल सुसमाचार प्रचार सभाओं में भारी भीड़ को आते देख रहे हैं इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार की सेवकाई के अपने बुलावे को पूरा करने के अधिकार को अनदेखा करना चाहिए।

अगले सप्ताह डॉ. ग्रहम हर रात भारी भीड़ को प्रचार कर रहे थे। उन्होंने मुझे बुलाया था कि मैं स्टेज पर उनके साथ बैठूँ जिसे मैंने खुशी से स्वीकार किया। मुझे साफ साफ याद है मैं उनके पीछे बैठा था जैसे उन्होंने अपना "द होम" विषय पर एक महान उपदेश दिया। और जैसे उन्होंने आग्रह किया तो उस रात कई सैकड़ों लोग आगे आए। यह एक ऐसा अवसर और एक कभी न मिटनेवाला अनुभव था जो मेरे मन पर छाप छोड़ गया। जब मैंने उनसे बाद में बात की और कहा कि जो कुछ उन सभाओं में हो रहा था उससे मैं कितना गहरा प्रभावित हुआ था, तो उन्होंने बड़ी दीनता से उत्तर दिया कि यह उनका काम नहीं था, बल्कि केवल पवित्र आत्मा का कार्य था। उन्होंने विनम्रता से कोई भी श्रेय या कोई महिमा लेने से इन्कार करते हुए, सारा श्रेय परमेश्वर और उसके अनुग्रहकारी आत्मा को दिया।

5. एक मनुष्यों को जीतनेवाला न केवल अपने उद्धार के व्यक्तिगत अनुभव की गवाही देता है, बल्कि वह व्यक्ति को मसीह में लाने की सक्रिय कोशिश करता है, उनके साथ प्रार्थना करने की ताक में रहता है और उन्हें मसीह को उनका उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करने का अवसर देता है। एक मुख्य बात जो एक भावी मनुष्यों को जीतनेवाले को रोकती और रुकावट डालती है वह है इस काम को कैसे करना है की जानकारी न होना। यह कुछ ऐसा है जिसे लोगों को मसीह में लाने की कला के कुछ बुनियादी प्रशिक्षण के द्वारा ठीक किया जा सकता है, और यहाँ दिए पाठ इस में सहायता कर सकते हैं। यह माँग करने से कोई उद्देश्य पूरा नहीं होगा कि मसीही दूसरों को मसीह में लाएँ, जब तक हम उन्हें मार्गदर्शन और प्रशिक्षण देने के लिए तैयार न हों जो उन्हें ऐसा करने के योग्य बनाएगा।

अगर एक व्यक्ति कोई काम करने के बारे में सही में अनजान है तो यह बेशक उसे ऐसा करने में सीमित करेगा। हालाँकि उलटा भी सच है। एक बार जब उन्हें पता चलता है कि कोई काम कैसे करना है और वे उस काम को करने में सफल होते हैं, तो उत्साह बनने लगता है और वे इसे दोबारा करने के इच्छुक हो जाते हैं। कभी कभी उनका उत्साह लगभग अतृप्य बन जाता है। वे उस काम

को हर समय करना चाहते हैं। परमेश्वर प्रदान करे कि ये संक्षिप्त अध्ययन ऐसा ही प्रभाव दिखाएँ। पवित्र आत्मा करे कि प्रशिक्षित, कुशल, उत्साही गवाहों की एक सेना खड़ी हो जाए जो मसीह के बारे में बताएँगे और भीड़ की भीड़ को उसके पास लाएँगे।

<u>सात कारण कि हमें क्यों मनुष्यों को जीतना है</u>

1. यीशु ने हमें इस अत्यावश्यक सेवा के लिए नियुक्त किया है। (प्रेरितों 1:8)
2. वह हमारा उदाहरण और आदर्श है।
3. उसने हमें इसी उद्देश्य के लिए पवित्र आत्मा से भरा है। (प्रेरितों 1:8)
4. पहली कलीसिया के आश्चर्यजनक बढ़त का कारण मनुष्यों को जीतना ही था।
5. हम उद्धार न पाए हुओं के ऋणी हैं। (रोमियों 1:4)
6. अवसर का दिन जल्दी ही समाप्त हो जाएगा।
7. हमें अपने भण्डारीपन का हिसाब मसीह को देना होगा।

पाठ तीन – मनुष्यों को पकड़नेवाले!

एक तुल्यरूपता जो यीशु ने अक्सर मनुष्यों को जीतने के बारे में इस्तेमाल की थी, वह मछली पकड़ने की थी। उसने पतरस और उसके साथियों को कहा "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों को पकड़नेवाले बनाऊँगा" (मत्ती 4:19)। जो शब्द यीशु ने इस्तेमाल किया था वह था "zogreo" जिसका अर्थ था "जीवित पकड़ना!" इस प्रकार उसने पतरस को बुलाया, और वह हमें बुलाता है, कि हम परमेश्वर के राज्य के लिए "लोगों को जीवित पकड़ें!"
प्रकट है कि बाइबल के दिनों में और उस संस्कृति में मछली पकड़ने का तरीका जालों के इस्तेमाल का था। फिर भी अगर हम मनुष्यों को पकड़ने और छड़ और बँसी के द्वारा मछली पकड़ने की तुलना करें तो हम कई सबक सीख सकते हैं। आओ हम इनमें से कुछ तुलनाओं को दें।

1. जहाँ मछली पकड़ती है वहाँ जाओ

यह टिप्पणी इतनी प्रत्यक्ष लगती है कि इसके बारे में बात करना बेकार लगेगा। कोई भी मछुआ मछली पकड़ने में अपना समय और कोशिश व्यर्थ नहीं गवाँएगा अगर उसे पता हो कि यहाँ पकड़ने के लिए कोई मछली नहीं हैं। यह स्नान के टब में छड़ डालने जैसा होगा। तुम महिनों भर वहाँ लगे रह सकते हो और फिर भी कुछ न पकड़ो, उसका कारण यही होगा कि टब में कोई मछलियाँ नहीं हैं और इसलिए कोई भी पकड़ी नहीं जाएगी।
यह तथ्य कितना प्रकट लगता है, फिर भी, हजारों ऐसे ईमानदार पास्टर हैं जो हर हफ्ते एक टब में मछली पकड़ने जाते हैं जहाँ कोई मछली नहीं है। मैं उन सुसमाचार प्रचार की सभाओं की बात कर रहा हूँ जो कलीसियाओं में लगातार चलाई जाती हैं जहाँ कोई भी अविश्वासी उपस्थित नहीं होता है। सप्ताह दर सप्ताह सुसमाचार एक बड़े उत्तम तरीके से विश्वासयोग्यता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। गीत, उत्तम सुसमाचार उपदेश, व्यक्तिगत गवाहियाँ ये सब अच्छा चारा हैं, लेकिन कोई फायदा नहीं। पापी तो वहाँ सुनने के लिए हैं ही नहीं। फिर भी प्रक्रिया चलती रहती है। कोई भी मछुआ ऐसी जगह में प्रयास नहीं करता रहेगा जहाँ स्पष्ट हो कि वहाँ कोई भी मछली पकड़ने के लिए नहीं है। वह अपना स्थान या अपना तरीका बदलेगा।
मैं कोई उत्सुक मछुआ नहीं रहा हूँ लेकिन मुझे कुछ समय याद हैं जब मैं एक लड़का था, मैं स्थानीय नदी में मछली पकड़ने जाता था। मेरे थोड़े बड़े, ज्यादा अनुभवी साथी ने कुछ चीजें सीखी हुई थीं जिनसे मुझे फायदा हुआ था। एक बात जो उसने सीखी थी कि जिस क्षेत्र में हम मछली पकड़ने वाले हैं वहाँ कुछ मछलियों को लाना जरूरी है। इसलिए हम सुबह जल्दी किसी दूसरे मछुए के आने से पहले जाते थे, और रोटी का चारा लगा देते थे। इससे पहले कि दूसरे भावी मछुए वहाँ आने लगते थे हमने कुछ अच्छा काम कर लिया होता था। हम जल्दी ही कुछ मछलियाँ पकड़ने लगते थे जिससे जो पकड़ नहीं सकते थे उन्हें ईर्ष्या और कुण्ठा होने लगती थी। उनमें से कुछ आश्चर्य करते थे कि हम ऐसी जगह में मछली कैसे पकड़ सकते थे। निश्चय करना होता है कि कुछ मछलियाँ हमारी जगह में आकर्षित हों। कुछ पास्टरों को इसके बारे में सोचना चाहिए और खुद से पूछना चाहिए, "कुछ अविश्वासी लोगों को अपने तालाब में लाने के लिए मैं क्या करूँ?" या, दूसरी ओर, वे उनकी सुसमाचार सभाएँ एक दूसरे ज्यादा सुलभ, ज्यादा मध्यम, और कम धमकी-भरी जगह में चलाने के बारे में सोच सकते हैं। कई कलीसियाएँ और कलीसिया की ईमारतें गैर मसीहियों के लिए कोई आकर्षण नहीं होती हैं। घटनाएँ और कार्यक्रम जो वहाँ किए जाते हैं उनकी संबद्धता कम ही है और नए लोगों के लिए कोई अपील नहीं होती है।

2. सही प्रकार का चारा इस्तेमाल करो

उसी तर्क के अनुसार सोचते हुए, हमें समय समय पर विचार करना चाहिए कि क्या हम सही प्रकार का चारा इस्तेमाल कर रहे हैं। मैं अक्सर पास्टरों को पूछता हूँ, "अगर आप मछली पकड़ने जाएँ तो क्या आप वो चारा ले कर जाएँगे जो आपको पसन्द है या जो मछली को पसन्द है ?" दोबारा इसका उत्तर इतना सरल है कि प्रश्न सहज लगता है। फिर भी सच्चाई यह है कि ज्यादातर मामलों में जब हम मसीही मनुष्यों को पकड़ने जाते हैं तो हम वो चारा इस्तेमाल करते हैं जो हमें पसन्द है और मछली को क्या अच्छा लगेगा के बारे में कुछ भी सोचते नहीं हैं।

यह सच है चाहे हम अपनी स्थानीय कलीसिया में मनुष्यों को पकड़ रहे हैं, या हम समाज में किसी सुसमाचार प्रचार में लगे हुए हैं। हमें उस प्रकार का चारा इस्तेमाल करना चाहिए जो कम से कम मछली के ध्यान को तो आकर्षित करेगा। यह बात सच है चाहे हम सुसमाचार प्रचार सभाओं के तरीके पर विचार कर रहे हैं, या बाहरी सुसमाचार प्रचार पर, या मसीही साहित्य, संगीत, नाटक इस्तेमाल करना, या कोई दूसरा "आकर्षण" आजमाना।

अधिकतर कलीसियाएं और मसीही जब सही प्रकार के चारे की बात होती है तो बहुत ही रूढ़िवादी और अकल्पनाशील या अरचनात्मक हैं। वे डरते हैं कि अगर हम कुछ ऐसा इस्तेमाल करें जिससे गैरमसीही आकर्षित हों तो यह "सांसारिक" या "पुराने स्वभाव" का होगा। उन्हें निश्चय है कि वे ज्यादातर "आत्मिक" तरीकों को इस्तेमाल करना चाहते हैं, लेकिन दुख की बात यह है कि उनके "आत्मिक"तरीके लगातार काम नहीं करते हैं। कोई मछलियाँ नहीं पकड़ी जा रही हैं। इसलिए हमें खुद से पूछना चाहिए कि क्या यह चारा प्रभावशाली है। अगर लोग आकर्षित होते हैं, उन्हें पापों का एहसास होता है और फिर उद्धार पाते हैं, तो कोई तो सही चीज कर रहा है!

एक समस्या यह है कि एक बार जब एक व्यक्ति मसीह के पास आता है तो उनके नए कार्यक्रम उनको इतना पूरी तरह से सोख लेते हैं कि अपने पुराने मित्रों और साथियों से सम्पर्क रखने का न तो उनके पास समय रहता है या न ही इच्छा होती है। वे उनसे इतने दूर हो जाते हैं कि लोग कहाँ हैं और उनकी क्या रुचियाँ हैं से उनका सम्पर्क नहीं रहता। अनेक मसीही इतने "आत्मिक" बन जाते हैं कि उनका गैर-मसीहियों के साथ कोई भी अर्थपूर्ण सम्पर्क नहीं रहता है। अब मैं मानता हूँ कि पवित्र होने और आत्मिक विकास की प्रक्रिया के लिए संसार से खुद को अलग करना एक जरूरी पहलू है, लेकिन कभी तो हमें विचार करना चाहिए कि किस प्रकार यीशु अपने पिता के साथ सही सम्बंध में भी रहा और फिर भी "पापियों का मित्र" बना रहा। उसने यह कैसे कर लिया कि खुद को संसार से निष्कलंक रखा और फिर भी इस प्रकार की जीवन-शैली बनाई कि "भीड़ के लोग उसकी आनन्द से सुनते थे।" जहाँ कहीं भी वह जाता था भीड़ की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी और जब कभी भी वह उनकी सेवा करता था उसकी सेवकाई को उत्सुकता से स्वीकार किया जाता था।

3. मछली को डराकर भगाना नहीं है

एक दूसरा सबक जो मैंने अपने बचपन के दिनों में सीखा था कि "शोर मत करो; मछली को डरा कर भगा मत दो!" मैं अपनी कल्पना में अब शीघ्रता की फुसफुसाहट सुन सकता हूँ। अगर हम सावधान न हों तो मछली को चौंकाना और डरा कर भगा देना बहुत आसान है। यह नियम गैर-मसीहियों के साथ भी सच है। उन्हें चौंका देना और डरा कर भगा देना कितना आसान है।

मैंने हाल में एशिया के एक शहर में एक बाहर खुले में एक सभा देखी। उत्सुक और ईमानदार मसीहियों ने साऊँड सिस्टम के इस्तेमाल के लिए अनुमति ले ली थी और उनकी आवाजें दूर दराज तक पहुँच रही थीं, लेकिन उनका लहजा कितना कठोर और दण्डात्मक था। उनके संदेश का तात्पर्य कितना "आपसे पवित्र हैं" था। उन्हें लोगों को बताने में लगभग आनन्द सा आ रहा था कि वे नरक को जा रहे हैं। लेकिन सुनने के लिए कोई रुक नहीं रहा था। कोई भी उनके पास आया नहीं और किसी ने भी मदद या सलाह या प्रार्थना के लिए उनसे आकर बातें नहीं कीं। सारा काम व्यर्थ लग रहा था। बहुत खोर-शराबा होता हुआ लग रहा था जिससे केवल मछलियाँ डर कर भाग रही थीं।

यह कितना ज्यादा प्रभावशाली प्रमाणित हो सकता था अगर लहजा अनुग्रह और दया का होता और यह विचार प्रस्तुत किया जाता कि यहाँ सहानुभूतिशील लोगों का एक दल है जो अपने सुननेवालों को मदद और सान्त्वना देना चाहते हैं। उस नगर की बस्ती के जिन लोगों से वे बातें कर रहे थे वे ज्यादातर गरीब और उदास थे। ऐसे लोग थे जिन्हें उनके निराशाजनक अस्तित्व में कुछ खुशी और चमक की जरूरत थी। लेकिन मसीही लोग ऐसा कुछ नहीं दे रहे थे। केवल दण्ड का एक संदेश और न्याय की कठोर आवाजें। कोई आश्चर्य नहीं कि उस रात वे कोई मछली नहीं पकड़ पाए।

जिस तरीके से अनेक "सुसमाचार प्रचार सभाएँ" आयोजित की जाती हैं और उनमें जो संदेश दिए जाते हैं, उनके लिए भी यहाँ सबक हैं। यीशु ने कहा कि उसे "इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए" (यूहन्ना 3:17)। कितने दुख की बात है कि उसके कई चेले इस तरीके से नहीं सोचते हैं। हमारे संसार के लोगों को एक आशा के संदेश की जरूरत है। उन्हें परमेश्वर के न्याय के बजाय उसके प्रेम, दया और अनुग्रह की जरूरत है। एक स्थानीय

कलीसिया सारे नगर की सबसे प्रसन्नचित, खुश, सबसे ज्यादा सकारात्मक और स्वीकारात्मक जगह होनी चाहिए। यह ऐसी जगह होनी चाहिए जिसकी ओर आम आदमी खिंचा आना चाहिए, जिसकी ओर वे आकर्षित हों जब उन्हें प्रेम, सहानुभूति और दया की जरूरत पड़े। सारा विचार मछली को आकर्षित करने का है, न कि उन्हें डरा कर भगा देने का है।

4. धीरज रखो और जल्दबाजी मत करो

सफल मछुआ जल्दबाजी में नहीं रहता है। धीरज एक अत्यावश्यक जरूरत है, जिसके बिना कभी कोई मछली पकड़ी नहीं जा सकती है। वह जानता है कि वह उम्मीद नहीं कर सकता कि वह दौड़ कर एक जगह पर जाएगा, छड़ डालेगा, और जल्दी ही एक मछली पकड़ लेगा। उसे अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए धीरज इस्तेमाल करने की जरूरत है। वह अपनी छड़ पानी में डाले, किनारे या नाँव पर बैठा रहता है, और एक हल्के संकेत के इन्तज़ार में रहता है कि मछली आस-पास है। जब वह चारे पर एक हल्का कुतरना महसूस करता है, तो वह तुरन्त छड़ को खींच नहीं लेता है। वह शान्त धीरज बनाए रखता है जब तक वह आग्रही झटका महसूस नहीं करता जिससे उसे पता चलता है कि मछली फँस गई है। तब भी उसे धीरज और समझदारी इस्तेमाल करनी चाहिए। उसे कोई भी अचानक कदम नहीं उठाना चाहिए, नहीं तो वह मछली को जितनी आसानी से पकड़ा नहीं था उतनी आसानी से उसे खो देगा।

उसी प्रकार, हमें लोगों को एक शिकार या एक "चोटी" के रूप में कभी देखना चाहिए जिन्हें हम जल्दी से ले सकते हैं। लोग पेचीदा प्राणी होते हैं। उनके जीवन उलझे हुए होते हैं। उन्हें सावधान, कुशल, धीरजवन्त बरताव की जरूरत है। हर एक एक अलग और भिन्न चुनौती है। कोई भी दो एक जैसे नहीं हैं। जिस प्रकार हमें अलग-अलग मछलियों के लिए अलग-अलग चारा की जरूरत होती है उसी प्रकार लोगों को पकड़ने और लाने के लिए अलग-अलग तरीकों की जरूरत होती है। सम्भवतः जिस चीज की हमें औरों से ज्यादा जरूरत है वह है धीरज।

5. जैसे आप अपनी मछली को बाहर लाने की कोशिश करते हो तो खास ध्यान दो

मछली को बाहर लाना आल्टर कॉल देने जैसा ही है। यह उतना ही, अगर उससे ज्यादा नहीं तो, जरूरी है जितना इससे पहले दिया गया उपदेश है। सबकुछ व्यर्थ जाएगा अगर हम मछली को सुरक्षित बाहर नहीं निकालते। चारा व्यर्थ जाएगा, हमारा समय व्यर्थ जाएगा, सारी मेहनत बेकार होगी अगर हम मछली को सुरक्षित बाहर नहीं निकालते। अगली बार मछली ज्यादा सावधान रहेगी। व्यक्तिगत, आमने-सामने की मुलाकातों में भी यह उतना ही सच है। हमें अन्त तक लगे रहने के लिए तैयार रहना है जब तक कि काम पूरा नहीं हो जाता। हर मछुए का काँटे और जमीन के बीच कहीं मछली खोने का अनुभव रहा है। (परम्परा के अनुसार "जो छूट जाती है" वही सबसे बड़ी और सबसे उत्तम है!)

6. मछली को दोबारा चले जाने मत दो

एक अच्छा फालो-अप कार्यक्रम एक पात्र के समान है जिसमें बाहर लाने के बाद मछली सुरक्षित रखी जाती है। अक्सर इसमें नए उद्धार पाए व्यक्ति को एक उचित कलीसिया मण्डली में जोड़ना शामिल है। खासकर एक अच्छी, क्रियाशील, सुसमाचार प्रचार करनेवाली और ऐसी हो जिसमें नए विश्वासियों के लिए एक अच्छी कक्षा और घर मण्डलियों का एक सिस्टम हो जिसमें नए जन्म पाए चेले को जोड़ा जा सके। नए विश्वासी को एक प्रभावी प्रार्थना और भक्तिपूर्ण जीवन स्थापित करना सिखाने की जरूरत है। उन्हें परमेश्वर के वचन में जमाने की जरूरत है ताकि उनका मसीह में अनुभव मात्र भावुक न हो।

हर नए विश्वासी को वास्तव में एक शिक्षक की जरूरत होती है जो उन्हें प्रभु के मार्गों और राज्य में चेला बना सके। अगर वह व्यक्ति जो उन्हें मसीह में लाया है इस कार्य को कर सके तो सबसे अच्छा होगा। नहीं तो उन्हें एक पास्टर या अधीन-पास्टर या हॉऊस ग्रुप लीडर की देखभाल में रखना चाहिए। उनका दूसरे साथी विश्वासियों से परिचय करवाना चाहिए जो उनके क्षेत्र में रहते हैं ताकि नए सम्बंध बन सकें। अगर कुछ खास समस्याएं हों जैसे कि गर्द पर निर्भरता, सैक्स-भ्रष्ट जीवन शैली, शराब, वगैरा, तो नए विश्वासी को एक सयाने विश्वासी की देखरेख में रखना चाहिए जिसे ऐसी समस्याओं की खास जानकारी है और इन चीजों से निपटने का कुछ प्रशिक्षण और अनुभव भी है।

7. मनुष्यों को पकड़ते रहो

किसी को सफलतापूर्वक मसीह में लाने के बाद, अपनी सफलता पर मत बैठे रहो या खुद को शाबाशी देने में या उस व्यक्ति की देखभाल करने में इतने व्यस्त न हो जाओ कि तुम्हें दूसरे लोगों तक पहुँचने के लिए समय ही न हो। एक बार जब आप लोगों को सुसमाचार सुनाने और पकड़ने की लय में पड़ जाओ तो आगे ही बढ़ते रहो। जितने ज्यादा लोगों को आप जीतोगे, उतने ज्यादा आप जीतना चाहोगे। काम ज्यादा ज्यादा आसान होता जाएगा। आप विश्वास और योग्यता में बढ़ते जाओगे। अनुभव आपको

बहुत कुछ सिखाएगा और आप इस उत्तेजक सेवकाई में ज्यादा निपुण और कुशल हो जाओगे। कितना अच्छा होगा कि जब प्रभु लौटे तो वह आपको मनुष्यों को पकड़ते पाए।

पाठ चार – मनुष्यों को जीवते पकड़ना

लूका 5:10 में हमें यीशु का यह उत्तेजक वक्तव्य मिलता है, "मत डर; अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा।" यूनानी भाषा में 'zogreo' शब्द इस्तेमाल किया गया है। इसका मूल अर्थ है: "जीवता पकड़ना।" नए नियम में केवल एक और जगह है जहाँ यह शब्द पाया जाता है और वह 2 तीमु. 2:26 में है। जहाँ हम पढ़ते हैं, "और सचेत हो कर शैतान के फन्दे से बच निकलें, जिसने उन्हें अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए बन्दी बना रखा (zogreo) है" (IBP)।

इन दो वक्तव्यों का तात्पर्य यह है कि या तो हम लोगों को मसीह के लिए जीवते पकड़ें, या शैतान उन्हें अपनी इच्छा पूरी करने के लिए पकड़ता है। यह हम पर कितनी भारी जिम्मेदारी डालता है, लेकिन कितना जबरदस्त विशेषाधिकार भी है, कि हम पुरुषों और स्त्रियों को शैतान के बन्धन और उसके राज्य के भयानक अन्धकार से निकालें और परमेश्वर के अनन्त राज्य के महिमामय उजियाले में ले आएँ।

यीशु जो सबसे महान मनुष्यों को जीतनेवाला जो कभी हुआ है, ने प्रतिज्ञा की है कि अगर हम वफादारी से उसके पीछे चलें, तो वह हमें मनुष्यों को छुड़ानेवाले बनाएगा जो उन्हें जलते जलते निकाल लेंगे। उन्हें अनन्त नरक से छुड़ाना और मसीह की अदभुत स्वतन्त्रता में ले चलना। हम शिष्यता के इस स्कूल में कैसे शुरू हों जिसमें प्रधान शिक्षक अपना ज्ञान और कुशलता हमें प्रदान करेगा, इस अदभुत सेवकाई को पूरा करने के लिए हमें योग्य बनाएगा? मेरा विश्वास है कि पहले हमें गम्भीरता से और प्रार्थना के द्वारा विचार करना चाहिए:-

एक मनुष्य की विस्मयकारी कीमत

1. इसकी उत्पत्ति का तत्त्व। परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाया गया।

हर मानव की अनमोल कीमत है क्योंकि इसे परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार और उसकी समानता में बनाया गया था। परमेश्वर की रचनात्मक प्रतिभा की छाप हर मनुष्य पर है। चाहे पाप उस प्राणी को कितना नीचा क्यों न कर दे, यह फिर भी परमेश्वर के स्वरूप में बना है और वह इस पर बहुत कीमत डालता है। ऐसी कीमत जिसे मानव, चीजों या रुपये-पैसे से नहीं तोला जा सकता है। यीशु ने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए,तो उसे क्या लाभ होगा?" (मरकुस 8:36-37)। इस वचन का स्पष्ट तात्पर्य यह है कि परमेश्वर के लिए एक प्राण की कीमत सारे संसार से ज्यादा है। जब हम मेल-मिलाप की सेवकाई के द्वारा लोगों को परमेश्वर के पास लाते हैं तो उसके दिल को कितना आनन्द पहुँचता होगा। उनकी तुलना उसके मुकुट के हीरों से की गई है।

2. इसके अस्तित्व की अवधि

हर प्राण का एक अनन्त, कभी न खत्म होने वाला अस्तित्व है और उस अनन्तकाल को या तो वह परमेश्वर की उपस्थिति और उसके परोपकारी शासन में बिताएगा, या परमेश्वर की उपस्थिति से दूर मसीह को ठुकराने वालों के साथ नरक में डाल दिया जाएगा। जबकि यीशु जो धार्मिकता, दया और सत्य का परम उदाहरण है, पृथ्वी पर चलनेवाला सबसे अनोखा व्यक्ति था, तो अनुमान लगाओ कि उन लोगों की संगति में अनन्तकाल बिताना जिन्होंने ऐसे व्यक्ति को ठुकरा दिया है कैसा होगा। नरक चाहे कैसा भी क्यों न हो, ऐसे लोगों के साथ हमेशा रहना निश्चय ही नरक होगा।

जब कभी भी आप एक साथी मनुष्य को देखो, तो उसकी हालत कैसी भी क्यों न हो, याद रखो कि वह एक अनन्त प्राणी है और कि वह अनन्तकाल या तो परमेश्वर की उपस्थिति में बिताएगा या हमेशा के लिए उसकी उपस्थिति से निकाल दिया जाएगा। केवल यह विचार ही हमें विवश करे कि हम हर व्यक्ति को जिसे हम मिलते हैं चेतावनी दें कि जबकि वे कर सकते हैं वे मसीह को ग्रहण कर लें।

3. एक प्राण के उद्धार की भारी कीमत

मसीह का पृथ्वी पर आने का असली उद्देश्य एक शिक्षक या एक उदाहरण होना नहीं था कि लोग उसकी नकल करें, बल्कि यह खोई हुई और गिरी हुई मनुष्य जाति के लिए और उसकी जगह पर परमेश्वर के मेमने के रूप में मरना था। जो कीमत उसने अपने दुख उठाने और मृत्यु में दिया था, अवर्णीय (जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता) और अमूल्य (मनुष्य की कीमत के परे) है।
गिरे हुए मनुष्य के लिए परमेश्वर के प्रेम की ऊँचाई, चौड़ाई और गहराई कलवरी पर जहाँ मसीह ने दुख उठाया और मरा, दिखाई दिया था। परमेश्वर चाहता है कि हम उस कीमत को जो उसने और उसके प्रिय बेटे ने कलवरी पर दी, देखें और उस पर मनन करें और समझें कि इस अवर्णीय दृश्य के द्वारा परमेश्वर कह रहा है, "मैं मनुष्यजाति से इतना प्रेम करता हूँ। मैं हर मनुष्य पर इतनी कीमत डालता हूँ।" अगर परमेश्वर एक प्राण के उद्धार के लिए इतनी बड़ी कीमत दे सकता है तो हम इतने बड़े प्रेम की कहानी बताने के लिए छोटा सा बलिदान देने से कैसे इन्कार कर सकते हैं।

4. मनुष्यों के प्राण के लिए विशाल युद्ध जो चल रहा है

इस ग्रह पर मनुष्य के सारे इतिहास भर में कई भयानक युद्ध लड़े गए हैं लेकिन कोई भी इतना बड़ा नहीं जो शैतान लगातार मनुष्यों के प्राणों के लिए लड़ता है। मसीह ने शैतान को हराने के लिए, और उसके अधिकार को नष्ट करने के लिए, और जो उसे स्वीकार करेंगे उनके लिए छुटकारे का मार्ग बनाने के लिए अपना जीवन और अपना सबकुछ दे दिया। न तो इससे ज्यादा वह कुछ कर सकता है, और न ही उसे कुछ ज्यादा करने की जरूरत है। उद्धार का काम क्रूस पर पूरा हुआ था। उसने शैतान की पकड़ को तोड़ दिया है और हर मनुष्य के लिए मुक्ति और स्वतन्त्रता मुहैया कराई है। यही सुसमाचार है जो उसने हमें सौंपा है। पहल-शक्ति अब हमारे पास है। मनुष्यों को शैतान के राज्य के अँधेरे बन्धन से निकालने और मसीह के छुटकारे की स्वतन्त्रता में लाने के लिए हमें अधिकार दिया गया है।

खोए हुओं के लिए हम दिलचस्पी कैसे प्राप्त करें

1. मसीह की आज्ञा पर मनन करने के द्वारा

अपने स्वर्ग में जाने से पहले अन्तिम शब्द जो यीशु ने कहे थे, जिन्हें "महान विशेषाधिकार" कहा जाता है, इसमें उसने अपने चेलों को कहा कि वे सारे संसार में जाएँ, और हर प्राणी को सुसमाचार सुनाएँ। यह आज्ञा कभी भी रद्द नहीं की गई है। हर मसीही को ईश्वरीय आदेश मिला हुआ है। हम सब शायद सेवक, पास्टर, सुसमाचार प्रचारक, या पूरे समय सेवा करने वाले मसीही सेवक न हों, लेकिन हम सबको सुसमाचार सब जगह फैलाने के लिए ईश्वरीय आदेश मिले हुए हैं।

2. मसीह के करीब रहने और उसका हृदय ग्रहण करने से

अगर हम मसीह के करीब रहें, और उसके साथ हर दिन समय बिताएँ, और हर विषय पर उसका मन जानें, तो हम उसके दिल की धड़कन को महसूस करेंगे और उसके दिल की बातों को बाँटेंगे। जब कभी भी हमारा किसी मनुष्य की जरूरतों से सामना होता है, तो हमें खुद से पूछना चाहिए, "यीशु इस परिस्थिति में क्या करते?" जैसे ही उत्तर हमारे मन में आए तो हमें आगे बढ़कर वही करना चाहिए जो हम जानते हैं यीशु करते, क्योंकि इस संसार में हम ही उसके पैर, और उसके सेवक हैं।

3. याद रखें कि लोग मसीह और आशा के बिना मर रहे हैं

हर दिन हमारे समाज में लोग मसीह के ज्ञान और उसके छुड़ानेवाले प्रेम के बिना मर रहे हैं। जैसे आप हर दिन लोगों के बीच चलते फिरते हो तो इस बात को अपने मन में रखो। जब कभी भी परमेश्वर किसी से एक शब्द कहने के लिए आपको प्रेरित करे तो निश्चय करो कि आप उसे निराश नहीं करेंगे। एक बहुत ही दुखभरा अनुभव मुझे कई वर्ष पहले हुआ था। एक अवसर पर मुझे लगा कि परमेश्वर चाहता था कि मैं एक व्यक्ति से उसके जीवन के बारे में बात करूँ और कि वह अपना अनन्तकाल कहाँ बिताएगा। लेकिन मैं व्यस्त था और मुझे लगा कि उसके पास जाने के लिए मेरे पास समय नहीं था। मैंने इसे टाल दिया, और सोचा कि कल जब मेरे पास ज्यादा समय होगा तो मैं उससे मिलने जाऊँगा। मैं अगले दिन उसके पास गया और पाया कि रात में उसकी मृत्यु हो चुकी थी। उस दिन मिली निराशा की भावना को मैं अब तक भूल नहीं पाया हूँ।

4. याद रखें कि एक दिन हम सब मसीह को हिसाब देंगे

यह एहसास होना कि एक दिन हम उन चीजों का जिसे उसने हमें सौंपा था मसीह को हिसाब देंगे गम्भीर बनाने वाली सच्चाई है। मैं यह बात कोई कानूनी तौर पर नहीं कह रहा हूँ, न ही किसी को डराने की कोशिश कर रहा हूँ या उनकी इच्छा के विरुद्ध उन्हें कुछ करने के लिए विवश कर रहा हूँ। लेकिन मैं यह सोच रहा हूँ कि एक दिन हम यीशु से अनन्तकाल की चमकती रोशनी में मिलेंगे। तब हम पहले से कहीं ज्यादा समझ पाएँगे कि मनुष्य का उद्धार करने के लिए उसने कितनी बड़ी कीमत चुकाई थी और कि

हम प्रेम के इस संदेश को दूसरों को बताने में अक्सर कितने अनिच्छुक रहे हैं। हम कितनी निराशा महसूस करेंगे। सम्भव है कि यह निराशा हम अनन्तकाल भर उठाए रखें!

5. सोचो कि मसीह की विश्वासयोग्य सेवा के लिए हम कितना आनन्द अनुभव करेंगे

कितना आनन्द और महान संतोष हमारा होगा जब हम मसीह के सम्मुख खड़े होंगे और उसकी उपस्थिति में उन सबको पहचानेंगे जिन्हें मसीह में लाने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ था। हमारा आनन्द कितने गुणा बढ़ जाएगा जब वे हमारे पास आकर हम से कहेंगे, "आपने मुझे मसीह के प्रेम के बारे में बताया था, अगर आपने ऐसा नहीं किया होता तो मैं आज यहाँ नहीं होता।" हमारा अनन्त ईनाम कम से कम चार गुणा होगाः

- मसीह के साथ हमेशा रहने का आनन्द।
- उसे "शाबाश, विश्वासयोग्य सेवक" कहते हुए सुनने की धन्यता। (मत्ती 25:23)
- उन लोगों को देखने का रोमांच जिन्हें हम ने मसीह के लिए जीता था।
- मनुष्यों को जीतने का आनन्द का मुकुट पाना। (1 थिस्स. 2:19)

पाठ पाँच – एक आदर्श घटना का अध्ययन – आओ शुरू करें!

मनुष्यों को जीतने के हमारे इस तेजस्वी साहसिक कार्य में, यीशु खुद हमारा उत्तम उदाहरण और आदर्श है। यूहन्ना के सुसमाचार 4:1-42 में, हमें यीशु और "सामरिया की एक स्त्री" के बीच मनुष्यों को जीतने का एक आदर्श घटना अध्ययन मिलता है। उसके इस असंभावित व्यक्ति के साथ फलदायक मुलाकात में कई सहायक सिद्धान्त शामिल हैं। अपनी बाइबल में कहानी को पढ़िए और फिर आओ हम मिलकर कुछ मुख्य बातों को देखें।

1. ईश्वरीय प्रेरणाओं को प्राथमिकता देना

जब यूहन्ना हमें बताता है कि यीशु को "सामरिया से होकर जाना अवश्य था" (4:4), तो वह उस ईश्वरीय प्रभाव के बारे में बता रहा है जिसने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया था। वह गलील को जाना चाहता था और असलीयत में दो मुख्य मार्ग थे जो उसे वहाँ ले जा सकते थे। एक सामरिया में से था और दूसरा यरदन घाटी में से था। हालाँकि सामरिया का मार्ग सीधा था, लेकिन यहूदियों और सामरियों के बीच बने मनमुटाव के कारण, यह ऐसा मार्ग नहीं था जिसे यहूदी साधारणतः इस्तेमाल करते थे। फिर भी यीशु ने अपने स्वर्गीय पिता से मिली एक अन्दरूनी प्रेरणा के कारण इस मार्ग को चुना, इसलिए नहीं कि यह छोटा था, या जल्दी ले जाता या ज्यादा सुविधाजनक था। परमेश्वर के पास यीशु के लिए एक कार्य पूरा करने के लिए था। परमेश्वर जानता था कि वहाँ एक भूखा हृदय है और दूसरे भी जीवन हैं जिन्हें भी प्रभावित किया जा सकता था। उसने यीशु के दिल में एक प्रेरणा डाली जिससे वह उस दिशा में गया और उस खास जगह पर गया जहाँ एक मुलाकात हो सकती थी।

हमें भी अपने दिलों में परमेश्वर की प्रेरणाओं को पहचानने और समझने के लिए ऐसी ही एक संवेदनशीलता और एक योग्यता बनाने की जरूरत है। कई अवसर होते हैं जब परमेश्वर हमारी गवाही को एक खास प्रकार से इस्तेमाल करना चाहता है लेकिन उसे भरोसा होने की जरूरत है कि हम उसकी प्रेरणाओं को न केवल सुनेंगे बल्कि उनके अनुसार करेंगे भी। यह निश्चय करने के लिए कि हमारी परमेश्वर के साथ विश्वसनीयता है, हमें उसकी ईच्छा को प्राथमिकता देनी है, अपनी स्वाभाविक वचनबद्धताओं के ऊपर इसे श्रेष्ठता और प्राथमिकता देनी है।

हम यह रवैया यीशु के जीवन में बचपन से ही पाते हैं। उसने मरियम और यूसुफ से कहा, "क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य था?" (लूका 2:49)। प्रकट है, हालाँकि उसने अपने सांसारिक माता-पिता को सम्मान दिया और उनके वश में रहा, उसने अपने स्वर्गीय पिता की इच्छा को उससे भी ज्यादा प्राथमिकता दी। एक दूसरे अवसर पर उसने कहा, "मैं अपने पिता की इच्छा करने में जिसने मुझे भेजा है प्रसन्न होता हूँ।" हमें भी अपने पिता की इच्छा का पालन करने को आनन्द का साधन बनाना चाहिए।

2. परमेश्वर की इच्छा को प्राथमिकता देने के कुछ कारण

- <u>क्योंकि हम अब अपने नहीं रहे</u>

"क्या तुम नहीं जानते कि तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।" हमें एक बड़ी कीमत देकर खरीदा गया है और हमारा जीवन अब हमारा अपना नहीं है कि जैसा चाहें वैसा करें। परमेश्वर ने हमें मोल देकर खरीदा है। अब हम उसके हैं और हमारी पहली प्राथमिकता और सबसे बड़ी खुशी उसकी इच्छा पूरी करना होना चाहिए।

- <u>परमेश्वर सारी मनुष्यजाति से प्रेम करता है और उस प्रेम को हमारे द्वारा व्यक्त करना चाहता है</u>

परमेश्वर हर उस व्यक्ति से जिससे हम मिलते हैं प्रेम करता है और वह चाहता है कि हम उन्हें उसके प्रेम के बारे में बताएँ। उससे भी बढ़कर, वह अपने प्रेम को हमारे द्वारा उन तक पहुँचाना चाहता है, हमारे जीवनों को साधन बनाना चाहता है जिनके द्वारा उसका प्रेम प्रकट किया और दिखाया जाता है। हमें परमेश्वर के साथ, उसके प्रेम को सोखने के लिए, एक अच्छा समय बिताना चाहिए। पौलुस ने कहा, "क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है" (रोमियों 5:5)। हम न केवल उस प्रेम के पाने वाले हैं बल्कि हम साधन हैं ताकि यह हमारे द्वारा दूसरों के जीवनों में भी बह सके।

- <u>हम हर व्यक्ति के ऋणि हैं</u>

जबकि हमने सुसमाचार और परमेश्वर का अनुग्रह अपने जीवनों में पाया है, हम हर व्यक्ति जिससे हम मिलते हैं के ऋणि हैं कि उन्हें यह सुसमाचार सुनाएँ। (रोमियों 1:14)

3. कुछ बाधाएँ जिन्हें यीशु ने जीत लिया था

अपने ईश्वरीय कार्य को पूरा करना यीशु के लिए कोई आसान नहीं था। इसे पूरा करने के लिए अनेक बाधाएँ थीं जिन्हें उसे जीतना जरूरी था। यह हमारे लिए भी सत्य है। कोशिश और बलिदान के बिना कुछ भी लाभकारी चीज हासिल नहीं की जा सकती है। परमेश्वर के कार्य को पूरा करने में हमें हर सम्भावित बाधा को जीतने के लिए समर्पित और तैयार रहना चाहिए। आओ हम उन कुछ बाधाओं को देखें जिन्हें यीशु ने जीता था।

- <u>तर्क की आवाज</u>

  उस गहरी शत्रुता के कारण जो सामरियों और यहूदियों में बनी हुई थी, कुछ यहूदी ही कभी सामरिया में से सफर करने के बारे में सोचते थे। इसे बेशक खतरनाक और गलत सलाह माना जाता था। क्योंकि यीशु पहले ही फरीसियों के प्रतिशोधी रवैये से बच निकल रहे थे (यूहन्ना 4:1-3), इसे तर्क की बात माना जाता अगर वह सुरक्षित मार्ग से सफर करता, यानि यरदन घाटी से। लेकिन कभी कभी परमेश्वर के तरीके तर्क और स्वाभाविक विचार की जगह लेते हैं। कभी कभी वह हमे एक कार्य पर भेजता है जहाँ हमें तर्कसंगत परिणाम को अनदेखा करना होता है, और परिणाम चाहे कैसा भी क्यों न हो पूरी तरह परमेश्वर पर भरोसा करना होता है और उसकी आज्ञा का पालन करना होता है।

- <u>समय का अत्याचार</u>

  कभी कभी हम समय के बारे में इतने सचेत होते हैं कि परमेश्वर की इच्छा करने से ज्यादा यह जरूरी लगता है। कुछ संस्कृतियाँ दूसरों से इसके ज्यादा दोषी हैं। यीशु कुछ समय से यरूशलेम से सफर करते हुए निकले थे, फिर भी उसने इस तथ्य को अपने उस कार्य में बाधा नहीं डालने दिया जो कार्य परमेश्वर ने उसे सौंपा था।

- <u>थकान की अक्रियता (निष्क्रिय करना)</u>

  यूहन्ना हमें साफ साफ बताता है "यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएँ पर योंही बैठ गया।" वह कूएँ पर बैठ गया क्योंकि वह थका-माँदा था। फिर भी उसकी थकावट उसे स्त्री के साथ बातचीत करने से रोक न सकी। आश्चर्य की बात तो यह थी कि जब चेले लौटे तो उन्होंने उसे तरो-ताज़ा और पुनःशक्ति पाया हुआ पाया। उसने उन्हें समझाया कि उसके पास "खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।" वह "भोजन" अपने पिता की इच्छा पूरा करना था जिसने उसे भेजा था। प्रकट है कि ऐसे अवसर होंगे जब हम भी थक जाएँगे और कोई आत्मिक सेवा करना न चाहेंगे। फिर भी जैसे हम खुद को उठाएँगे और शामिल हो जाएँगे तो हम वास्तव में कार्य करते करते नई शक्ति पाएँगे।

- <u>संस्कृति के अन्तर को पार करना</u>

जैसे हम यीशु की सेवकाई का अध्ययन कर रहे हैं तो हम तुरन्त पहचान लेते हैं कि यीशु वह था जिसे हम "मिश्रित-सांस्कृतिक संचार की कला में उस्ताद" कहेंगे। यह कुछ ऐसा है जिसमें हमें भी निपुण हो जाना चाहिए। एक सांस्कृतिक अन्तर अगर हम इसे ऐसा करने दें तो हमें तुरन्त लोगों से अलग कर सकता है। यीशु ने इस सम्भावित अन्तर को बहुत सफलतापूर्वक पार किया। मुझे लगता है कि कम से कम दो कारण थे कि वह ऐसा क्यों कर पाया। पहला, उसने दूसरे की संस्कृति को पहचाना और उसका आदर किया। और दूसरा, उसने परमेश्वर के राज्य की संस्कृति को आदर्श बनाया। राज्य के सच्चे लोगों के पास संस्कृति के अन्तर को पार करने के लिए निश्चित श्रेष्ठता होती है। राज्य के चरित्र में लोगों के लिए एक प्रेम भरा सम्मान होता है जो हमें उनका आदर करने में चाहे उनकी संस्कृति कैसी भी क्यों न हो मदद करता है।

- <u>रीति-रिवाज के अन्तरों को जीत लिया</u>
  यहूदी और सामरी दोनों के ऐतिहासिक तौर पर मजबूत पारम्परिक रीति-रिवाज थे जिनके प्रति वे वचनबद्ध थे। अपने रीति-रिवाजों और परम्पराओं के बारे में पक्षपाती और सामना करनेवाला होना काफी आसान है। कई लोगों में उनके राष्ट्रीय या सांस्कृतिक परम्पराओं और रीति-रिवाजों के बारे में स्वाभाविक घमण्ड होता है। लेकिन यीशु ने इसे एक विभाजक कारण नहीं बनने दिया। उसने नरमी से और कुशलता से सामना करने की सम्भावना को टाल दिया और स्त्री का आदर और सम्मान जीत लिया, इससे उसने अपने लिए विश्वसनीयता हासिल कर ली जिससे वह उसके जीवन में सेवा कर पाया।

- <u>धर्म के अन्तरों को पार करना</u>
  बातचीत के शुरू में स्त्री ने अपनी धार्मिक परम्पराओं में शरण लेकर मसीह के शब्दों की चुनौती से बचने की कोशिश की थी। उसने बताया कि उसके पूर्वज विश्वास करते थे कि आराधना इसी पहाड़ पर की जाती है, जबकि यहूदी जोर देते थे कि यरूशलेम ही सच्चा आराधना का केन्द्र है। यीशु ने खुद को इसके बारे में विवाद में नहीं फँसने दिया। वह बातचीत को दूसरे मार्ग से निकालने लगा, और कहा कि परमेश्वर आत्मा है और जो उसकी आराधना सच्चाई से करते हैं वे आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें। उसका स्पष्ट तात्पर्य था कि पहाड़ या यरूशलेम असली मामले नहीं थे बल्कि वे जहाँ कहीं भी हों उनकी आत्मा से परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं। धार्मिक मामलों के बारे में विवादास्पद और सामना करनेवाला होना हमारे लिए कितना आसान होता है। हमें बड़ी आसानी से लगने लगता है कि अगर हम अपने धार्मिक दृष्टिकोण को बढ़ावा न दें तो हम अपने विश्वास के साथ समझौता कर रहे हैं। लेकिन खासकर धर्म के बारे में वाद-विवाद और सामना करना शायद ही कभी कुछ हासिल करते हैं। कोई तर्क (मन) जीत सकता है और एक मनुष्य (दिल) को हार सकता है। यीशु ने ऐसा नहीं होने दिया और हमें इसके बारे में कुछ उससे सीखना चाहिए।

- <u>स्वभाविक से आत्मिक की ओर</u>
  यीशु के पास बातचीत को एक स्वाभाविक विषय से एक आत्मिक विषय में ले जाने की एक अदभुत योग्यता थी। उसने स्त्री से पीने के लिए पानी माँगा और फिर उसे बताने लगा कि अगर वह उस पानी को पीए जो वह उसे दे सकता है तो वह दोबारा कभी भी प्यासी नहीं होगी। वह इस प्रकार का तरीका लगातार इस्तेमाल करता था। वह अक्सर दृष्टांतों में बोलता था – स्वभाविक कहानियाँ जिनका आत्मिक अर्थ होता था। हम देख सकते हैं कि यह कितनी सफलतापूर्वक काम करता था। न केवल वह विश्वास में आई बल्कि उसके कई गाँव वाले भी विश्वास में आए, बाद में (प्रेरितों 8) एक बड़ी बेदारी फूट पड़ी।
  सारांश में:
  - उसने परस्पर रुची का एक विषय स्थापित किया
  - उसने उसकी जिज्ञासा जगाई
  - वह कुशलता के साथ स्वभाविक से आत्मिक में चला गया
  - उसने स्पष्टता से सुसमाचार पेश किया
  - पवित्र आत्मा ने काम पूरा किया

उसके उदाहरण की कुछ और विशेषताएँ

4. "पापियों" के लिए उसका सच्चा प्रेम

आय 4 में हमें बताया गया है कि यीशु को "सामरिया से जाना अवश्य था।" यह जरूरत केवल भौगोलिक ही थी या नहीं, कइयों के लिए विवाद का कारण बना हुआ है। लेकिन स्पष्ट संकेत यह है कि अगरचे जरूरत भौगोलिक थी या नहीं, यीशु सूखार नामक

सामरी नगर में से होकर जाने में बाध्य हुआ था क्योंकि वह इस स्त्री और उसके पड़ोसियों को सुसमाचार देना चाहता था। यह उसके लिए उसकी परवाह ही थी जिसकी वजह से वह उस मार्ग से जाने के लिए राजी हुआ या प्रेरित हुआ था। पापी सहज-ज्ञान से उनके लिए उसके प्रेम को पहचान लेते थे और उसकी ओर चुम्बक की तरह खिंचे आते थे। उसे "पापियों का मित्र" के नाम से जाना जाता था। यह नाम उसने घमण्ड के साथ लगाए रखा था।

उसके समय के तुच्छ लोग उसे खोजते थे। वे उससे डरते नहीं थे। उसका व्यवहार उनका न्याय करना या उनको दण्ड नहीं देना नहीं था। उन्हें जो उसका अत्यधिक प्रभाव मिला था वह था उनके लिए उसका गहरा, सच्चा, स्थायी प्रेम और उनकी मदद करने के लिए उसकी लगातार इच्छा और इरादा। उसने किसी भी प्रकार से उनको यह नहीं लगने दिया कि वह उनके पापी जीवन-शैली का समर्थन करता या अनदेखा करता है, लेकिन न ही उसने कभी ऐसा लगने दिया कि उसके पास उनके लिए प्रेम के सिवा कुछ और है।

एक ही तरीके से हम भी वही रवैया दिखा सकते हैं कि "उसकी आँखों से लोगों को देखें।" हमारी मानवता अक्सर लोगों का न्याय करने की होती है। मसीही होने के नाते हमें खास ध्यान देना है कि हम एक स्वयं-धर्मी, धार्मिक रवैया नहीं अपनाएँ जिसमें हम खुद को उनसे जो मसीह बिना हैं अच्छा समझें। हमें याद रखना है कि "वो देखो, परमेश्वर के अनुग्रह के बिना, 'मैं' जा रहा हूँ।" किसी प्रकार से हमें उसका आत्मा सोख लेना है और "पापी से प्रेम करने, लेकिन पाप से घ्रणा करने" में सफल होना है।

5. वह वास्तव में लोगों में दिलचस्पी रखता था

यीशु बेशक वह था जिसे आजकल हम "लोगों का व्यक्ति" कहेंगे। जहाँ कहीं भी वह गया लोग बड़ी उत्सुकता से उसके पीछे हो लेते थे। वह एक बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति था और लगातार लोगों की भीड़ द्वारा घिरा रहता था जो उसकी उपस्थिति में होने और उसके शब्दों को सुनने का आनन्द लेते थे।

हमें भी लोगों में एक सच्ची दिलचस्पी सक्रिय तौर पर बढ़ाने की जरूरत है। अपने मसीहियत दृष्टिकोण या कार्यक्रमों को लोगों की संगति से खुद को कभी भी अलग होने न दो। मैं लगातार नौजवान पास्टरों से कहता रहता हूँ, "सेवकाई दो चीजों के बारे में है : यह परमेश्वर के बारे में है, और यह लोगों के बारे में है।" इसलिए, एक सफल सेवकाई की जरूरत है कि दोनों के बारे में एक अच्छी समझ प्राप्त कर ली जाए। हमें इन दोनों बातों में महारथ हासिल करनी चाहिए। परमेश्वर के ज्ञान की घनिष्ठता और उसके साथ अपने सम्बंध में बढ़ना। लोगों को जानना और समझना।

निश्चय ही मनुष्यों को जीतने में यह एक सफलता का कारक है। यीशु ने इस महत्त्वपूर्ण कला को प्रदर्शित किया था। लूका 2:52 हमें उसके किशोरावस्था के दौरान उसके बढ़ने तरीके के बारे में कुछ बहुत ही दिलचस्प बातें बताता है। हमें बताया गया है कि "यीशु बुद्धि (ज्ञान और समझ) और डील-डौल (शारीरिक) में, और परमेश्वर (आत्मिक) और मनुष्यों (सामाजिक) के अनुग्रह में बढ़ता गया।"

अनेक मसीही आजकल यह सोचते हैं कि आत्मिक वृद्धि में ध्यान लगाने के लिए जरूरी है कि हम दिलचस्पी और विकास के दूसरे क्षेत्रों को अनदेखा कर दें। यीशु के साथ निश्चय ऐसा नहीं था। उसकी वृद्धि ऊपर बताए उन चार क्षेत्रों में एक सही सन्तुलन दिखाती है, और वह हमारा उदाहरण और आदर्श है। सफल सेवकाई के लिए जरूरी है कि इन सारे क्षेत्रों में वृद्धि और परिपक्वता हो।

6. बाहर निकलो और लोगों से मिलो

अगर हम लोगों से कभी न मिलें और बातचीत न करें तो हम कभी भी उन्हें मसीह के लिए जीत नहीं पाएँगे। अगर हम कभी मछली पकड़ने वाले हैं तो हमें वहाँ जाना होगा जहाँ मछलियाँ हैं। मसीह के जीवन के अनेक विवरणों में, कई लोगों के साथ उसकी बातचीत शामिल है। उसके कुछ महान उपदेश अकेले व्यक्ति के सामने दिए गए थे (उदाहरण के तौर पर, नीकुदेमुस, यूहन्ना 3)। हमें हर दिन जान-बूझकर नए लोगों के साथ सम्पर्क बनाने की कोशिश करनी चाहिए। एक असली लोगों का व्यक्ति बन जाओ। अपने विश्वास को अपना स्वभाविक शर्मीलापन और सामाजिक एकान्तवासी होना जीतने के लिए इस्तेमाल करो। अपनी कोठरी में से बाहर निकलो। अपने पड़ोसियों से बात करो। अपना समय उन लोगों के साथ बिताओ जिन्हें आप अपने काम-धंधे के दौरान मिलते हो। अपने ईलाके के दुकानदार, ऑटोरिक्षा ड्रायवर, पोलीसवाला, वगैरा के साथ दोस्ती करो। अगर यीशु "पापियों का मित्र" था तो हम अपने पड़ोसियों के लिए मित्र बन सकते हैं! उन्हें तुरन्त मसीह के लिए जीतने की कोशिश मत करो। उनके साथ विश्वसनीयता स्थापित करने की कोशिश करो। उनमें सच्ची दिलचस्पी दिखाओ।

7. आम दिलचस्पी की बातें स्थापित करो

जब यीशु को सामरी की स्त्री मिली तो वह पानी लेने आई हुई थी। उसने तुरन्त यह कहकर कि वह प्यासा है और वह उसका आभारी होगा अगर वह उसे पीने के लिए पानी दे, उसके साथ सम्पर्क बनाया। इस तरीके से उसने उसके साथ एक विवेकशील और उचित तरीके से उसकी मदद और सहायता माँगकर मेल-मिलाप शुरू किया। उसने उसकी सहायता के लिए उसकी साफ-साफ प्रशंसा की। उसका आचरण शान्त कर देनेवाला, दोस्ताना और अत्यन्त सम्मोहक था। यहूदियों और सामरियों के बीच जो बहुत बड़ी शत्रुता थी उसके कारण उसका रवैया खासकर आकर्षक था। यीशु ने सफलतापूर्वक संस्कृति की बाधा, जाति की बाधा और धर्म की बाधा को पार किया। जब लोग जो कर रहे हैं या जिनमें वे दिलचस्पी रखते हैं में हम दिलचस्पी दिखाते हैं तो लोग अक्सर प्रभावित होते और निहत्थे हो जाते हैं। वे उसके साथ बातचीत करने लगते हैं जो उसमें जिसमें वे गहरी दिलचस्पी रखते हैं में दिलचस्पी और उत्साह दिखाते हैं। आम दिलचस्पी की बातें लोगों को इकट्ठी करती हैं और सम्पर्क और सम्बंध बनाती हैं। वे एक बन्धन और विश्वसनीयता स्थापित करती हैं जो गम्भीर बातचीत के लिए मार्ग बनाती हैं।

8. यीशु ने लोगों का न कभी न्याय किया, न उन्हें दोषी ठहराया

सामरी स्त्री लगता है कुछ-कुछ उल्लेखनीय या बदनाम पापी थी। कहानी में के कई तत्त्व इस विचार को समर्थन देते लगते हैं। लेकिन यीशु ने उसकी ओर एक श्रेष्ठ या न्याय का रवैया नहीं अपनाया। उसने उसके बहुल विवाहों के लिए उसको दोषी ठहराते हुए और यह सच्चाई कि वह अभी भी एक व्यभिचारी सम्बंध में थी, उसे भाषण देना या उसकी निन्दा करना शुरू नहीं किया। इसका तात्पर्य यह नहीं था कि उसने उसकी जीवन-शैली को सहमति दी या अनदेखा किया। मुझे लगता है कि यीशु को अपने अनेक धार्मिक आलोचकों के विस्मय को देखकर मजा आता था जब वे कुछ लोगों की ओर उसकी मुद्रा को देखते थे जिन्हें वे खुद तुरन्त दोषी ठहरा देते। यूहन्ना 8:1-11 में कुछ ऐसा ही लगता है, जब यीशु जमीन पर लिखने लगा जबकि क्रोधित फरीसी असल में माँग कर रहे थे कि वह उस स्त्री को दोषी ठहराए जिसे उन्होंने व्यभिचार में पकड़ा था। वह उस स्त्री के साथ क्रोधित धार्मिक भीड़ के खिलाफ साहस से साथ खड़ा रहा, उसे आश्वासन दिया कि वह उसे दोषी नहीं ठहराता है, लेकिन उसे उत्साहित किया कि "जा, और फिर पाप न करना।" अगर यीशु ने पापियों के साथ दोष न लगानेवाली मुद्रा अपनाई, तो मुझे और आपको कुछ अलग करने का क्या हक है? तह उनका उद्धार करने, न कि उन्हें दोषी ठहराने आया था और हमारा भी वही रवैया होना चाहिए।

9. वह बारंबार लोगों की सराहना करता था

जब स्त्री ने स्वीकार किया कि "मैं बिना पति की हूँ," यीशु ने उसकी सराहना की कि "तू ठीक कहती है।" उसने उसको प्रकट भी किया कि वह उसके सन्दिग्ध अतीत के बारे में सबकुछ जानता है, लेकिन फिर भी उसने उसे दोषी नहीं ठहराया बल्कि सच्चाई बताने के लिए उसे सराहा। प्रशंसा अक्सर कठोर से कठोर हृदय को खोलने के लिए एक अदभुत चाबी है। कितने सारे पापी निन्दा की बौछार के शिकार होते हैं और जब कोई वास्तव में किसी चीज के लिए सराहना करता है तो यह एक सुखद आश्चर्य और एक धक्के के रूप में आता है। यह शत्रुता को कम करता है और बातचीत और लाभकारी चर्चा के लिए मार्ग बनाता है। जब आप किसी के साथ बातचीत शुरू करना चाहते हैं तो उस व्यक्ति या उनके हालातों के बारे में कुछ पता लगाने की कोशिश करें जिसकी आप दिल से प्रशंसा कर सकें। उनके बारे में बहुत सी चीजें हो सकती हैं जो इसे मुश्किल करे लेकिन कई लोगों में कुछ तो होता है जिसकी हम सराहना कर सकते हैं। ऐसा करो, और फिर कड़वाहट को पिघलते और द्वार खुलते देखो।

10. वह बिलकुल स्वभाविक था

यीशु ने खुद को एक बाहरी धार्मिक दिखावे में नहीं लपेटा था। वह बिलकुल स्वभाविक था। उसमें ढोंग का कोई भी प्रमाण नहीं था। उसने खुद को एक मित्र, एक दिलचस्पी लेनेवाले व्यक्ति के रूप में पेश किया। लोगों की ओर अपनी पहुँच में हमें सक्रिय तौर पर किसी भी धार्मिक ढोंग को दूर रखना चाहिए। उनके साथ एक होने की कोशिश करें। उनके स्तर पर उतर आएँ। जैसे तुम हो वैसे रहो, और कुछ ऐसा करने की कोशिश मत करो जिससे तुम कृत्रिम या अवास्तविक लगो। हमें "स्वभाविक आत्मिक और आत्मिक तौर पर स्वभाविक" होने की जरूरत है!"

11. उसने साधारण भाषा इस्तेमाल की

जैसे यीशु उससे बात करने लगा तो उसने साधारण, रोज-मर्रा की भाषा इस्तेमाल की जिसे वह तुरन्त और आसानी से समझ सकी। जैसे उसने उसे प्यास बुझाने के लिए पानी दिया तो वह उससे जीवन के जल के बारे में बात करने लगा। बातचीत तो गम्भीर आत्मिक महत्त्व की थी, फिर भी यह रोजाना की भाषा में लिपटी हुई थी जिसमें कोई भी धार्मिक अधिस्वर नहीं था। यीशु और आजकल के प्रचारकों में अन्तर यह है कि यीशु में सबसे ज्यादा गम्भीर विषयों पर बोलने और उन्हें मजेदार सहज बना देने की

अदभुत योग्यता थी, जबकि आजकल के प्रचारक साधारण विषयों को लेते हैं और उन्हें गम्भीर तौर पर जटिल बना देते हैं। आजकल के मसीही समाज में हमने एक नई भाषा बनाई है। यह सुसमाचार की भाषा है - आधुनिक मसीहियत की बोली! हमने धार्मिक शब्दों की एक विशाल सूची बना रखी है जिसके बारे में नए लोग कुछ भी नहीं जानते हैं। जब गैर-मसीही कुछ कलिसियाओं में जाते हैं तो लगातार अचरज करते होंगे कि हम क्या बात कर रहे हैं। कृपया धार्मिक संकेत भाषा न इस्तेमाल करने की एक सचेत कोशिश करो। यीशु की तरह सरल भाषा इस्तेमाल करो, और "साधारण लोग आपको खुशी से सुनेंगे।"

12. उसने हमेशा एक सकारात्मक तरीका इस्तेमाल किया

यीशु के शब्द हमेशा उन्नति करनेवाले और ढाढस बँधानेवाले थे। उसकी सम्मति और सलाह हमेशा रचनात्मक थे। उसकी बारंबार ऐसे लोगों से मुलाकात होती थी जो जीवन की सीढ़ी के तल में होते थे लेकिन उसने उन्हें और नीचे धकेलने की कभी भी कोशिश नहीं की। बदले में वह उनके जैसा हो गया। वह वहीं बैठा जहाँ वे बैठते थे। उसने उन्हें संकेत दिया कि वह जानता है और समझता है "वे कहाँ से आ रहे हैं।" जब मरियम मगदलीनी ने उसे खोज निकाला जब वह धार्मिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों की संगति में था, तो वह उसके साथ नरमी से पेश आया और उसने मनुष्यों की परम्पराओं के अनुसार चलने से इन्कार किया।

13. उसका तरीका दृढ़, लेकिन हमेशा कोमल था

जैसे हम लोगों को परमेश्वर के लिए प्रभावित करने के अपने लक्ष्य की खोज में हैं तो हमें "सत्य को प्रेम के साथ बोलना" सीखना है। कभी-कभार यीशु को लोगों को ठीक करना या डाँटना पड़ता था लेकिन उसने ऐसा कभी भी दुखदायी या आपत्तिजनक तरीके से नहीं किया। वह उनके जीवनों में सच्चाई को बोलने से शर्माया नहीं लेकिन ऐसे तरीके से किया जिससे वह उनकी प्रशंसा जीत पाया, बहिष्कार नहीं। ऐसी ही घटना सामरी स्त्री के साथ हुई। उसने कहा, "तू पाँच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं।" फिर भी उसने यह ऐसे दयालु और समझदार तरीके से कहा कि उसका बुरा मानने के बजाय, वह गाँव में दौड़ कर गई और अपने पड़ोसियों से कहा, "आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया।" वह बाद में सारे लोगों को उस व्यक्ति से मिलने और उसकी सुनने के लिए बुला लाई जिसने "सत्य को प्रेम के साथ कहा था।"

14. उसने किसी भी मामले को कभी भी आशाहीन नहीं समझा

अपनी पृथ्वी की सेवा के दौरान, यीशु सब प्रकार के पापियों से निपटा। कभी भी ऐसा नहीं पाया गया कि उसने किसी का इन्कार किया हो या किसी को ठुकराया हो, खासकर इसलिए नहीं कि वे एक आशाहीन मामला थे, या अब उनके लिए कुछ नहीं किया जा सकता था। असलीयत में, उसने खासकर कहा, "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा" (यूहन्ना 6:37)। कभी-कभार शायद हम किसी व्यक्ति को देखें और हमें लगे कि यह बहुत ही आशाहीन पापी है, कि उन्हें यीशु के बारे में बताना समय की बर्बादी ही होगा। कभी-कभी हम उन्हें अपने मन में ही खत्म समझ लेते हैं, सोचते हैं कि यह परमेश्वर की बातों में दिलचस्पी नहीं रखेगा। ऐसा कभी मत करो!

"लोगों को प्रभु की नज़र से देखने की प्रयास करो।"

उसका प्रेम और दया सबसे गहरे स्थानों तक पहुँचता है। उसे "पापियों का मित्र" यूँ ही नहीं कहा गया है। वह संसार में "धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिए बुलाने आया" था (मत्ती 9:13; मरकुस 2:17; लूका 5:32)।

15. वह हर व्यक्ति का सम्मान करता था

हर मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप और उसकी समानता में बनाया गया है और केवल इस सच्चाई की खातिर ही वे हमारे सम्मान के हकदार हैं। शैतान ने मनुष्य में से परमेश्वर के तत्त्व को नष्य करने की कोशिश की है, लेकिन यीशु इसे पुनःस्थापित करने और नया करने आया था। जैसे हम सुसमाचार सुनाने और पुरुषों और स्त्रियों को मसीह के लिए जीतने बाहर जाते हैं तो एक व्यक्ति का पहले से ही न्याय करने या उनपर "कठिन मामला है" की छाप लगाने से बचें। इस उत्तेजना से भरी कहानी के अन्तिम वचनों में (आय. 39-42), हम पाते हैं कि इस एक स्त्री की गवाही से एक सारा समाज प्रभावित हुआ था। शुरू में तो वह एक बहुत ही असंभावित "अविश्वासी" लग रही थी। कितने सारे तत्त्व थे जिनके कारण कल्पना करना कठिन था कि वह इतने उत्साह के साथ उसके संदेश को स्वीकार करेगी और एक साधन बनेगी जिसके द्वारा सारे सामरी समाज तक पहुँचा जा सकता।

मसीह के लिए प्रचार करने के बारे में यह एक उत्तेजक बात है। कोई कभी भी नहीं जान सकता कि यह कहाँ तक ले जाएगा। एक सबसे ज्यादा असंभावित सम्पर्क से सब प्रकार की उत्तेजक हालात पैदा हो सकते हैं। सारे के सारे समाज मसीह में लाए जा सकते हैं और जो लोग अभी तक पहुँचे हुए नहीं हैं उन्हें भी परमेश्वर के राज्य में लाया जा सकता है।

आओ हम शुरू करें!

शुरू के अध्यायों में हमने अनेक विषय-वस्तुओं के बारे में बात की है जो मनुष्यों को जीतने के मामले के लिए उपयुक्त हैं। अब आओ हम इस सेवकाई की महत्त्वपूर्ण कुशलताओं को सीखने की कोशिश करें।

1. **महत्त्वपूर्ण तैयारियाँ**

कितने सारे मसीहियों की लोगों को मसीह में लाने की कोशिश न करने का मुख्य कारण है कि उन्हें कभी भी पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिला है या ठीक ढंग से तैयार नहीं किया गया है। यह बहुत जरूरी है कि प्रशिक्षण को सबसे ऊँची प्राथमिकता मिले। हम युद्ध में प्रभावशाली तरीके से बिना उपयुक्त प्रशिक्षण और तैयारी के कैसे जा सकते हैं ? अगर हम पर्याप्त रूप से तैयार नहीं हैं तो मनुष्यों को जीतने की इस महान और पवित्र बुलाहट में हम प्रभावित होने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं ? अनेक क्षेत्र हैं जहाँ तैयारी बहुत जरूरी है:

* <u>आत्मिक</u>
  - क. मनुष्यों को जीतनेवालों के नाते, हमें नया जन्म पाए मसीही होना चाहिए।
  - ख. हमें अपने उद्धार का बाइबल पर आधारित सकारात्मक आश्वासन होना चाहिए।
  - ग. नियमित बाइबल पढ़ना और अध्ययन करना चाहिए।
  - घ. एक लगातार और प्रभावशाली प्रार्थना का जीवन होना चाहिए।
  - च. "एक व्यक्ति को मसीह में लाने" की कला में प्रशिक्षण पाया होना चाहिए।
  - छ. जब भी मुमकिन हो अपने विश्वास के बारे में दूसरों को बताने के कार्य में समर्पित होना चाहिए।
  - ज. नए विश्वासियों की देखभाल में समय लगाने के लिए तैयार रहना चाहिए।
* <u>मानसिक</u>
  - क. मन परमेशवर के वचन द्वारा 'नया हो जाना' चाहिए। (रोमियों 12:2)
  - ख. मन हाथ में के काम के लिए अनुशासित होना चाहिए।
  - ग. मन का रवैया सकारात्मक और आशावादी होना चाहिए।
  - घ. मन को सफलता और प्रभावशाली होने का पुर्वानुमान होना चाहिए।
* <u>भावनात्मिक</u>
  - क. हमारी भावनाएँ नियन्त्रित और सकारात्मक होनी चाहिए।
  - ख. हमारी आत्मा परमेश्वर की ओर एक शान्त स्तुति के रवैये में होनी चाहिए।
  - ग. प्रभु का आनन्द सर्वोच्च और प्रबल होना चाहिए।
  - घ. हमारा सकारात्मक मानसिक रवैया हमारी भावनाओं को शान्त करता रहना चाहिए।
* <u>शारीरिक</u>
  - क. रंग-रूप साफ-सुथरा और ठीक-ठाक होना चाहिए।
  - ख. चेहरे के भाव प्रभु की शान्ति और भीतरी आनन्द प्रकट करना चाहिए।
  - ग. आचरण दीन, शिष्ट, और आश्वस्त होना चाहिए।
  - घ. आवाज नियन्त्रित और स्वर विविध होना चाहिए।
  - च. हमें हमारे हृदयों में परमेश्वर का प्रेम चाहिए।
  - छ. हमें साहस चाहिए।
  - ज. हमें हमेशा व्यवहार-कौशल और बुद्धि इस्तेमाल करनी चाहिए।

पाठ छः - एक व्यक्ति तक पहुँचने के कुछ तरीके

नीचे कुछ मूल सिद्धान्त दिए गए हैं जिनका जब हम लोगों को मसीह में लाना चाहते हैं तो पालन करना चाहिए।

1. मनुष्यों के लिए चौकन्ने, और प्रेरित रहो

सच्चे मनुष्यों को जीतनेवाले लोगों के लिए धुन विकसित करते हैं। सुसमाचार सुनाने, और लोगों को मसीह में लाने की जरूरत एक चालन और प्रेरणा देनेवाली शक्ति बन जाती है। प्रभावी मनुष्यों को जीतनेवाला लोगों के बारे में सचेत हो जाता है। जहाँ कहीं भी वे हों, वे सुसमाचार सुनाने के अवसरों की खोज में रहते हैं। वे चाहे किसी भी संगति में क्यों न हों वे किसी भी अवसर के लिए जो मिल सकता है चौकन्ने रहते हैं जो उन्हें सुसमाचार सुनाने का मौका दे सकता है। यह पवित्र आत्मा का सामर्थ है जो उन्हें कोमलता लेकिन दृढ़ता से एक व्यक्ति की दिशा में उकसाता रहता है जिसे उद्धारकर्त्ता की जरूरत है। लेकिन एक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त भी काम कर रहा होता है। यह सिद्धान्त यह कहता है कि "जिस किसी चीज के साथ भी तुम्हारा मन जिज्ञासा और उत्तेजना से भर जाता है, तुम फिर उसे जहाँ कहीं भी देखो वही नज़र आती है।"

उदाहरण के तौर पर, अगर तुम कार का एक मॉडल खरीदते हो जिससे तुम वाकई प्रसन्न हो, तो ऐसा लगता है कि हर कार जो तुम्हें दिखाई देती है उसी मॉडल की है जिसमें तुम दिलचस्पी रखते हो। अगर तुम होने दो तो यह सिद्धान्त तुम्हारे लिए सकारात्मक तौर पर काम कर सकता है। उदाहरण के तौर पर, जितना ज्यादा तुम सुसमाचार सुनाने और लोगों को मसीह में लाने की सम्भावनाओं से प्रेरित और उत्तेजित होते जाते हो, उतने ज्यादा उन अनेक अवसरों के बारे में जानकार होते जाओगे जो जीवन के साधारण दिनचर्या में आते रहते हैं। जल्दी ही तुम हर जगह अवसर देखोगे। जितने ज्यादा लोगों को तुम प्रभावी तरीके से मसीह में लाओगे उतना ज्यादा भरोसा तुम पाते जाओगे कि तुम ऐसा बार बार कर सकते हो। जितनी ज्यादा सफलता तुम पाओगे, उतनी ज्यादा इच्छा बढ़ती जाएगी। "लोगों के लिए भूख" होना वास्तव में मुमकिन है। एक ऐसी धुन जो तुम्हें जहाँ कहीं भी तुम रहो प्रेरित बनाए रखती है।

2. सक्रियता से लोगों के लिए प्रार्थना करो

हर दिन के शुरू में, जैसे तुम अपना दिन परमेश्वर को प्रार्थना में समर्पित करते हो तो यह निश्चित प्रार्थना भी करो कि उस दिन किसी को सुसमाचार सुनाने के लिए परमेश्वर आपके लिए ऐसा मुमकिन करेगा। फिर अपने दिन में एक उम्मीद के साथ बढ़ो कि परमेश्वर उस प्रार्थना का उत्तर देने वाला है। लगातार चौकन्ने और सतर्क रहो, किसी संकेत की खोज में रहो कि परमेश्वर शायद सुसमाचार के लिए एक प्रभावी दरवाजा खोल रहा हो। अपने कानों में कोई शब्द आने के लिए अपने आसपास की हर बातचीत को सुनो जिससे संकेत मिले कि किसी व्यक्ति को कोई आत्मिक जरूरत हो या कोई आत्मिक मार्गदर्शन की खोज में हो। आपके पास उन लोगों की एक सूची भी होनी चाहिए जिन्हें आप मसीह में लाना चाहते हैं। उस सूची के लोगों के लिए, उनके नाम ले लेकर और उनके उद्धार के लिए एक सकारात्मक प्रार्थना करते हुए, हर दिन प्रार्थना करो।

3. सकारात्मक विश्वास बोलो कि परमेश्वर आपको सफलता देगा

लोगों के लिए किसी सामान्य तरीके से ही प्रार्थना मत करो, यह आशा करते हुए कि किसी प्रकार परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर दे देगा। सकारात्मक ढंग से प्रार्थना करो और फिर तत्काल उत्तर की उम्मीद में परमेश्वर का धन्यवाद करना शुरू करो। अपने जीवन में सकारात्मक और आशावदी होकर फल की उम्मीद करना शुरू करो। जैसे परमेश्वर का जीवन आप में से हर दिन बहता है, तो आपके जीवन में फल होने चाहिए। उस फल का एक पहलू वे लोग होंगे जिन्हें वह तुम्हें उसके पास लाने की योग्यता देता है।

4. विश्वास की बातें बोलो, लोगों को जीतने के बारे में बोलो

आपके शब्दों में उनके अन्दर छिपी हुई जबरदस्त रचनात्मक शक्ति है। (नीतिवचन 18:21)। भाँति-भाँति के लोग हर दिन शब्दों की शक्ति को उनके काम करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। सफल विक्रेता उनकी चीजों को बेचने के लिए लगातार उनके शब्दों की सकारात्मक शक्ति को इस्तेमाल करते रहते हैं। पहले तो वे "स्वयं बातचीत" की असीम शक्ति को, खुद से बोलकर या बिना बोले बातचीत करते हुए, अपनी चीजों और उन चीजों को बेचने की अपनी योग्यता के बारे में लगातार सकारात्मक दावे करते हुए इस्तेमाल करते हैं। यह उन्हें उनके ग्राहकों को चीज को खरीदने की बुद्धि और जरूरत के बारे में कायल करने के लिए सही रवैये और मन की मनोदशा में लाता है। अगर विक्रेता और व्यापारी लोग इन शक्तियों को उनके स्वभाविक व्यापार के लक्ष्य को बढ़ाने में इस्तेमाल कर सकते हैं तो हमें भी लोगों को परमेश्वर के अनुग्रह और सामर्थ के ज्ञान में लाने के लिए हर गुण को इस्तेमाल करना चाहिए।

5. लोगों की जरूरतों के प्रमाण को ढूँढो

इस संसार का हर व्यक्ति मसीह के बिना अधूरा है, क्योंकि बाइबल कहती है, "तुम उसी में भरपूर हो" (कुलु. 2:10)। बाइबल सिखाती है कि मनुष्य जाति "भ्रष्ट" हो गई है जिसका असली अर्थ है "सबसे कमजोर जगह पर टूट सकती है।" इसलिए हर मनुष्य का अपना "टूटने का स्थान" है, उनकी अपनी दोषपूर्णता और सम्भावित कमज़ोरी की जगह है। हमें इनके संकेत ढूँढने चाहिए। उनकी आलोचना नहीं करनी है बल्कि दया की भावना से उनकी मदद करनी है कि वे उस जरूरत का उत्तर पा सकें। मनुष्य की हर जरूरत का स्थाई उत्तर मसीह में है, क्योंकि हमने देखा है कि यह मसीह में ही है कि हम सम्पूर्ण होते हैं। जब आप किसी व्यक्ति की जरूरत के बारे में जानते हैं, तो उनके पास अतिसंवेदनशीलता और तरस के साथ जाना चाहिए। याद रहे कि यह व्यक्ति अपने जीवन में कभी बहुत चोट खाया होगा और उनकी जरूरत की चेतना सम्भावित तौर पर बहुत दर्दनाक होगी। उनके अन्तरतम रहस्यों में अविवेकी तरीके से न घुसें। इस व्यक्ति के साथ अत्यधिक सावधानी और प्रेमभरी दिलचस्पी के साथ पेश आएँ। लोग उनके अन्दरूनी जीवन के मर्म क्षेत्रों में अत्यधिक भुरभुरे होते हैं। बड़ी कोमलता और सावधानी से जाँच-पड़ताल करें। ध्यान दें कि उनके दर्द को और ज्यादा असहनीय न कर दें। इस प्रकार के तरस के तरीके में यीशु विशेषज्ञ थे। वह बुरे से बुरे पापी से भी बहुत ही कोमलता और तरस के साथ पेश आते थे, निश्चय करते थे कि वह उनकी निकम्मेपन और दोष की भावनाओं में कुछ जोड़ न दे।

6. पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन की ओर संवेदनशील रहना सीखो

पवित्र आत्मा को उसके कोमल स्वभाव के कारण अक्सर एक कबूतर के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह अक्सर एक शान्त, कोमल आवाज में बात करता है, जिसको समझने और अर्थ लगाने में हमें बहुत ही संवेदनशील होना चाहिए। कभी कभी, जब तुम किसी के शब्द अपने कानों में आते हुए सुनते हो तो तुम अपनी आत्मा में कोमल शब्द आते हुए भी सुनते हो। व्यक्ति आपके स्वभाविक मनुष्य से बात कर रहा है, जबकि आत्मा आपके अन्दरूनी या आत्मिक मनुष्य से बात कर रहा है। हमें दोनों को सुनने की योग्यता को विकसित करना चाहिए। जो व्यक्ति कह रहा है उसे सुनना जरूरी है। जो आत्मा कह रहा है उससे सुनना और भी ज्यादा जरूरी है। बारंबार वह तुम्हें उनके हृदय के रहस्य बताएगा। अक्सर वह तुम्हें उनके जीवन की गहरी जरूरतों को प्रकट करेगा। कई बार वह तुन्हारी आत्मा में शब्द कहेगा जो वह चाहता है तुम उस व्यक्ति को बताओ। बिलकुल वही शब्द जिनके लिए उनकी आत्मा लालसा करती है, बुरी तरह से सुनना चाहती है। परमेश्वर के सान्त्वना के शब्द जरूरत में एक व्यक्ति को बताना एक उत्तेजक और बहुत ही लाभप्रद अनुभव है। उस समय एक व्यक्ति का चेहरा अचानक चमकते हुए देखना कितना उत्तेजना से भरा होता है क्योंकि आत्मा ने उनके अन्धकार में रोश्नी डाली है। आत्मा की आवाज को समझना एक आत्मिक कला है जिसे अनुभव और इस्तेमाल के द्वारा बढ़ाया जा सकता है।

7. हर अवसर को जो परमेश्वर देता है पकड़ लो

परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने का एक तरीका यह है कि जो मार्गदर्शन उसने पहले तुम्हें दिया है उसे इस्तेमाल करो। मैंने इसे बारंबार इस्तेमाल किया है। मैं परमेश्वर से किसी चीज के लिए मार्गदर्शन माँग रहा होता हूँ और उसने मुझे पूछा है, "पिछली बार जो मार्गदर्शन मैंने तुम्हें दिया था उसका तुमने क्या किया है?" मुझे अक्सर मानना पड़ा है कि मैंने उस वचन का पालन नहीं किया है और जब तक पालन नहीं होता नया मार्गदर्शन नहीं आता है। उसी प्रकार, अगर हम उन अवसरों को जिन्हें परमेश्वर हमारे सामने लाता है नहीं पकड़ते हैं तो हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए अगर वह और अवसरों के लिए हम पर भरोसा नहीं करता। उलटे, अगर हम आज्ञापालन की आदत डाल लें और हर अवसर का जो परमेश्वर हमारे सामने भेजता है पूरा लाभ उठाएँ, तो हम और ज्यादा अवसरों के लिए प्रत्याशी बन जाते हैं। हमसे कहीं ज्यादा पवित्र आत्मा दिलचस्पी रखता है कि लोग उद्धार में आएँ। जान लो कि वह आपसे पहले आगे पहुँचा है और कितने सारे जीवनों और हालातों में जो हर दिन हमारे सामने आते हैं काम कर रहा है। संवेदनशील बनो। समर्पित हो जाओ। आज्ञाकारी बनो। हर अवसर जो परमेश्वर आपके सामने लाता है का भरपूर लाभ उठाओ, क्योंकि जैसे ऐसा करोगे तो वह और अवसर देता जाएगा। वह बड़े बड़े अवसर आप पर सौंपेगा। आपका जीवन फलवन्तता से उमड़ने लगेगा जो परमेश्वर के हृदय, और आपके हृदय को भी बहुत संतोष लाएगा।

8. वहाँ जाओ जहाँ लोग हैं

कितने सारे मसीही उन लोगों से जिनके लिए मसीह मरा अलग और प्रथक् हैं। धार्मिक वर्जित शब्द, और बहुत से मसीही कार्यक्रमों में व्यस्त होना अनेक मसीहियों से गैर-मसीही लोगों तक पहुँचने के समय और अवसर को छीन लेता है। बहुत जरूरी है कि इसका उपाय ढूँढा जाए ताकि मसीहियों को एक नष्ट हो रहे और मर रहे संसार तक पहुँचने के लिए उत्तम समय मिल सके।

<u>खोए हुओं तक पहुँचने के हमारे लिए यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं:</u>

<u>एक अदभुत मित्र का परिचय कराना</u>

मसीह को स्वीकार करने के विषय की बात करने का सबसे आसान तरीका, इस विषय को एक अदभुत मित्र का परिचय कराने के अवसर के रूप में देखना है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो यीशु जैसे अदभुत मित्र को जानकर लाभ न पाए। विविध प्रकार के भिन्न-भिन्न कारणों से, अधिकतर लोग यीशु जैसे अदभुत मित्र को एक मित्रता के सम्बंध में जानना चाहेंगे।

हर कोई एक मित्र का परिचय कराने की प्रक्रिया का आदी होता है। दूसरों की तुलना में कुछ परिचय कराने का काम बारंबार करते होंगे और कला के ज्यादा अनुभवी होंगे, लेकिन हम सब ने यह कहीं न कहीं अनेक बार किया है। पहली माँग एक व्यक्ति के जीवन में जरूरत को पहचानना या समझना है जो एक अच्छे मित्र की उनकी मूल जरूरत की ओर साफ-साफ संकेत करता है।

पहला संकेत प्रकट है अकेलापन होगा। जीवन के हालातों ने अलगाव और अकेलेपन के अनुभव इस व्यक्ति पर थोप दिए हैं। उदाहरण के तौर पर, आओ हम एक अकेले माँ के बारे में सोचें। एक जवान स्त्री, अविवाहित, त्यागी हुई, या विधवा, जिस पर अपने बच्चे के पालन-पोषण की जिम्मेदारी है। अपने और बच्चे के जीवन के निर्वाह लिए नौकरी करने की जरूरत। कितनी सारी अत्यावश्यक जिम्मेदारियाँ हैं कि उसके पास औरों से सम्पर्क का कम ही अवसर है जि उसके लिए प्रोत्साहन और सान्त्वना का साधन बने। यीशु के साथ व्यक्तिगत सम्बंध और मित्रता इस व्यक्ति के लिए कितना अन्तर ला सकता है। हमारे सामज में और भी कई अकेले लोग हैं। घनी आबादीवाले शहरों में भी अकेलेपन और निराशा से भरे लोग होते हैं। हर दिन लोग आत्महत्या करते हैं क्योंकि वे अकेले और मित्र बिना हैं। लोगों का अपने अदभुत मित्र यीशु के साथ परिचय कराके इस प्रकार की विपत्ति को नहीं होने देना कितनी अदभुत बात है।

दूसरे लोगों की कुछ समस्याएँ हो सकती हैं जो उन्हें किसी को जो परवाह करनेवाला और हमदर्द है, बताने की जरूरत है। पहले पहल तो आप वह सही व्यक्ति हैं जिसे बताया जा सकता है, लेकिन आपका मित्र यीशु उससे भी बेहतर व्यक्ति है जिसे वो आन्तरिक और दर्दभरी समस्याएं बताई जा सकती हैं। और भी कई कारण हैं कि जिन लोगों से आप हर दिन मिलते हैं, वे एक अदभुत मित्र से परिचित होकर बहुत लाभ उठा पाएँगे।

यीशु "ऐसा मित्र है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है" (नीतिवचन 18:24)। उसमें चरित्र की सारी अदभुत विशेषताएँ हैं जो उसे एक अदभुत मित्र बनाती हैं। वह हमारा अदभुत उद्धारकर्त्ता, मित्र, अटल साथी, विश्वस्त विश्वासपात्र, परामर्शदाता, बोझ उठानेवाला, टूटे दिलों को चंगा करनेवाला है। वह एक वकील, सलाहकार, प्रेमी, और ये सब चीजें और इनसे भी बहुत ज्यादा है। एक कितना अदभुत मित्र!

जान लो कि यह अदभुत मित्र हर समय और हर परिस्थिति में जहाँ कहीं भी आप जाएं आपके साथ है। न केवल अपने आश्चर्यजनक विशेषताओं से आपको आशीश देने के लिए, बल्कि जिससे भी आप मिलें जिसमें आप यीशु जैसे मित्र के लिए एक जरूरत देखते हैं उससे परिचित होने के लिए। आप लोगों का परिचय यीशु से उसी प्रकार कर सकते हैं जिस प्रकार आप एक संसार के मित्र का करते हैं। एक बार जब बातचीत के द्वारा किसी समस्या के बारे में पता चलता है जिसे यीशु के साथ सम्पर्क द्वारा फायदा हो सकता है, तो आप कह सकते हैं, "मैं किसी को जानता हूँ जो आपकी मदद कर सकता है। वह ऐसा है अगर आप करने देंगे तो वह आपकी समस्या में आपकी बहुत मदद कर सकता है। उसका नाम यीशु है और वह हमेशा उनकी मदद करने के लिए तैयार रहता है जो उसे पुकारते हैं।"

मुझे इस प्रकार कई लोगों को यीशु से भेंट कराने का आनन्द प्राप्त हुआ है। सब प्रकार के लोग, सब प्रकार की समस्याओं वाले। मैंने वेश्याओं, जुआरिओं, नशा करनेवालों, सफल व्यापारियों, अमीर लोगों, समाज के हर प्रकार के लोगों को एक साधारण लेकिन प्रभावी तरीके से यीशु को पाते देखा है। अगर यह सारा तरीका आपको बहुत ही आसान और अविश्वसनीय लगता है तो इसमें जो चीज आप देख नहीं पा रहे हैं वह है पवित्र आत्मा का हाथ। परिस्थिति में उसकी उपस्थिति अदृश्य, सकारात्मक, चमत्कारी पहलू है जो अन्तर लाता है। आप अक्सर मनुष्यों को जीतने में एक रहस्यात्मक तत्त्व पाएँगे। आपको विश्वास नहीं हो पाएगा कि क्या हो रहा है। जिस प्रकार काम होता है, जिस तरीके से लोग प्रतिक्रिया दिखाते हैं। वो आश्चर्यजनक परिणाम जो घटित होते हैं। यह कभी-कभी नकली लगता है। लेकिन रहस्य पवित्र आत्मा का काम है। सतह के नीचे, और दृश्य के पीछे, अदभुत, रहस्यवादी, विश्वसनीय पवित्र आत्मा काम कर रहा होता है। उसके बिना तुम ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते हो जिसकी कोई अनन्त कीमत हो। लेकिन उसके साथ कुछ भी संभव है। यही कारण है कि जब तुम मनुष्यों को जीतने के साहसिक कार्य में लग जाते हो तो जीवन कितना उत्तेजना से भर जाता है। जीवन एक नया, उत्तेजक, और रोमाँचक मोड़ लेता है। तुम कभी जान नहीं सकते हो कि आगे क्या होगा। यह अति सुन्दर है। बेशक इस सारे काम में मित्रों का परिचय कराने से कुछ ज्यादा करने की जरूरत होती है। कई और तत्त्वों की भी जरूरत होती है। मन फिराना, विश्वास, वचनबद्धता, वगैरा, ये सब जरूरी चीजें हैं जिनके बारे में हम जल्दी ही बात करेंगे।

बातचीत संबंधी मार्ग

बातचीत लगभग हर एक के जीवन का एक सामान्य भाग है। वे अक्सर रोजाना के आधार पर लगातार होती रहती हैं। जहाँ कहीं भी हम जाएँ, जिस किसी से भी हम मिलें, बातचीत अधिकाँश परिस्थियों में सरलता और आसानी से शुरू हो जाती हैं। वे बस, ट्रेन, दुकान, आफिस में, होटल में होती हैं। बातचीत शुरू करने में लोग बारंबार किसी चीज की खोज में होते हैं। वे व्यक्तिगत सम्पर्क, जानकारी, आश्वासन की तलाश में होते हैं। कई किस्सों में यह एक अकेला व्यक्ति हो सकता है जो दूसरे मनुष्य के स्नेह को छूने की कोशिश कर रहा हो। एक असुरक्षित व्यक्ति, आश्वासन और समर्थन की तलाश में हो।

मसीहियों के रूप में, हमें ऐसे लोगों के लिए उपलब्ध होने की कोशिश करनी है। हमें दोस्ताना और मिलनसार बनने की कोशिश करनी चाहिए। हमें अपनी योग्यता के अनुसार एक "लोगों का व्यक्ति" बनने का लक्ष्य बनाना चाहिए। मैं जानता हूँ कि कुछ के लिए दूसरों की तुलना में मिलनसार होना काफी आसान होता है। फिर भी, हमारे अन्दर के पवित्र आत्मा की मदद से, हमारे लिए गैर-मसीही लोगों की तुलना में जिनके पास उनके अन्दर पवित्र आत्मा का आश्वासन देनेवाली उपस्थिति नहीं है, सम्पर्क बनाना और मित्रता और सुननेवाले कान का देना काफी आसान होना चाहिए।

और ज्यादा मिलनसार और लोगों के खुले होने का प्रयत्न करो। आश्चर्य की बात है कि कितनी सरलता से कितनी सारी बातचीत आत्मिक विषयों की ओर मोड़ी जा सकती हैं। जब लोग संसार की खराब हालत के बारे में बात करते हैं तो तुम कह सकते हो, "बाइबल भविष्यवाणी करती है कि अन्त के दिनों में ये चीजें होने वाली हैं।" तुरन्त बातचीत "समय के चिन्हों" और दूसरे बाइबल के विषयों की ओर जा सकती है।

एक व्यक्तिगत अनुभव

मेरे मसीही बनने के तुरन्त बाद, मुझे एक साधारण बातचीत के द्वारा मनुष्यों को जीतने का पहला अनुभव मिला। मैं देर रात शहर में चल कर जा रहा था। मेरे सामने से एक नौजवान आ रहा था जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वह कुछ अज्ञात व्यक्ति सा लग रहा था, उसने खराब से कपड़े पहने हुए था और उसका चेहरा उदासी से झुका हुआ था। जैसे मैं उसके करीब आया तो मुझे लगा मेरे अन्दर कोई कह रहा है "इस नौजवान व्यक्ति से बात करो।" मैं तुरन्त सोचने लगा, "मैं इससे क्या कह सकता हूँ?" कौंध की तरह उत्तर आया, "उसे बता कि परमेश्वर उससे प्रेम करता है।" इस समय तक मैं उसके बराबर पहुँच चुका था और मैं उसके पास खड़ा हो गया। मैंने कहा, "मुझे माफ कीजिए, क्या आप जानते हैं परमेश्वर आपसे प्रेम करता है?" वह तुरन्त रुक गया और कहने लगा, "अगर यह सच है तो इस सृष्टि में वही एक होगा जो मुझ से प्रेम करता है।" मैं तुरन्त पहचान गया कि इस नौजवान के अन्दर बहुत सारी चोट है और उसे एक ओर करते हुए, उसे बताने लगा कि मैंने भी अपने जीवन में कुछ चोटें अनुभव की थीं और किस प्रकार मसीह के पास आना मेरे अन्दर के क्रोध और कुण्ठा के लिए बहुत चँगाई लाया था। हम एक दुकान के दरवाजे के पास एक घंटे तक खड़े रहे और अपनी सामान्य चोटों के बारे में बात करते रहे और जैसे आधी रात का घंटा बजा, उसने प्रार्थना करके मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार कर लिया। आगामी महिनों में मुझे उसके जीवन में बहुत बड़ा बदलाव देखने का सौधाग्य प्राप्त हुआ। उसके माता-पिता पुराने शराबी थे और उसकी कई बहनें वेश्याएँ थीं। एक परिवार में जिसमें नौ सदस्य थे, किसी के बीच में कुछ भी प्रेम नहीं था। उसके जीवन में बहुत कमी रह गई थी। वह एक बड़ी अन्दरूनी नाराजगी के साथ बड़ा हुआ था। वह सब प्रकार की चोटों, अन्तर्बाधाओं, और मनोग्रन्थियों से भरा हुआ था, लेकिन जल्दी ही बदलाव आने लगे। उसके जीवन में नए गुण आने लगे और बहुत सम्पन्न होने लगा। उसने स्थानीय कलीसिया में नए मित्र बनाए। उसका व्यक्तित्व खिलने लगा और एक चमक अपनाने लगा जिसका पहले कोई संकेत नहीं था। कई लोग और उसके माता-पिता, भाई और बहनें भी इन असाधारण बदलावों पर ध्यान देने लगे। मसीह को पाने के दो वर्षों में, उसके सारे परिवार ने मसीह को अपना लिया था और परिवार का सारा वातावरण परिवर्तित हो गया था। एक साधारण बातचीत के द्वारा कितनी अदभुत फसल! कृपया याद रखें कि बातचीत उद्धार की ओर ले जाती हैं!

सामना करनेवाला मार्ग

यीशु ने अक्सर इस तरीके को अपनाया, हालाँकि यह पहले एक बातचीत से ही शुरू होता है। सामना का अर्थ है कि तुम एक व्यक्ति के सामने एक महत्त्वपूर्ण मामले को लेकर उसका "सामना" करने के लिए खड़े हो जाओ। मरकुस 10:17-27 में, यीशु और "धनी युवक" के बीच सामना की कहानी दी गई है। यह एक धनी युवक का यीशु को खोजने और उससे पूछने कि वह अनन्त जीवन कैसे पा सकता है, से शुरू होती है। यीशु इस नौजवान से बहुत ही प्रसन्न हुए जिसने अपने जीवन भर आज्ञाओं का पालन किया था। फिर भी, यीशु ने पहचान लिया कि उसकी धन-दौलत एक ठोकर का कारण थी। वह अनन्त जीवन या परमेश्वर की इच्छा को धन-सम्पत्ति को ज्यादा कीमत देता था, और यीशु जानता था कि उसे इस मामले को लेकर उसका सामना करना होगा।

ऐसे समय होंगे जब तुम्हें भी किसी का सामना करने की जरूरत पड़ेगी, बिना समझौता किए सच्चाई बतानी पड़ेगी। लेकिन इस तरीके से करो जिससे वे इसका सामना कर सकें। वे शायद इस नौजवान की तरह समर्पित होने के इच्छुक न हों, लेकिन आपने अपना काम कर दिया है। आपने उन्हें असलीयत के सामने ला खड़ा कर दिया है। आपने उनका उन चीजों से सामना किया जो परमेश्वर के दृष्टिकोण के अनुसार हैं। निश्चित हो जाओ कि ऐसे भी समय और हालात होंगे जब यह तरीका व्यर्थ भी होगा। आपको ऐसा हमेशा प्रेम के साथ करना है। यीशु ने उन दो चोरों का जो उसके साथ क्रूस पर लटके थे सामना किया। उनमें से एक के लिए यह दण्डाज्ञा लाया। दूसरे के लिए इसने स्वर्गद्वार खोल दिया। इस प्रकार हम "कुछ के लिए तो मरने के निमित्त मृत्यु की गन्ध, और कितनों के लिए जीवन के निमित्त जीवन की सुगन्ध" (2 कुरिं. 2:16) बन जाते हैं।

व्यक्तिगत प्रार्थना मार्ग

एक व्यक्तिगत बातचीत के दौरान यह अक्सर पता चलता है कि व्यक्ति अपनी जरूरतों की ओर संकेत कर रहा है। अधिकतर लोगों के जीवन, परिवार, या परिस्थिति में कुछ होता है जिसके बारे में वे गुप्त रूप से आपकी प्रार्थना चाहेंगे। जितने भी लोगों को जिन्हें मैं सुसमाचार सुना चुका हूँ, उनमें से चंद लोग ही ऐसे हुए हैं जिन्होंने जब उनके लिए प्रार्थना करने का प्रस्ताव रखा गया तो प्रार्थना पाने से इन्कार किया है। सरलता और बिना दवाब के। अगर आप कहते हैं, "क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर उस परिस्थिति में आपकी मदद कर सकता है, और अगर आप चाहें तो मैं आपके लिए अभी प्रार्थना कर सकता हूँ?" "हाँ, मैं चाहता हूँ आप प्रार्थना करें।"

इससे अक्सर मदद मिलती है अगर आप बुद्धिमानी से उनके साथ कोई व्यक्तिगत सम्पर्क बना सकें, जैसे कि उनका हाथ पकड़ना, उनके कंधे पर अपना हाथ रखना, वगैरा। (प्रकट है कि आप इसके बारे में बहुत संवेदनशील और सावधान रहें, खासकर अगर व्यक्ति विरुद्ध प्रतिजाति का है, या एक ऐसे धर्म या संस्कृति का है जिसमें शारीरिक सम्पर्क वर्जित है। अगर इसके बारे कुछ भी संदेह है तो उन्हें छूना नहीं है।) जब हम ऐसे सम्पर्क बनाते हैं तो यह परवाह, सहानुभूति और तरस प्रकट करता है। लेकिन यह भी जैसे यीशु हमें मरकुस 16:18 में करने के लिए उत्साहित करता है "एक व्यक्ति पर हाथ रखने" का एक विवेकशील, अ-धार्मिक तरीका है। इस प्रकार यह एक वास्तविक पुल बन जाता है जिसमें आप में से जरूरतमन्द व्यक्ति तक परमेश्वर का सामर्थ बह सकता है।

यह "प्रार्थना का सम्पर्क" कई बातें हासिल करता है:

- बातचीत में एक "आत्मिक" पहलू लाता है।
- यह व्यक्ति तक परमेश्वर की एक व्यक्तिगत जानकारी लाता है।
- यह उनका प्रार्थना से परिचय कराता है, और प्रार्थना करने का उन्हें एक उदाहरण देता है।
- यह उन्हें विश्वास इस्तेमाल करना दिखाता है।
- उनके जीवन परमेश्वर के काम के लिए खोलता है।

यह अक्सर बड़े आश्चर्य की बात है कि इस प्रकार के शक्तिशाली सम्पर्क से क्या हो सकता है, क्योंकि पवित्र आत्मा को अब व्यक्ति के जीवन और परिस्थिति में सीधा प्रवेश मिलता है। मैंने बारंबार व्यक्ति के साथ प्रार्थना की है जिसने पहले कुछ-कुछ भिन्न उत्तर देने की कोशिश की है। जैसे कि कह रहा हो, "मैं इसमें विश्वास नहीं करता हूँ, मैं कुछ होने की उम्मीद नहीं करता हूँ, फिर भी करो!" और जैसे हमने प्रार्थना की है, तो नरमी आई है और मैंने अक्सर चेहरे पर आँसू बहते देखें हैं जहाँ पल भर पहले निष्क्रियता झलक रही थी।

एक बार जब प्रार्थना के द्वारा व्यक्ति के जीवन में "परमेश्वर तत्त्व" का परिचय हो जाता है, तो कुछ भी हो सकता है और बारंबार होता भी है।

हमेशा तुरन्त नहीं। कभी-कभी दिनों और हफ्तों बाद व्यक्ति बताता है, "अरे सुनो, उस दिन से जब आपने प्रार्थना की तो हालात अच्छे होने लगे हैं!" इससे उस व्यक्ति के साथ परमेश्वर के साथ उनके सम्बंध के बारे में बात करने के लिए वातावरण बहुत अच्छा हो जाता है।

व्यक्तिगत गवाही मार्ग

मैंने इस अध्ययन में पहले कहा था कि व्यक्तिगत गवाही, जब सही तरीके से और सही समय पर दी जाए तो बहुत ही कायल करने योग्य और प्रभावशाली हो सकती है। शायद व्यक्ति उसके पहले के जीवन की कुछ घटना से सम्बंध लगाना शुरू करता है। वो चीजें जो उन्हें प्रेम के परमेश्वर, या उसके पूर्वप्रबन्ध में विश्वास करने में कठिनाई लाती हैं। उन चीजों का भी जिक्र किया जा सकता है जो आपके मसीही जीवन से पहले के जीवन में घटी थीं और जो उसके अनुभव के समान्तर हों। यह अक्सर आपको कहने के लिए खुला दरवाजा देता है, "क्या मैं आपको अपना व्यक्तिगत अनुभव बताऊँ कि परमेश्वर ने उसमें मेरी मदद कैसे की थी?"
हर मसीही "तुम्हारी आशा के विषय में" (1 पतरस 3:15) उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहे। चाहे यह कुछ लोगों के सामने सार्वजनिक गवाही हो, या एक व्यक्ति के साथ अकेले में बताई गई हो, हमें हर समय तैयार रहना है।

<u>प्रभावशाली होने के लिए, एक गवाही के तीन भाग होने चाहिए:</u>

1. मसीह में आने से पहले के अपने जीवन के हालात।
2. मसीह पर भरोसा कैसे किया।
3. जब से आपने खुद को मसीह के साथ वचनबद्ध किया है, आपके जीवन में क्या हुआ है।

आओ जल्दी से इन्हें अलग-अलग देख लें:

- <u>आपका मसीह से पहले का जीवन</u>

  आपको अपने जीवन के हर पहलू में अतिसावधान, आन्तरिक विवरण में जाने की जरूरत नहीं है। सामान्यत: वो बातें जो आपके सम्पर्क के अनुभवों के समान्तर लगती हैं उन्हीं पर जोर देने की जरूरत है। अगर आप ईमानदारी से यह कह पाएँ, "तुम जानते हो, मैं तुम्हारी तरह ही महसूस कर रहा था जब तक कि ......।" जैसे आप सामान्य अनुभवों की बातें बताते हो तो व्यक्ति को एहसास होगा कि आप समझते हैं कि वे क्या अनुभव कर रहे हैं। उन्हें एहसास होता है कि आप सिद्धान्त रूप से बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि आप असली जीवन से बात कर रहे हैं और अनुभव से बोल रहे हैं। जो व्यक्ति अनुभव से बोलता है उसके पास उससे जिसके पास केवल सिद्धान्त है, कुछ ज्यादा शक्तिशाली है।

- <u>आप मसीह पर भरोसा कैसे करने लगे</u>

  एक बार और आपको अपने अनुभव की समान्तर परिस्थितियों की ओर ध्यान खींचने की कोशिश करनी चाहिए। जिस बात पर आप आखिरकार जोर देना चाहते हैं वह है "जो मेरे साथ हुआ है वह अदभुत है, और **यह आपके साथ भी हो सकता है**।" इस प्रक्रिया का सारा उद्देश्य केवल अपना व्यक्तिगत अनुभव सुनाना ही नहीं है बल्कि दूसरे व्यक्ति की मसीह ग्रहण करने और उनके जीवन में परमेश्वर का अनुग्रह और सामर्थ करने में मदद करना है।
  अगर आप मसीह में भरोसा करने के अपने व्यक्तिगत अनुभव का प्रयाप्त रूप से वर्णन कर सको, तो आप व्यक्ति के लिए उतना ही आसान कर दोगे कि वह उस पर भरोसा कर सके। जो कदम आपने उठाए, जिस प्रकार आपने प्रार्थना की, जिन विचारों और भावनाओं को आपने अनुभव किया, समझाओ। इसे जितना स्पष्ट और सरल हो सकता है बनाओ। साधारण रोजाना की भाषा में कहानी बताओ। धार्मिक वाक्याँश और पारिभाषिक शब्दावली इस्तेमाल मत करो। दूसरे व्यक्ति की समझ के स्तर तक आ जाओ। उन्हें अपने अनुभव में से एक एक कदम करके ले जाओ ताकि उद्धार का मार्ग उनके लिए बहुत स्पष्ट हो जाए।

- <u>मसीह में आने के बाद क्या हुआ है</u>

  एक गवाह वह व्यक्ति है जिसने एक घटना से सम्बंधित जो देखा, सुना और अनुभव किया बताता है। जब एक गवाह अदालत में गवाही देता है तो उससे उम्मीद नहीं की जाती है कि वह अपने विचार या भाव प्रकट करे। उसे वही विस्तार से बताने की जरूरत है जो उसके साथ हुआ है। वही बात मसीह की गवाही और उसकी असलीयत का प्रमाण देने के बारे में सच है। तुम यह कह रहे हो, "मैं जानता हूँ यीशु असली है, मैंने उसकी उपस्थिति और सामर्थ अपने जीवन में अनुभव किया है। जब तक मैंने उसे नहीं जाना, मैं अकेला, डरा हुआ, असुरक्षित और दुखी था और अब उसने मेरे अकेलेपन और डरों को निकाल दिया है और वह मेरे जीवन को बदल रहा है।"
  आप कुछ कायापलट करनेवाले तत्त्वों के बारे में भी बात कर सकते हैं जैसे कि प्रार्थना, बाइबल, मसीही सलाह और संगति वगैरा। यह उस व्यक्ति को बताने का एक तरीका है कि मसीह को खोजने की इस प्रक्रिया में यह एक चलते रहनेवाला तत्त्व है, और कि उसे पूरी तरह जानने और उसका महत्त्व समझने के लिए उसके पीछे चलना होता है।

अपने व्यक्तिगत अनुभव को बताने के बाद आपको हमेशा उसका उपयोग बताना चाहिए "जो मसीह ने मेरे लिए किया है, वह बिना शक आपके लिए भी वैसा ही करेगा अगर आप अपना जीवन उसकी ओर वचनबद्ध करें।" आपको शायद यह भी लगे कि व्यक्ति को इसी समय मसीह में लाने का यही सही समय है। तब आप उनका मसीह से परिचय कराएं, और मन फिराने और वचनबद्धता की प्रार्थना करने, और विश्वास से मसीह को उनके जीवन में स्वीकार करने में मदद करें।

याद रखें कि एक व्यक्ति के लिए उसकी गवाही आत्मिक सच्चाई को बताने का सबसे उत्तम साधन है। आप परिचित क्षेत्र में हैं - आप और किसी चीज से ज्यादा अपने अनुभव को जानते हैं। आप बातचीत को अच्छी तरह नियन्त्रित कर सकते हैं।

याद रखें कि एक व्यक्ति के लिए एक सिद्धान्त या तर्क की तुलना में एक अनुभव ज्यादा महत्त्व रखता है। जो आपने अनुभव किया है उससे कोई भी विवाद नहीं कर सकता है। वे चाहे कुछ भी कहें, आप जानते हैं कि आपके साथ क्या हुआ है और क्या उसका प्रभाव पड़ा है।

(क्यों न इस समय यहाँ पर रुकें और अपनी गवाही बड़े ध्यानपूर्वक लिख लें।

इसे दिए गए सुझाव के अनुसार, तीन भागों में लिखो। इसे लिखो और दोबारा लिखो। इसका सम्पादन करो और इसे शुद्ध करो। इसे याद करो और इसे किसी भी समय, कहीं भी बताने के लिए तैयार रहो। यह सुसमाचार प्रचार के लिए तुम्हारा सबसे बड़ा और सबसे प्रभावशाली औजार है।)

- **सीधा मार्गदर्शन का मार्ग**

आखिरी तरीका जिसके बारे में मैं बताऊँगा वह है सीधा मार्गदर्शन का मार्ग। सम्भवतः बाइबल में इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण प्रेरितों 8:26-40 में फिलिप्पुस का है। वह सामरिया में सामर्थ के साथ सुसमाचार प्रचार कर रहा था और वहाँ बेदारी चल रही थी, जब पवित्र आत्मा ने उससे सीधे बात की (आय. 26) और उसे कहा, "उठ और दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से गाजा को जाता है।" फिलिप्पुस ने आत्मा के मार्गदर्शन का पालन किया और पाया कि एक प्रभावशाली कूश का मनुष्य रथ में बैठा है और यशायाह की पुस्तक पढ़ रहा है। इस मुलाकात का नतीजा न केवल इस मनुष्य का परिवर्तन और पानी का बपतिस्मा था, बल्कि बाद में कूश के देश में होने वाली बेदारी भी थी, जिसके परिणाम आज भी इस प्राचीन देश में प्रकट हैं।

मनुष्यों को जीतने का यह एक तरीका है जिसके परिणाम बारंबार सबसे ज्यादा प्रभावशाली और दूर तक पहुँचते हैं। इसका कारण यह है कि सारा काम पवित्र आत्मा द्वारा चलाया जाता है। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम अपने अन्दर पवित्र आत्मा की शान्त, अन्दरूनी आवाज सुनने में अनुभवी हो जाएँ।

उसकी आवाज पहचानना और का आज्ञापलन करना सीखना अत्यावश्यक है अगर हम अच्छे चेले बनना चाहते हैं, और खासकर अगर हम उतने ही फलवन्त होना चाहते हैं जितना परमेश्वर चाहता है हम हों।

पाठ सात – एक व्यक्ति को मसीह में लाना

जैसे हम लोगों को मसीह में लाना चाहते हैं तो अनेक तत्त्व हैं जिनके बारे में हमें सचेत होना जरूरी है। मैं किसी तरीके या ढंग के बारे में नहीं बता रहा हूँ जिनका कठोरता से पालन करना चाहिए, लेकिन कुछ सिद्धान्त हमें ध्यान में रखने चाहिए अगर लोगों को यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार का एक सही अनुभव होना है। इनमें से किसी के साथ भी समझौता करना, या यह निश्चय करने में असफल रहना कि व्यक्ति उनका तात्पर्य साफ-साफ समझता है, का अर्थ हो सकता है कि उसे नए जन्म का सही अनुभव नहीं मिला है।

1. पाप

इन दिनों पाप एक लोकप्रिय विषय नहीं है और इसका जिक्र ही कई उदार समुदायों (कुछ कलीसिया समुदायों में भी) में अक्सर तिरस्कार और उपहास लाता है। आजकल का मनुष्य पाप को सामाजिक असावधानी, व्यक्तिगत पसन्द, उत्पति-सम्बंधी विशेषताएँ, या व्यक्तित्व अभाव कहता है। कई और लोग मानने से इन्कार करते हैं कि पाप जैसी कोई चीज है। उनका सोच-विचार है, "अगर यह अच्छा लगता है, तो करो।" उनके लिए कुछ भी रोक नहीं है। सब विचलन स्वीकार्य हैं। एक व्यक्ति जो कुछ अपने जीवन के

साथ करता है वह उनका अपना मामला है और किसी को भी हस्तक्षेप करने का हक नहीं है। इस प्रकार की धारणा पर परमेश्वर के वचन से आक्रमण करना चाहिए और उसे हराना चाहिए। बाइबल, इसके शुरू के अध्यायों से, पाप की असलीयत और सजा के बारे में साफ-साफ सिखाती है। जब तक कोई इस मूल विषय पर बाइबल से सहमत होने को तैयार नहीं है तब तक उद्धार के सारे मामले का प्रश्न ही पैदा होता।

अगर पाप जैसी कोई चीज नहीं होती,
तब उद्धार या मसीहा की कोई आवश्यकता नहीं होती, और
उद्धार की सारी योजना असंगत और व्यर्थ होती।

हमें समझना चाहिए कि पाप ही वह चीज है जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग करती है। शुरू में बाइबल के अनुसार यह आदम और हव्वा की अवज्ञा थी जिसने पहला पाप लाया। उनकी अवज्ञा के कारण सारी मनुष्यजाति परमेश्वर से अलग हो गई। इसलिए, पहले तो पुरुष और स्त्रियाँ पापी हैं, इसलिए नहीं कि वे कुछ करते या नहीं करते हैं, लेकिन आदम और हव्वा की अवज्ञा के कारण। हम अपनी पापमय स्थिति अपने आरंभिक पूर्वजों से पाते हैं। इसलिए हम अपनी विरासत के द्वारा पापी हैं। एक व्यक्ति इसलिए पापी नहीं क्योंकि वह पाप करता है। वह पाप करता है क्योंकि वह पापी है। रोमियों 3:23 कितनी सरलता और स्पष्टता से कहता है, "इसलिए कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" यह पाप विश्वव्यापकता के बारे में सिखाता है। सब मनुष्य, सब जगह पापी हैं। यह पाप के स्वभाव के बारे में सिखाता है, यानि पाप की महिमा से वंचित हैं।
जब हम किसी को बताने की कोशिश करते हैं कि वे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की नज़र में एक पापी हैं तो हम उनकी आलोचना करने के लिए उन्हें चुन नहीं रहे हैं, या न ही हम सुझाव दे रहे हैं कि उनका व्यक्तिगत व्यवहार या स्तर एक सामान्य व्यक्ति से खराब है। हम केवल इतना कह रहे हैं कि सारी मनुष्यजाति के साथ साथ वे भी परमेश्वर के स्तर से कम पड़ रहे हैं।

2. पाप की सजा

रोमियों 6:23 कहता है, "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।" केवल शारीरिक मृत्यु ही नहीं जब मनुष्य का आत्मा शरीर को छोड़ जाता है, लेकिन आत्मिक मृत्यु जिसका अर्थ है परमेश्वर से अनन्त संबंध-विच्छेद। यह वो सजा है जिसके बारे में परमेश्वर ने आदम और हव्वा को चेतावनी दी थी। उसने उनको कहा था कि अगर उन्होंने उसकी आज्ञा नहीं मानी तो "अवश्य मर जाएगा।" उनके पाप के कारण, उनमें शारीरिक मृत्यु काम करने लगी। वे नश्वर प्राणी बन गए। शारीरिक मृत्यु और उसके लक्षण उनके जीवन में तुरन्त कार्य करने लगे, जिसका परिणाम यह था कि एक दिन वे मर जाएँगे। लेकिन बड़ा संकट था कि पाप में मरने का अर्थ था कि व्यक्ति परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग हो जाएगा, और उस जगह भेज दिया जाएगा जिसे बाइबल नरक कहती है!

3. उद्धार

रोमियों 6:23 का दूसरा भाग एक सकारात्मक पहलू पेश करता है, "परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में अनन्त जीवन है।" यह इस बात पर जोर देता है कि उद्धार कर्मो, स्वयं-कोशिश, अच्छा जीवन या भले कामों के द्वारा नहीं है, बल्कि यह हमारे प्रभु यीशु के द्वारा है। हमें व्यक्ति को उनकी एक मसीहा की जरूरत के बारे में बताना है। अगर किसी को जरूरत की जानकारी नहीं है तो एक उद्धारकर्त्ता को खोजने की प्रेरणा नहीं होगी। हमें उन्हें आगे यह दिखाना चाहिए कि यीशु मसीह ही उद्धारकर्त्ता है, "तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और वही मसीह प्रभु है" (लूका 2:11)।

- केवल वही उद्धारकर्त्ता है! प्रेरितों 4:12 "किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।"
- वह एक सम्पूर्ण उद्धारकर्त्ता है। इब्रानियों 7:25 "इसीलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है।"
- वह एक सामर्थी उद्धारकर्त्ता है। इब्रानियों 2:14-15 "ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे; और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फँसे थे, उन्हें छुड़ा ले।"
- वह विश्वव्यापी उद्धारकर्त्ता है। 1 तीमुथियुस 4:10 "जो सब मनुष्यों का और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्त्ता है।"

4. उद्धार मसीह में विश्वास के द्वारा है

"प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा" (प्रेरितों 16:31)। ये शक्तिशाली शब्द फिलिप्पी जेलर को उसके प्रश्न के उत्तर में कहे गए थे। "उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?", सब जगह सब मनुष्यों पर लागू होते हैं और उद्धार के उपलब्ध तरीके के बारे में बताते हैं। रोमियों 10:9 कहता है "यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो **तू निश्चय उद्धार पाएगा**।"

वचन याद करना

जैसे आप लोगों को मसीह में लाने की कोशिश कर रहे हैं तो मन में एक "आयोजित मार्ग" होना सहायक साबित होगा। अगर आप हर बात पर इसके अनुसार न भी कर सकें, तोभी यह आपको सही दिशा में चलते रहने में मदद करता है। यह आपको और विश्वास देता है और हालात के नियंत्रण में रहने में आपकी मदद करता है। कई सरल मार्ग हैं जिन्हें आप याद कर सकते हैं। यहाँ पर कुछ सरल मार्ग दिए गए हैं। हर एक मसीह की ओर वचनबद्धता के लिए एक प्रगतिशील मार्ग की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। संबंधित वचन आसानी से याद किए जा सकते हैं और मनुष्यों को जीतनेवाले की बातचीत में आगे बढ़ने के लिए मार्ग देता है जो उद्धार को ले जाता है।

उद्धार के लिए पाँच कदमः

1. **सारी मनुष्यजाति पापी है।**
   "इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" रोमियों 3:23
2. **पाप की सजा परमेश्वर से अनन्तकाल का अलगाव है।**
   "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।" रोमियों 6:23
3. **परमेश्वर नहीं चाहता है कि कोई नष्ट हो।**
   "जो यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भाँति पहचान लें।" 2 पतरस 3:9; 1 तीमु. 2:4
4. **यीशु मसीह ने कीमत चुकाई है।**
   "पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया।" 1 कुरिं. 15:3
5. **हमें इस सत्य पर विश्वास करना और इसे अंगीकार करना है।**
   "यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।" रोमि. 10:9

रोमियों मार्ग
कार्य करने की एक सरल योजना जिसमें तीन वचनों की जरूरत पड़ती है।
रोमियों 3:23 "इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"
रोमियों 6:23 "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में अनन्त जीवन है।" रोमियों 10:9-10 "अपने मन में विश्वास कर, और अपने मुँह से अंगीकार कर, और तू उद्धार पाएगा।"

उद्धार के चार कदम

- स्वीकार कर कि तू एक पापी है। "इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों 3:23)
- प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा। (प्रेरितों 16:31)
- अपने मुँह से अंगीकार कर जो तू अपने मन में विश्वास करता है। (रोमियों 10:9-10)
- अपना इन्कार कर और यीशु के पीछे हो ले। (मत्ती 16:24) "तो अपने आप का अन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।"

उद्धार पाने के लिए वो क्या है जो मसीह के बारे में हमें विश्वास करने की आवश्यकता है?
- कि वह परमेश्वर है, जो एक मनुष्य में दिखाई दिया था। यूहन्ना 1:14
- कि वह इस पृथ्वी पर परमेश्वर के पुत्र और मनुष्य के पुत्र के रूप में चला फिरा।
- कि वह हमारे पापों के लिए मरा, धर्मी अधर्मियों के लिए। 1 कुरिं. 15:3
- कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया, मसीह के बलिदान की अपनी स्वीकृति का संकेत दिया।
- कि मसीह स्वर्ग में चला गया और अब पिता परमेश्वर के साथ है।
- कि वह प्रभु है, जिसके हवाले हमें अपने जीवन करने चाहिए।

5. हमें मसीह को अपने जीवन में 'स्वीकार करना' चाहिए
यूहन्ना 1:12 कहता है, "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।" "मसीह को ग्रहण करना" क्या होता है, और हम इसे कैसे कर सकते हैं ? चीजों को ग्रहण करने के कई तरीके होते हैं, जैसे कि, अपनी आत्मा में (आत्मिक तौर पर), अपने मन में (मानसिक तौर पर), और अपने दिल में (भावनात्मिक तौर पर)।
आत्मा आपके जीवन का सबसे गहरा भाग है। यह असली आप हैं। मन या भावनाओं से गहरा। आपके अस्तित्व के और किसी भी पहलू से ज्यादा गम्भीर और रहस्यमय। यह आपके अस्तित्व का वह भाग है जिसके द्वारा आप परमेश्वर से अभिज्ञ हो सकते हो, और उसे और आत्मिक वास्तविकता के सारे क्षेत्र को जान सकते हो। तुम्हें जानने की जरूरत है कि आत्मा विश्वास से कार्य करती है। विश्वास है, जो परमेश्वर कहता है का विश्वास करने का फैसला। यह "परमेश्वर का वचन सुनने" से क्रियाशील होता है। रोमियों 10:17। आपके अन्दर गहराई में कुछ आपको बताता है कि परमेश्वर आपसे बात कर रहा है। आप जो परमेश्वर कहता है उस पर विश्वास करने और उसे ग्रहण करने का फैसला करते हैं और तय करते हैं। तुम परमेश्वर से सहमत होते हो। तुम्हार विश्वास अक्सर तुम्हारे मन से आगे चल सकता है। तुम विश्वास से कुछ करते हो जिसे तुम्हारा मन अभी न तो समझ सकता है, और न ग्रहण कर सकता है। तुम अक्सर बातों को विश्वास से ग्रहण करते हो इससे पहले कि तुम्हारी भावनाओं को प्रतिक्रिया दिखाने का समय मिले। तुम्हारी आत्मा तुम्हारी समझ या भावनाओं से स्वतन्त्र रूप से कार्य कर सकती है और बारंबार करती भी है।

इसलिए, जब तुम मसीह को ग्रहण करते हो तो उसे अपनी आत्मा में ग्रहण करते हो। तुम उसे विश्वास से ग्रहण करते हो। स्वभाविक विचारों या भावनाओं का लिहाज किए बिना वह तुम्हारे जीवन में तुम्हारे आत्मा द्वारा प्रवेश करता है, लेकिन वह तुम्हारे विचारों और भावनाओं द्वारा भी कार्य करना चाहता है। वह चाहता है कि तुम्हारा सारा अस्तित्व उसके दयालु शासन के वश में हो जाए और आप अपने जीवन के हर क्षेत्र में उसकी उपस्थिति की आशीषों और लाभों का आनन्द ले सको।

6. हमें उसे मनुष्यों के सामने स्वीकार करना चाहिए

पौलुस ने कहा, "अपने मुँह से अंगीकार कर जो तू अपने मन में विश्वास करता है।" (रोमियों 10:9)। "क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुँह से अंगीकार किया जाता है।" (रोमियों 10:10)। यीशु ने खुद कहा, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा, उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूँगा।" (मत्ती 10:32-33)।

यीशु को उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करने के बाद, यह प्रकट है कि मनुष्यों के सामने मसीह को खुले आम स्वीकार करने और अंगीकार करने की जरूरत उद्धार पाने की प्रक्रिया के लिए अत्यावश्यक और अनिवार्य है। मैंने बार-बार देखा है कि किसी को मसीह में विश्वास में लाने के बाद, उनका इस सच्चाई का अंगीकार करना, उनके उद्धार के व्यक्तिगत आश्वासन पाने में एक निश्चित तत्त्व रहा है। कभी-कभी मैंने किसी को कहते सुना है, "मैंने यीशु पर विश्वास किया है लेकिन मुझे लगता नहीं मुझे कोई आश्वासन है।" तब मैंने पूछा है, "क्या आपने अभी तक किसी को अपने विश्वास के बारे में बताया है?" उत्तर सदा "नहीं" रहा है। जिसके लिए मेरा उत्तर रहा है, "जाओ और किसी को बताओ जो तुमने किया है और स्वीकार करो कि मसीह पर भरोसा करके तुमने उद्धार पाया है।" परिणाम हमेशा रहा है कि ऐसा करने के बाद, आन्तरिक आश्वासन आया है।

यीशु ने गिरासेनियों के व्यक्ति को जिसमें दुष्टात्माएँ थीं, कहा, "अपने घर जाकर अपने लोगों को बता (प्रकट करो, दिखाओ) कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।" यीशु का उसको ऐसा करने के लिए कहने का एक भाग उद्धार के अनुबन्ध को जारी रखना और पूरा करना था, कि वह भी इस व्यक्ति का नाम अपने स्वर्गीय पिता के सामने स्वीकार करे।

7. दूसरों को मसीह के लिए जीतना शुरू करो

जीवन की हर चीज को अपनी जाति के अनुसार उत्पन्न करना चाहिए। यह एक कभी न बदलने वाला नियम है जिसे परमेश्वर ने सृष्टि में डाला है। इसलिए, जब हम मसीह में विश्वास द्वारा परमेश्वर की सन्तान बनते हैं तो परमेश्वर चाहता है कि हम अपनी जाति के अनुसार उत्पन्न करने लगें। जितनी जल्दी हो सके उतना अच्छा है। जैसे ही हम मसीह को उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करने लगते हैं, तो पवित्र आत्मा हमारी गवाही को दूसरों को आकर्षित करने और जीतने के लिए इस्तेमाल करने लगता है।

हमारा बदला हुआ जीवन हमारे मित्रों और सहयोगियों में जिज्ञासा उत्पन्न करेगा। लोग आश्चर्य करेंगे कि वह क्या है जिसने हमारे जीवन और कार्यों को इतना बदल दिया है। वे जानने में कुतूहली होंगे कि हमारे जीवन में ऐसा उग्र और नाटकीय परिवर्तन क्या लाया है। यह "सामरिया की स्त्री" के बारे में सच था, जो मसीह के उसके जीवन में प्रवेश करने के तुरन्त बाद, अपने सारे पड़ोसियों को खबर देने लगी। उसका शानदार परिणाम यह था कि उनमें से भी बड़ी संख्या में मसीह में विश्वास करने लगे।

आपके मसीही जीवन के शुरू के दिनों में, जबकि आपका अपने पिछले जीवन के साथियों से अभी भी सम्पर्क बना हुआ है, उन्हें मसीह के लिए जीतने का काम शुरू हो जाना चाहिए। बहुत ज्यादा लोग, मसीह में आने के बाद, तुरन्त अपने पिछले दोस्तों से दूर होने लगते हैं। मैं जानता हूँ कि हमें अपना पिछली जीवन-शैली छोड़ देनी चाहिए और मसीह में अपना नया जीवन जीना चाहिए। फिर भी, मैं यह भी सोचता हूँ कि अपने पुराने साथियों से सम्पर्क बनाए रखना जरूरी है। उनके साथ पाप में रहने के लिए नहीं। परमेश्वर न करे! लेकिन उन्हें मसीह के लिए अपनी योग्यता के अनुसार प्रभावित करना शुरू करना। बहुत से मसीही गैर-मसीहियों के संसार से अलग हो जाते हैं। मित्रो, वे हमारा फसल का खेत हैं। वे ही तो लोग हैं जिन्हें परमेश्वर चाहता है हम गवाही दें और मसीह के लिए जीतें।

जब कभी भी हमें किसी को प्रभु के लिए जीतने का सौभाग्य प्राप्त होता है,
तो हमें तुरन्त उन्हें प्रोत्साहित करना शुरू कर देना चाहिए कि वे भी अपने मित्रों को मसीह के लिए जीतने की कोशिश करें।

हालाँकि नया विश्वासी बाइबल के वचनों में काफी कुशल तो नहीं होगा, फिर भी एक चीज तो वे जरूर जानते हैं कि उन्होंने मसीह को ग्रहण किया है और उसके जीवन की कुछ अदभुत आशीषें अपने जीवन में अनुभव करने लगे हैं। जब कोई नया विश्वासी होता है तो उसमें एक आनन्दभरा उत्साह होता है जो कुछ अनोखा होता है। बाइबल इसे हमारा "पहला प्रेम" कहती है। यह एक नए दम्पति के आनन्दभरे उत्साह का है जिनकी अभी-अभी शाही हुई है। वे चाहते हैं कि जो अदभुत आनन्द उन्होंने अपने नए साथी को पाकर पाया है उसके बारे में सब जानें और उनके साथ खुशी मनाएँ। उनका आनन्द कितना प्रकट होता है। यह उनके चेहरों से दिखाई देता है। यह उनकी आँखों में चमकता है। यह उनकी बातचीत में बार बार आता है। वे प्रेम में खुश हैं। ऐसा ही हर नए विश्वासी के साथ होना चाहिए। सबकी पहचान में आना चाहिए कि कुछ अदभुत और उत्तेजक घटा है। एक व्यक्ति के शुरू के दिन बहुत ही फलदायक हो सकते हैं और सुसमाचार सुनाने और मनुष्यों को जीतने के एक प्रभावी जीवन की शुरूआत हो सकती है।

पाठ आठ – मामले की तह कर पहुँचना

हम मनुष्यों को जीतने के कुछ प्रारंभिक विषयों पर मिलकर विचार कर रहे हैं। आओ हम अब क्रांतिक तत्त्वों पर ध्यान दें। जैसे हम यह करने वाले हैं तो मैं एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात पर जोर देना चाहता हूँ। जो सब बातों पर हम विचार-विमर्श कर रहे हैं, उसमें इस तथ्य को नज़रअंदाज़ न करें कि मनुष्यों को जीतने का काम एक कार्य प्रणाली इस्तेमाल का परिणाम नहीं है। यह कोई क्रियाविधि नहीं है जिसे याद करके सीख सकते हैं और फिर इस्तेमाल में ला सकते हैं। कई कम्पनियों की अपनी बेचने की योजना होती है जिसे बड़े ध्यान से बनाया जाता है। इसमें मनोविज्ञान के सिद्धान्तों को इस्तेमाल किया जाता है जिसका उद्देश्य प्रत्याशित ग्राहक को अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करवाना है। विक्रेताओं को एक एक चीज बड़े विस्तार से समझनी होती है और उन्हें एक खास सफलता के दर का आश्वासन भी होता है।

एक व्यक्ति को मसीह के लिए जीतना एक मनोवैज्ञानिक छलयोजना से कहीं बढ़कर है। यह भावुक जबरदस्ती (प्रभाव इस्तेमाल करना) से बढ़कर है। यह एक कार्य है जिसे केवल पवित्र आत्मा पूरा कर सकता है। आप एक माध्यम हैं जिसके द्वारा वह प्रवाहित हो सकता है। आपकी आवाज है जिसे वह इस्तेमाल कर सकता है। आपकी गवाही एक साधन है जिसे वह इस्तेमाल कर सकता है, लेकिन अन्त में वह ही एक है जो आत्मिक नया जन्म ला सकता है। इसलिए आपको उसके लिए काफी जगह और गुंजाइश छोड़नी चाहिए। हमेशा उस पर भरोसा करो। उस पर निर्भर रहो। उससे बात करो और जब कभी एक मनुष्यों को जीतने के अवसर के पास आओ तो उसकी सुनो और परिस्थिति में उसकी उपस्थिति का भरोसा करो।

मनुष्यों को जीतना केवल सुसमाचार सुनाने से कहीं ज्यादा है। यह एक प्रक्रिया है जो पवित्र आत्मा की मदद से, अन्त में एक व्यक्ति में नया जन्म लाता है और उसमें मसीह का जीवन और उपस्थिति लाता है। यह एक बहुत ही गम्भीर जिम्मेवारी है और एक भारी सौभाग्य भी। हर प्रत्याशी मनुष्यों को जीतनेवाले की अपनी शैली और मनुष्यों को जीतने की अपनी पहुँच होती है। बेशक हर परिस्थिति में एक अलग पहुँच की जरूरत पड़े। कोई दो व्यक्ति एक जैसे नहीं होते हैं। जो कुछ भी पवित्र आत्मा मन में डाले उसकी ओर हमें लचीला और खुला होना चाहिए। फिर भी, कुछ मूल सिद्धान्त हैं जो वैसे ही रहते हैं। कुछ तत्त्व हैं जिनका हर परिस्थिति में और जो भी एक हालात में हमारा खास तरीका या पहुँच हो, पालन होना चाहिए। ऐसे तथ्य जिन्हें दिलचस्पी लेनेवाले व्यक्ति को जिनसे हम बात करते हैं, पेश करने चाहिए।

<u>हमें उस व्यक्ति को नीचे दी सच्चाइयाँ पहचानने में मदद करनी चाहिए</u>

1. कि वह एक पापी है

एक बार जब आप इस सच्चाई को बताना शुरू करें तो पवित्र आत्मा व्यक्ति के दिल में काम करना शुरू करता है जिससे उसमें जिसे बाइबल "दोष महसूस करना" कहती है, होने लगता है। इसमें व्यक्ति अनुभव करने लगता है कि वे परमेश्वर के सामने वास्तव में एक पापी हैं। जब आत्मा की उपस्थिति उन्हें इस प्रकार प्रभावित करने लगती है तो हमेशा दो में से एक प्रतिक्रिया मिलेगी।

- अ) वे आपसे क्रुद्ध हो सकते हैं, अपनी "निर्दोषता" का दावा करेंगे और कई कारण बताएँगे कि वे क्यों पापी नहीं हैं, और कि वे किसी से भी अच्छे हैं या उनके जैसे हैं।
- आ) वे सच्चाई को स्वीकार करने लगेंगे और उनका पहला विरोध कम होने लगेगा। एक बार जब ऐसा होता है तो आगे बढ़ते जाओ क्योंकि उन्हें मसीह में लाने के लिए आत्मा कार्य कर रहा है।

2. यीशु एकमात्र उद्धारकर्त्ता है

यीशु मार्ग, सत्य, जीवन है। (यूहन्ना 14:6)। "स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरितों 4:12)। "जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:13)।

3. उन्हें दिखाओ मन कैसे फिराना है

मन फिराना सुसमाचार का पहला शब्द है। 'यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया, और कहा, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।"' (मरकुस 1:14-15)। लेकिन "मन फिराओ" एक ऐसा शब्द है जो अधिकाँश लोगों द्वारा अब आसानी से समझ नहीं जाता है। इसलिए अक्सर यह जरूरी होता है कि दूसरे शब्ब इस्तेमाल किए जाएं जिनका वही अर्थ है। उदाहरण के तौर पर, मन फिराने का अर्थ है: अपना दोष

स्वीकार करना, अफसोस होना। दुख और खेद प्रकट करना। इसलिए हमें व्यक्ति को परमेश्वर से यह कहने में मदद करने की जरूरत है, “मुझे दुख है, कृपया मुझे क्षमा कीजिए।”

फिर भी, इसका अर्थ “मुड़ना”, या “मन बदलना” भी है। अपने पाप से दूर जाना और परमेश्वर और उसकी धार्मिकता की ओर जाना। बिलकुल पीछे मुड़ जाओ और जिस दिशा में तुम जा रहे थे उससे उलटी दिशा में चलना शुरू करो, जिसका अर्थ है वो अच्छी और सही बातें करना जिन्हें परमेश्वर चाहता है! यह मन फिराने के कुछ मूल अर्थ हैं। व्यक्ति को इन विचारों के महत्त्व को समझने में मदद करो, ताकि जब वे “मन फिराने की प्रार्थना” करें तो उन्हें वास्तव में पता हो कि वे क्या कर रहे हैं।

4. उन्हें दिखाओ कि वे अपने जीवन परमेश्वर को कैसे दे सकते हैं

यह प्रक्रिया का एक सबसे क्रान्तिक और महत्त्वपूर्ण भाग है जिसपर बड़ी सावधानी और ध्यान देना चाहिए। यह “सच्चाई का क्षण” है, जो विषय और इसके प्रभाव का फैसला करेगा। किसी प्रकार प्रत्याशी को दिखाना जरूरी है कि मसीह के लिए जीवन कैसे खोलने हैं, और उसे कैसे अन्दर आने देना है।

एक वचन जो मैंने इस उद्देस्य के लिए कई बार इस्तेमाल किया है, वह है प्रकाशितवाक्य 3:20 “देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर उसके साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।” मैं आपको जो पहुँच मैंने इस्तेमाल की है बताऊँगा और यह आपके लिए भी लाभदायक हो सकती है।

वचन बताता है कि:-

- परमेश्वर आपके जीवन के द्वार पर खटखटा रहा है
- अगर कोई द्वार खोलेगा (कोई भी वर्जित नहीं है)
- मसीह उस जीवन में आएगा

मैंने अक्सर व्यक्ति को बताया है:-

आओ मैं आपके ध्यान में प्रकाशित. 3:20 के कुछ अदभुत शब्द लाऊँ। क्या आप इसे मेरे लिए पढ़ेंगे? (अपनी बाइबल में यह वचन निकालें और उन्हें पढ़ने को कहें)। देखो, यहाँ यीशु संकेत दे रहा है कि वह एक द्वार पर खड़ा है जिसकी बाहर से कोई हत्थी नहीं है जिससे द्वार खोला जा सके। वह बाहर खड़ा धीरज के साथ खटखटा रहा है और कह रहा है, “यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर उसके साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।” अब मित्र, मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु इस समय आपके दिल के द्वार पर खटखटा रहा है, और मुझे निश्चय है कि तुम इसे पहचान रहे हो। हमारा आज मिलना और अपनी चर्चा में जो बातें हमने कहीं हैं, वे सब संकेत देती हैं कि प्रभु आपको खींच रहा है। अब, अगर मैं आपके घर आता, और जब मैं दरवाजा खटखटाता और आप उसे खोलने आते, तो आप तुरन्त जान जाते कि मैं आपके घर के अन्दर आपसे मिलने आया हूँ। अगर मैं एक मित्र भाव से खड़ा होता जिससे पता चलता कि मैं अन्दर आना और आपके लिए भला करना चाहता हूँ, कि मैं आपकी मदद करना और आपको सम्पन्न करना चाहता हूँ। तो क्या आप मुझे अन्दर नहीं बुलाते? क्या आप मेरा स्वागत नहीं करते और कहते, “यह अच्छा हुआ आप मेरे पास आए हैं। मैं आपकी दिलचस्पी और परवाह की वास्तव में प्रशंसा करता हूँ। क्या आप अन्दर नहीं आएँगे?”

मुझे अन्दर बुलाने के बाद, क्या आपको अजीब नहीं लगेगा अगर मैं मुड़ुँ और चला जाऊँ? क्या आपको अचरज नहीं होगा अगर ऐसा हुआ तो? आपको बिलकुल आश्चर्य होगा। अगर मैं तकलीफ उठाऊँ और आपसे मिलने के लिए आऊँ - आपका दरवाजा खटखटाऊँ और धीरज से इन्तज़ार करूँ जब तक कि आप दरवाजा खोलकर मुझे अन्दर आने के लिए न कहें – तो क्या यह बड़ी स्वभाविक और अपेक्षित बात नहीं होगी कि मैं आपका आमंत्रण स्वीकार करूँ और अन्दर आ जाऊँ?

तो अब, यीशु आपके जीवन के दरवाजे पर खटखटा रहा है। वह आपके जीवन में आना चाहता है लेकिन वह जबरदस्ती नहीं घुसेगा। वह धीरज के साथ खटखटाता है, लेकिन दरवाजा आपको खोलना है। अगर खोलते हो तो वह निश्चय ही आपका निमंत्रण स्वीकार करेगा और अन्दर आएगा। क्या आप इसी समय उसे अन्दर आने के लिए नहीं कहेंगे? तो कृपया ये शब्द मेरे पीछे पीछे दोहराएँ:

> “प्यारे यीशु, मैं पहचानता हूँ कि तू मेरे जीवन के दरवाजे पर खटखटा रहा है। मैं समझता हूँ कि तू मेरे जीवन में आना चाहता है क्योंकि तू मुझे मेरे पापों से बचाना चाहता है, मुझे क्षमा करना चाहता है, मुझे शुद्ध करना चाहता है, मेरे जीवन को नया करना चाहता है, और मेरे जीवन में रहना चाहता है। यीशु, मैं इसी समय अपनी इच्छा से दरवाजा खोलता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तू अन्दर आए और मेरा उद्धारक बने। मैं माँगता हूँ कि तू मेरे अनेक पाप, और खासकर तेरा विरोध करने का मेरा पाप क्षमा कर।
>
> मैं इसी समय दरवाजा पूरा खोलता हूँ, और विश्वास के द्वारा तुझे आने को कहता हूँ। मेरा जीवन अब तेरा है। मैं इसे तेरे सामने समर्पित करता हूँ। मैं परमेश्वर की सन्तान बनना चाहता हूँ। मैं तेरे राज्य में प्रवेश करना चाहता हूँ। मैं इसी

समय तुझे अपना उद्धारक और प्रभु स्वीकार करता हूँ। अब से आगे मैं तुझ से प्रेम करूँगा और तेरी सेवा करूँगा। मैं तेरे पवित्र वचन, बाइबल की आज्ञा पालन करूँगा। मैं दूसरों के सामने तेरा नाम स्वीकार करूँगा और उन्हें बताऊँगा कि तू मेरा उद्धारक और प्रभु है। प्रभु आ और मुझे अपने पवित्र आत्मा से भर, मुझे तेरे लिए जीने में और तेरी इच्छा पूरी करने में मदद कर! प्रभु यीशु धन्यवाद। आमीन।"

5. उन्हें स्वीकरण की प्रार्थना करने को कहो

एक बार जब उन्होंने यीशु को अपने जीवन में बुलाया है, उन्हें कुछ विश्वास के वक्तव्य और कुछ सकारात्मक स्वीकरण बोलने के लिए उत्साहित करें। उन्हें प्रभु से अपने शब्दों में बोलने और उसे धन्यवाद देने के लिए उत्साहित करें क्योंकि वह विश्वासयोग्य है और हमेशा अपने वचन को पूरा करता है। उन्हें इस प्रकार कहने को कहें, "यीशु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ क्योंकि तू अपने वचन के प्रति विश्वासयोग्य है। तू ने कहा है अगर मैं तुझे अपने जीवन में बुलाऊँ तो तू आ जाएगा। मैंने तुझे कहा, और अब मैं विश्वास से तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने अपना वचन पूरा किया है और तू अब मेरे जीवन में है। मैं जानकर कृतज्ञ हूँ कि तू हमेशा के लिए मुझ में रहेगा और मेरे साथ रहेगा। जहाँ कहीं भी मैं जाऊँ, तू मेरे साथ रहेगा। अच्छे समयों में या सम्भवतः बुरे समयों में। तू मुझे कभी भी छोड़ेगा नहीं। प्रभु धन्यवाद। आमीन।"

6. उन्हें किसी को बताने के लिए उत्साहित करो

एक बार जब व्यक्ति ने आपके साथ प्रार्थना कर ली है, तब उसे तुरन्त जो उसने किया है किसी को बताने के लिए उत्साहित करें। अगर वहाँ तीसरा व्यक्ति उपस्थित है तो कहो, "क्यों न तुम अपने मित्र को बताओ जो तुम ने अभी किया और जो तुम्हारे साथ हुआ है? उसे बताओ कि तुमने अपना जीवन मसीह को समर्पित किया है और मसीह को अपना उद्धारक और प्रभु स्वीकार करो।" कुछ होगा जब वे यह स्वीकार करेंगे। पवित्र आत्मा उनके उद्धार के काम को पक्का कर देगा और जो उन्होंने किया है की अनुभूति उनके ज्ञान में रिसना शुरू करेगी।

7. उन्हें बाइबल पर आधारित मसीही मण्डली खोजने लिए उत्साहित करो

अब जबकि उन्होंने मसीह को स्वीकार किया है, उन्हें अपने आत्मिक विकास के बारे में ध्यान देने की जरूरत है। उन्हें परमेश्वर का वचन पढ़ना और एक प्रभावी प्रार्थना का जीवन स्थापित करना सीखना है। उन्हें दूसरे मसीहियों की संगति का लाभ उठाने की भी जरूरत है जो उनके मसीही चलन और विकास में उन्हें प्रोत्साहित कर सकें। यह करने का सबसे अच्छा तरीका एक ऐसी कलीसिया खोजना है जहाँ सच्चा सुसमाचार विश्वासयोग्यता से प्रचार किया जाता है। एक ऐसी को खोजो जहाँ दूसरे लोग यीशु को पा रहे हैं और उसमें चलना सीख रहे हैं।

अगर आप उसी क्षेत्र की एक कलीसिया से सम्बंधित हैं जहाँ यह व्यक्ति रहता है तो उससे मिलते रहने और उसे अपनी कलीसिया में आने के लिए उत्साहित करो। उनकी मदद जोर शोर से करो और अगर जरूरी हो तो उन्हें अपने साथ कलीसिया ले जाओ। निश्चय करो कि वे कुछ दूसरे विश्वासियों से भी मिलें जो उनकी मदद कर सकते हैं और उनको प्रोत्साहित कर सकते हैं। उन्हें अपने पास्टर से मिलाएं और अपने नए मित्र को अपने विश्वास को स्वीकार करने के लिए उत्साहित करो।

इस नए विश्वास का एक सच्चा मित्र बन जाओ।

किसी को मसीह में लाना और फिर उनके कल्यान की उपेक्षा करना लगभग ऐसा ही है
जैसा कि एक बच्चे को जन्म देना और फिर उसे त्याग देना।

यह अविचार्य है। वही व्यक्ति जो पागल है ऐसा करेगा। इस प्रकार व्यवहार करना अपराध है। इसलिए नए विश्वासी की मदद करने के लिए कुछ बलिदान करने के लिए तैयार रहो। उन्हें अपने मित्रों से मिलाओ। उन्हें लगे कि उनकी आवश्यकता है और उनका स्वागत है। उन्हें कलीसिया के कुछ कार्यक्रमों में जो उनके लिए बहुत उचित हों उपस्थित होने के लिए उत्साहित करो। उदाहरण के तौर पर, अगर आपका मित्र अकेला है तो उसे अकेलों की सभा में उपस्थित होने को कहो। एक पुरुष को पुरुषों की सभा, और स्त्री को स्त्रियों की सभा में उपस्थित होने को कहो। उन्हें उत्साहित करो कि वे जितने ज्यादा कार्यक्रमों में शामिल हो सकते हैं, हों और उनसे आग्रह करो कि वे अपने पुराने मित्रों को लाने की कोशिश करें। निश्चय करने की कोशिश करो कि वे अपने पुराने पहचान वालों से उचित बंधंन न तोड़ें बल्कि बड़े उत्साह के साथ अपने मित्रों को मसीह में लाने की पूरी कोशिश करें।

उनके पुराने मित्र एक मिशन क्षेत्र बन जाते हैं जिन्हें शायद कोई दूसरा न पहुँच सके।

उचित साहित्य भी एक असली सम्पत्ति है जो इस व्यक्ति की उनके नए विश्वास में स्थापित होने में मदद कर सकती है। नए विश्वासियों के लिए विविध पाठ्यक्रम भी होते हैं जो विश्वासी के उनके नए विश्वास में मजबूती से स्थापित होने में मदद के लिए वचन इस्तेमाल करते हैं। इससे व्यक्ति के विश्वास को भावुकता या भावनाओं पर आधारिक होने के बजाय परमेश्वर के वचन में स्थापित होने में मदद मिलती है। जितना ज्यादा बाइबल का अध्ययन वे करेंगे, किसी अध्ययन मार्गदर्शिका की सहायता से ताकि उनके अध्ययन को दिशा मिल सके, उतना ज्यादा अपने उद्धार की असलीयत का आश्वासन वे पाएँगे।

पाठ नौ – बाइबल पर आधारित आश्वासन पाना

यह अत्यावश्यक है कि नया जन्म पाया मसीही अपने उद्धार का एक बाइबल पर आधारित आश्वासन पाए। अगर किसी का भरोसा भावनाओं पर टिका है तो यह जाँच और प्रलोभन की परीक्षा के सामने खड़ा नहीं रह पाएगा जो विश्वासी का समय समय पर सामना करेंगी। अगर हमारा भरोसा और आश्वासन परमेश्वर के वचन पर आधारित है, तब यह उतना ही मजबूत और स्थिर होगा जितना वह वचन है जिसके बारे में यीशु ने कहा, "आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।"

इसलिए हमें निश्चित करना जरूरी है कि नए विश्वासी का भरोसा परमेश्वर के वचन पर और न कि मनुष्य के वचन पर आधारित है। हम ऐसा शुरू से ही जोर देते हुए हासिल करते हैं कि हमारे उद्धार की सच्चाई और विश्वसनीयता, जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अपने अनन्त वचन में घोषित किया है, पर दृढ़ता से आधारित है। हमें खुद भी जो बाइबल उद्धार और आश्वासन के बारे में सिखाती है, से बहुत परिचित होने की जरूरत है, ताकि हम बड़े विश्वास के साथ दिखा सकें जो बाइबल इन अत्यावश्यक विषयों के बारे में घोषित करती है।

उद्धार के दो स्पष्ट पहलू हैं। परमेश्वर का पहलू और मनुष्य का पहलू।

परमेश्वर के दृष्टिकोण से, उसने हर व्यक्ति के लिए जो विश्वास करता है और जो विश्वास से उद्धार के दान को स्वीकार करता है, अनन्त उद्धार मुहैया करने के लिए जो भी जरूरी था वह किया है। परमेश्वर ने मनुष्यजाति से इतना प्रेम किया कि उसने अपने एकलौते बेटे को छुड़ौती के लिए दे दिया। परमेश्वर के पुत्र यीशु ने हमारे पापों की कीमत चुकाने के लिए खुद को क्रूस पर दे दिया। हमारे पूरे उद्धार को हासिल करने के लिए यीशु मरा और मरे हुओं में से जी उठा। वह इस समय पिता के पास है और हमारे लिए विनती कर रहा है। एक दिन वह पृथ्वी पर लौटेगा और हम उसके साथ सदा के लिए राज्य करेंगे। परमेश्वर के दृष्टिकोण से उद्धार पूरा हुआ है। जो कुछ भी जरूरी था कर दिया गया है, और उद्धार की सारी योजना उसके वचन में लिखी हुई है।

मनुष्य का दृष्टिकोण भी है, और उसके भी दो पहलू हैं।

1. एक कानूनी पहलू है।
2. दूसरा अनुभवात्मक, भागीदारी का पहलू।

बाइबल उद्धार के कानूनी पहलुओं के बारे में बताती है। जो कुछ भी मसीह ने हमारे लिए किया कानूनी तौर पर वैध है। मसीह ने ऐसा कुछ नहीं किया जो उसके उद्धार के काम में गैर-कानूनी हो। जो मसीह ने हमारी मुक्ति के लिए हासिल किया है उसकी वैधता के बारे में कोई भी, शैतान भी विवाद नहीं कर सकता है। बाइबल हमारे उद्धार का कानूनी विवरण है। यह वो पुस्तक है जिसमें उस कानूनी प्रक्रिया का विवरण है जिसके द्वारा परमेश्वर ने शैतान के बन्धन और शक्ति से हमारा छुटकारा किया है। एक तरीके से यह हमारे प्रभु यीशु मसीह की आखिरी कानूनी वसीयत है जिसमें हर विशेषाधिकार और आशीष का वर्णन है जिसे हम परमेश्वर के बेटे की मृत्यु के द्वारा प्राप्त करते हैं। किसी ने कहा है कि यीशु एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो एक विरासत छोड़ गया, और फिर यह निश्चय करने के लिए मरे हुओं में जी उठा कि उत्तराधिकारियों को वह सब मिला जो उसने उनके छोड़ा था।

ऐसा करने के बाद हमें विश्वास के द्वारा अपनी विरासत का दावा करना चाहिए। बाइबल सिखाती है कि, "विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है" (इफिसियों 2:8)। परमेश्वर का अनुग्रह उद्धार मुहैया कराता है। हमारा विश्वास उस उद्धार की हर आशीष और लाभ को प्राप्त करता है, स्वीकार करता है, और पकड़ लेता है। इसलिए दो मुख्य तत्त्व हैं:

1. परमेश्वर का वचन
2. हमारा विश्वास (परमेश्वर की ओर से दान)

इसलिए हमें जो कुछ भी परमेश्वर का वचन मसीह में हमारे उद्धार के बारे में कहता है उसे पढ़ना, अध्ययन करना, विश्वास से स्वीकार करना चाहिए। हमें हर चीज खुद पर लागू करनी चाहिए और विश्वास से परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए कि उसकी पुस्तक की उद्धार से सम्बंधित हर प्रतिज्ञा हमसे संबद्ध है। आओ हम संक्षेप में कुछ वचनों को देखें जिनके द्वारा परमेश्वर आश्वासन देता है:

1) यूहन्ना 5:24 "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।"

- क) यह यीशु है जो प्रतिज्ञा कर रहा है। वह जिसके शब्दों पर हम पूर्ण रूप से भरोसा कर सकते हैं। जिसकी विश्वसनीयता उसके वचन से मूल रूप से बंधी हुई है। वह जिसके लिए झूठ बोलना नामुमकिन है।
- ख) मानो कि अपनी विश्वासयोग्यता को अटल रूप से बल देने के लिए, वह अपना वचन "मैं सच सच कहता हूँ" से शुरू करता है। वह इस प्रकार 'सच सच' शब्द तब ही इस्तेमाल करता है जब वह किसी चीज की गारंटी देना चाहता है जिसमें विवाद की कोई भी सम्भावना न हो।
- ग) प्रतिज्ञा उसके लिए है "जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले (पिता परमेश्वर) पर विश्वास करता है।" यह शर्त साफ साफ संकेत देती है कि यह प्रतिज्ञा कितनी व्यापक है। यह रंग, वर्ग या संस्कृति से सीमित नहीं है। प्रतिज्ञा 'जो' कोई के लिए है।
- घ) "अनन्त जीवन उसका है।" यह वर्तमान काल में है। संदेह या विवाद से परे। वचन के पहले भाग की शर्त को जो भी पूरा करता है, इसी समय, परमेश्वर का अनन्त जीवन वास्तव में उसके अन्दर है।
- च) "उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती" (न्याय) यह कथन उतना स्पष्ट और सकारात्मक है जितना यह हो सकता है। परमेश्वर का वचन जो अखण्डनीय और अपरिवर्तनीय है, कहता है कि जिस व्यक्ति पर यह वचन लागू होता है, जो इन्हें प्रत्यक्ष मूल्य पर विश्वास से स्वीकार करता है, कभी भी परमेश्वर का दण्ड नहीं, नहीं, नहीं पाएगा।
- छ) "परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।" यह कुछ ऐसा नहीं है जिसको जानने के लिए हमें मृत्यु का इन्तज़ार पड़ेगा। बाइबल कहती है कि विश्वासी, मसीह में, पहले से ही आत्मिक मृत्यु के क्षेत्र में से परमेश्वर के जीवन में प्रवेश कर चुका है। मृत्यु ने हम पर से अपना प्रभुत्व खो दिया है। हम अब मरने वाले नहीं हैं। हमने अपने अस्तित्व में परमेश्वर का जीवन पा लिया है और वह जीवन अनन्त है।

  - नए विश्वासी से यह वचन साहस और भरोसे के साथ पढ़ाएँ।
  - उनसे नीचे दिए वाक्य जोर से और साहस के साथ बुलवाएँ:

  "मैंने यीशु के शब्द सुने हैं और मैं उसमें और पिता में जिसने उसे भेजा विश्वास करता हूँ।
  यीशु कहता है कि मुझ में इसी समय अनन्त जीवन है।
  यीशु कहता है कि मैं पहले से ही मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका हूँ।
  यीशु कहता है कि मुझ पर कभी भी दण्ड की आज्ञा नहीं होगी।
  ये परमेश्वर के वचन हैं।
  मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर का हर शब्द सच्चा है।
  मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता है।

2. रोमियों 10:9, 10, 13, "कि यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुँह से अंगीकार किया जाता है। क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।"
ये वचन उद्धार के लिए शर्तों को साफ साफ बताते हैं:

- क) हमें अपने मन में विश्वास करना है कि यीशु प्रभु है।
- ख) हमें प्रभु का नाम लेना है।
- ग) हमें लोगों के सामने स्वीकार करना है कि यीशु हमारा प्रभु है।
- घ) हम उद्धार पाएँगे।

अगर आपने ऐसा किया है, तब तो बाइबल सच्ची है, क्योंकि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता है, तुम उद्धार पाए हो।

3. यूहन्ना 6:47, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है।"
व्यक्ति को इसे जोर से पढ़ने को कहें। अब इस प्रकार के प्रश्न उनसे पूछें:

क) यह किसने कहा है? उत्तर: यीशु ने।
ख) उसने ठीक ठीक क्या प्रतिज्ञा की है? उत्तर: उसने अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा की है।
ग) शर्तें क्या थीं? उत्तर: कि हम उस पर विश्वास करें।
घ) यह जीवन किसी को कब मिलता है? उत्तर: अभी, इसी क्षण।

4. नए विश्वासी को नीचे दिए वचन पढ़ने को, और नीचे दी बातें स्वीकार करने को कहो:
मरकुस 1:14 "मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।" मैंने मन फिराया है और मैं सुसमाचार पर विश्वास करता हूँ।"
प्रेरितों 2:21 "जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।" मैंने यीशु का नाम लिया है और परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैंने उद्धार पाया है।
रोमियों 10: 9-10 "जो कोई अपने मन में विश्वास करता है और अपने मुँह से अंगीकार करता है, कि यीशु प्रभु है, वह उद्धार पाएगा।" मैं अपने मन में विश्वास करता हूँ और मैं अपने मुँह से इसे अंगीकार करता हूँ, इसलिए परमेश्वर कहता है कि मैंने उद्धार पाया है।

मेरा उद्धार हुआ है:-
पाप से। मत्ती 1:21
शैतान के प्रभुत्व से। इब्रानियों 2:14-15
आनेवाले क्रोध से। रोमियों 5:9
अनन्त मृत्यु से। यूहन्ना 3:16-17

मुझे "परमेश्वर ने आदि से ... चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार" पाऊँ। (2 थिस्स. 2:13)
परमेश्वर ने मुझे "क्रोध के लिए नहीं, परन्तु इसलिए ठहराया है कि .. अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त" करूँ। (1 थिस्स. 5:9)
मुझे "उसमें उसके लहू के द्वार छुटकारा, अर्थात् पापों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के द्वारा मिला है।" (इफिसियों 1:7)
मेरी "रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिए, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है" की जाती है। (1 पतरस 1:5)

पाठ दस - एक से अधिक तरीके हैं!

अनेक तरीके हैं जिनके द्वारा हम सुसमाचार सुना सकते हैं और लोगों को मसीह में ला सकते हैं। मैं उनमें से कुछ का वर्णन करूँगा लेकिन मुझे निश्चय है कि पवित्र आत्मा आपको और कई बताएगा। जगह के अनुसार, लोगों की संस्कृति और पृष्ठभूमि पर निर्भर तरीके बदल सकते हैं। पवित्र आत्मा बहुत लचीला और अनुकूलनीय है। वह हर संस्कृति में निश्चिन्त और विशेषज्ञ है और सबसे ज्यादा प्रभावी और फलदायक तरीके से काम करने के लिए हमें बुद्धि दे सकता है। यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं जो किसी भी संस्कृति में काम कर सकते हैं।

- **मित्रता सुसमाचार प्रचार**

यह एक तरीका है जो बहुत ही फलदायक और उत्पादक हो सकता है। इसे किसी भी संस्कृति और किसी भी परिस्थिति में प्रभावशाली तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है। यीशु ने इस तरीके को कई बार इस्तेमाल किया। असलीयत में तो वह "पापियों का मित्र" के नाम से मशहूर हो गया। यह इसलिए हुआ क्योंकि वह कई लोगों की ओर जिनसे वह मिलता था जिनमें नामी पापी भी होते थे, मित्रता का हाथ बढ़ाता था।
अगर हम मित्र बनाना चाहते हैं तो हमें मित्र भाव दिखाना चाहिए। एक मैत्रीपूर्ण कर्म कठोर से कठोर व्यक्ति का या सबसे ज्यादा उदासीन पापी का दिल खोल सकता है।

मसीहियों के साथ एक समस्या यह है कि मसीही सम्बंध और कार्यक्रम हमारा इतना समय ले लेते हैं कि हमारे पास कलीसिया के बाहर लोगों से मित्रता बनाने का न तो समय होता है और न ही अवसर। जिसका परिणाम यह होता है कि हम उन्हीं लोगों से दूर हो जाते हैं जो हमारे व्यक्तिगत मिशन क्षेत्र हैं। यह ऐसी समस्या है जिसे पार करना जरूरी है। हमें इसका हल खोजने की जरूरत है।

क: मैत्रीपूर्ण बनो

मित्रता का वातावरण एक व्यक्ति को प्रभावी तरीके से सुसमाचार सुनाना बहुत आसान कर देता है। इसलिए हमें मैत्रीपूर्ण कर्मों के द्वारा जितने ज्यादा लोगों तक हो सकता है पहुँचना चाहिए। इसे पूर्व-सुसमाचार प्रचार का तरीका कहते हैं, जो हमारी सेवकाई को बहुत ही प्रभावी और फलवन्त बना सकता है। मैत्रीपूर्ण कर्म करने से हमारा खुद का जीवन भी बहुत आनन्ददायक बन सकता है। बड़े आश्चर्य की बात है कि छोटे छोटे मैत्रीपूर्ण कर्मों से कितने सारे सकारात्मक उत्तर मिल सकते हैं। कितने सारे जीवन प्रसन्न और सम्पन्न हो जाते हैं जब कोई एक मैत्रीपूर्ण भाव से उनके पास जाता है।

ख: आप ही बनो

मसीही मण्डलियों में बहुत से लोग धार्मिक "नकाब" पहनते हैं। वे जो हैं होने में स्वतन्त्र महसूस नहीं करते हैं। वे लगातार मसीही रूढ़ीवाद की एक तस्वीर दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। मैं हमेशा आभारी रहा हूँ कि एक विश्वासी बनने के थोड़े ही बाद, मुझे लगा कि परमेश्वर ने मेरे आन्तरिक चेतना में कुछ कहा है। मुझे लगा उसने कहा, "मैं तुम्हें स्वतन्त्र करना चाहता हूँ ताकि तुम मसीह में जो तुम हो बन सको।" यह मेरे लिए एक बहुत बड़ी राहत की भावना थी क्योंकि मुझे लगा था कि मुझे उन बहुत सारे मसीही साथियों जैसा बनना चाहिए जिन्हें मैंने शुरू से पाया था। उनमें से कुछ मुझ से कितने भिन्न थे। मुझे कभी कभी लगता था कि मैं उनके जैसे कभी नहीं बन पाऊँगा। इसके अलावा, उनमें से कई कितने "घुटे हुए" से थे, और मैं खुद में निराश होता था कि मुझे भी उनके जैसा बनना पड़ेगा। लेकिन जब परमेश्वर ने ये शब्द मेरी आत्मा में बोले तो एक बड़ी राहत और छुटकारा मेरे जीवन में आया। तब से ये मेरे लिए आशीश रहे हैं। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम सब रूढ़ि बनें। वह नहीं चाहता है कि हम सब एक जैसे बन जाएँ। उसने हमें व्यक्तिगत (अलग) बनाया है और वह चाहता है कि हम बेजोड़ व्यक्तिगत बने रहें, फिर भी उसका स्वरूप और समानता धारण करे रहें। कई ईमानदार मसीही जानबूझकर अपने स्वभाविक मिलनसार व्यक्तित्व को दबाए रखते हैं ताकि वे धार्मिक और सम्मानजनक दिखें। वे तो केवल उबाऊ और पूर्वानुमेय बन जाते हैं। उन्हें इस प्रकार अपने गैर-मसीही मित्रों के सामने भी दिखना चाहिए, क्योंकि उनमें से कई सोचते हैं, "अगर मसीही बनना यह सब होता है तो मैं इसके बिना ही ठीक हूँ।"

ग: एक धार्मिक रूप मत दिखाओ

असली मसीहियत एक धर्म नहीं है, यह एक व्यक्ति है – यीशु, और इस अदभुत व्यक्ति का आत्मा हमारे अन्दर रह रहा है। वह सबसे अदभुत और सबसे आकर्षित व्यक्ति है जो इस पृथ्वी पर कभी चला फिरा है। उसका चरित्र और व्यक्तित्व पृथ्वी के हर प्राणी से बढ़ कर है। हमें उसका जीवन अपने द्वारा दिखाने से कभी भी लजाना नहीं चाहिए। क्योंकि जैसे हम उसका जीवन अपने में से प्रवाहित होने और दिखने देंगे, तो लोग हमारी ओर उसी प्रकार आकर्षित होंगे जैसे वे यीशु की ओर होते थे जब वह पृथ्वी पर था।

यीशु एक धर्म स्थापित करने नहीं आया था, और न ही वह चाहता है तुम एक धर्म को प्रोत्साहन दो। वह आया कि हम जीवन पाएँ, और बहुतायत का जीवन पाएँ। (यूहन्ना 10:10)। याद रखो कि धर्म दमन करता है, लेकिन यीशु छुटकारा देता है। मनुष्यों को जीतने के अपने काम में हमें लोगों को धार्मिक नहीं बनाना है, बल्कि उस अदभुत व्यक्ति से उनका परिचय कराना है।

घ: स्वाभाविक तौर से बात करो

बहुत से मसीहियों ने मसीहियत की भाषा अपना ली है और परमेश्वर की चीजों के बारे में बातें करते समय, एक प्रकार की "कूट-भाषा" में बातचीत करते हैं। दुख की बात यह है कि बहुत से नए लोगों के लिए यह एक विदेशी भाषा जैसी है। यह अक्सर अर्थहीन और विस्मयकारी होती है। हमें अपने विश्वास के विषयों को अपने आसपास के लोगों की आम भाषा में परिवर्तित करना सीखना चाहिए। धार्मिक शब्दों को इस्तेमाल करने के बजाय हमें अपने विश्वास को लोगों की समकालीन भाषा में व्यक्त करना चाहिए।

हमारे अनेक साथियों के लिए मसीही जीवन असलीयत से दूर नज़र आता है और हम इस गलत धारणा में अपने विश्वास को व्यक्त करने वाली भाषा से और बढ़ावा देते हैं। हमें परमेश्वर की चीजों को उसी समकालीन बोली में बोलना चाहिए जिसे हम अपने जीवन के सामाजिक और व्यापारिक संदर्भ में रोजाना इस्तेमाल करते हैं।

च: **<u>लोगों को जैसे वे हैं स्वीकार करना सीखो</u>**

मसीही पापियों की "सांसारिक जीवन-शैली" के लक्ष्यार्थ के कारण उनसे दूर भागते हैं। लेकिन, यीशु कभी भी उनसे दूर नहीं होते थे। वह उनके पाप से घ्रणा करता था, लेकिन वह पापी से प्रेम करता था, और उस व्यक्ति के लिए अपने प्रेम के कारण, उनके परमेश्वर-विरोधी जीवन-शैली के बावजूद भी, वह उनसे एक दयाभाव से सम्बंध बना पाता था।

एक वक्तव्य जो मैंने कई वर्ष पहले सुना था, लोगों से "जैसे वे हैं" सम्बंध बनाने में मेरे लिए बहुत सहायक रहा है। यह वक्तव्य जिसके दो भाग हैं, इस प्रकार था:

"परमेश्वर मुझसे इतना प्रेम करता है कि, वह मुझसे जैसा मैं हूँ वैसा ही प्रेम करता है!"

दूसरा भाग यह कहता है:

"लेकिन वह मुझसे इतना प्रेम करता है कि मैं जैसा हूँ वैसा मुझे नहीं छोड़ेगा!"

इस साधारण लेकिन गम्भीर वक्तव्य ने मेरी आत्मिक परिपक्वता की ओर वृद्धि में मेरी मदद की है। लेकिन इसने गैर-मसीहियों की ओर मेरे रवैये में भी मेरी बहुत मदद की है। मुझे जान पड़ता है कि परमेश्वर का प्रेम पापियों के लिए इतना महान है कि उनके जीवन के हर घिनावने तत्त्व के बावजूद भी वह उनसे प्रेम करता है। वह उनसे उनकी खातिर प्रेम करता है। वह उस व्यक्ति से जो उन बाहरी घिनावने बन्धनों की गहराई में है प्रेम करता है। लेकिन वह उनसे इतना प्रेम करता है कि उन्हें वहाँ ही नहीं रहने देगा। इसलिए वह उन्हें स्वीकार करता है - जैसे वे हैं वैसे ही उनसे प्रेम करता है, और करता रहता है, लेकिन साथ में वह उनके जीवनों में कार्य कर रहा है कि उन्हें एक ऊँची और बेहतर जीवन शैली में ले आए। राज्य की जीवन शैली।

छ: **उन्हें बिनाशर्त प्रेम करने का प्रयास करो**

मसीही अक्सर लोगों को मसीह में आता हुआ देखने में इतने उत्सुक होते हैं कि वे अवचेतना से इसे अपनी "दोस्ती" की कसौटी बना लेते हैं। और अगर व्यक्ति एक थोड़े समय के दौरान सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं दिखाता है तो वे "दोस्ती" को छोड़ने लगते हैं। लेकिन यीशु ऐसे नहीं थे। उसका प्रेम इतना सच्चा था कि वह लोगों को छोड़ता नहीं था क्योंकि उन्होंने तुरन्त उसकी ओर प्रतिक्रिया नहीं दिखाई है। उनकी उदासीनता और उनके विद्रोह के बावजूद वह उनसे प्रेम करता रहता था। वह उनसे एक ऐसे प्रेम से प्रेम करता था जो उन्हें जाने नहीं देता था। यीशु लोगों से बिनाशर्त प्रेम करता था और हमें भी वैसे ही करना चाहिए। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं तो हमारा प्रेम पहले ही सच्चा नहीं है।

ज: **लोग जो हैं उसके लिए उनकी प्रशंसा करना सीखो**

मेरा अनुभव बताता है कि अगर आप बड़े ध्यान से देखें तो लोगों में पसन्द आने योग्य और प्रशंसनीय विशेषताएं पाएँगे। अनेक बार हम लोगों को अपने पहले प्रभाव के आधार पर ठुकराने लगते हैं, खासकर अगर व्यक्ति एक गैर-मसीही है। अनेक बार मुझे प्रसन्नता हुई है जब मैं शुरू के उदासीन या विरोधी मुद्रा के पार हुआ हूँ और मैंने व्यक्ति में कुछ बात पाई है जिसकी मैं सच्चाई से प्रशंसा कर सका हूँ। हमें लोगों को उसी प्रकार देखने की कोशिश करनी चाहिए जैसे यीशु करता था।

लोगों को एक सकारात्मक नज़र से देखो। अगर उनमें कोई विशेषताएँ नहीं कि आप ऐसा कर सकें तो उनमें उस अनन्त प्राण को देखने की कोशिश करो जिसके लिए यीशु मरा था।

झ: **<u>लोगों की मदद करने का प्रयास करो</u>**

हर एक को किसी न किसी प्रकार की जरूरत होती है। किसी ने, एक मण्डली बनाने के बारे में कहा है, "एक जरूरत खोजने की कोशिश करो और फिर उसे पूरा करो।" यह सिद्धान्त किसी को मसीह में लाने के बारे में भी सही है। अपने पड़ोसी की किसी जरूरत का पता लगाओ, और फिर उसे पूरा करने का प्रयास करो। एक व्यक्ति की सहायता करने का प्रस्ताव, अक्सर उनसे एक सकारात्मक प्रतिक्रिया पाएगा। अगर वे आपको ऐसा न भी करने दें, फिर भी वे प्रस्ताव की प्रशंसा करेंगे। घर के आसपास कोई काम करने की इच्छा प्रकट करने से अक्सर आपको उस घर में और व्यक्ति के दिल में जाने को मिलेगा। कई प्रकार के तरीके हैं जिनसे हम लोगों की मदद कर सकते हैं और उनमें से हर एक मित्रता का पुल बनाने में मदद करता है जिसे हम उस जीवन में आशीष बनने के लिए पार कर सकते हैं। हमेशा याद रखना है कि अन्त में सबसे सुन्दर चीज जो हम किसी के लिए कर सकते हैं, वो है उन्हें यीशु के ज्ञान में लाना।

प: **<u>उपलब्ध रहो</u>**

नीतिवचन 27:10 कहता है, "प्रेम करनेवाले पड़ोसी, दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम हैं।" अक्सर मित्रता का पहला प्रस्ताव ठुकराया जा सकता है लेकिन प्रस्ताव को वापस मत लो। व्यक्ति को बता दो, "अगर तुम्हें कभी मेरी जरूरत पड़े , या मैं किसी प्रकार तुम्हारी मदद कर सकूँ, तो कृपया मुझे सम्पर्क करने से हिचकना मत।" उस व्यक्ति के लिए उपलब्ध

रहो। पहले सम्पर्क के समय कुछ कारण हो सकते हैं कि व्यक्ति मदद का प्रस्ताव स्वीकार करने में असमर्थ रहा था। यह घमन्ड, या स्वाधीनता या कुछ दूसरा कारण हो सकता है। लेकिन, अगर तुम व्यक्ति की ओर मित्रता की स्थिति में रहो, तो हालात बदल सकते हैं और समय आ सकता है जब वे आपके प्रस्ताव के लिए कृतज्ञ होंगे और इसे स्वीकार करने से प्रसन्न होंगे। ऐसी परिस्थियों में यह अक्सर होता है कि अब व्यक्ति काफी ज्यादा खुला है और अनुकूल भी है।

फः <u>सुसमाचार सुनाना</u>

<u>हमेशा याद रखो कि जीवन में हमारा बुलावा "मसीह को जानना और उसके बारे में दूसरों को बताना" है।</u>

तो, मित्रता बढ़ाने के इस कुतूहली प्रयोग में याद रखो कि उस व्यक्ति के लिए जो सबसे उत्तम चीज तुम कर सकते हो वह है उनका "एक मित्र से परिचय कराना जो भाई से भी ज्यादा करीब रहता है।" एक बार जब आपने एक व्यक्ति के साथ कुछ मित्रता और सम्बंध स्थापित कर लिया है, तो उस सम्बंध के कारण आपको ऐसा न लगने लगे कि अब आप उनके साथ कैसे भी पेश आ सकते हैं। जब उनका यीशु के साथ परिचय कराने का सही समय आता है तो ऐसा इस प्रकार करोः

- <u>अतिसंवेदनशीलता से</u>

व्यक्ति की व्यक्तिगत और कोमल भावनाओं के बारे में अतिसंवेदनशील रहो। जान लो कि प्रत्यक्ष कठोर बाहरी रूप के नीचे अक्सर गहरी चोटें और दर्दभरे घाव होते हैं जिन्हें कोमलता और संवेदनशीलता से सम्भालने की जरूरत होती है।

- <u>समझबूझ</u>

मसीह के बारे में बताने के काम में, आप एक "प्राण के डॉक्टर" के जैसे हैं। आप बारंबार गहरे और आन्तरिक रहस्यों को जानेंगे जिन्हें व्यक्ति ने शायद ही कभी किसी दूसरे को बताया होगा। इसलिए अगर जरूरत हो तो आप पक्की गोपनीयता बनाए रखने की प्रतिज्ञा करें और बनाए भी रखें। बातों का पता लगाने पर जोर न दें। व्यक्ति को ही पहल करने दें। जो व्यक्ति उद्धार के लिए खुल रहा है उसके साथ बर्ताव करने के लिए बुद्धि और समझबूझ इस्तेमाल करें। यह एक बहुत ही क्रान्तिक और कोमल क्षण है। यह पवित्र अनुभव है। इसे बड़ी समझबूझ से सम्भालें।

- <u>तरस</u>

यीशु ने "भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया" (मत्ती 9:36)। हमें भी उसी रवैये की जरूरत है अगर हम वैसे ही परिणाम हासिल करना चाहते हैं। चोट खाए लोग सच्ची करुणा को तुरन्त पहचान लेते हैं, और वे इसकी कमी भी उतनी ही जल्दी पहचान लेते हैं। यीशु का तरस सम्भवतः एकमात्र सबसे बड़ा कारण था कि क्यों लोग उसे बड़ी खुशी से सुनते थे। वे पहचान गए थे कि वह उनमें सच्चाई और ईमानदारी से दिलचस्पी रखता और उनकी परवाह करता है। तो ऐसा हमारे साथ भी होगा।

- **अतिथि-सत्कार सुसमाचार प्रचार**

यह सम्भवतः मित्रता सुसमाचार प्रचार से एक कदम बढ़कर है। इसमें लोगों का अतिथि-सत्कार करना शामिल है ताकि उनके साथ जान-पहचान बनाई जा सके और उन्हें सुसमाचार सुनाया जा सके। प्रकट है कि पहले लोग जिनके लिए यह लागू होगा, रिश्तेदार हैं। यह प्रायः होता है कि एक नए वचनबद्ध मसीही के कई रिश्तेदार हैं जिन्होंने अभी मसीह को नहीं पाया है। उन्हें अपने घर खाने के लिए बुलाना अक्सर उन्हें अपने विश्वास के बारे में बताने का सबसे उत्तम तरीका है। खाने की मेज के ईर्द-गिर्द बैठना प्रायः उस प्रकार का मित्रभाव और अनौपचारिक बातचीत के लिए वातावरण बनाता है जो मसीह की बातें करने के लिए सहायक होता है। यीशु ने अक्सर ऐसे अवसरों को अपने सम्भावित ग्राहकों के जीवनों में गहराई से बात करने के लिए इस्तेमाल किया था। अतिथि-सत्कार परमेश्वर के राज्य की संस्कृति में एक बहुत ही खास भूमिका निभाती है। इसके गहरे आत्मिक अर्थ हैं जिसे किसी के अतिथि भी अवचेतना से पहचानते हैं।

पड़ोसी भी एक लोगों का वर्ग है जिनके सामने हम अतिथि-सत्कार का प्रस्ताव रख सकते हैं। स्वीकार होने पर, परिवार के साथ खाना खाने का निमंत्रण अक्सर एक हल्के आभार की भावना लाता है जिसमें अतिथि मेजबान की ओर अनुकूल प्रतिक्रिया दिखाना चाहता है। यह अक्सर अतिथि को अपने मेजबान की सुनने और उससे सहमत होने की सही मानसिक दशा में करता है। यह तरीका खासकर लागू होता जब नए पड़ोसी अपने इलाके में रहने आए हैं। उनका पड़ोस में आने के साथ साथ खाने का भी निमंत्रण देकर स्वागत करना, या शायद उनके पास खुद खाना लेकर जाना जबकि वे अभी सामान वगैरा ला रहे हैं, उनके साथ एक अर्थपूर्ण सम्बंध बनाने का साधन हो सकता है।

व्यवसाय के सहयोगी, और साथी कर्मचारी एक दूसरा वर्ग है जिन्हें हम अतिथि-सत्कार के माध्यम के द्वारा प्रभावी तरीके से पहुँच सकते हैं। परिवार के साथ मिलकर खाना खाने के दृश्य में एक अलग ही वातावरण होता है जो व्यवसाय के क्षेत्र या आफिस या

नौकरी की दूसरी जगहों में नहीं पाया जाता है। यहाँ पर अक्सर एक विश्राम का और सुखद वातावरण होता है जो मित्रभाव की चर्चा के लिए सहायक होता है। यह एक बहुत ही अच्छा दृश्य होता है जिसमें लोगों को और अच्छी तरह जाना जा सकता है और उनके साथ बेहतर सम्बंध बनाए जा सकते हैं।

अतिथि-सत्कार उदारता दिखाता है जिसका विरोध करना कठिन होता है। आप जानते हैं कि आपके मेजबान आपके लिए मिलनसार बन रहे हैं। अपना घर खोल रहे, खाना पका रहे, आपका मनोरंजन कर रहे हैं। इससे किसी के लिए एक प्रेममय दिलचस्पी और परवाह प्रकट होती है। यह सेवकाई पत्नी को मनुष्यों को जीतने की प्रक्रिया में भाग लेने का मौका देती है। जो खाना वह पकाती है वह प्रेममय परवाह प्रकट करता है। इसके साथ साथ वह बातचीत में भी भाग ले सकती है, अपनी गवाही बता सकती है। सम्भवतः वह पत्नि के सात बात कर सकती है जबकि उसका पति पुरुष के साथ बात कर रहा है।

- **पुस्तिका या सुसमाचार के पर्चे बाँटना**

मसीही साहित्य का विवेकपूर्ण इस्तेमाल सुसमाचार फैलाने का एक शक्तिशाली साधन हो सकता है। यह अक्सर लोगों को उनके सुसमाचार सुनाने में मदद करता है क्योंकि इसे एक व्यक्ति को पेश करने से उस व्यक्ति के साथ सम्पर्क का बिन्दु बन जाता है। साहित्य का एक टुकड़ा विवेकपूर्ण पेश करना एक सरल मामला है। "क्षमा कीजिए, क्या आप यह पर्चा स्वीकार करेंगे? मुझे लगता है कि आप इसे सहायक और ज्ञानोदय पाएँगे।"

निश्चय करो कि आप आकर्षक और उपयुक्त सामग्री इस्तेमाल करते हो। ऐसी सामग्री इस्तेमाल करने की कोशिश मत करो जो बहुत धार्मिक बातों से भरी है। कुछ ऐसी पुस्तिकाएं लो जिनके विषयों में एक सामान्य व्यक्ति उत्सुक हो। कुछ जो उनका ध्यान आकर्षित करेगा। अगर सामग्री दिलचस्प है और व्यक्ति इसे पढ़ लेता है तो एक असली सम्भावना है कि कुछ बीज बोया जाएगा जो एक आत्मिक फसल लाएगा।

पुस्तिकाएँ और साहित्य बाँटना सुसमाचार फैलाने का एक साधन हो सकता है जो शक्तिशाली प्रभाव लाता है। ये "कागज प्रचारक" अतिउत्तम सेवक बनते हैं। वे :-

- बहुत सस्ते में दूर-दराज सफर कर सकते हैं।
- अनेक भिन्न भिन्न भाषाएँ बोल सकते हैं।
- विविध संस्कृतिक वातावरण में उचित रूप से ठीक बैठते हैं।
- बाइबल के महान सच्चाइयों का प्रचार करते और सिखाते हैं।
- न कभी थकते हैं, और न घर की याद सताती है।
- बिना छुट्टी लिए अनिश्चित काल तक रह सकते हैं।

साहित्य सेवकाई सम्भवतः सुसमाचार फैलाने का आज का सबसे सस्ता साधन है। आप सुसमाचार पुस्तिकाओं को किसी को मसीह के ज्ञान में लाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। आप उस व्यक्ति को विश्वास में मजबूत करने के लिए बाइबल पत्राचार कोर्स इस्तेमाल कर सकते हैं। सुसमाचार प्रचार साहित्य के कई भिन्न भिन्न कार्य हैं।

- **घर-घर सुसमाचार प्रचार**

शुरू के चेलों के बारे में कहा गया है कि वे घर-घर जाया करते थे (प्रेरितों 2:46)। इसका तात्पर्य शायद घर-घर जाकर सुसमाचार फैलाना न हो, लेकिन यह कुछ ऐसा ही जरूर था। उन्होंने सुसमाचार को पैर लगा दिए थे। वे वहाँ गए जहाँ लोग थे। उन्होंने खुद को, लोगों की नज़रों से दूर, किसी अँधकारमय ईमारत में नहीं बंद कर लिया था। वे सुसमाचार को लोगों तक ले गए।

दुख की बात है कि सच्ची कलीसिया ने सुसमाचार प्रचार के इस साधन को त्याग दिया है और असल में मोरमोन और यहोवा के गवाह जैसे अनेक पंथों के हाथों में इसे छोड़ दिया है। घर-घर सुसमाचार प्रचार इन और इनके जैसे दूसरे पंथों से इतने करीब से सम्बद्ध हैं कि स्पष्ट रूप से घोषना करना जरूरी हो जाता है कि आप इन संस्थाओं के प्रतिनिधि नहीं हो। फिर भी, यह कोई कारण नहीं है कि हम इस तरीके को इस्तेमाल न करें। हमें केवल यह स्पष्ट करने की जरूरत है कि हम किसी प्रकार से भी इन पंथों से सम्बंधित नहीं हैं – ये पंथ इतने आक्रमणशील और जिद्दी होते हैं कि लोग उनमें कोई दिलचस्पी दिखाने से या उन्हें कोई प्रोत्साहन देने से नफरत करते हैं।

घर-घर जाकर प्रचार करने में, आपको कुछ भिन्न युक्ति इस्तेमाल करने की जरूरत होगी। कुछ लोगों "धार्मिक सर्वेक्षण" करते हैं। इसमें घर वालों को उनके धार्मिक संबंधन या पसन्द के बारे में कुछ संकेतक प्रश्न पूछना शामिल है। आप इस प्रकार के प्रश्न पूछ सकते हैं:

- आप कलीसिया में क्यों नहीं जाते हो?

- आप किस प्रकार की कलीसिया में जाना पसन्द करोगे ?
- आपको क्या लगता है कलीसिया को क्या करना चाहिए ?
- क्या आप परमेश्वर और अनन्त जीवन में विश्वास करते हैं ?
- क्या आपको पता है क्या होगा अगर आप अचानक मर गए ?

आपको कुछ कठिन प्रश्नों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन आप व्यक्ति को मसीही सम्बंधित विषयों पर बात करवाने लगेंगे। अगर आप पहले से ठीक से तैयारी कर लें तो आप इनमें से बहुत से प्रश्नों को सम्भाल पाएँगे और कम से कम आप पता लगा पाएँगे कि क्या इस परिवार के कोई आत्मिक झुकाव है या नहीं।

- **बाज़ार सुसमाचार प्रचार**

इसमें सुसमाचार प्रचार का एक तरीका शामिल है जिसे आजकल एशिया में प्रभावशाली तरीके से इस्तेमाल किया जा रहा है। मैं मसीही संदेश का व्यवसायी समाज में प्रवेश की बात कर रहा हूँ, जिसने हजारों मसीही व्यवसायी व्यक्ति मसीह को अपने साथ बाज़ार में ले गए हैं। बहुत सफल व्यवसाय चलाने के साथ-साथ, उनमें से कई अपने व्यवसायी साथियों को मसीह में भी लाने में सफल हुए हैं। बड़ी बड़ी कम्पनियों में सुसमाचार सभाएँ, प्रार्थना सभाएँ और बाइबल अध्ययन कक्षाएं चलती हुई पाना कोई असामान्य बात नहीं है, जिसमें बड़े बड़े अफसर और अधिकारी भी भाग लेते हैं।
मैं खुद विश्वास करता हूँ कि यह एक दिशा है जिसमें भविष्य में कलीसिया को बढ़ना होगा। वर्तमान में कलीसिया अपने "आराधना के जगहों" के एकान्त में बहुत अकेली सी है। इनमें से बहुत सी "कलीसियाएँ", आधुनिक जीवन की सच्चाइयों के लिए असंगत हो गई हैं। यह तरीका बहुत पहले से पुराना हो गया है और लुप्त हो गया है। वे अपने कार्यक्रमों और नित्यक्रमों में व्यस्त हैं, और सामान्य व्यक्ति के असली जीवन से अलग हो गए हैं।
आने वाले समय की फसल के कारण, कलीसिया को अपने खुद बनाए एकाकी-पन से बाहर आ जाना चाहिए और लोगों के बीच घुस जाना चाहिए। मैं और भी विश्वास करता हूँ कि इन क्रान्तिक दिनों की फसल पेशावर प्रचारकों द्वारा नहीं इकट्ठी की जाएगी, बल्कि साधारण विश्वासियों की सेना दे द्वारा जिसे परमेश्वर खड़ा कर रहा है। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं इस अन्तिम दिनों की सेना को खड़ा करने और प्रशिक्षण देने में पूरी तरह से शामिल हो जाएँ।

पाठ ग्यारह – आप एक मसीही हैं! अब क्या?

आपने प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार किया है और अपना जीवन उसको समर्पित किया है। "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।" (यूहन्ना 1:12-13)
एक निश्चित फैसले के द्वारा, अपनी इच्छा इस्तेमाल करते हुए, आपने परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह को ग्रहण किया है, और परमेश्वर के आत्मा ने आपको नया जन्म, एक आत्मिक जन्म दिया है। आप परमेश्वर के परिवार के एक सदस्य हैं, "जब आप प्रार्थना करते हैं, 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।" (मत्ती 6:9-10)
इसलिए एक मसीही एक धार्मिक व्यक्ति से कहीं बढ़कर है, जो कलीसिया में जाता है, प्रार्थनाएँ कहता है, बाइबल या धार्मिक पुस्तकें पढ़ता है, अपनी पूरी कोशिश करता है....यह धर्म नहीं है जो एक मसीही बनाता है, यह एक सम्बंध है।
पाप ने मनुष्यजाति के माता-पिता को परमेश्वर से अलग किया था। मन फिराना, जो अपने बारे में और परमेश्वर के बारे में मन का बदलना है, व्यवहार के बदलाव की ओर ले जाता है। अपने पापीपन का परमेश्वर के सामने स्वीकार करना, और यीशु मसीह, जो हमारा उद्धारकर्त्ता बनने के लिए, हमारे स्थानापन्न और पाप ढोनेवाले के रूप में कलवरी के क्रूस पर मरा, में विश्वास पाप की क्षमा लाते हैं। परमेश्वर के प्रेम और दया के द्वारा हमें क्षमा किया गया है और परमेश्वर के निकट लाए गए हैं; उसकी परवाह, सुरक्षा और आशीष के पात्र बन गए हैं। इन बाइबल के वचनों पर ध्यान दें:-
यशायाह 59:2 "तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है।"
रोमियों 3:23 "इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"
रोमियों 6:23 "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

यशायाह 53:6 “हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।”
यूहन्ना 3:16 “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।”
प्रेरितों 17:30 “परमेश्वर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।”
प्रेरितों 20:21 “परमेश्वर की ओर मन फिराना और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए।”
इफिसियों 2:19 “इसलिए अब तुम विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए।”

एक पिता और एक माता के द्वारा आपके प्राकृतिक जन्म ने आपको शारीरिक जीवन और प्राण दिया है। पवित्र आत्मा और परमेश्वर के वचन के द्वारा, आपके स्वीकार करने, मन फिराने और विश्वास से, आपके आत्मिक जन्म ने आपके अस्तित्व - आपका व्यक्तित्व, आपकी आत्मा, में परमेश्वर का जीवन लाया है - और आप एक नई सृष्टि हैं।
इफिसियों 2:1 “उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।”
2 कुरिन्थियों 5:17 “इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।”
तो आपने परमेश्वर से एक बिलकुल नया जीवन पाया है, और जीवन के साथ भूख भी आती है। जब यीशु ने एक लड़की को मरे से जीवित किया, तो उसने उसे कुछ खाने को देने की आज्ञा दी। (लूका 8:49-56)। खाना जीवन को बनाए रखता है, विकास को प्रोत्साहन देता है, ऊर्जा देता है। तो एक व्यक्ति अपने आत्मिक जीवन में मजबूत और तन्दुरूस्त कैसे हो सकता है?

बाइबल खानेवाला मसीही बनो

यिर्मयाह (यिर्म. 15:16) बाइबल के बारे में कहता है, “जब तेरे वचन मेरे पास पहुँचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए।” आप परमेश्वर का वचन कैसे खा सकते हो? इसे पढ़ने और इस पर विचार या मनन करने से। दाऊद (भजन 1:2) ने परमेश्वर के वचन में रात-दिन मनन करने के बारे में लिखा है। और परमेश्वर ने यहोशू (यहोशू 1:8) को कहा, “व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान किए रहना...।” परमेश्वर ने आगे कहा कि ऐसा ही करने से उसके सब काम सफल होंगे और वह प्रभावशाली होगा। यीशु ने मत्ती 4:4 में कहा, “मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।”
सामान्य लोग तन्दुरूस्त रहना चाहते हैं। परमेश्वर का वचन हमारे सारे शरीर के लिए सेहत है। नीतिवचन 4:20-22 पढ़ो। भजन 107:20 में परमेश्वर कहता है, “वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता है।” बाइबल में हजारों प्रतिज्ञाएँ हैं। 2 कुरिन्थियों 1:20 कहता है, “क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएं हैं, वे सब उसी में ‘हाँ’ के साथ हैं। इसलिए उसके द्वारा आमीन भी हुई कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो।” अपनी जरूरतों के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर दावा करो और यिर्मयाह 1:12 पर भी, “मैं अपने वचन को पूरा करने के लिए जागृत हूँ।” मुझे बाइबल कब कब पढ़नी चाहिए? रोजाना। एक बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा, “बाइबल नहीं तो नाश्ता नहीं, हमें बाँधने के लिए नहीं बल्कि हमें याद दिलाने के लिए एक आदर्श-वाक्य।”

प्रार्थना का व्यक्ति बनो

प्रेरित पौलुस के दमिश्क के नगर की ओर जाते हुए उद्धार होने के बाद, हम प्रेरितों 9:22 में पढ़ते हैं, “वह प्रार्थना कर रहा है।” एक मसीही के लिए प्रार्थना करना, अपने स्वर्गिय पिता से बातें करना, अपना धन्यवाद, अपनी स्तुति, अपना प्रेम लाना; और अपनी जरूरतें, अपनी समस्याएँ बताना; और मार्गदर्शन और दिशा खोजना स्वभाविक है। प्रार्थना पर नम्र निर्भरता हमें परमेश्वर के साथ एक सही सम्बंध में रखता है।
बाइबल प्रार्थना करने के उपदेशों और प्रोत्साहन और प्रार्थना के उदाहरणों से भरी हुई है। मत्ती 7:7 प्रतिज्ञा करता है, “माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढो तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।” यीशु ने कहा, “नित्य प्रार्थना करना और हियाब न छोड़ना चाहिए।” “भोर को दिन निकलने से बहुत पहले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहाँ प्रार्थना करने लगा।” मरकुस 1:35। मरकुस 6:46; लूका 5:16 और 6:12 भी देखो।
मुझे कब कब प्रार्थना करनी चाहिए? प्रार्थना हृदय और मन का एक रवैया है, ताकि जब कभी भी मन मुक्त है, तो यह परमेश्वर से बात करने के लिए घूमता है - जैसे कम्पास की सूई चुम्बकीय उत्तर की ओर घूमती है। जब मुमकिन हो तो प्रार्थना के खास समय और एक खास जगह हो। खासकर, दिन को प्रार्थना और बाइबल पढ़कर शुरू करो।

दूसरों के साथ एक नियमित आराधक बनो

प्रेरितों अध्याय 2 मसीही कलीसिया के प्रारंभ की एक कहानी है। आय 42 पहले मसीहियों के बारे में बताती है, "और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" यह एक प्रेरक कहानी है। वे बाइबल के उत्सुक विद्यार्थी थे; वे संगति के लिए इकट्ठे मिलने का आनन्द लेते थे; वे इकट्ठे प्रभु-भोज लेते थे; (1 कुरिं. 11:23-26 देखो) और वे इकट्ठे प्रार्थना करते थे। इब्रानियों 10:25 में लिखा है, "एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें।" "परमेश्वर अनाथों का घर बसाता है" (भजन 68:6)। एक बाइबल पर विश्वास करनेवाली, सुसमाचार प्रचार करनेवाली कलीसिया एक परिवार है जो साथ-साथ बढ़ते हैं, साथ-साथ सेवा करते हैं, बाँटते, आराधना करते, देते, सहायता करते, और मसीह के स्वरूप में बढ़ने के लिए एक दूसरे को प्रोत्साहन देते हैं। अपने आनन्द और विजयों को बाँटने के साथ-साथ, निराशा, हार, वेदना और समस्याओं में एक परवाह करनेवाली, प्रार्थना करनेवाली विश्नासियों की मण्डली होना जिनके साथ अपने बोझ बाँट सकें, एक अदभुत आशीष और प्रोत्साहन है। मुझे कितनी बार कलीसिया की सभाओं में जाना चाहिए? जितना मुमकिन हो सके उतना, याद रखें मैं देने भी जाता हूँ और लेने भी। (1 कुरिं. 14:26)।

एक पानी का बपतिस्मा पाया हुआ विश्वासी बनो

नए नियम में बपतिसेमा हमेशा उन्हीं लोगों का हुआ है जिन्होंने विश्वास किया (मरकुस 16:16), मन फिराया (प्रेरितों 2:38), परमेश्वर के वचन को ग्रहण किया (प्रेरितों 2:41), और यीशु की आज्ञा की ओर आज्ञाकारी हैं (मत्ती 28:19), "इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" इसलिए यह उसके द्वारा एक समझदारी का फैसला है जिसने ऊपर दिए वचन पूरे किए हैं।

नए नियम की कलीसियाओं या मण्डलियों में वे कैसे बपतिस्मा पाते थे। एक सम्पूर्ण डुबकी के द्वारा, बाइबल के परमेश्वर के नाम में – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, परमेश्वरत्व के तीन व्यक्ति जो बाइबल में स्पष्ट रूप से प्रकट हैं। रोमियों 6:3-5 बताता है कि पानी में बपतिस्मा उस चीज की बाहरी तस्वीर है जो उद्धार के आत्मिक अनुभव में होता है। एक विश्वासी को कब बपतिस्मा दिया जाना चाहिए? आपके प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करने और बाइबल की मूल सच्चाइयों को समझने के जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी। प्रेरितों 2:41; 10:47-48)

एक आत्मा से भरा हुआ विश्वासी बनो

कोई भी अपनी शक्ति से मसीही जीवन नहीं जी सकता है, क्योंकि परमेश्वर का ऐसा इरादा ही नहीं था। यह नामुमकिन को करने की कोशिश होगा। परमेश्वर ने विश्वासी का पवित्र आत्मा से भरने का प्रयोजन किया हुआ है, जिससे उसे मसीही जीवन भरपूरता से जीने की योग्यता और मसीह के लिए फलवन्त, प्रभावी सेवा के लिए सामर्थ मिले। यीशु के पृथ्वी छोड़ने और स्वर्ग लौटने से पहले, उसने एक दूसरे सहायक की प्रतिज्ञा की थी जो उसकी शारीरिक उपस्थिति की जगह लेगा। पवित्र आत्मा आएगा और विश्वासी के शरीर को अपना मंदिर बनाएगा। (1 कुरिं. 6:19)। "आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" (इफि. 5:18) भी एक आज्ञा है जैसे पानी से बपतिस्मा लेने की आज्ञा है।

प्रभु यीशु ने चेलों को उनकी सेवकाई शुरू करने से पहले आत्मा का बपतिस्मा पाने या भरने की आज्ञा दी थी (लूका 24:49; प्रेरितों 1:8)। यह प्रेरितों 2 में पिन्तेकुस्त के दिन पूरा हुआ था, जब पवित्र आत्मा स्वर्ग से उतरा और सभी प्यासे प्राणियों को भर दिया, और पवित्र आत्मा के सामर्थ से, वे अन्य भााओं में बोलने लगे - भाषाएँ जो उन्होंने नहीं सीखी थीं। प्रेरितों 10:44-48; प्रेरितों 19:5-6 भी देखो। पवित्र आत्मा से कौन बपतिस्मा देता है? प्रभु यीशु बपतिस्मा देनेवाला है। एक पास्टर या दूसरा विश्वासी आपको पानी का बपतिस्मा देता है, लेकिन प्रभु यीशु ही आपको पवित्र आत्मा से भर सकता है (मत्ती 3:11; लूका 3:16)।

यीशु ने हमें उसके पास आने और विश्वास से पवित्र आत्मा पीने का निमंत्रण दिया है, (यूहन्ना 7:37-39)। हर विश्वासी प्रारंभिक भरना या बपतिस्मा (प्रेरितों 2:38-39) और एक निरन्तर भरना पा सकता है (इफि. 5:18), जहाँ क्रिया "परिपूर्ण होते जाओ" वर्तमान काल है, जो निरन्तर हो रहे कार्य का संकेत देता है; जिसका तात्पर्य है बाहिर्वाह को बनाए रखने के लिए अन्तर्वाह, जो पुनःपूर्ति की तस्वीर है।

देनेवाला – न कि लेनेवाला बनो

कलीसिया के द्वारा प्रभु के सारे विभिन्न पहलुओं और कार्यक्रमों को करने के लिए पैसा लगता है। परमेश्वर अपने काम की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने लोगों को आशीष देता और इस्तेमाल करता है। देना हमारी भक्ति और सेवा का एक महत्त्वपूर्ण भाग और उसकी आशीष पाने का एक साधन है। इसी लिए बाइबल मसीह के राज्य के काम के लिए, न केवल खुद

को देने के बारे में, बल्कि अपनी चीजों को देने के बारे में बहुत कुछ कहती है। "परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है" (2 कुरिं. 9:7)।
हमें कितना देना चाहिए?
पुराने नियम में, इस्राएली, परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार, दसवाँ देते थे। मलाकि 3:8-10.
1 कुरिन्थियों 16:2 कहता है, "सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे।" सप्ताह के पहले दिन, रविवार को मसीही लोग प्रभु भोज मनाने, व्यख्या किया गया परमेश्वर का वचन सुनने, और सार्वजनिक आराधना का आनन्द लेने को इकट्ठे होते थे (प्रेरितों 20:7), और यहाँ वे प्रभु के काम के लिए अपने दान लाते थे। अनेकों के लिए, परमेश्वर को उदारता से देना विश्वास का कदम है; लेकिन लूका 6:38 में दिए उसके वादे को देखो, "दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।"

परमेश्वर के सामने प्रकट रहो

गलती को छुपाने की कोशिश मत करो। हर विश्वासी समय समय पर असफलता होता है। प्रभु चाहता है कि हम प्रकट और ईमानदार हों। "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य है।" 1 यूहन्ना 1:9 का यह वचन मसीहियों के लिए लिखा गया है। परमेश्वर को अपने जीवन का थोड़े छोड़े समय पर हिसाब देते रहो। पाप सूरज पर से गुज़रते हुए एक बादल की तरह है जो उसे हम पर चमकने से रोकता है। पाप की तात्कालिक स्वीकृति और परमेश्वर को क्षमा करने को कहना, उसकी क्षमा लाता है और बादल को हटा देता है।

एक गवाही देनेवाले विश्वासी बनो, प्रेरितों 1:8

मसीही जीभ और जीवन द्वारा गवाही देता है - जो हम हैं और जो हम कहते और करते हैं। अनेक लोग एक विश्वासी की व्यक्तिगत गवाही और सेवकाई द्वारा मसीह के लिए जीते गए हैं। पहले मसीही जब सताव के कारण यरूशलेम से तितर-बितर हो गए थे तो वे "सुसमाचार सुनाते हुए फिरे" (प्रेरितों 8:4)। इस तरीके से सुसमाचार फैला और मसीही संख्या में बढ़ते गए। आओ हम परमेश्वर से माँगे और उम्मीद करें कि वह हमें इस प्रकार इस्तेमाल करे।

एक विश्वास से भरा विश्वासी बनो, प्रेरितों 6:8

विश्वास के लिए पुराने नियम का शब्द 'भरोसा' है, जो एक सौ पचास से ज्यादा बार पाया जाता है। इब्रानियों अध्याय 11 में परमेश्वर के पुरुषों और स्त्रियों के विश्वास के कारनामों का विवरण है। मसीही जीवन एक विश्वास का जीवन, परमेश्वर पर भरोसे का जीवन है। यीशु ने हमेशा विश्वास की ओर ध्यान खींचा और प्रतिक्रिया दिखाई। "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो", उसने मत्ती 9:29 में कहा। एक विश्वासी ने कहा, "मैंने विश्वास के लिए प्रार्थना की, और मैंने अपनी बाइबल खोली और पढ़ा, 'विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है', और मैं पढ़ने लगा और तब से मेरा विश्वास बढ़ रहा है।"

एक आशा से भरा विश्वासी बनो

वो धन्य आशा जो परमेश्वर ने सारे सच्चे विश्वासियों के सामने रखी है, वो अपने लोगों को अपने लिए लेने के लिए प्रभु यीशु की पृथ्वी पर लौटने की है। अपने पहले आगमन के द्वारा, यीशु परमेश्वर के अनुग्रह और दया के द्वारा मनुष्य के पाप से निपटा था। अपने दूसरे आगमन में, वह उन सबको स्वीकार करेगा जिन्होंने मन फिराने और उसमें विश्वास के द्वारा उद्धार पाया है, जो उसकी दुल्हन, उसकी कलीसिया कहलाते हैं। "वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान हुआ; और जो लोग उसकी बाट जोहते हैं उनके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप उठाए हुए दिखाई देगा" (इब्रानियों 9:28)। इस प्रतिज्ञा का जिक्र स्वर्गदूतों ने भी किया था, "यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा" (प्रेरितों 1:10-11)। और प्रभु ने खुद कहा, "फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो" (यूहन्ना 14:3)।
यह अदभुत आशा का, जो उसकी इन्तज़ार कर रही और अक्सर सताई जा रही कलीसिया के सामने रखी गई है, नए नियम में तीन सौ से भी ज्यादा बार वर्णन है। "और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे" (1 थिस्स. 4:17)।

इनाम के लिए निश्चित रहो

प्रेरित पौलुस की तरह हम प्रभु की सेवा इनाम के लिए नहीं करते हैं, बल्कि उसके लिए अपने प्रेम की खातिर और उन पुरुषों और स्त्रियों के लिए जिनके लिए वह मरा था। फिर भी बाइबल यह स्पष्ट रूप से कहती है कि परमेश्वर सब विश्वासयोग्य सेवा को इनाम देगा। "क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं कि जब एक सब के लिए मरा तो सब मर गए" (2 कुरिं. 5:14)।

उद्धार एक दान है, यूहन्ना 10:28; इफिसियों 2:8। इनाम कमाये जाते हैं, 1 कुरिन्थियों 3:11-15; 2 कुरिन्थियों 5:10। बाइबल के आखिरी अध्याय (प्रकाशितवाक्य 22:12) में हम पढ़ते हैं, "देख, मैं शीघ्र आ रहा हूँ, और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।" मेरी प्रार्थना है कि हम इन अन्तिम दिनों में प्रभु और उसकी कलीसिया की परिश्रमी बलिदान संबंधी सेवा करने के लिए चुनौती पाएँ और प्रेरित हों।

प्रोत्साहन का वचन

मसीही जीवन के लिए परमेश्वर का लक्ष्य मसीह के रूप में ढलना है (2 कुरिन्थियों 3:18)। इसके लिए प्रेरित पौलुस ने अपनी सारी शक्ति से मेहनत की और प्रार्थना की (कुलुस्सियों 1:28-29)।

परमेश्वर, अपने असीम धीरज और प्रेम से, हमारे अन्दर पाप से बिगड़े अपने स्वरूप को पुनःस्थापित करने के लिए काम कर रहा है। पवित्र आत्मा के बहुत से कार्य हैं जिनमें से एक सिखाना है, यूहन्ना 14:26। वह सबसे बड़ा शिक्षक है। जबकि उन विभिन्न सेवकों और सेवकाइयों को जिन्हें परमेश्वर ने कलीसिया में रखा है, पहचानो और स्वीकार करो (इफिसियों 4:11; रोमियों 12:6-8; 1 कुरिन्थियों 12:28-31); पवित्र आत्मा पर भी निर्भर रहो कि वह आपको सिखाए और अगुआई करे।

पाप की परिक्षा के कारण, जो सब मसीहियों पर आती है, निराश मत हो जाओ। परमेश्वर के वचन और प्रतिज्ञा पर निर्भर रहो: "तुम किसी ऐसी परिक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको" (1 कुरिन्थियों 10:13)। याकूब 1:12-15 भी देखो।

प्रेम संसार में सबसे बड़ी शक्ति है। इसलिए हर दिन परमेश्वर के प्रेम से भरने की कोशिश में रहो। इसका राज पवित्र आत्मा से भरते रहना है। "क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है" (रोमियों 5:5)। "क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी है" (2 तीमुथियुस 1:7)। "पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है" (1 कुरिन्थियों 13:13)। परमेश्वर के प्रेम के गुणों के लिए 1 कुरिन्थियों 13:4-8 पढ़ें।

याद रखो, परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह के नाम में शैतान और सारी दुष्टात्माओं पर सामर्थ, अधिकार और जय दी है। "देखो, मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी" (लूका 10:19)।

"वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे।" (मरकुस 16:17)

"जो तुम में है वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।" (1 यूहन्ना 4:4)

निराशा शैतान का मसीही के खिलाफ सबसे प्रिय हथियार है। इस आत्मा के हाथ खुद को न दें। "यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?" (रोमियों 8:31)

जैसे जैसे आपने जो पढ़ा है उसे अभ्यास में लाते जाओगे, तो आप ताकत में बढ़ते जाओगे और परमेश्वर की महिमा के लिए एक तेजस्वी, फलवन्त मसीही बनोगे।

परमेश्वर की सन्तान कैसे बनें?

इसका अर्थ है:-

परमेश्वर के साथ सही सम्बंध में आना (2 कुरिं. 5:20)।

अपने पापों की क्षमा पाना (प्रेरितों 2:38)।

नया जन्म पाना – परमेश्वर से नया जीवन, आत्मिक जीवन (पाप के कारण खो गया था) पाना।

परमेश्वर जो सारे जीवन का स्रोत है, केवल वहीं हमारे अन्दर आत्मिक जीवन बना सकता है (यूहन्ना 3:3-8)।

परमेश्वर के परिवार का सदस्य बनना, परमेश्वर को अपने स्वर्गीय पिता के रूप में जानना (मत्ती 6:6-13)।

परमेश्वर का सेवक बनना, प्रभु यीशु मसीह का चेला बनना, और यह आश्वासन पाना कि तुम में अनन्त जीवन है। (मत्ती 4:10; 28:19-20; यूहन्ना 3:36)।

परमेश्वर जो आपसे प्रेम करता है और चाहता है कि आप उसे जानें, संसार और सृष्टि का सिरजनहार है। उत्पत्ति 1:1 “आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।”

पाप परमेश्वर की आज्ञोल्लंघन है, और यह मनुष्य के व्यवहार में अनेक प्रकार से प्रकट होता है, जो जीवन में दुख और तकलीफ लाता है। रोमियों 3:23 “इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।”

मनुष्य के लिए अपने प्रेम की खातिर, हमें नष्ट होने से बचाने के लिए, परमेश्वर ने मनुष्य के पापों की सजा खुद ली। पाप में गिरा मनुष्य खुद को नहीं बचा सकता है। प्रभु यीशु मसीह जिसके अनेक नाम हैं, मनुष्य के रूप में परमेश्वर था, मत्ती 1:23, “देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा”, जिसका अर्थ है - परमेश्वर हमारे साथ।” प्रभु यीशु मसीह का इस्राएल के देश में जन्म हुआ, वहाँ जीया, मरा और मरे हुओं में से जी उठा। (मत्ती 2:1)। यरूशलेम में कलवरी के क्रूस पर जहाँ उसे मार डाला गया था, उसने हर मनुष्य के लिए पाप और उसकी सजा अपने ऊपर ले ली। यशायाह 53:5-6 “परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।”

आपको क्या करना चाहिए:

- अपने पाप स्वीकार करो, मन फिराओ, पाप से फिरो और परमेश्वर से क्षमा माँगो। 1 यूहन्ना 1:9 “यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य है।” 1 यूहन्ना 1:7 “… और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।”
- यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु ग्रहण करो। यूहन्ना 1:12 “परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।”

यह प्रार्थना अपने दिल से करो: “प्यारे प्रभु यीशु मसीह, मैं अब आपके पास आता हूँ कि खुद को आपके हाथ सौंपूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं पापी हूँ, और मैं अपने सारे पापों से मन फिराता हूँ और उन्हें छोड़ देता हूँ। मैं आपकी क्षमा माँगने आता हूँ कि आप मुझे शुद्ध करें। मैं विश्वास करता हूँ कि आप मेरे पापों के लिए क्रूस पर मरे, और मैं आपको अब अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु ग्रहण करता हूँ। मैं धन्यवाद करता हूँ कि आपने मुझे स्वीकार किया और मुझे अपना बनाया है। विश्वासयोग्य होने में और अपने जीवन के हर दिन तेरे लिए जीने में मेरी मदद कर। तेरे नाम से मैं प्रार्थना करता हूँ, आमीन।”

मसीह की देह में हमारा एक दूसरे की ओर कैसा रवैया होना चाहिए?

हमें:

- एक दूसरे से प्रेम करो (यूहन्ना 13:34-35; यूहन्ना 15:12, 17; 1 थिस्सलुनीकियों 3:12; 1 थिस्सलुनीकियों 4:9; 1 पतरस 1:22; 1 यूहन्ना 3:18; 1 यूहन्ना 4:7, 11-12)।
- एक दूसरे को प्रोत्साहित करो (1 थिस्सलुनीकियों 4:18; इब्रानियों 3:13; इब्रानियों 10:25)।
- प्रेम और भले कामों के लिए एक दूसरे को प्रेरित करो (इब्रानियों 10:24)।
- एक दूसरे की उन्नति करो (1 थिस्सलुनीकियों 5:11)।
- एक दूसरे को ऊँचा उठाओ (रोमियों 14:19)।
- एक दूसरे को चिताओ (कुलुस्सियों 3:16)
- एक दूसरे को शिक्षा दो (रोमियों 15:14)।
- एक दूसरे की सेवा करो (गलातियों 5:13; 1 पतरस 4:10)।
- एक दूसरे की सह लो (इफिसियों 4:2; कुलुस्सियों 3:13)।
- एक दूसरे को क्षमा करो (इफिसियों 4:32; कुलुस्सियों 3:13)।
- एक दूसरे पर कृपालु हो (इफिसियों 4:32)।
- एक दूसरे पर करुणामय हो (इफिसियों 4:32; 1 पतरस 3:8)।
- एक दूसरे से स्नेह रखो (रोमियों 12:10)।
- एक दूसरे का आदर करो (रोमियों 12:10)
- एक दूसरे के साथ एक मन रहो (रोमियों 12:16; 1 पतरस 3:8)।
- एक दूसरे के लिए सहानुभूति रखो (1 पतरस 3:8)।
- एक दूसरे के साथ नम्र बनो (इफिसियों 4:2; 1 पतरस 3:8)।
- एक दूसरे के साथ धैर्यवान बनो (इफिसियों 4:2)।
- एक दूसरे को ग्रहण करो (रोमियों 15:7)।
- एक दूसरे के अधीन रहो (इफिसियों 5:21)।

- एक दूसरे की ओर दीनता घारण करो (इफिसियों 4:2; 1 पतरस 5:5)।
- एक दूसरे को सिखाओ (कुलुस्सियों 3:16)।
- एक दूसरे के साथ मेल मिलाप रखो (मरकुस 9:50; रोमियों 12:18)।
- एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो (याकूब 5:16)।
- एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो (याकूब 5:16)।
- एक दूसरे का अतिथि-सत्कार करो (1 पतरस 4:9)।
- एक दूसरे का नमस्कार करो (रोमियों 16:16; 1 पतरस 5:14)।
- एक दूसरे से संगति करो (1 यूहन्ना 1:7)।
- एक दूसरे के साथ एक मत होकर मिले रहो (1 कुरिन्थियों 1:10)।
- एक दूसरे का भार उठाओ (गलातियों 6:2)।

मसीह की देह में जो चीजें एक दूसरे से नहीं करनी हैं:

- एक दूसरे को दाँत से काटते और फाड़ खाते मत रहो (गलातियों 5:15)
- एक दूसरे को न छेड़ो और न डाह करो (गलातियों 5:26)।
- एक दूसरे से बैर मत रखो (तीतुस 3:3)।
- एक दूसरे पर दोष मत लगाओ (रोमियों 14:13)।
- एक दूसरे से झूठ मत बोलो (कुलुस्सियों 3:9)।
- एक दूसरे की बदनामी मत करो (याकूब 4:11)।
- एक दूसरे के बारे में मत बड़बड़ाओ (याकूब 5:9)।
- एक दूसरे के विरुद्ध अदालत में मत जाओ (1 कुरिन्थियों 6:1-8)।

देह में अपना स्थान पाने और सक्रिय होने का महत्त्व

परिचय

अपने पुनरुत्थान के चालीस दिनों के बाद, यीशु सदेह में पिता के पास चला गया। उसका जीवन और सेवकाई उन सब में जमा है जो विश्वास से खुद को उसके साथ जोड़ते हैं। वह मनुष्यजाति के लिए अपने उद्धार की योजना का कलीसिया के द्वारा जो उसकी देह है, संचालन और प्रबंध कर रहा है।" (इफि. 1:22-23)

हर विश्वासी, उद्धार के समय, मसीह की देह का एक सदस्य बन जाता है। हम में से हर एक परमेश्वर द्वारा बनाए लोगों के इस दल का एक अनिवार्य सदस्य है। हम सबकी मसीह की इस देह में एक जगह है और इसके विकास और सेवकाई में सहयोग देने के लिए बुलाए गए हैं। जब हम अपनी जगह का पता लगाते हैं और उसे स्वीकार करते हैं तो हम एक पूर्ति और शान्ति पाते हैं। इस अध्ययन में हम मसीह की देह के उद्देश्य और सेवकाइयों का पता लगाएँगे और इसमें अपनी जगह का पता लगाने के कुछ सहायक संकेतों द्वारा इसे समाप्त करेंगे।

मसीह की देह क्या है?

"और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है" (इफिसियों 1:22-23)। मसीह की देह और कलीसिया दोनों एक ही हैं। दोनों शब्द उन लोगों के बारे में बताते हैं जो यीशु मसीह को उनका प्रभु और उद्धारकर्त्ता ग्रहण करके उद्धार पाए हैं। "कलीसिया" शब्द यूनानी भाषा का "इकलीसिया" शब्द है जिसका अर्थ है "बुलाए गए।" यह उनकी बात करता है जो संसार से परमेश्वर के राज्य के नागरिक होने के लिए बुलाए गए हैं (कुलु. 1:13)। "मसीह की देह" शब्द उस आंगिक संयोग के बारे में है जो प्रभु यीशु और विश्वासियों की सम्पूर्ण मण्डली के बीच है जो उससे जुड़े हुए हैं।

उद्धार के समय, हर विश्वासी का पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म होता है जो हमारे हृदयों में प्रवेश करता है और हमारे शरीर को परमेश्वर का मंदिर बनाता है (गलातियों 4:6; 1 कुरिं. 6:19)। साथ-साथ, उसी आत्मा के द्वारा हम सबका मसीह की देह में बपतिस्मा हो जाता है (1 कुरिं. 12:13)। हम में से हर एक कई सदस्यों वाली मसीह की देह के अकेले-अकेले भाग के रूप में शामिल होता है जिसका सर यीशु है।

इफिसियों 1:23 में मसीह की देह को "उसकी परिपूर्णता" के रूप में बताने के द्वारा, प्रभु उस अवियोज्य संयोग के बारे में बता रहा है जो उसका उसके लोगों के साथ है। देहधारण के द्वारा, यीशु दूसरे आदम के रूप में हमारे मनुष्यत्व में शामिल हुआ और सदा के लिए जिसे हम एक आत्मिक आंगिक सम्बंध कहेंगे, में खुद को हम से जोड़ दिया (1 कुरिं. 15:45)।

जैसे मसीह ने एक वास्तविक अनुभव के द्वारा हमारे मनुष्यत्व में भाग लिया, उसी प्रकार हमें भी उसकी देह में एक निश्चित सहभागिता में खुद को समर्पित करना चाहिए। हम विश्वव्यापी मसीह की देह के सदस्य हैं जो हर विश्वासी से बनी हुई है जो कभी हुआ है, लेकिन हमें एक स्थानीय कलीसिया में शामिल होने के द्वारा उसकी देह के एक स्थानीय अभिव्यक्ति के विश्वासयोग्य, सहयोग देनेवाले सदस्य भी बनना है। हर सदस्य की एक दूसरे की ओर, परमेश्वर की इच्छा में, क्रियात्मक वचनबद्धता के द्वारा ही, उसकी देह के साथ मसीह के उद्देश्य पूरे होंगे।

सबकी एक जगह है

"क्योंकि जैसे हमारी देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं; वैसे ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं" (रोमियों 12:4-5)।

हमारे शरीर के कई अंग हैं, गुरदों से लेकर अंगुलियों तक और हड्डी के मज्जा से लेकर कोया तक। हमारे शरीर के सही तरीके से कार्य करने के लिए हर अंग बहुत ही महत्त्व का है। वैसे ही मसीह की देह में है। अनेक सदस्य हैं, जिनकी अपनी जगह और हिस्सेदारी है, फिर भी एक ही देह है। हम सब अपनी-अपनी निपुणताओं, योग्यताओं और सेवकाई के क्षेत्रों में भिन्न हैं, लेकिन हम सब आवश्यक और महत्त्वपूर्ण हैं। हर एक मसीही एक अनोखे योगदान और सेवा की जगह के लिए खास तौर से बनाया, वरदान और अनुग्रह पाया हुआ है। 1 कुरिन्थियों 12:18 में लिखा है, "परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में

रखा है।" देह में अपनी जगह पाने के लिए जरूरी है कि हम इस सच्चाई को स्वीकार करें कि हम सबकी एक खास जगह है और कि हम उस अनोखी स्थिति को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं जो परमेश्वर ने हमें दी है।

1 कुरिन्थियों 12 में बताई दो प्रतिक्रियाएँ हैं जो मसीह की देह की एकता और कार्य में हस्तक्षेप करती हैं:

एक - असुरक्षा – 1 कुरिन्थियों 12:15 में पौलुस हास्य तौर पर पैर के बारे में बताता है जो असुरक्षा के कारण देह में अपनी स्थिति का इन्कार करता है क्योंकि वह हाथ नहीं है। इसका सबक प्रकट है: पैर में हाथ की दृश्यता, रचनात्मकता और प्रतिष्ठा की कमी है और इसलिए वह असुरक्षा महसूस करने लगता है। अनेक सन्त जो भिन्न वरदान या सार्वजनिक सेवकाई की कमी पाते हैं वैसी ही प्रतिक्रिया दिखाते हैं। हमें असुरक्षा या ईर्ष्यालु तुलना को अपने कार्य का मूल्य कम नहीं करने देना है या देह में अपनी जगह को स्वीकार करने से रोकने नहीं देना है।

दो - अहंकार – 1 कुरिन्थियों 12:21 में पौलुस चित्रित करता है कि आँख यह कहते हुए हाथ को ठुकराती है, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं।" हम "जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं" (रोमियों 12:5), और इसलिए हर व्यक्ति की जगह की कीमत को स्वीकार करें। यह खासकर उनके लिए जरूरी है जिनकी ज्यादा प्रकट वरदान वाली सेवकाई है।

सबके पास एक वरदान है

"उसने एक को पाँच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात् हर एक को उसकी सामर्थ के अनुसार दिया" (मत्ती 25:15)।
यीशु ने तोड़ों का यह दृष्टान्त हम सबको निश्चय दिलाने के लिए कहा कि हमारे पास वरदान, निपुणताएँ और योग्यताएं हैं जिन्हें उसके काम में लगाना है। इस दृष्टान्त में तीन अनिवार्य बातें हैं:

1. <u>हम सबमें स्वाभाविक योग्यताएँ हैं</u> – परमेश्वर ने हम सबको एक अनोखे व्यक्ति के रूप में बनाया है। हम कुछ स्वाभाविक रुचियों और प्रवृत्तियों के साथ पैदा हुए थे। कुछ व्यक्तियों का संगीत की ओर झुकाव होता है, तो कुछ गणितानुसार गुणी होते हैं। कुछ को बच्चों के साथ काम करना अच्छा लगता है, तो कुछ बढ़ईगिरी और मशीनी चीजों में निपुण होते हैं। आपकी स्वाभाविक योग्यताएं और झुकाव कोई संयोग नहीं हैं। आपको खासकर परमेश्वर के उद्देश्य के लिए बनाया गया था, "हम उसके बनाए हुए हैं" (इफि. 2:10)। प्रभु हमें अपनी "सामर्थ के अनुसार" हमारी सेवा और बुलावे के लिए सज्जित करता है। मत्ती 25:15.
2. <u>परमेश्वर हमारी स्वाभाविक योग्यताओं को अनुग्रह देता है</u> – इस दृष्टान्त में, मसीह द्वारा दिए गए तोड़े परमेश्वर का अनुग्रह दर्शाते हैं (सेवा के लिए खास वरदान) जो हमारी स्वाभाविक योग्यताओं पर उण्डेले जाते हैं। ये स्वाभाविक योग्यताएँ परमेश्वर के आत्मा द्वारा शक्ति पाकर, मसीह की देह के लिए वरदान बन जाते हैं। हमें रोमियों 12:6 में बताया गया है, "जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं।" हमारी स्वाभाविक योग्यताओं पर परमेश्वर के अनुग्रह के खास दान के बिना, हम उसके उद्देश्यों को पूरा नहीं कर सकेंगे। यीशु इस सम्बंध के बारे में यूहन्ना 12:5 में बात करते हैं, "जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"
3. <u>हमें विश्वासयोग्य होना चाहिए</u> - तोड़ों के बारे में मुख्य बात यह है, परमेश्वर चाहता हैं हम अपने वरदानों और बुलावे में विश्वासयोग्य हों, "फिर यहाँ भम्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो" (1 कुरिं. 4:2)। जिन्होंने अपने तोड़ों का बुद्धिमानी से इस्तेमाल किया था उनकी प्रशंसा की गई, "धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास" (मत्ती 25:21)। जिसने अपना तोड़ा छुपा रखा था उसे फटकार पड़ी और उसका तोड़ा दूसरे को दे दिया गया। परमेश्वर की इच्छा है कि हम विश्वासयोग्यता द्वारा फलवन्त हों।

हमारे वरदान नापे जाते हैं

"पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है" (इफिसियों 4:7)।
यीशु को पवित्र आत्मा बिना नापे दिया गया था। "क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है" (कुलु. 2:9)। वह देह का सर है और "उसकी परिपूर्णता से हम सबने प्राप्त किया" है (यूहन्ना 1:16)। मसीह की देह में अनेक सदस्य हैं, हर एक के पास वरदान और निपुणताएँ हैं जो उन्हें नाप कर दी गई हैं। जैसे जैसे हम अपनी जगह पाते हैं, अपने वरदान इस्तेमाल करते हैं, और एक दूसरे की सेवकाई को स्वीकार करते हैं, तो हम "एक सिद्ध मनुष्य" बनते जाते हैं और "मसीह के पूरे डील-डौल तक" बढ़ते जाते हैं। (इफि. 4:13)

1. अपने वरदान की ओर असली दृष्टिकोण रखो - हमें अपने वरदानों और योग्यताओं का एक यथार्थवादी मूल्यांकन होना चाहिए। रोमियों 12:3 हमें सिखाती है कि, "जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।"
2. आपके वरदान का परिमाण बढ़ सकता है - आपके वरदान का वर्तमान परिमाण समय के साथ उत्तमता, विस्तार और प्रभावकारिता में बढ़ सकता है। परमेश्वर विश्वासयोग्यता और परिश्रम को इनाम देता है। मुहरों के दृष्टान्त में, जिन्होंने अपनी अपनी मुहर को लगाया था, उन्होंने अपने उपक्रमण के समानुपात से ज्यादा पाया, हालाँकि शुरू में हर एक को एक एक मुहर ही दी गई थी (लूका 19:1-26)।
3. अपने परिमाण से बाहर कदम मत रखो - पौलुस ने कहा, "हम तो सीमा से बाहर घमण्ड कदापि न करेंगे, परन्तु उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिए ठहरा दी है" (2 कुरिं. 10:13)। हमारी भागीदारी और सेवा हमेशा परमेश्वर के अनुग्रह और बुलावे के अनुसार होनी चाहिए। सेवकाई के उन क्षेत्रों में कदम मत रखो जहाँ वरदान की या तो कमी है, अपर्याप्त है या है ही नहीं।
4. अपने आपका आपस में नाप तौल न करें - जो खुद को या अपने करीबी साथियों को अपने नाप तौल के स्तर के रूप में इस्तेमाल करते हैं, बुद्धिमान नहीं हैं (2 कुरिं. 10:12)। अपने वरदानों और योग्यताओं का एक ज्यादा उचित अनुमान व्यापक मसीह की देह की दूसरी सेवकाइयों और कार्यों के साथ एक विस्तृत तुलना से लगाया जा सकता है। दूसरी सेवकाइयों के साथ एक लाभप्रद सम्पर्क, पारस्परिक क्रिया और खुलाव हमें सन्तुलन और स्पष्टता देने में सहायक होगा। यह सेवकाई में हमारी प्रगति और विकास में हमें सकारात्मक रूप से उकसाती है और शुद्धता प्रेरित करती है।

हमारे वरदान सेवा कार्य के लिए हैं

"क्योंकि बड़ा कौन है, वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है ? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है ? परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ" (लूका 22:27)।

यीशु का क्रूस पर जाने का समय निकट आ रहा था। उसने तीन वर्षों के दौरान अपने चेलों के सामने परमेश्वर के राज्य की सामर्थ और चरित्र का प्रदर्शन किया था। फिर भी अन्तिम भोज के समय उनमें झगड़ा होने लगा कि उसके जाने के बाद उनमें से सबसे बड़ा कौन होगा। ऊपर दिए शब्द जिन्हें यीशु ने कहा था, दोनों फटकार और शिक्षा के रूप में थे। यह अत्यावश्यक था कि चेले पहचान जाते कि जो यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं, ऐसा सेवा के भाव से करते हैं। यीशु अपनी देह में एक सेवक के रूप में है। हमारे वरदान और बुलावा दूसरों की सेवा और मसीह की देह की उन्नति के लिए हैं। स्वाभाविक तौर पर हम लाभदायकता और पूर्ति महसूस करते हैं जब कभी भी हमारे वरदान दूसरों के जीवन में एक सहयोग प्रदान करते हैं। बाइबल हमें हमारी योग्यता के स्रोत की याद दिलाती है: "तेरे पास क्या है जो तू ने नहीं पाया" (1 कुरिं. 4:7)। हमें सेवक बन जाना चाहिए और जो कुछ भी हम करें परमेश्वर की महिमा के लिए करें।

वरदानों का परिचय

मसीह की देह के सही विकास और अभिव्यक्ति के लिए बहुत से कार्य और सेवकाइयाँ जरूरी हैं। नए नियम में ऐसी इक्कीस की एक सूची दी गई है। हम हर एक का वर्णन संक्षेप में करेंगे क्योंकि देह की अधिकाँश सेवकाई का वे आधार प्रदान करते हैं। दूसरी अत्यावश्यक सेवकाइयाँ जिनका यहाँ वर्णन नहीं है, वे गीत गाना, स्तुति-आराधना की अगुआई, मध्यस्थता की प्रार्थना, संगीत वाद्य बजाना, वगैरा हैं।

जिन वरदानों की हम विशेषताएँ बताएँगे, वे नीचे दी गई तीन श्रेणियों का भाग हैं:

1. **कार्य के वरदान (रोमियों** 12:6–8) – ये सात वरदान देह की अधिकाँश सेवकाइयों के लिए प्रेरणा मुहैया करते हैं और कार्य पूरा करते हैं।
2. **आत्मा के वरदान** (1 **कुरिं.** 12:8–10) – ये नौ वरदान पवित्र आत्मा के प्रकटीकरण हैं और मसीह की देह को एक अलौकिक आयाम देते हैं।
3. **पँच-गुणा सेवकाई (इफि.** 4:11) – ये पाँच वरदान पद हैं जो मसीह की देह को सज्जित करने और उन्नति करने के लिए दिए गए हैं।

कार्य के वरदान

1. **भविष्यद्वाणी का वरदान** – भविष्यवाणी के वरदान में पवित्र आत्मा के सीधे कार्य के अधीन बोला जाता है। यह मुख्य रूप से पवित्र आत्मा के अधीन "बोलना" है, प्रेरणा और उत्तेजक की एक बढ़ी हुई भावना से परमेश्वर का मन घोषित करना है। इसमें भविष्यवाणी करना भी शामिल है, जबकि यह भविष्यवाची तत्त्व भविष्यद्वक्ता के पद में पूरी तरह कार्य करता है। इस वरदान के बोलने के पहलू में "उन्नति और उपदेश और शान्ति" की बातें बोलना शामिल है। यह 1 कुरिन्थियों 12 की भविष्यवाणी के वरदान से जरा अलग है। 1 कुरिन्थियों 12 की भविष्यवाणी आत्मा का प्रकटीकरण है और जरूरी नहीं कि रोमियों 12 के वरदान की तरह एक संगत, स्थायी, व्यक्तिगत वरदान हो (उदाहरणः प्रेरितों 21:9 पढ़ो)।
2. **सेवा का वरदान** – सेवा के वरदान में एक वर्तमान जरूरत को पूरा करने के लिए उपयोगी, आवश्यक तरीकों से सेवा करने की प्रेरणा शामिल है। इस सेवकाई में काम कर रहे व्यक्ति अक्सर जिम्मेवार, इच्छुक सहायक होते हैं जो काम पूरा करने से पूर्ति की एक बड़ी भावना अनुभव करते हैं। वे उनके क्रियाशील स्वैच्छिक परिश्रम के कारण अगुआई के लिए एक खास आशीष हो सकते हैं।

   यह वरदान 1 कुरिन्थियों 12:28 में पाए गए उपकार करनेवालों के लिए प्रेरक हैं, और जो डीकन के रूप में कार्य करते हैं उनमें स्थित होना चाहिए।
3. **सिखाने का वरदान** – सिखाने के वरदन में परमेश्वर के वचन में से सच्चाई को खोजने और दूसरों को व्याख्या करने की प्रेरणा और योग्यता शामिल है। कई लोग परमेश्वर के वचन को सिखा सकते हैं, लेकिन शिक्षा का वरदान एक व्यक्ति की सच्चाई के लिए प्रबल प्रवृत्ति और इसे व्यक्त करने की उसकी प्रेरणा और योग्यता से प्रकट होता है। यह वरदान पाए व्यक्ति संडे स्कूल कक्षाओं, घर की सभाओं, वगैरा में बहुत उपयोगी साबित हो सकते हैं। वरदान के दरजे के अनुसार, और उचित प्रशिक्षण और निरीक्षण के साथ, ये व्यक्ति एक शिक्षक के पँच-गुणा पद में विकसित हो सकते हैं (उदाहरणः प्रेरितों 18:24-25 पढ़ें)।
4. **उपदेश देने का वरदान** – नए नियम में, उपदेश देने का अर्थ एक अपील, एक अनुनय-विनय, प्रोत्साहन, सान्त्वना और शान्ति है। उपदेश देना किसी को कोई तरीके से कार्य करने के लिए समझाना या आग्रह करना है। हम सबको "हर दिन एक दूसरे को समझाते" रहने के लिए कहा गया है (इब्रानियों 3:13)। फिर भी, उपदेश देने के वरदान वाला व्यक्ति एक सम्बद्ध व्यक्ति होगा जो जरूरत के क्षेत्र को देख लेता है और जिसके पास दूसरों को उचित सलाह, प्रोत्साहन, चेतावनी या दिशा बताने की योग्यता है। अगर वरदान है तो दूसरों की इस प्रकार सहायता करने का बोझ स्थिर होगा और फल लाएगा (उदाहरणः प्रेरितों 2:40)।
5. **देने का वरदान** – देने के वरदान वाला ऐसा व्यक्ति है जिसे परमेश्वर के राज्य की प्रगति के लिए आर्थिक तौर पर देने में आनन्द आता है। इस व्यक्ति के पास अक्सर पैसा कमाने की योग्यता है, और बदले में उदारता से देता है। देने का वरदान इसकी स्थिरता के कारण और वरदान वाले पर परमेश्वर की बढ़ती और आशीष के कारण देखा जाता है (उदाहरणः प्रेरितों 4:36-37)।
6. **अगुआई का वरदान** – इस वरदान वाले व्यक्ति के पास दूसरों की परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने में आगुआई करने की योग्यता और प्रेरणा है। ये व्यक्ति परमेश्वर के राज्य का दर्शन स्पष्ट रूप से पकड़ लेते हैं और दूसरों को सेवकाई के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों को स्थापित करने की प्रेरणा देने और मार्गदर्शन करने दोनों की क्षमता रखते हैं। अगुआई का वरदान 1 कुरिन्थियों 12:28 में दिए "प्रबंध करने वाले" के कार्य के लिए जरूरी है। यह एक स्थानीय कलीसिया के प्राचीनों में होना जरूरी है। पास्टर की सेवकाई के लिए यह जरूरी है, और एक प्रेरित के पद के लिए अत्यावश्यक है (उदाहरणः प्रेरितों 2:14 पढ़ो)।
7. **दया का वरदान** – दया के वरदान वाले स्वाभाविक तौर पर जो विपत्ति भोग रहे या किसी प्रकार की हानि अनुभव कर रहे हैं, उनके साथ खुद को अभिन्न समझते और सहानुभूति महसूस करते हैं। उनकी हमदर्दी उनको जरूरतमंदों के पास भलाई के कार्यों, मदद और शान्ति के लिए ले जाती है। परमेश्वर सारी दया का स्रोत है (भजन 103:8), और वह चाहता है कि उसके सब बच्चे दयालु हों (लूका 6:36)। फिर भी, ये गुण खासकर दया के वरदान वालों में प्रकट होते हैं। (उदाहरणः प्रेरितों 9:36 पढ़ो)।

आत्मा के वरदान

1. **बुद्धि की बातें** – इसमें जीवन परिस्थितियों को परमेश्वर के अनुसार देखने, समझने और प्रतिक्रिया दिखाने के लिए ईश्वरीय प्रेरणा की उत्तेजना, स्पष्टीकरण या प्रदान शामिल है। यह पवित्र आत्मा द्वारा एक खास प्रदान है, जो एक निश्चित हालात या परिस्थिति में आगे बढ़ने के लिए परमेश्वर की अन्तर्दृष्टि और समझ देता है। (उदाहरणः मत्ती 22:17-22 पढ़ो)।

2. **ज्ञान की बातें** – यह परमेश्वर के ज्ञान की कुछ बातों का मनुष्यों को अलौकिक प्रकटीकरण है। यह तथ्यों, जानकारी और ब्योरों का प्रदान है जिसे मनुष्य के लिए जानना नामुमकिन है। ज्ञान की बातों का प्रकटीकरण परमेश्वर के सर्वज्ञानी मन के एक भाग का, पानेवाले के लिए एक सीधा प्रदान या सचेतन है। (उदाहरणः यूहन्ना 4:18 पढ़ो)।
3. **विश्वास** – यह वरदान सामान्य विश्वास की सम्भावना से परे एक परिस्थिति में नामुमकिन के लिए परमेश्वर पर विश्वास करने की उसके द्वारा दी गई योग्यता है। यह खास कामों को करने, सम्भावित अत्यधिक परिस्थितियों का सामना करने, या खतरनाक हालातों में दृढ़ रहने के लिए विश्वास है। (उदाहरणः प्रेरितों 27:21-25 पढ़ो)।
4. **चंगा करने का वरदान** - चंगा करने का वरदान जो बीमार या अशक्त हैं उनमें शारीरिक चंगाई लाने की अलौकिक योग्यता है। इसमें आत्मिक, भावनात्मिक, मानसिक या मनोवैज्ञानिक चंगाई भी शामिल है। (उदाहरणः प्रेरितों 3:6-7 पढ़ो)।
5. **सामर्थ्य के काम करने की शक्ति** - एक चमत्कार एक तथ्य है जो कि अलौकिक है - एक कार्य जो प्रकृति के भौतिक नियमों के विपरीत है। चमत्कार तर्क को चुनौती देते हैं और भौतिक नियमों के परे होते हैं। इस वरदान में मनुष्यों के द्वारा नामुमकिन को करने के लिए परमेश्वर को कार्य करने की जरूरत होती है। (उदाहरणः प्रेरितों 13:11 पढ़ो)।
6. **भविष्यद्वाणी** – भविष्यवाणी पवित्र आत्मा के सीधे अभिषेक से बोलना है। यह मुख्य रूप से 'बोलना' है और प्रेरणा और उत्तेजना की एक बढ़ी हुई भावना से परमेश्वर का मन घोषित करना है। इसमें भविष्यवाणी करना भी शामिल हो सकता है, जबकि यह भविष्यवाची तत्त्व भविष्यद्वक्ता के पद में पूरी तरह कार्य करता है। हर सन्त को इस प्रकटीकरण में प्रोत्साहन दिया जाता है (1कुरिं. 14:1 - उदाहरणः प्रेरितों 21:9 पढ़ो)।
7. **आत्माओं की परख** – इस वरदान में किसी व्यक्ति या दल के एक शब्द, कारण, रवैया, मन-स्थिति या कार्य के पीछे आत्मिक स्रोत का पता लगाने की ईश्वरीय योग्यता शामिल है। आत्मिक स्रोत जिसका पता लगाया जा रहा है स्वर्गीय, मानवी या शैतानी हो सकता है। यह वरदान सब आत्मा से भरे विश्वासियों के जीवन में विभिन्न समयों पर प्रकट होता है (उदाहरणः प्रेरितों 21:9 पढ़ो)।
8. **अनेक प्रकार की भाषा** - अनेक प्रकार की भाषा बोलने का वरदान एक ऐसी भाषा में बोलने की अलौकिक भाषाई योग्यता है जिससे आप अपरिचित हैं। इसमें मनुष्यों की भाषाएँ या स्वर्गदूतों की भाषाएं हो सकती हैं। यह वरदान सब विश्वासियों के लिए है (1 कुरिं. 14:5), और हमारी आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है (1 कुरिं. 14:4 - उदाहरणः प्रेरितों 10:45-46 पढ़ो)।
9. **भाषाओं का अर्थ बताना** – भाषाओं का अर्थ बताना एक अन्य भाषा का उपस्थित लोगों की समझ में आने वाली भाषा में अर्थ बताने की एक अलौकिक, स्वतःप्रवर्तित योग्यता है। इस वरदान का भाषाओं के स्वाभाविक ज्ञान से कोई सम्बंध नहीं है, बल्कि सीधे परमेश्वर से आता है (उदाहरणः 1 कुरिं. 14:13 पढ़ो)।

पँच-गुणा सेवकाई

"उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया" (इफिसियों 4:11)।

प्रेरित – प्रेरित की सेवकाई कलीसिया के इतिहास भर से चली आ रही है। इसका पहले प्रेरितों से अन्तर पहचानना जरूरी है क्योंकि उन्हें कलीसिया की बुनियाद रखने और नए नियम के सिद्धान्त और शिक्षाओं को स्थापित करने के लिए अनोखे तौर पर इस्तेमाल किया गया था। प्रेरित "बुद्धिमान राजमिस्त्री" थे (1 कुरिं. 3:10), जो एक स्थानीय कलीसिया में एक स्वस्थ आत्मिक और सिद्धान्त-सम्बंधी बुनियाद रख सकते थे। वे अक्सर कुल मिलाकर कलीसिया के लिए दर्शन रखनेवाले पथप्रदर्शक हैं। एक विश्वव्यापी दर्शन रखनेवाले कलीसिया आन्दोलन अक्सर उनकी सेवकाई से निकलते हैं।
प्रेरित आत्मिक, आत्मत्यागी पुरुष होने चाहिए जिनकी सेवकाइयों में फल और चिन्ह दोनों प्रमाण होते हैं (2 कुरिं. 12:12। उनके लिए दूसरी पँच-गुणा सेवकाइयों के साथ काम करना जरूरी है क्योंकि उनका एक प्रशासकीय और समन्वयी पद है।

भविष्यद्वक्ता – नए नियम के भविष्यद्वक्ता में "बोलने" के आयाम के साथ-साथ भविष्यवाणी का वरदान होना चाहिए। वे परमेश्वर के मन और इच्छा को एक भविष्यवाची, निदेशक और अक्सर दोषनिवारक संदेश में बोलते हैं। जो इस पद के लिए पहचाने जाते हैं परिपक्व, मँजे हुए पुरुष, परमेश्वर के वचन में मजबूत और उत्तम चरित्र के होने चाहिए।
नए नियम के भविष्यद्वक्ता पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं से भिन्न हैं क्योंकि उनकी भविष्यवाणियाँ समाप्त प्रकटीकरण पर आधारित है। इसके अलावा, उनकी भविष्यवाणियाँ परखी और उनका फैसला किया जाएगा (1 कुरिं. 14:29)।

सुसमाचार सुनाने वाला – सुसमाचार सुनाने वाले की सेवकाई यीशु मसीह का सुसमाचार प्रचार करना है। सुसमाचार सुनानेवालों में खोए हुओं के लिए एक खास बोझ होता है। उनकी सेवकाई में लोगों का उद्धार होने के अलावा, चिन्ह और चमत्कार भी हो सकते हैं (प्रेरितों 8:6-7)। सुसमाचार सुनानेवाले एक स्थानीय कलीसिया के वचनबद्ध सदस्य होने चाहिए। कलीसिया के लिए उनकी सेवकाई में सन्तों को खोए हुओं के बोझ के लिए प्रेरणा देने और उन्हें सुसमाचार प्रचार में सज्जित करना शामिल है।

पास्टर – "पास्टर" नाम का असली अर्थ "चरवाहा" होता है। पास्टर को परमेश्वर के झुंड की देखभाल करने के लिए बुलाया गया है। इस बुलावे की प्रकृति की आवश्यकता है कि सेवकाई का एक विस्तृत क्षेत्र हो। वह झुंड को परमेश्वर के वचन से सही शिक्षा खिलाने योग्य होना चाहिए। उसका चरित्र निर्दोष होना चाहिए। झुंड की आवश्यकताओं के लिए जरूरी है कि वह उसके सहयोग के लिए दूसरे चरवाहों को भी तैयार करे।

शिक्षक – शिक्षक की सेवकाई कलीसिया की वृद्धि और स्वास्थ्य के लिए अत्यावश्यक है। सन्तों को ठोस सिद्धान्त में स्थापित करने और बाइबल में से कीमती सच्चाइयों को खोजने में उनको प्रेरणा देने के लिए यह सेवकाई आधार है।
पँच-गुणा सेवकाई शिक्षक की शिक्षा का वरदान एक अच्छी तरह विकसित और अभिषिक्त होना चाहिए। उसका जीवन भी उदाहरण द्वारा एक शिक्षा होनी चाहिए।

अपनी जगह का पता लगाना

अनेक मसीहियों को उनकी "सेवकाई" का पता लगाने में बड़ा संघर्ष होता है। वे बेचैन और उलझन भरा जीवन जीते हैं और इन्तज़ार करते हैं कि परमेश्वर उनसे कहेगा, "मार्ग यही है, इसी पर चलो" (यशायाह 30:21)। याद रखो, परमेश्वर ने आपको वह बनने के लिए नहीं बुलाया है जो आप नहीं हैं। वह चाहता है कि जो हम हैं उसमें हम सेवा करने लगें। परमेश्वर ने आपको जिस खास सेवकाई के लिए बुलाया है, उसके लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त भी बनाया है। देह में अपनी जगह का पता लगाने के लिए, नीचे कुछ अतिरिक्त सुझाव दिए गए हैं:

1. खुद को परमेश्वर के बुलावे के सामने समर्पित करो - यीशु मसीह देह का सर है। जो कोई भी जगह या कार्य हमारे लिए उसके पास है, उसे स्वीकार करने के लिए हम तैयार रहें। हर सेवकाई और सेवा का क्षेत्र महत्त्वपूर्ण है। जब आप उस जगह को स्वीकार करोगे जो आपके लिए परमेश्वर के पास है तो आप व्यक्तिगत सन्तोष पाओगे। याद रखो, जिसके लिए परमेश्वर आपको बुलाता है, उसके लिए वह आपको सज्जित करता है! यह भी जरूरी है कि अपनी जगह का दूसरों के साथ नकारात्मक या प्रतियोगी तौर पर तुलना न करें (2 कुरिं. 10:12)। ईर्ष्या और लालच हमारे आत्मिक जीवन को नष्ट कर देते हैं।

2. परमेश्वर को समय दो - कई मसीही उनकी सेवा की जगह की उम्मीद में परमेश्वर से आगे चले जाते हैं। हमारे मसीही विकास के शुरू के भाग में, प्रभु चाहता है कि हम उसे और उसके वचन को जानना सीखें। वह तो यह चाहेगा कि हम मार्था की तरह बहुत कुछ करने के लिए इधर-उधर भागने के बजाय मरियम की तरह उसके वचनों को सुनने के लिए उसके चरणों के पास बैठें (लूका 10:40-42)।

3. शामिल हो जाओ - एक बार जब आपके जीनम में बुनियाद रख दी गई है, तब हमें शामिल हो जाना चाहिए। सेवा के अनेक क्षेत्र हैं जिनके लिए सब सन्त बुलाए गए हैं - जैसे कि प्रार्थना, सुसमाचार सुनाना, कलीसिया के कार्य, दूसरे सेवा-कार्य, वगैरा। हमें सामान्य तौर पर शामिल होने के लिए बुलाया गया है। अक्सर इन कार्यक्रमों में हमारा अनुभव हमारी रुचियों और बुलावे को प्रकट करने में मदद करेगा।

4. अपनी योग्यताओं और इच्छाओं पर विचार करो - हमें अपनी निपुणताओं और योग्यताओं का वास्तविक रूप से मूल्याँकन करना चाहिए, यह पता लगाने के लिए कि हम किस चीज के योग्य हैं। एक व्यक्ति जो तान-बधिर है निश्चय ही गीत गाने के लिए नहीं बुलाया गया है। परमेश्वर का अनुग्रह हमारी स्वाभाविक योग्यताओं को शक्ति प्रदान करता है। बुलावे के किसी क्षेत्र में मजबूत और स्थिर रुचि या इच्छा भी एक बुलावे का संकेत देता है।

5. दूसरों का मूल्याँकन – दूसरों की टिप्पणियाँ और विचार हमें अपनी योग्यताओं और प्रभाव के क्षेत्रों में अर्न्तदृष्टि दे सकते हैं। अगुए इस चीज में एक खास मदद हो सकते हैं क्योंकि परमेश्वर अक्सर उन्हें कलीसिया के सदस्यों के वरदानों और बुलावे में एक संवेदनशीलता देता है। व्यक्तिगत भविष्यवाणी भी कभी-कभार बुलावे के एक क्षेत्र को प्रमाणित कर सकती है।

6. और अधिक प्रशिक्षण और तैयारी - एक बार जब हम कार्य और बुलावे की अपनी जगह का पता लगा लें, तो हमें खुद को और अधिक तैयार करने के लिए परिश्रम करना चाहिए। हमें उन अनुशासनों को इस्तेमाल करना चाहिए जो हमारे सेवकाई के क्षेत्र में हमें प्रभावशाली बनने की हमारी योग्यता को बढ़ाएँगे। हमें उनकी सलाह लेनी चाहिए जिनकी हमारी कलीसिया में एक स्थापित "समान सेवकाई" है।

7. बलिदान करने के लिए इच्छुक रहो - परमेश्वर के राज्य में हर बुलावे के साथ कीमत शामिल होती है। प्रभु हमारी खुद को बलिदानपूर्वक लगाने की इच्छा से हमारी वचनबद्धता और अभिप्रायों को जाँचता है। परिक्षाओं और बलिदानों के द्वारा, हमारा चरित्र मजबूत होता है और परमेश्वर हमें और ज्यादा अभिषेक और सफलता की आशीष देता है।

अन्त में

परमेश्वर का आत्मा आजकल मसीह की देह का एक नया और गहरा प्रकटीकरण लाने के लिए कलीसिया में कार्य कर रहा है। लोग बड़ी उत्सुकता से सेवा और कार्य की उनकी जगह को खोज रहे हैं। इस कारण से कलीसिया वृद्धि और फलवन्तता के दौर से गुज़र रही है।

अनुग्रह के वरदान – वे क्या हैं?

परमेश्वर का अनुग्रह

सामान्य रूप से, यह पिता का हमारे जीवनों में उसकी दया और अनर्जित अनुग्रह का प्रदान है। हम में से एक भी परमेश्वर की भलाई का पात्र नहीं था लेकिन उसने इसे दिखाया है और यीशु में हम से की है। इस लिहाज से हम सब परमेश्वर के अनुग्रह के पात्र हैं और इसी अनुग्रह में हम खड़े होते हैं। अनुग्रह के बारे में, लोगों के जीवनों पर उनके बुलावे और प्रभु द्वारा लोगों को दिए अधिकार के सम्बंध में भी, बात की जा सकती है। यह अनुग्रह हमारे जीवन और परमेश्वर की सेवा के लिए बुनियाद है (रोमियों 12:3)।

हमें अनुग्रह द्वारा जो परमेश्वर ने हम पर किया है, नियन्त्रित और संचालित होना है। हमें एक खास बुलावा या वरदान मिला है जो स्वर्गीय पिता के फैसले से हमारा है, और यही परमेश्वर का अनुग्रह है जो खासकर हमारे लिए है। हमारा बुलावा ऐसा कुछ है जिसका हमें सम्मान करना और कीमती जानना चाहिए, और हमें इसे सबसे प्रभावी तरीके से करने के लिए ध्यान देना चाहिए। हमें परमेश्वर के इस वरदान को निरन्तर चमकाते रहने की जरूरत है, और दूसरों के भले के लिए इसे इसकी सबसे ज्यादा सम्भावना में इस्तेमाल करना चाहिए (2 तीमुथियुस 1:6)। परमेश्वर का यह अनुग्रह (बुलावा या वरदान) हमारे सारे जीवन और काम की प्रेरणा शक्ति होनी चाहिए (1 कुरिं. 15:10)। अनुग्रह आत्मा के किसी भी वरदान से ज्यादा है, यह परमेश्वर के हाथ जैसा है जो किसी खास कार्य या सेवकाई के क्षेत्र के लिए अलग करने के लिए किसी व्यक्ति के जीवन पर आता है। बेशक वरदान परमेश्वर के अनुग्रह के साथ आता है, लेकिन यह अनुग्रह उन लोगों के जीवन में जो इसके बुलावे को जानते हैं एक गहरी और शक्तिशाली वास्तविकता है।

अनुग्रह के वरदान

नए नियम में "वरदान" शब्द "अनुग्रह" शब्द से करीब से सम्बंधित है। असलीयत में, दोनों एक ही शब्द से निकलते हैं। 'वरदान' के लिए 'करिश्मा (charisma)' शब्द है और 'अनुग्रह' के लिए 'करिस (charis)' शब्द है। असलीयित में, 'charisma' के अन्त के अक्षरों का सही अनुवाद 'की चीज' हो सकता है। यानि, जिसे हम आत्मिक वरदान कहते हैं, 'अनुग्रह की चीज' है। दूसरे शब्दों में, यह परमेश्वर के अनुग्रह की अभिव्यक्ति या परिणाम है जिसे हमारे अनुभव में आत्मा के द्वारा दिया जाता है, इसलिए हम इसे आत्मा का वरदान कहते हैं (1 पतरस 4:10)।

देह के वरदान

पवित्र आत्मा द्वारा दिए अनुग्रह के वरदान मसीह की देह (कलीसिया) की ओर और के लिए हैं और इसलिए देह के वरदान कहे जा सकते हैं। ये खास व्यक्तियों के जीवनों द्वारा व्यक्त होते हैं, यानि, वे लोग सम्बंधित वरदान हैं (इब्रानियों 2:3-4)। हर वरदान देह के दूसरे सदस्यों में कार्य कर रहे वरदानों से अन्तःसम्बंधित होते हैं। वे सामान्य रूप से देह के सदस्यों को उपलब्ध होते हैं और देह की उन्नति और एक मन होने में योगदान देते हैं। ऐसा लगेगा कि देह के वरदान उनके लिए हैं जो वरदान के लिए प्रभु को खोजते हैं और, सामान्य रूप से देह के अन्दर उस समय की जरूरत के अनुसार हैं। "किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है" (1 कुरिन्थियों 12:7)।

पवित्र आत्मा के वरदान

हमें पवित्र आत्मा के वरदान हमारे अपने भोग या स्वयं-प्रदर्शन के लिए नहीं दिए गए हैं, लेकिन कि परमेश्वर हमें हमारे आस-पास के जरूरतमंद पुरुषों और स्त्रियों के जीवनों में कार्य करने के लिए योग्यता दे। पवित्र आत्मा के वरदान परमेश्वर के सामर्थ का कार्यों में दिखाई देना हैं, और जैसे हम खुद को ऐसे हालातों में पाएँगे जहाँ उन कार्यों की जरूरत है तो वे हमारे जीवनों में कार्य करने लगेंगे। जब हम सेवा करने जाते हैं तो हम ऐसा अपनी शक्ति में नहीं करते हैं, बल्कि परमेश्वर पवित्र आत्मा में अपनी सामर्थ के प्रदर्शन के द्वारा हालात में सीधे शामिल हो जाएगा। यह हमें हमारी अपनी कमज़ोरियों और सीमाओं के समतल स्तरों के परे ऊपर उठा लेगा, और हमें परमेश्वर के हमारे काम में क्षमताओं और अन्तर्दृष्टि के एक नए आयाम में छोड़ेगा। असल में, अन्त में यही परमेश्वर के हमारे काम को बनाएगा और तय करेगा, क्योंकि धीरे धीरे यह प्रकट होता जाएगा कि हम पवित्र आत्मा के वरदानों में कार्य कर रहे हैं, और कि कौन से वरदान दूसरों से ज्यादा हमारे द्वारा अभिव्यक्ति पाते हैं। परमेश्वर के लिए हमारे काम का तरीका और परिश्रम, पवित्र आत्मा के वरदान हमारे द्वारा कैसे कार्य करते हैं, से आकार पाएगा। फिर भी, हमें याद रखना है कि कोई भी मसीही एक हालात में उपयुक्त वरदान माँग सकता है, चाहे यह कोई ऐसा क्षेत्र है जिसमें हम अक्सर काम नहीं करते हैं।

पिता की मनसा उद्धार और चंगाई के लिए उसकी सामर्थ पुरुषों और स्त्रियों के जीवनों में लाना है, और अगर हम एक शुद्ध मन और सही कारणों से माँगेंगे तो वह उसे करने की क्षमता हम देने से इन्कार नहीं करेगा। आत्मा के वरदानों के द्वारा ही हम उसकी इच्छा करने के लिए सज्जित किए जाते हैं। वरदानों के बिना हम अपने स्वाभाविक क्षमताओं और ताकतों के स्तर पर ही काम कर रहे हैं।

त्रित्ववादी वरदान

पौलुस हमें 1 कुरिन्थियों 12 में पवित्र आत्मा के वरदानों के बारे में सिखाता है। इससे पहले वह वरदानों के बारे में खास तौर बात करे, वह इस क्षेत्र में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बारे में एक जबरदस्त सच्चाई प्रकट करता है। असल में, आत्मा के वरदानों के बारे में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के वरदानों के रूप में बात न करना उचित होगा। आय. 4-6 में पौलुस तीन भिन्न वक्तव्यों को इस्तेमाल करता है जो एक दूसरे पर बनते हैं:

1. **"वरदान तो कई प्रकार के हैं, लेकिन आत्मा एक ही है"**
   यह हमारे अनुभव में इन वरदानों के स्रोत के बारे में बताता है। एक सीधे भाव में पवित्र आत्मा वरदानों का लानेवाला है।
2. **"सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है"**
   यह बताता है कि इन आत्मिक वरदानों के कार्य से, कौन सेवा पा रहा है, और कौन तय करता है कि किस दिशा में ये वरदान कार्य करेंगे, अथात् प्रभु यीशु मसीह।
3. **प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है"**
   यहाँ इस्तेमाल किया गया "कार्य" शब्द यूनानी भाषा में 'energemata' है। इसमें शक्ति और सामर्थ का विचार शामिल है जो बिना लक्ष्य काम नहीं करता है, लेकिन ऐसी शक्ति जो एक उद्देश्य की ओर कार्य करती है। यह वक्तव्य वह उद्देश्य दिखाता है जिसके लिए ये वरदान काम करते हैं, अर्थात्, हर परिस्थिति में पिता की इच्छा पूरी करना।

इसलिए, यह ऐसा नहीं है कि हम आत्मा के वरदान इस्तेमाल करते हैं; बल्कि हम त्रिएक परमेश्वर के सामर्थ और कार्यों में व्यस्त हैं।

पवित्र आत्मा के वरदान क्या हैं?

1 कुरिन्थियों 12:8-10 में नौ के नाम दिए गए हैं।

1. **बुद्धि की बातें**
   परिभाषाः परमेश्वर की सच्चाई को खोजने और जीवन में लगाने की योग्यता; ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा, एक खास परिस्थिति को सम्भालने में मदद के रूप में परमेश्वर के विचार और योजनाएं घोषित करना।
   उदाहरणः सुलेमान (1 राजा 3:24-28); यीशु (यूहन्ना 8:4-7; लूका 20:20-26)
   सेवकाई में दूसरे लोगों की ओर हमारी पहुँच का यही एक आधार है। परमेश्वर की बुद्धि के वरदान के बिना हम खुद को परिस्थितियों में बड़ी भूल करते हुए पाएँगे, गलत निर्णय लेंगे, जल्दबाजी और असंगत में काम करेंगे, और शायद गलत-फहमी और दर्द की पगडण्डी छोड़ते जाएँगे। परमेश्वर की बुद्धि, परमेश्वर जैसे चीजों को देखता है वैसे उन्हें देखने की और ऐसे तरीके से मामले की तह तक पहुँचने की, कि हमें पता चले कि क्या सही है, और एक खास संदर्भ के अन्तर्गत क्या करना है, योग्यता है। याद रहे, बुद्धि का वचन शायद ऐसा शब्द न हो जो दूसरे को दिया जाए बल्कि सेवा कर रहा व्यक्ति इसे प्रभु से सीधे अपनी आत्मा में पाए, जो उस घड़ी के लिए अन्तदृष्टि और समझ जरूरी है उसे लाएगा।

2. **ज्ञान की बातें**
   परिभाषाः पवित्र आत्मा के प्रभाव से सच्चाई जानने की योग्यता; ईश्वरीय प्रकाशन से। एक व्यक्ति या परिस्थिति के बारे में कुछ तथ्य जानना।
   उदाहरणः यूसुफ (उत्पत्ति 41:25-32); एलीशा (2 राजा 6:8-12); यीशु (यूहन्ना 4:17-18; मत्ती 21:2-3)
   ज्ञान समझ का वरदान भी है, लेकिन ज्ञान का वचन ज्यादातर सम्बंधित व्यक्ति को एक सीधे तरीके से दिया जाता है। इसमें अक्सर ऐसे तत्त्व होंगे जो आप दोनों के लिए कुछ सच्चाइयाँ प्रकट करेंगे और ज्यादा गहरे क्षेत्रों को छूने की योग्यता देंगे जो पहले पवित्र आत्मा के लिए प्रभावनीय नहीं थे।

बुद्धि और ज्ञान के वरदान अक्सर एक साथ काम करते हैं क्योंकि दूसरे को कैसे सम्भालना और उपयोग में लाना है, पहले को पता लगाना होता है।

3. **विश्वास**

परिभाषाः संभावित से परे परमेश्वर पर भरोसा करने और दूसरों के दर्शन को उठाने की योग्यता; परमेश्वर पर भरोसा करने और आश्वासन पाने की एक ईश्वरीय समर्थ कि वह एक खास परिस्थिति में उसकी सामर्थ को प्रमाणित करनेवाला है।

उदाहरणः यहोशू (यहोशू 10:12-14); एलीशा (1 राजा 18:17-40); यीशु (मरकुस 4:37-40; यूहन्ना 11:41-44)

विश्वास वो वरदान है जो सेवकाई की परिस्थियों में आश्वासन और भरोसा लाता है। विश्वास के वरदान के द्वारा, जो परमेश्वर करना चाहता है का हम निश्चय पाते हैं और हमें अपेक्षा के साथ विश्वास करने की समर्थ दी जाती है कि यह होगा।

4. **चंगाई का वरदान**

परिभाषाः एक व्यक्ति को आत्मिक, भावनात्मिक या शारीरिक तौर पर मसीह के जीवन को चंगाई में देने की योग्यता; चंगा करने के लिए परमेश्वर के सामर्थ को प्रदान करने की ईश्वरीय समर्थ।

उदाहरणः यीशु (मरकुस 1:29-31; मरकुस 3:1-5); फिलिप्पुस (प्रेरितों 8:6-7); पौलुस (प्रेरितों 14:9-10)

"वरदान" शब्द बहुवचन में है क्योंकि चंगाई के अनेक प्रकार के वरदान हैं जो अनेक विभिन्न बीमारियों और सदमों से सम्बंधित जिन्हें लोग झेलते हैं, दिए जाते हैं। एक व्यक्ति के पास एक खास प्रकार की बीमारियों, या खास भावना की जरूरतों से सम्बंधित चंगाई देने की क्षमता हो सकती है।

5. **सामर्थ्य के काम करने की शक्ति**

परिभाषाः प्रकृति के नियमों के विपरीत मानवीय क्षमता के परे सामर्थ से कार्य करने की योग्यता; अलौकिक कार्य करने की एक ईश्वरीय समर्थ।

उदाहरणः एलीशा (2 राजा 4:1-7); यीशु (यूहन्ना 2:1-11; लूका 9:16-17); स्तिफनुस (प्रेरितों 6:8)

एक चमत्कार आत्मिक चंगाई या प्रकृतिक नियमों की प्रक्रिया के बाहर कुछ है। यह एक घटना है जो परमेश्वर के सीधे हस्तक्षेप पर पूर्ण रूप से निर्भर करता है और जो परिणाम लाता है जो परमेश्वर का विशेष सामर्थ प्रकट करता है। उदाहरण के तौर पर, मरे व्यक्ति को जीवित करना, पानी को दाखरस में बदलना, शरीर के अंगों को बदलना या बढ़ाना, वगैरा।

6. **भविष्यद्वाणी** (1 कुरिन्थियों 14:1-6, 22-23, 39-40)

परिभाषाः परमेश्वर से एक खास संदेश देने की योग्यता जो बोलनेवाले और सुननेवाले दोनों की भाषा में है; परमेश्वर के हृदय से एक खास परिस्थिति में (कभी कभी भविष्य की घटनाओं से सम्बंधित) एक प्रकटित संदेश बोलना।

उदाहरणः यशायाह (मत्ती 13:14); यीशु (मत्ती 24:3-42; यूहन्ना 21:18; अगबुस (प्रेरितों 11:27-28)

भविष्यवाणी कलीसिया की उन्नति के लिए है। भविष्यवाणी कथन बहुत प्रत्यक्ष होता है और इसमें एक प्रतिक्रिया की जरूरत शामिल होती है। "जो भविष्यवाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है" (1 कुरिन्थियों 14:3)।

7. **आत्माओं की परख**

परिभाषाः सच्चाई की गलती से और अच्छाई की बुराई से पहचान करने की योग्यता, ईश्वरीय प्रकाशन से अन्तर्दृष्टि होना कि एक व्यक्ति या परिस्थिति में कौन सी आत्मा वर्तमान है।

उदाहरणः यूहन्ना बपतिस्मादाता (मत्ती 12:34); यीशु (लूका 13:11-16; यूहन्ना 8:44); पौलुस (प्रेरितों 13:6-12)

यह परख का वरदान है। हमें कहा गया है कि हम आत्माओं को परखें और देखें कि वे परमेश्वर से हैं कि नहीं (1 यूहन्ना 4:1)। आत्मिक परख के इस वरदान के द्वारा हम सही सही पता लगा सकते हैं कि किसी निश्चित परिस्थिति में हम किस प्रकार की आत्मा से निपट रहे हैं।

8. **अनेक प्रकार की भाषाएँ** (1 कुरिन्थियों 14:1-28)

परिभाषाः बोलनेवाले द्वारा मनुष्यों या स्वर्गदूतों की भाषा में, जो भाषा उसने पहले सीखी नहीं है, बोलने की योग्यता।

उदाहरणः प्रेरितों (प्रेरितों 2:4); कुरनेलियुस के घर में विश्वासी (प्रेरितों 10:46); पौलुस (1 कुरिन्थियों 14:18)

सेवकाई में अन्य भाषा का वरदान बहुत महत्त्वपूर्ण है। "जो अन्य भाषा में बात करता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी बातें कोई नहीं समझता, क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है। ... जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है" (1 कुरिन्थियों 2-4)।

अन्य भाषाओं के वरदान का व्यक्तिगत इस्तेमाल वो साधन हो सकता है जिसके द्वारा हम दूसरे वरदानों के लिए खुल सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, जैसे हम अपनी आत्माओं में अन्य भाषा में प्रार्थना करते हैं, तो हम परिस्थिति में परमेश्वर की इच्छा और उसके निर्देशन के प्रति बहुत संवेदनशील हो जाते हैं, कि सेवकाई में सही करना क्या है।

9. **भाषाओं का अर्थ** (1 कुरिन्थियों 14:13, 26-28)

परिभाषाः अन्य भाषा का अर्थ बताने की योग्यता, हालाँकि दुभाषिया ने भाषा सीखी नहीं है; अन्य भाषाओं का अर्थ एक समझनेवाली भाषा में समझने योग्य।

यह वरदान अक्सर एक सामूहिक वातावरण के लिए ज्यादा उचित है जहाँ अन्य भाषाओं के वरदान के इस्तेमाल किए जाने पर आत्मा अर्थ के द्वारा कार्य करता है। अर्थ में जो आता है वह भाषाओं के चल तुल्यांक होता है। यह अनुवाद नहीं है, बल्कि इसे एक प्रतिक्रिया कहा जा सकता है। आत्मा जीभ को इस तथ्य की ओर ध्यान खींचने के लिए इस्तेमाल करता है कि परमेश्वर बोलना चाहता है, और सम्भावना को बढ़ाता है। अर्थ बतानेवाला परमेश्वर से वचन देता है ताकि सब लोग जो कहा गया है उसे समझ सकें, जाँच करें और कर सकें। अन्य भाषाओं के अर्थ का वरदान एक व्यक्ति की प्रभु को अन्य भाषा की व्यक्तिगत भेंट का अर्थ बताने के लिए एक सामूहिक वातावरण में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

याद रहे कि आत्मा के हर वरदान को प्रभावशाली होने के लिए अक्सर दूसरे किसी वरदान के कार्य की जरूरत पड़ती है। उदाहरण के तौर पर, चंगाई के वरदान को प्रभावी तरीके से कार्य करने के लिए विश्वास और आत्माओं के परख के वरदानों की जरूरत पड़ सकती है; या विश्वास के वरदान को प्रभावी तौर पर कार्य करने के लिए बुद्धि और आत्माओं के परख के वरदानों की जरूरत पड़ सकती है। वरदान एक दूसरे पर निर्भर हैं, और जो कुछ भी परमेश्वर चाहता है हम परिस्थिति में करें, उसे हासिल करने के लिए पवित्र आत्मा किसी भी जरूरी वरदान में हमें सेवकाई में समर्थ देगा।

देह के लिए अनुग्रह के दूसरे वरदान

मसीह की देह के लिए दूसरे अनुग्रह के वरदान भी हैं। ये वरदान प्रभु की खास तरीकों से सेवा करने के लिए लोगों को दिए गए हैं। अनुग्रह के दूसरे वरदान ज्यादातर मसीह की स्थानीय देह (स्थानीय कलीसिया) के लिए हैं और उनका वर्णन रोमियों 12:4-8 में किया गया है।

1. **भविष्यद्वाणी**

परिभाषाः मसीह की देह के लिए एक नियमित आधार पर भविष्यवाणी लाने की योग्यता। लाई गई भविष्यवाणी का महत्त्व और बारम्बारता व्यक्ति के विश्वास के स्तर पर निर्भर करेगा।

2. **सेवा करना**

परिभाषाः किसी भी तरीके से सहायता या मदद देने की योग्यता जो दूसरों के लिए बल और प्रोत्साहन लाता है। उदाहरणः नीकुदेमुस (यूहन्ना 3:1-16); मरियम (यूहन्ना 12:1-11)।

3. **सिखाना**

परिभाषाः परमेश्वर के वचन का विश्लेषन करने और व्याख्या करने और इसे स्पष्ट रूप और तरीके से बताने की योग्यता। उदाहरणः अपुल्लोस (प्रेरितों 18:24-28); यीशु (मत्ती 5:1-11)।

4. **उपदेश देना**

परिभाषाः लोगों को कार्य के लिए, साधारणतः परमेश्वर के वचन के अधिकार को इस्तेमाल करते हुए प्रेरित करने की योग्यता। उदाहरणः पौलुस (प्रेरितों 20:1-2)।

5. **दूसरों की जरूरतों के लिए देना**

परिभाषाः परमेश्वर के उद्देश्य को फैलाने के लिए पैसा बनाने और बाँटने की योग्यता। इसे उदारता से किया जाना चाहिए। उदाहरणः मकिदुनिया की कलीसिया (2 कुरिन्थियों 8:1-5); बरनबास (प्रेरितों 4:36-37)।

6. **अगुआई (या संचालन या शासन)**

परिभाषाः दूसरों की अगुआई करने और कलीसिया के कार्यो का प्रबंध करने की योग्यता। इसे उत्साह के साथ किया जाना चाहिए। उदाहरणः ऐल्डर (1 तीमुथियुस 5:17); डीकन (1 तीमुथियुस 3:8-13)।

7. **दया करना**

परिभाषाः जिन्हें अधिकांश अक्सर अनदेखा करते हैं या जिनके लिए समय नहीं होता, उनके पास आने और सान्त्वना देने की योग्यता। इसे खुशी से किया जाना चाहिए। उदाहरणः यीशु (मत्ती 8:1-4; यूहन्ना 8:4-11)।

आत्मिक अधिकार और अधीनताः परिचय

यीशु मसीह प्रभु है और कलीसिया का सर है (इफिसियों 1:22-23)
परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार यीशु को दिया है (मत्ती 28:18) और क्रम से, यीशु अपने अधिकार को अपनी कलीसिया में आत्मिक तौर पर योग्य अगुओं को सौंपता है। कोई भी अधिकार जो इन अगुओं के पास है वह 'दिया गया' अधिकार है और इसलिए, उन्हें कलीसिया में सेवकों के रूप में काम करना चाहिए और झुंड पर अधिकार नहीं जताना चाहिए (1 पतरस 5:1-3)।

परमेश्वर हमें हमारे अगुओं की आज्ञा मानने और उनके अधीन होने को कहता है (इब्रानियों 13:17; 1 तीमुथियुस 5:17)
इसका अर्थ एक कठिन अधिनता नहीं है जहाँ हम सबकुछ जो हमारे अगुए कहते हैं मानते हैं क्योंकि हमारे पास कोई विकल्प नहीं है, बल्कि यह एक अधीनता है जो परमेश्वर के सामने अगुए के स्थान के सम्मान और स्वीकृति से पैदा होती है। अगुओं में कलीसिया के लिए जिसके लिए वे जिम्मेवार हैं एक असली प्रेम और परवाह होनी चाहिए। वे इस प्रकार अगुआई करें कि जो कलीसिया के लिए अति उत्तम है वही मुमकिन हो। कलीसिया के सदस्यों को अगुओं के मार्गदर्शन को सुनना और उस पर अमल करना चाहिए क्योंकि वे अपने अगुओं में परमेश्वर के वचन को सुनते, पहचानते और अधीन होते हैं।

अधीनता हृदय का एक रवैया है, न कि गुलामी की एक स्थिति है
अधीन होने का अर्थ खुद को स्वेच्छा से अपने अगुओं की देखभाल, सुरक्षा और मार्गदर्शन में रखना है। कलीसिया के सदस्यों को कुछ भी करने के लिए विवश नहीं किया जा सकता है। फिर भी, जब एक अगुए में सच्चा आत्मिक अधिकार पहचाना जाएगा, तो जो उस अधिकार के तले हैं वे खुशी से अधीन होंगे। यह अधीनता भी बड़ी आशीष लाता है क्योंकि जो अधिकार तले हैं वे बदले में अधिकार पाते हैं। (मत्ती 8:9).

आप क्या उम्मीद करते हैं आपके अगुए करें?
- लोग जो परमेश्वर के वचन द्वारा जीवित रहते और प्रचार करते/सिखाते हैं (एज्रा 7:10)। अन्त में, एक अगुए का अधिकार उनके जीवन और सेवकाई में परमेश्वर के वचन का अधिकार ही है (प्रेरितों 20:28)।
- लोग जिनके जीवन धर्मी, सफल और नकल करने योग्य दिखते हैं (1 तीमुथियुस 3:2-5)।
- विश्वास के लोग। इन लोगों के पास परमेश्वर में विश्वास है जो नकल करने योग्य है और जो कलीसिया को भरोसा करने और पीछे चलने में समर्थ करता है। एक व्यक्ति बिना किसी भेड़ के चरवाहा नहीं हो सकता है! (1 थिस्सलुनीकियों 1:6; फिलिप्पियों 3:17)।
- लोग जो जिनके लिए वे जिम्मेवार हैं उनकी रखवाली करते हैं और उनके कल्याण और प्रगति के लिए खुद को परमेश्वर के सामने उत्तरदायी समझते हैं (1 पतरस 5:2-3)।

यीशु कलीसिया से इसके अगुओं के सम्बंध में क्या उम्मीद करता है?
- उन्हें उनके अगुओं के द्वारा परमेश्वर का वचन सुनना और इसे गम्भीरता से और अपने लिए लेना चाहिए (रोमियों 10:15-17; 1 थिस्सलुनीकियों 2:13)।
- उन्हें अपने अगुओं के उदाहरण का अनुकरण करना चाहिए (1 थिस्सलुनीकियों 1:6)।
- उन्हें दीनता से उनके अगुओं के अधिकार के अधीन होना और आज्ञाकारी होना चाहिए। यह कलीसिया के लाभ की बात होगी क्योंकि कलीसिया हर व्यक्ति के जीवन के लिए परमेश्वर की व्यवस्था में जी सकेगी। वैसे भी, परमेश्वर ही सारी अगुआई को नियुक्त करता है (रोमियों 13:1-5)। इसलिए, जब हम उनके अधीन होते हैं जिन्हें परमेश्वर ने हम पर अधिकार होने के लिए नियुक्त किया है तो हम असली में खुद परमेश्वर के अधीन हो रहे हैं। सारा अधिकार खुद परमेश्वर में है और जब वह अगुओं को नियुक्त करता है तो वह केवल उन्हें अधिकार दे रहा या सौंप रहा है, और हमें उनका कहना मानना चाहिए जिनको उसने अधिकार सौंपा है; उसी प्रकार जैसे हमें खुद परमेश्वर का कहना मानना चाहिए। जिनको हम पर जिम्मेवारी है हमें उनको हम में आनन्द करने देना है और उनके लिए इसे बोझ नहीं बनाना है। हम ऐसा उनका अधिकार स्वीकार करके और इसकी अधीनता में जीवन जीकर कर सकते हैं (1 पतरस 5:5-6)।

- अगर परमेश्वर का दिया गया अधिकार हमें ऐसा कुछ करने के लिए कहता है जो हम जानते हैं परमेश्वर के कहने के विरुद्ध होगा, तब हमें परमेश्वर के उच्च अधिकार और उसके वचन की आज्ञा का पालन करना चाहिए।
- वे अपने अगुओं: उनकी सेवकाइयों और उनके परिवारों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; 2 थिस्सन्लुनीकियों 3:1)।
- वे अपने अगुओं का उत्साह के साथ नमस्कार करें और उन्हें प्रेम और स्वागत महसूस होने दें। अपने अगुओं की प्रशंसा करें और उन्हें उचित सम्मान और ध्यान दें (1 थिस्सलुनीकियों 5:12-13)।

  "जो तुम्हारे अगुवे थे, ... और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, ... उन्हें स्मरण करो ... और ध्यान से उनके चाल-चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो। अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।" (इब्रानियों 13:7,17)

अगुओं की जिम्मेवारी

अगुओं की एक बड़ी जिम्मेवारी होती है (याकूब 3:1; यहेजकेल 33:6; इब्रानियों 13:17)। हर झुंड को एक चरवाहे की जरूरत होती है (गिनती 27:16-17) और चरवाहे को पता होना चाहिए कि उनके झुंड की अगुआई कैसे करें और न कि उन्हें हाँकें (उत्पत्ति 33:13-14)। परमेश्वर के लोगों के चरवाहों को जो परमेश्वर आज कह रहा है उसका पता होना चाहिए ताकि वे अपने झुंडों को परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों में ले चलें।

चरवाहों को:

- उनके झुंड को हमले से सुरक्षित रखना चाहिए। भेड़िया (शैतान) धोके से झुंड के सदस्यों को अलग-अलग करने की कोशिश करेगा, लेकिन चरवाहे को इससे अपनी भेड़ों को सुरक्षित रखने के लिए उपलब्ध होना चाहिए।
- यीशु की ओर से जो कलीसिया का सर है अधिकार और अनुशासन देना चाहिए।
- उनकी भेड़ों को क्रम में रखना चाहिए ताकि वे एक दूसरे और परमेश्वर के साथ कदम मिला कर चल सकें। कलीसिया को ऐसे मसीहियों की जरूरत है जो उनके खोखलेपन, धमण्ड, अहंकार, स्वाधीनता और छोटेपन को दूर रखने के लिए तैयार हैं और, व्यवस्था और अखण्ड वफादारी बनाए रखें।

प्रभु के अधिकार की श्रृँखला के चित्रीय उदाहरण के लिए नीचे देखें।

राज्य में अधिकार की श्रृँखला

त्रियेक परमेश्वरत्व

पिता ने यीशु को कलीसिया का सर नियुक्त किया और वह पवित्र आत्मा के द्वारा लोगों के वरदान कलीसिया को देता है। (इफिसियों 4:11-13)

पिता परमेश्वर
पुत्र परमेश्वर
पवित्र आत्मा परमेश्वर

प्रेरित	**भविष्यद्वक्ता**	**सुसमाचार सुनानेवाला**	**पास्टर**	**शिक्षक**
एक भेजा हुआ जो कलीसिया में बुनियाद रखता है 1 कुरिं. 3:10	परमेश्वर की योजनाओं को देखता है, परमेश्वर का वचन बोलता है, दर्शन देता है	शुभ संदेश सुनाता है, खोए हुओं को खोजता है, बीमारों को चंगा करता है	चरवाहा जो झुंड की अगुआी करता और उन्हें खिलाता है	परमेश्वर के वचन को जीवन में लगाता और आज्ञापालन को प्रोत्साहन देता है
इब्रानियों 3:11	लूका 24:19	मत्ती 4:23	यूहन्ना 10	मत्ती 7:28

(यीशु ये सब था)

मसीह की देह के सारे सदस्यों के लिए जिन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया है, पवित्र आत्मा के वरदान उपलब्ध हैं जैसे वह तय करता है (1 कुरिन्थियों 12:7-11)

ऊपर दिए सारी कलीसिया के लिए सेवक हैं। वे स्थानीय कलीसिया में सेवा करते हैं, निवेश देते हैं और इसकी वृद्धि को प्रोत्साहन देते हैं, वे विस्तृत कलीसिया को भी, वहाँ सेवकाई और जीवन लाने के लिए दिए गए हैं।

ऐल्डरशिप आत्मिक निरीक्षण – प्रेरितों 14:23
1 तीमु. 3:1-7

ऐल्डर और डीकन स्थानीय कलीसिया के सेवक हैं

डीकन उपयोगी सेवा – प्रेरितों 6:14
1 तीमु. 3:8-11

सामुदायिक सेवकाइयाँ रोमियों 12:4-8 (स्थानीय कलीसिया को अनुग्रह के वरदान)

भविष्यवाणी **सेवा** **सिखाना** **प्रोत्साहन देना** **दूसरों की जरूरत** **अगुआई** **दया दिखाना**

बाइबल की एक संक्षिप्त भूमिका

बाइबल का एक संक्षिप्त वर्णन

“बाइबल” शब्द “पुस्तक” के लिए यूनानी शब्द से आता है। बाइबल 66 पुस्तकों का एक पुस्तकालय है जिसे लगभग 1500 (1400 ई.पू. से 100 सन्) वर्षो के दौरान लगभग 40 विभिन्न लेखकों ने लिखा था। इन पुस्तकों को दो मुख्य भागों में बाँटा गया है:

- पुराना नियम (पुरानी वाचा)
- नया नियम (नयी वाचा)

बाइबल का उद्देश्य

एक विषय सारी 66 पुस्तकों को जोड़ता है। विषय “उद्धार” या “मोल देकर छुड़ाना” है। बाइबल परमेश्वर ने इतिहास में मनुष्यजाति को पाप के बंधन और अपने सृष्टिकर्त्ता की आज्ञोल्लंघन से बचाने के लिए क्या कहा और किया है का वर्णन है। यह विषय परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में पूरा हुआ है।

2 तीमुथियुस 3:14-17 में, बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि इसका उद्देश्य:

1) लोगों को “मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान” बनाना है।
2) ऐसे विश्वासियों को “हर भले काम के लिए” तैयार करना है।

इसलिए एक बार जब एक व्यक्ति मसीह में विश्वास करने लगता है तो बाइबल “हर भले काम” में सज्जित करने में चार चीजों के लिए लाभदायक है।

- उपदेश (सिखाने)
- समझाने (गलती दिखाने)
- सुधारने (सही दिखाने)
- धर्म की शिक्षा (परमेश्वर और मनुष्य के साथ सही सम्बंध)

बाइबल जो कहानी बताती है

कहानी जो बाइबल बताती है का इस प्रकार सार प्रस्तुत किया जा सकता है। परमेश्वर ने मनुष्य को सहभागिता और उसकी ओर से पृथ्वी पर शासन के लिए अपने ही स्वरूप में बनाया था। जानबूझकर अवज्ञा के द्वारा, मनुष्य ने परमेश्वर के साथ अपना अनोखा सम्बंध और जिस नियति के लिए परमेश्वर ने उन्हें बनाया था खो दिया।

पुराना नियम बताता है कि किस प्रकार परमेश्वर ने मनुष्यजाति को अपने अभिप्रेत उद्देश्य में लौटा लाने की भरपूर कोशिश की। उसने ऐसा यहूदी राष्ट्र को चुनने के द्वारा किया, जिसके द्वारा वह अपने उद्धार को प्रकट करना और इसे सारे संसार में लाना चाहता था। लेकिन यहूदियों ने जो परमेश्वर के खास चुने हुए सेवक थे, उस वाचा को तोड़ दिया जिसके द्वारा परमेश्वर ने उन्हें अपने उद्धार से आशीष देने और उन्हें पृथ्वी के सारे राष्ट्रों के लिए एक आशीष बनाने की प्रतिज्ञा की थी। इस प्रकार, उन्होंने खुद को परमेश्वर के सेवक होने से अयोग्य ठहराया जिन्हें भविष्यद्वक्ताओं ने उनकी मूर्तिपूजा और एक मात्र सच्चे और जीवित, इस्राएल के परमेश्वर के प्रति विश्वासघात के परिणाम के बारे में बार बार चेतावनी दी थी।

नया नियम परमेश्वर की अपने पुत्र, यीशु मसीह (मसीहा) के द्वारा मनुष्यजाति को बचाने और लौटा ले आने की उद्धार की योजना के पूर्ण होने का विवरण है। परमेश्वर के सिद्ध सेवक के रूप में जिसने परमेश्वर की वाचा की माँगों को पूर्ण रूप से पूरा किया, उसने मृत्यु और परमेश्वर से अलगाव की सजा एक रोमी क्रूस पर अपनी मृत्यु दे द्वारा अपने ऊपर ले ली। उसके पुनरुत्थान और उच्चता के बाद, परमेश्वर अब पापों की क्षमा और सहभागिता की पुन:स्थापना की पेशकश करता है। परमेश्वर के बच्चे - कलीसिया, वे सब हैं जो मन फिराने और यीशु मसीह में प्रभु के रूप में विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा के कार्य से परमेश्वर के उद्धार को प्राप्त करते हैं। उनके द्वारा, परमेश्वर के उद्धार के दान का शुभ संदेश अब सारे संसार में लाना है। प्रकाशितवाक्य, बाइबल की आखिरी पुस्तक, दिखाती है कि किस प्रकार परमेश्वर का अपनी सारी सृष्टि का उद्धार एक नए स्वर्ग और पृथ्वी में चरम बिन्दु पर पहुँचेगा जहाँ मनुष्य की सहभागिता और शासन पूर्ण रूप से पुन:स्थापित हो जाएगा … परमेश्वर की महिमा के लिए!

परमेश्वर की अनन्त वाचा

भूमिका

"वाचा" का विचार पुराने और नए नियमों दोनों के लिए मूल है। दूसरी सदी के अन्त से, कलीसिया ने बाइबल के दो भागों को जिन्हें हम पुराना नियम और नया नियम कहते हैं, पुरानी वाचा और नयी वाचा नाम दिया है।

"वाचा" की परिभाषा

1. इब्रानी: "बेरिथ (berith)" – एक राजीनामा, अनुबन्ध या समझौता.
2. यूनानी: सेपचुआजिन्ट (septuagint) (जो यूनानी भाषा में लिखे पुराने नियम का नाम है) और नया नियम "बेरिथ" को दो शब्दों में अनुवाद करते हैं: "सुनाथेके sunatheke" – दो समान पक्षों के बीच समझौता (द्विपक्षी समझोता); "डॉयथेके diatheke" – दो असमान पक्षों के बीच समझौता (एकपक्षीय समझौता)। हमारा परमेश्वर के साथ "डॉयथेके" किस्म का समझौता है।

विस्तार

परमेश्वर के अनन्त समझौते में तीन तत्त्व शामिल हैं। इनमें से एक या ज्यादा अब्राहम से शुरू होकर परमेश्वर की सारी वाचाओं में शामिल हैं।

1. "मैं तेरा परमेश्वर रहूँगा"
   - क. अब्राहम (उत्पत्ति 17:7)
   - ख. इसहाक (उत्पत्ति 26:24)
   - ग. याकूब (उत्पत्ति 28:13-14)
   - घ. मूसा (निर्गमन 29:45-46; व्यवस्था. 29:13)
   - च. दाऊद (2 शमुएल 7:24)
   - छ. यिर्मयाह (यिर्म. 31:33; इब्रानियों 8:10)
   - ज. यहेजकेल (यहेज. 37:27)
2. "तुम मेरे लोग रहोगे"
   - क. मूसा (व्यवस्था. 7:6; 29:12-13)
   - ख. दाऊद (2 शमुएल 7:24)
   - ग. यिर्मयाह (यिर्म. 31:33; इब्रानियों 8:10)
   - घ. यहेजकेल (यहेज. 37:27)
3. "मैं तुम्हारे मध्य निवास करूँगा"
   - क. मूसा (निर्गमन 29:45-46)
   - ख. दाऊद (2 शमुएल 7:5-14; प्रेरितों 7:44-49)
   - ग. यहेजकेल (यहेज. 37:27-28)

इन वाचा के विस्तारों की पूर्ति मसीह और नए यरूशलेम में पूरी चरम सीमा पर पहुँचती है (प्रकाशित. 21:3-4; 2 कुरिं. 6:16-18)।

विकास

"नया" नियम जिसकी प्रतिज्ञा पुराने नियम में की गई थी (यिर्म. 31:31-34) और यीशु मसीह में पूरा हुआ था (इब्रा. 8:8-12), इस अभिप्राय से नया है कि यह उत्तमता और प्रकृति में भिन्न है। "पुरानी" वाचा की प्रकृति बाहरी थी, और पत्थर की पटियों पर लिखी हुई थी; "नई" वाचा अन्दरूनी थी और हृदय पर लिखी हुई थी (2 कुरिं. 3:1-6)। नए नियम की उत्तमता पुराने से श्रेष्ठ है क्योंकि परमेश्वर के साथ सीधे सम्बंध का मार्ग अब हर व्यक्ति के लिए जो उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास करता है खुला है। (अतिरिक्त अध्ययन के लिए, कृपया इब्रानियों 7 – 10 देखें)। फिर भी, "पुरानी" और "नई" वाचाओं में वही तीन मूल आयाम हैं। इनका विकास इस प्रकार है:

1. वाचा प्रारंभ की गई: उत्पत्ति – व्यवस्थाविवरण
2. वाचा चित्रित की गई: यहोशू – 2 शमुएल
3. वाचा का उल्लंघन किया गया: 1 राजा - एस्तेर; यशायाह – मलाकी
4. नई वाचा प्रारंभ की गई: मत्ती – यूहन्ना

5. नई वाचा चित्रित की गईः प्रेरितों; रोमियों – यहूदा
6. नई वाचा पूर्णता तक पहुँचीः प्रकाशितवाक्य

अन्त में

परमेश्वर की अनन्त वाचा मनुष्यजाति को तीन मूल तरीकों से आशीष देने की उसकी मनसा प्रकट करती हैः

1. ईश्वरीय प्रधानता के साथः "मैं तेरा परमेश्वर रहूँगा"
2. ईश्वरीय सम्बंध के साथः "तुम मेरे लोग रहोगे"
3. ईश्वरीय सहभागिता के साथः "मैं तुम्हारे मध्य निवास करूँगा"

पंचग्रंथ का परिचयः
उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण तक

1. नाम
   - इब्रानीः Torah: "नियम, निर्देश"
   - क्रिया से "सिखाना"
   - यूनानीः pentateuch: "पंच-ग्रंथ"
   - मूसा की पाँच पुस्तकें

2. विषय-वस्तु
   - क. घटनाएँ
     1. शुरूआत (उत्पत्ति 1-11)
        - i. सृष्टिः आदम और हव्वा
        - ii. पतनः कैन और हाबिल
        - iii. जल-प्रलयः नूह और तीन पुत्र
        - iv. बेबीलोन और राष्ट्र
     2. परमेश्वर के लोगों की शुरूआत (उत्पत्ति 12 – निर्गमन 19)
        - i. कुलपतिः अब्राहम, इसहाक, याकूब, यूसुफ
        - ii. मिश्र की गुलामी
        - iii. मिश्र से छुटकारा
     3. सिनै पर्वत पर प्रकटिकरण (निर्गमन 20 – गिनती 9)
     4. कनान में प्रवेश करने की तैयारी (गिनती 10 – व्यवस्थाविवरण 34)
        - i. कादेशबर्ने की हार
        - ii. जंगल में भटकना
        - iii. मोआब के अराबा पर व्यवस्था का दूसरी बार दिया जाना
   - ख. विषय
     1. सृष्टिः परमेश्वर के कार्य (सीधे और अप्रत्यक्ष)
     2. चुनावः परमेश्वर का चुनाव (विशेषाधिकार और जिम्मेवारी) ?
     3. वाचाः परमेश्वर की वचनबद्धता (एकपक्षीय)
     4. निर्गमनः परमेश्वर का छुटकारा (लहू के द्वारा गुलामी से सेवा के लिए)
     5. व्यवस्थाः परमेश्वर की शर्तें (अपेक्षाएँ)

6. आज्ञोल्लंघनः मनुष्य की निरंकुशता (पतन से स्पष्ट होता है)

ग. लेखकः अज्ञात

1. पारंपरिक – मूसा (1400/1200 ई.पू.)

क. वही जानकारी शामिल की गई जिसकी मूसा को पहुँच थी (सीनै पर्वत)

ख. पंचग्रंथ मूसा के शब्दों का दावा करता है (निर्ग. 24:3; व्यवस्था. 31:9)

ग. यीशु ने मूसा के हैं कहकर इस्तेमाल किए (मरकुस 7:10; 10:3; 12:26)

उत्पत्तिः सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक - अज्ञात, मूसा माना जाता है

ख. तारीख – लगभग 1400/1200 ई.पू.

ग. स्रोत – "आदम की वंशावली यह है" (5:1)

घ. आवश्यकताः इस्राएल के लोगों की मनुष्यजाति के आरम्भ और पतन की पृष्ठभूमि के सामने उनके आरम्भ और मूल को समझने की आवश्यकता।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "उत्पत्ति"

- इब्रानीः बेरेशिथ bereshith ("आदि में")
- यूनानीः उत्पत्ति genesis ("शुरूआत")

ख. विषय – परमेश्वर के संसार और परमेश्वर के लोगों की शुरूआत

ग. उद्देश्य – स्वर्ग, पृथ्वी और मनुष्यजाति के शुरूआत के सामने परमेश्वर के चुने हुए लोगों की शुरूआत दिखाना।

घ. मूल वचनः (उत्पत्ति 1:26; 12:2-3) 'फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ; और वे...अधिकार रखें ... और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा...और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।"'

निर्गमनः सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक - अज्ञात, मूसा माना जाता है

ख. तारीख – लगभग 1400/1200 ई.पू.

ग. स्रोत – "वाचा की पुस्तक" (24:4,7)

घ. आवश्यकता – परमेश्वर के चुने हुए लोगों को समझने की आवश्यकता थी किः 1) वे किस प्रकार मिस्र में से परमेश्वर के महान छुटकारे के द्वारा एक राष्ट्र के रूप में बनाए गए थे, जिसे फसह के पर्व में मनाया जाता था, और 2) परमेश्वर के नियमों, विधियों और विधानों को, जिन्हें उनको उसके लोग होने के नाते मानना था।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "निर्गमन"

- इब्रानीः शिमोथ Shemoth ("नाम")
- यूनानीः निर्गमन ("बाहर का मार्ग")

ख. विषय – रिहाई और छुटकारा, जिसने एक राष्ट्र को जन्म दिया जिन्हें परमेश्वर ने अपने लोग होने के लिए चुना था।

ग. उद्देश्य – परमेश्वर ने इस्राएल का मिस्र की गुलामी से उनके साथ उसके लोग होने को वाचा बाँधने के लिए किस प्रकार छुटकारा किया था, जिनके द्वारा उसका स्वभाव और उद्धार एक निरंकुश संसार को दिखाना था, का विवरण लिखना।

घ. मूल वचनः (निर्गमन 19:4-6) "तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन

करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरी निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।"

लैव्यव्यवस्थाः सारांश

1. पृष्ठभूमि
    - क. लेखक - अज्ञात, मूसा माना जाता है
    - ख. तारीख – लगभग 1400/1200 ई.पू.
    - ग. स्रोत – सिनै पर्वत पर परमेश्वर से मिला प्रकाशन जिसे मूसा ने लिखा था।
    - घ. आवश्यकता – इस्राएल के लिए लिखा गया ताकि वे जान सकें कि परमेश्वर के वाचा के लोग होने के नाते उसने उन्हें क्या-क्या आज्ञाएँ दी हैं।
2. विषय-वस्तु
    - क. शीर्षक – "लैव्यव्यवस्था"
        - इब्रानीः wayyigra ("फिर यहोवा ने कहा")
        - यूनानीः levitikon ("लेवियों से सम्बंधित")
    - ख. विषय – एक लोगों की जिन्हें परमेश्वर की सेवा और महिमा के लिए अलग किया गया था, पवित्र जीवन जीने की नियमावली।
    - ग. उद्देश्य – उन विधियों और नियमों को जो परमेश्वर तक पहुँचने और परमेश्वर के लिए जीने के बारे में हैं, जिन्हें परमेश्वर के चुने हुए लोग, इस्राएल के लिए जरूरी था, स्पष्ट रूप से लिखना।
    - घ. मूल वचनः (लैव्यव्यवस्था 11:45) "क्योंकि मैं वह यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिए निकाल ले आया हूँ कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँ; इसलिए तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"

गिनतीः सारांश

1. पृष्ठभूमि
    - क. लेखक - अज्ञात, मूसा माना जाता है
    - ख. तारीख – लगभग 1400/1200 ई.पू.
    - ग. स्रोत – यहोवा के युद्ध की पुस्तकें
    - घ. आवश्यकता – परमेश्वर के लोगों को जंगल में उनके भटकने के कारण की याद दिलाने की जरूरतः कि परमेश्वर प्रकट करने की कोशिश कर रहा था कि उनके दिलों में क्या है। क्या वे उस पर अपना प्रभु परमेश्वर के रूप में भरोसा करेंगे?
2. विषय-वस्तु
    - क. शीर्षक – "गिनती"
        - इब्रानीः bemindbar ("जंगल में")
        - यूनानीः arithmoi ("गिनती")
    - ख. विषय – ईश्वरीय अनुशासन की एक पीढ़ी के दौरान जंगल में भटकना।
    - ग. उद्देश्य – इस सच्चाई को रेखांकित करना कि अपर्याप्त विश्वास, न कि अपर्याप्त संख्या, ने परमेश्वर के लोगों को प्रतिज्ञा के प्रदेश में जाने से रोके रखा।
    - घ. मूल वचनः (गिनती 32:13) "अतः यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़का, और जब तक उस पीढ़ी के सब लोगों का अन्त न हुआ, जिन्होंने यहोवा के प्रति बुरा किया था, तब तक अर्थात् चालीस वर्ष तक वह उन्हें जंगल में मारे मारे फिराता रहा।"

व्यवस्थाविवरणः सारांश

1. पृष्ठभूमि
    क. लेखक - अज्ञात, मूसा माना जाता है
    ख. तारीख – लगभग 1400/1200 ई.पू.
    ग. स्रोत – मूसा की यादों के साथ-साथ लैव्यव्यवस्था में से कुछ फेर-बदल के साथ।
    घ. आवश्यकता – प्रतिज्ञा के प्रदेश में एक नए अगुए (यहोशू) के अधीन प्रवेश के पूर्वाभास में, मूसा लोगों को, लैव्यव्यवस्था की जरूरी बातों को "हर व्यक्ति की व्यवस्था" में लोकप्रिय बनाते हुए सम्भोदित करता है, ताकि सब परमेश्वर की व्यवस्था को समझ सकें और उसका पालन कर सकें।
2. विषय-वस्तु
    क. शीर्षक – "व्यवस्थाविवरण"
        - इब्रानीः elle haddebarim ("जो बातें")
        - यूनानीः deutronomion ("दूसरी बार व्यवस्था का देना")
    ख. विषय – मूसा की अन्तिम वसीयत और विधान के रूप में परमेश्वर की व्यवस्था का दोहराया जाना।
    ग. उद्देश्य – परमेश्वर की माँगों का पुनःबयान करना ताकि उसके लोग जब वे प्रतिज्ञा के प्रदेश में दाखिल हों और बस जाएँ तो उसकी आज्ञाओं का पलन करें और जीवित रहें।
    घ. मूल वचनः (व्यवस्थाविवर 4:1) "अब हे इस्राएल, जो जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूँ उन्हें सुन लो, और उन पर चलो; जिस से तुम जीवित रहो, और जो देश तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाओ।"

ऐतिहासिक साहित्य का परिचय

यहोशू से ऐस्तेर तक

1. इब्रानी ग्रंथ-संग्रह (8 पुस्तकें)
    क. पहले भविष्यद्वक्ताः यहोशू, न्यायियों, शमूएल, राजा (4 पुस्तकें)
    ख. लेखः इतिहास, एज्रा – नहेम्याह, रूत, ऐस्तेर (4 पुस्तकें)
    यूनानी ग्रंथ-संग्रह = 12 पुस्तकें (यहोशू से ऐस्तेर तक)

2. स्रोत
    क. यहोशू से 2 राजा तक के लिएः
        1. "याशार की पुस्तक" (यहोशू 10:13; 2 शमूएल 1:18)
        2. "सुलेमान के इतिहास की पुस्तक" (1 राजा 11:41)
        3. "यहूदा / इस्राएल के इतिहास की पुस्तक" (1 राजा 15:23, 31 वगैरा)
    ख. 1 इतिहास से नहेम्याह तकः
        1. "राजा दाऊद का इतिहास" (1 इतिहास 27:24)
        2. "शमूएल दर्शी की पुस्तक" (1 इतिहास 29:29)
        3. "नातान नबी और गाद दर्शी की पुस्तकें" (1 इतिहास 29:29)
        4. "इद्दो दर्शी के दर्शन की पुस्तक" (2 इतिहास 9:29; 12:15)
        5. "यशायाह नबी के लेख" (2 इतिहास 26:22)

3. लिखने की तारीख
    क. यहोशू से 2 राजा तक (लगभग 561 ई.पू.)
    ख. इतिहास (लगभग 450 ई.पू.)

4. ऐतिहासिक अवधि
    क. यहोशू से 2 राजा तकः कनान में प्रवेश से लेकर राजा यहोयाकीन की बेबीलोन के बन्दीग्रह से मुक्ति तक (1400/1200-561 ई.पू.)। कुलः 650-850 वर्ष।
    ख. इतिहासः राजा शाऊल की मृत्यु से एज्रा और नहेम्याह की सेवकाई तक (1011-450)। कुलः 550 वर्ष।

5. विषय
    क. भविष्यवाणी का इतिहास
    ख. राजत्व
    ग. याजकीय इतिहासः मंदिर और आराधना
    घ. मानवीय तत्त्व

6. लेखकः पारंपरिक
    क. यहोशू, शमूएल, यिर्मयाह, एज्रा और नहेम्याह

यहोशूः सारांश

1. पृष्ठभूमि
    क. लेखक - अज्ञात, यहोशू और /या शमूएल को श्रेय दिया गया है।
    ख. तारीख – लगभग 1440 या 1250 ई.पू.
    ग. स्रोत – याशार की पुस्तक (10:13)
    घ. अवसर – इस्राएल के लोगों के जो न्यायियों के समय में जी रहे थे (जब जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था) समझने और उन्हें प्रतिज्ञा के प्रदेश की विजय और भाग और "साक्षी के पत्थरों" के द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था के आज्ञापालन के बारे में याद दिलाने के लिए (4:19-24; 24:26-27)।
2. विषय-वस्तु
    क. शीर्षक "यहोशू"
        - इब्रानीः "यहोशुआ" (यहोवा उद्धार है")
        - यूनानीः "Yesus" ("उद्धार/छुड़ानेवाला")
    ख. विषय – परमेश्वर के लोगों की जैसे जैसे वे प्रभु की ओर सम्पूर्ण आज्ञापालन में चलते हैं, उनके मिरास पर कब्जा करने की अप्रतिरोध्य सामर्थ।
    ग. उद्देश्य – प्रतिज्ञा के प्रदेश पर परमेश्वर के लोगों की यहोशू के नेतृत्व में विजय और अब्राहम को किए परमेश्वर के वादे की पूर्ति में प्रदेश के हर कुल के लिए मिरास के रूप में अनुवर्ती विभाजन।
    घ. मूल वचनः (यहोशू 21: 43,45) "इस प्रकार यहोवा ने इस्राएल को वह सारा देश दिया, जिसे उसने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था; और वे उसके अधिकारी होकर उसमें बस गए। ... जितनी भलाई की बातें यहोवा ने इस्राएल के घराने से कही थीं उनमें से कोई बात भी न छूटी; सब की सब पूरी हो गई।"

न्यायियोंः सारांश

1. पृष्ठभूमि
    क. लेखक - अज्ञात, शमूएल को श्रेय दिया गया है।
    ख. तारीख – लगभग 1000 ई.पू. (जिस आकार में पुस्तक हमारे पास है को अन्तिम रूप 721 ई.पू. तक ही दिया गया था, न्यायियों 18:30)।
    ग. स्रोत – वीरोचित कहानियाँ/गीत।

घ. अवसर – यहोशू और शमूएल के मध्य के समय की अराजकतावाद ने इस्राएल के देश को ससंजकता प्रदान करने के लिए राजा की जरूरत प्रकट की।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "न्यायियों"

- इब्रानी: shopetin ("न्यायी / कार्यकारी अगुए")
- यूनानी: kritai ("न्यायी")

ख. विषय – परमेश्वर की वाचा पर चलने की इस्राएल की असफलता का परिणाम अत्याचार और छुटकारे का चक्र बन गया।

ग. उद्देश्य – यह दिखाना कि इसकी एकता और शुद्धता को बनाए रखने और इस्राएल के परमेश्वर के वाचा के शासन के कल्याण के लिए एक केन्द्रित वंशागत राजत्व की जरूरत थी।

घ. मूल वचन: (न्यायियों 2:16-17) "तौभी यहोवा उनके लिए न्यायी ठहराता था जो उन्हें लूटने वाले के हाथ से छुड़ाते थे। परन्तु वे अपने न्यायियों की भी नहीं मानते थे; वरन् व्यभिचारिन के समान पराये देवताओं के पीछे चलते और उन्हें दण्डवत् करते थे…।"

रूत: सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक - अज्ञात, शमूएल को श्रेय दिया गया है।

ख. तारीख – सम्भवत: 1000 ई.पू. (रूत 4:7)।

ग. स्रोत - अज्ञात

घ. अवसर – राजा दाऊद की वंशावली लिखने की जरूरत, यह दिखाते हुए कि परमेश्वर का प्रेम यहूदी सीमाओं से परे पहुँचता है।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "रूत"

- इब्रानी: rut ("रूत, स्त्री साथी")
- यूनानी: rout ("रूत")

ख. विषय - एक अन्यजाति (गैर-यहूदी) का उद्धार।

ग. उद्देश्य – राजा दाऊद के लिए एक वंश-वृक्ष बनाना, और साथ में जातीय सहनशीलता के लिए अभिवचन और एक विधवा अन्य-जाति की ओर दया करना।

घ. मूल वचन: (रूत 1:16) "तू मुझसे यह विनती न कर, कि मुझे त्याग या छोड़कर लौट जा; क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊँगी; जहाँ तू टिके वहाँ मैं भी टिकूँगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।"

1 और 2 शमूएल: सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक - अज्ञात, शमूएल को श्रेय दिया गया है (इब्रानी पुराने नियम में 1 और 2 शमूएल एक पुस्तक है)।

ख. तारीख – 930 और 722 ई.पू. के बीच।

ग. स्रोत – शमूएल, नातान और गाद की पुस्तकें (1 इतिहास 29:29)।

घ. अवधि – लगभग 1100-1000 ई.पू. (न्यायियों के अन्त से दाऊद के शासन की बुलंदी तक)।

च. अवसर – न्यायियों के एक कमजोर शासन से शमूएल, शाऊल और दाऊद के दौरान एक मजबूत राजतन्त्र में परिवर्तन का लेखा लिखने की जरूरत।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "शमूएल"

- इब्रानी: Shemu'el ("परमेश्वर से माँगा / सुना")

- यूनानीः basileion A & B ("राज्य 1 और 2")

ख. विषय –

1. 1 शमूएलः शमूएल नबी और राजा शाऊल का पतन।
2. 2 शमूएलः परमेश्वर का चुना हुआ शासक, राजा दाऊद का महत्त्वपूर्ण शासन।

ग. उद्देश्य -

1. 1 शमूएलः इस्राएल में एक ईशतन्त्र (परमेश्वर का न्यायियों द्वारा शासन करना) से शाऊल के अधीन जिसे परमेश्वर ने ठुकराया, राजतन्त्र (मनुष्य का शासन) में परिवर्तन को दिखाना।
2. 2 शमूएलः परमेश्वर के चुने हुए शासक, राजा दाऊद के अधीन राजतन्त्र की स्थापना दिखाना।

घ. मूल वचनः (1 शमूएल 8:7; 12:14) "... उन्होंने तुझ को नहीं परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है कि मैं उनका राजा न रहूँ ... तुम और वह जो तुम पर राजा हुआ हैदोनों अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे पीछे चलनेवाले बने रहो, तब तो भला होगा।"

(2 शमूएल 7:8,16) "...मैं ने तो तुझे भेड़-शाला से, और भेड़-बकरियों के पीछे पीछे फिरने से, इस मनसा से बुला लिया कि तू मेरी प्रजा इस्राएल का प्रधान हो जाए। वरन् तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदैव बनी रहेगी।"

1 और 2 राजाः सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक - अज्ञात, यिर्मयाह को श्रेय दिया गया है (1 और 2 राजा इब्रानी पुराने नियम में एक पुस्तक हैं)।

ख. तारीख – सम्भवतः 560 और 538 ई.पू. के बीच

ग. स्रोत –

1. सुलेमान के इतिहास की पुस्तक (1 राजा 11:41)
2. इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक
   (1 राजा 14:19; 15:31; 6:5,14,27; 22:39; 2 राजा 1:18)
3. यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक
   (1 राजा 14:29; 15:7,23; 22:45; 2 राजा 8:23; 12:19)

घ. अवधि – लगभग 975-560 ई.पू. (सुलेमान के राज्य से यहूदियों की बेबीलोन की बंधुआई तक)।

च. अवसर - उत्तरी और दक्षिणी दोनों राज्यों की बँधुआई को बताने की जरूरत।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "राजा"

- इब्रानीः melchim A & B ("राजा / राज्य 1 और 2")
- यूनानीः basileion C & D ("राज्य 3 और 4")

ख. विषय – इस्राएल और यहूदा का उत्थान, फूट, पतन और हार।

ग. उद्देश्य – यह दिखाना कि इस्राएल और यहूदा दोनों ने कैसे लगातार परमेश्वर के साथ उनकी वाचा का उल्लंघन किया, जिसके फलस्वरूप विदेशी गैर-यहूदी राष्ट्रों के हाथों बँधुआई के द्वारा उन्हें सजा मिली।

घ. मूल वचनः (1 राजा 9:4-7) "और यदि तू अपने पिता दाऊद के समान मन की खराई और सिधाई से अपने को मेरे सामने जानकर चलता रहे, और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे, तो मैं तेरा राज्य इस्राएल के ऊपर सदा के लिए स्थिर करूँगा; जैसे कि मैं ने तेरे पिता दाऊद को वचन दिया था...परन्तु यदि तुम लोग या तुम्हारे वंश के लोग मेरे पीछे चलना छोड़ दें...तो मैं इस्राएल को इस देश में से जो मैं ने उनको दिया है, काट डालूँगा।"

(2 राजा 17:19-20) "यहूदा ने भी अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ न मानीं, वरन् जो विधियाँ इस्राएल ने चलाई थीं, उन पर चलने लगे। तब यहोवा ने इस्राएल की सारी सन्तान को छोड़ कर, उनको दुख दिया और लूटनेवालों के हाथ कर दिया और अन्त में उन्हें अपने सामने से निकाल दिया।"

1 और 2 इतिहासः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक - अज्ञात, एज्रा को श्रेय दिया गया है (1 और 2 इतिहास इब्रानी पुराने नियम में एक पुस्तक हैं)।
   - ख. तारीख – लगभग 450-400 ई.पू.
   - ग. स्रोत – शमूएल, नातान, गाद (1 इतिहास 29:29)। नातान, अहिय्याह, इद्दो (2 इतिहास 9:29)।
   - घ. अवधि – लगभग 1025-56- ई.पू.
   - च. अवसर – यहूदियों की बेबीलोन से वापसी पर इस्राएल, खासकर यहूदा के इतिहास को लिखने की जरूरत पड़ी, ताकि परमेश्वर के वाचा का पालन किया जाए ऐसा न हो कि पहले का संकट दोहराया जाए।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "इतिहास"
     - इब्रानीः dibre hayyamin 1 & 2 (समय के कारबार/शब्द 1 और 2)
     - यूनानीः paraleipomenon 1 & 2 (छोड़ी हुई बातें 1 और 2)
   - ख. विषय – इब्रानी राष्ट्र का आत्मिक उत्तराधिकार।
   - ग. उद्देश्य - उन यहूदियों को जो बँधुआी से आ रहे थे उनके आत्मिक मीरास के बारे में सीखाना, ताकि वे विश्वासयोग्यता से मूसा की वाचा और विधियों का पालन करें ऐसा न हो कि वे अपने पूर्वजों की गलतियों को दोहराएँ।
   - घ. मूल वचनः (1 इतिहास 9:1-2; 10:13) "इस प्रकार सब इस्राएली अपनी अपनी वंशावली के अनुसार...गिने गए।यहूदी अपने विश्वासघात के कारण बन्दी बनाकर बेबीलोन को पहुँचाए गए। बँधुआई से लौटकर जो लोग अपनी अपनी निज भूमि अर्थात् अपने नगरों में रहते थे, वे इस्राएली, याजक, लेवीय और मन्दिर के सेवक थे। यों शाऊल उस विश्वासघात के कारण मर गया ... इसलिए यहोवा ने उसे मारकर राज्य को यिशै के पुत्र दाऊद को दे दिया।"

     (2 इतिहास 36:15-16) "उनके पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने बड़ा यत्न करके अपने दूतों से उनके पास कहला भेजा, क्योंकि वह अपनी प्रजा और अपने धाम पर तरस खाता था; परन्तु वे परमेश्वर के दूतों को ठट्टों में उड़ाते, उसके वचनों को तुच्छ जानते, और उसके नबियों की हँसी करते थे। अतः यहोवा अपनी प्रजा पर ऐसा झुँझला उठा कि बचने का कोई उपाय न रहा।"

एज्रा – नहेम्याहः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक - अज्ञात, एज्रा को श्रेय दिया गया है।
     (एज्रा और नहेम्याह इब्रानी पुराने नियम में एक पुस्तक हैं।)
   - ख. तारीख – लगभग 440 ई.पू.
   - ग. स्रोत - एज्रा और नहेम्याह के जीवनवृत (एज्रा 7:27ff; 8:1ff; नहे. 1-7; 11:1-2)।
     - जनगणना और दूसरी सूचियाँ (एज्रा 2:1ff; नहे. 7:6ff)
     - कुस्रू की राजाज्ञा (एज्रा 1:1ff)
   - घ. अवधि – 538 से 445 ई.पू.
   - च. अवसर – लौट आए यहूदियों के लिए एज्रा और नहेम्याह के अधीन मन्दिर और दीवारों के पुनःनिर्माण और सुधारों को लिखने की जरूरत, ताकि वे प्रभु की ओर विश्वासयोग्य रहें।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "एज्रा"
     - इब्रानीः Esdara ("एज्रा, यहोवा सहायता करता है")
     - यूनानीः Exdras ("एज्रा")
     - इब्रानीः नहेम्याह ("नहेम्याह, यहोवा की सान्त्वना")
     - यूनानीः Neemias ("नहेम्याह")

ख. विषय – यहूदी निर्वासितों की वापसी, और मन्दिर के पुनःनिर्माण और व्यवस्था की पुनःस्थापना के द्वारा धामिक जीवन की पुनःशुरूआत।

ग. उद्देश्य –

- एज्राः यह दिखाना कि किस प्रकार कुस्रू की राजाज्ञा यहूदियों की वापसी, मन्दिर के पुनःनिर्माण, धार्मिक सुधारों की स्थापना का कारण बनी, जिससे पश्चातापी अल्पसंख्यक वर्ग को नबियों द्वारा की गई प्रतिज्ञा पूरी हुई।
- नहेम्याहः यह विवरण लिखना कि किस प्रकार नहेम्याह के अधीन यहूदियों की वापसी यरूशलेम की दीवारों के पुनःनिर्माण और अन्त में मूसा की वाचा की ओर पुनःवचनबद्धता का कारण बनी।

घ. मूल वचनः (एज्रा 6:14; 7:10) "तब यहूदी पुरनिये, हाग्गै नबी और इद्दो के पोते तकर्याह के नबूबत करने से मन्दिर को बनाते रहे, और सफल भी हुए। उन्होने इस्राएल के परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार और फारस के राजा कुस्रू, दारा, और अर्तक्षत्र की आज्ञाओं के अनुसार बनाते बनाते उसे पूरा कर दिया।...क्योंकि एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ जान लेने, और उसके अनुसार चलने, और इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिए अपना मन लगाया था।"

एस्तेरः सारांश

1. पृष्ठभूमि

   क. लेखक - अज्ञात (मोर्दकै ?)

   ख. तारीख – 450-400 ई.पू.

   ग. स्रोत - अज्ञात

   घ. अवधि – क्षयर्ष का शासन, 486-465 ई.पू.

   च. अवसर - पूरीम का पर्व कैसे शुरू हुआ का विवरण लिखना, क्योंकि यह तोरह में निर्धारित नहीं किया गया है।

2. विषय-वस्तु

   क. शीर्षक – "एस्तेर"

   - इब्रानीः Hadassah ("मेहँदी")
   - यूनानीः एस्तेर (फारसी "stara" से, "star तारा")

   ख. विषय – यहूदियों की विधाता के विधान के कारण शत्रुओं पर विजय।

   ग. उद्देश्य - एक एतिहासिक विवरण लिखने के लिए कि किस प्रकार एक पर्व जो तोरह में निर्धारित नहीं किया गया है फारसी हामान के षड्यन्त्र और विनाश से शुरू हुआ, और कि परमेश्वर अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए लोगों को प्रभाव के महत्त्वपूर्ण पदों पर रखेगा।

काव्य और बुद्धि साहित्य की भूमिका

अय्यूब से श्रेष्ठगीत, विलापगीत

1. पुस्तकें

   अ. प्रकृतिः

      1. काव्य

         क. पुस्तकेंः अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, श्रेष्ठगीत, विलापगीत

         ख. दूसरी पुस्तकों के भागः

            1. लेमेक का शोकगीत (उत्पत्ति 4:23-24)
            2. इसहाक का आशीर्वाद (उत्पत्ति 27:27-29) और याकूब (उत्पत्ति 49:2-27)
            3. मूसा और मरियम का गीत (निर्गमन 15:1-18, 21)
            4. भविष्यवाणी साहित्य

      2. बुद्धि

क. पुस्तकें: अय्यूब, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत और कुछ भजन। (1, 10, 14, 19, 37, 49, 73, 90, 112)

2. इब्रानी काव्य की प्रकृति
   अ. परिभाषा
   इब्रानी काव्य और गीत विचारों को, न कि शब्दों को मिलाता था। इसे समान्तरता कहते हैं: एक साथ लिखी दो पंक्तियाँ, जो समान विचार व्यक्त करती हैं।
   आ. किस्में
      1. गीत – भजन संहिता
      2. शिक्षात्मक – नीतिवचन
      3. नाटकीय (कहानी) - अय्यूब

3. इब्रानी बुद्धि की प्रकृति
   अ. परिभाषा
   Hokhmah ("बुद्धि") परमेश्वर और मनुष्यों के साथ सफलतपूर्वक जीने के लिए व्यवहारिक अन्तर्दृष्टि है। इब्रानी बुद्धि अनोखी है, क्योंकि यह परमेश्वर के भय पर आधारित है।
   आ. किस्में
      1. नीतिवचन (mashal) - जीवन के बारे में संक्षिप्त और बहुत मार्मिक कहावतें (नीतिवचन)।
      2. नाटकीय कहानी (अय्यूब)
      3. मानवीकरण (नीतिवचन 1-9)

अय्यूब: सारांश

1. पृष्ठभूमि
   क. लेखक - अनजान और अज्ञात (कुछ विद्वान लेखक का श्रेय मूसा को देते हैं)।
   ख. तारीख - अज्ञात (अय्यूब की जीवनचर्या, रीति-रिवाज और सामान्य जीवन-शैली पैतृक युग से काफी मिलती जुलती है जो लगभग 200-1800 ई.पू. का है।)
   ग. अवसर – वास्तव में अज्ञात है क्योंकि लेखक और तारीख अनिश्चित हैं। सम्भव है ऐसा समय था जब परमेश्वर के लोग दुख-तकलीफ में से गुज़र रहे थे।
2. विषय-वस्तु
   क. शीर्षक – "अय्यूब"
      - इब्रानी: Iyyob ("अय्यूब" सम्भवत: "लौट आओ / मन फिराओ")
      - यूनानी: Job ("अय्यूब")
   ख. विषय – दुख-तकलीफ का महत्त्व
   ग. उद्देश्य – परमेश्वर का स्वभाव, उसकी बुद्धि, सामर्थ और दया जो धर्मी के दुख-तकलीफ में दिखती है दिखाना, और कि अन्त में हम उसमें और उसकी भलाई और न्याय में पूरा भरोसा कर सकते हैं।

भजन संहिता: सारांश

1. पृष्ठभूमि
   क. लेखक –
      - दाऊद – 73 भजन (पुस्तक 1-37; 2-18; 3-1; 4-2; 5-15)
      - आसाप – 12 (भजन 50, 73-83)
      - कोरहवंशी – 11 (भजन 42-49, 84, 87, 88)

- सुलेमान – 2 (भजन 72, 127)
- मूसा – 1 (भजन 90)
- एतान – 1 (भजन 89)
- अज्ञात – 50

ख. तारीख - अधिकाँश दाऊद के समय (लगभग 1000 ई.पू.) के हैं, और कुछ पहले के मूसा के समय (1400/1200 ई.पू.) के हैं और बाद के बेबीलोन की बँधुआई के समय (लगभग 586-538 ई.पू.) के हैं। भजन 90 और 137 देखो।

ग. अवसर –

1. पुस्तक 1 (भजन 1-41) सम्भवतः दाऊद या उसके निर्देश में किसी ने उसके शासनकाल में व्यवस्थित की थी, जबकि अधिकाँश दाऊद की प्रार्थना की पुस्तक के रूप में लिखे गए थे।
2. पुस्तक 2 (भजन 42-72) और 3 (भजन 73-89) सम्भवतः बाद में कभी इकट्ठे किए गए थे जब इस्राएल आत्मिक जागृति अनुभव कर रहा था (हिजकिय्याह 725 ई.पू. या योशिय्याह 625 ई.पू.)।
3. पुस्तक 4 (भजन 90-106) और 5 (भजन 107-150) विविध भजनों और प्रार्थनाओं का संग्रह है, जिनमें से कुछ यरूशलेम में मन्दिर और इसकी आराधना में इस्तेमाल किए जाते थे।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "भजन संहिता"

- इब्रानीः tehillim ("स्तुति", स्तुति के बारे में 40 भजन, 75 प्रार्थना के बारे में)
- यूनानीः psalterion ("गीत")

ख. विषय – परमेश्वर के लोगों की व्यक्तिगत और सामूहिक स्तुति और प्रार्थना।

ग. उद्देश्य – यह दिखाना कि किस प्रकार इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों की छुटकारे की याचनाओं को सुनाता है, और इस प्रकार उनकी स्तुति और धन्यवाद के योग्य है (पाँचों में से हर भागः पुस्तकें 1 से 5 – स्तुति के साथ समाप्त होती हैं)।

घ. मूल वचनः (भजन 145:20-21) "यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करता, परन्तु सब दुष्टों का सत्यानाश करता है। मैं यहोवा की स्तुति करूँगा, और सारे प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहें।"

नीतिवचनः सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक – सुलेमान (1:1-9:18; 10:1-22:16; 25:1-29:27)
लगभग 375 नीतिवचन

- "बुद्धिमान" (22:17-23:22; 23:23-34)
- आगूर (30:1-33)
- राजा लमूएल (31:1-9; 31:10-31)

ख. तारीख - अधिकाँश सुलेमान के समय में (लगभग 971-931 ई.पू.); 1 राजा 4:32 देखो।

ग. अवसर – नौजवानों को बुद्धि और सही जीवन जीने में बुद्धिमान कहावतों को दोहराने के द्वारा सिखाने के लिए "वर्षों की बुद्धि" का संग्रह करने की जरूरत।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "नीतिवचन"

- इब्रानीः mishele ("नीतिवचन / दृष्टान्त")
- यूनानीः paroimia ("नीतिनवचन / दृष्टान्त")

ख. विषय – प्रभु के भय पर आधारित बुद्धि के वचन।

ग. उद्देश्य - बुद्धिमानों की व्यवहारिक अन्तर्दृष्टि को लिख लेना, ताकि आनेवाली पीढ़ी बुद्धिमानी से और भक्तिपूर्ण जीवन जी सके।

घ. मूल वचनः (नीतिवचन 1:7) "यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ लोग ही तुच्छ जानते हैं।"

सभोपदेशकः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक - अज्ञात, सुलेमान को श्रेय दिया गया है (1:1,16; 2:7-8
   - ख. तारीख – सुलेमान का समय (लगभग 971-931 ई.पू.)
   - ग. अवसर – राजा सलेमान का अपने जीवन की निस्सारताओं पर चिन्तन, उसकी मृत्यु से पहले लिखी गई ताकि दूसरे उनसे सीख सकें।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "सभोपदेशक"
     - इब्रानीः qohelet ("जो एकत्र करता है")
     - यूनानीः ekklesiastes ("जो एकत्र करता है")
   - ख. विषय - परमेश्वर से अलग जीवन की निस्सारताओं पर उपदेश।
   - ग. उद्देश्य – प्रभु के भय से अलग जीवन की खोजों के खालीपन को स्पष्ट रूप से चित्रित करना।
   - घ. मूल वचनः (सभोपदेशक 12:13) "सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है।"

श्रेष्ठगीतः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – सुलेमान (1:5; 3:7, 9, 11; 8:11-12)
   - ख. तारीख – सुलेमान का शासनकाल (लगभग 971-931 ई.पू.)
   - ग. अवसर - अनिश्चित
   - घ. व्याख्या -
     1. लाक्षणिकः परमेश्वर और इस्राएल, मसीह और कलीसिया
     2. नाटकीयः सुलेमान और शुलेम्मिन लड़की की प्रेम कहानी
     3. शाब्दिकः रत्यात्मक प्यार के गीत/कविताएँ
     4. शिक्षाः सच्चे प्रेम का अजूबा और शुद्धता
     5. रोमानीः विवाह के गीत
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "श्रेष्ठगीत"
     - इब्रानीः shir has – shirim ("गीतों का गीत" = "श्रेष्ठगीत")
     - यूनानीः asma ("गीत")
   - ख. विषय – एक वर और बधु के बीच रोमाँस के प्यार के गीत।
   - ग. उद्देश्य - एक पुरुष और एक स्त्री के बीच प्यार की सुन्दरता और कोमलता दिखाना, इसका उद्देश्य लक्षण के रूप में परमेश्वर के आन्तरिक और गहरे प्रेम को जो मनुष्यजाति के लिए है दर्शाता भी है।
   - घ. मूल वचनः (श्रेष्ठगीत 8:6) "मुझे नगीने के समान अपने हृदय पर लगा रख, और ताबीज के समान अपनी बाँह पर रख; क्योंकि प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी है, और ईर्ष्या कब्र के समान निर्दयी है।"

भविष्यद्वक्ताओं की भूमिका

यशायाह से मलाकी तक

1. वर्गीकरण (पानेवालों के अनुसार)
    क. इस्राएल को: होशे और आमोस
    ख. यहूदा को: योएल, यशायाह, मीका, सपन्याह, विलापगीत, यिर्मयाह, हबक्कूक, हाग्गै, जकर्याह, और मलाकी।
    ग. नीनवे (अश्शूर) को: योना और नाहूम
    घ. बेबीलोन को: दानिय्येल
    च. बेबीलोन में निर्वासितों को: यहेजकेल
    छ. एदोम को: ओबद्याह
2. भविष्यद्वक्ता की परीभाषा
    क. शब्द (1 इतिहास 29:29 देखो)
        1. नबी – "(परमेश्वर द्वारा) बुलाया गया"
        2. Ro'eh – "दर्शी" ("देखना" मूल शब्द से)
        3. Hozeh – "दर्शी / नबी" ("देखना" मूल शब्द से)
        एक भविष्यद्वक्ता एक व्यक्ति है जिसे परमेश्वर ने उसके वचनों और इच्छा को बताने के लिए (मुख्य रूप से अपने लोगों को) अपना प्रवक्ता होने को बुलाया है।
    ख. वर्णन
        1. "बोलना" (अक्सर) – परमेश्वर की इच्छा बताने के लिए परमेश्वर का प्रवक्ता, सामान्य रूप से वर्तमान के लिए।
        2. "भविष्यवाणी करना" (विरला) – परमेश्वर की इच्छा बताने के लिए परमेश्वर का प्रवक्ता, भविष्य में होनेवाली घटनाओं के दृष्टिकोण से खासकर वर्तमान के लिए।
3. भविष्यवाणी की प्रकृति
    क. स्रोत - अलौकिक (2 पतरस 1:20-21)
    ख. साधन:
        1. स्वप्न और रात के दर्शन (गिनती 12:6)
        2. दर्शन और बढ़ी हुई चेतना (यशायाह 2:1; 29:7; आमोस 1:1; मीका 1:1)
        3. परमेश्वर से सीधी मुलाकात (2 राजा 20:1-6; यशायाह 6:1-10; 38:4)
        4. प्रकाशन के साथ एतिहासिक घटनाएँ (यिर्मयाह 21:2; 36:1-26; 42:7-22)
        5. भविष्यद्वक्ता के जीवन की घटनाएँ (यशायाह 39:1-8)
    ग. उद्देश्य – नैतिक (आमोस 4:12; 2 पतरस 3:11; 1 यूहन्ना 3:3)
    घ. परिप्रेक्ष्य – दो विमीय
    "क्या" और "कौन" "कब" से स्पष्ट है, इसलिए समय का आयाम सटीक नहीं है लेकिन हमेशा करीब है (यशायाह 13:6; यहेजकेल 30:3; योएल 1:5; ओबद्याह 15; सपन्याह 1:7, 14; मत्ती 10:23; 16:28; 24:34; याकूब 5:8-9; 1 थिस्स. 4:15; फिलि. 4:5; प्रकाशित. 1:1,3; 22:6, 10, 12 , 20)।
    च. नमूना – सन्तुलित
        1. वर्तमान संकट परमेश्वर का पाप का न्याय है; इसलिए, मन फिराओ और "प्रभु का दिन" (उदाहरण, राष्ट्रों का न्याय) के दृष्टिकोण से परमेश्वर के पास लौट आओ।
        2. परमेश्वर क्षमा करेगा और फिर आशीष देगा।
        3. यशस्वी भावी मसीहा का युग आ रहा है, और एक महान श्रेष्ठ व्यक्ति भी।
    छ. परीक्षण (झूठे नबीयों के लिए)
        क. पूर्ति (व्यवस्था. 18:20-22)
        ख. राष्ट्रीय धार्मिकता (व्यवस्था. 13:1-5; यिर्मयाह 23:13-14)
        ग. व्यक्तिगत धार्मिकता (यिर्मयाह 23:9-12; मत्ती 7:15-20)

यशायाह: सारांश

1. पृष्ठभूमि
    क. लेखक – यशायाह

ख. तारीख – लगभग 740-681 ई.पू., उज्जिय्याह, योताम, आहाज, हिजकिय्याह, और मनश्शे के शासनकाल के दौरान (1:1)।

ग. अवसर - अश्शूरियों के बढ़ते हुआ खतरा परमेश्वर के लोगों को समझने और सुरक्षा के लिए उनका भरोसा प्रभु पर डालने की जरूरत को रेखांकित करता है (इस्राएल का 734 ई.पू. का सीरिया की ओर से संकट; 701 ई.पू. का अश्शूरियों की ओर से संकट)।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "यशायाह"

- इब्रानी: Yeshu 'yahu ("परमेश्वर उद्धार है")
- यूनानी: Esaiah ("यशायाह")

ख. विषय - केवल परमेश्वर ही उद्धार है, इसलिए केवल उस पर ही भरोसा कर।

ग. उद्देश्य – यरूशलेम और यहूदा को आस-पास के देशों की शक्ति के बजाय उद्धार और छुटकारे के लिए परमेश्वर पर उनका भरोसा रखने के द्वारा उसकी वाचा और धार्मिकता की ओर वापस बुलाना।

घ. मूल वचन: (यशायाह 49:6) "यह तो हलकी सी बात है कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिए मेरा सेवक ठहरे; मैं तुझे जाति-जाति के लिए ज्योति ठहराऊँगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक और से दूसरी ओर तक फैल जाए।"

यिर्मयाह: सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक – यिर्मयाह

ख. तारीख – लगभग 627-575 ई.पू. योशिय्याह, यहोआहाज, यहोयाकीम, यहोयाकीन, और सिदकिय्याह के शासनकाल के दौरान (1:1-3)

ग. अवसर – यहूदा का बढ़ता हुआ धर्मत्याग, और बेबीलोनियों द्वारा यहूदा की सन्निकट तबाही, यिर्मयाह द्वारा परमेश्वर के वचन के मूल्याँकन की माँग करती है।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "यिर्मयाह"

- इब्रानी: Yimeyahu ("परमेश्वर स्थापित करता है / उठाता है")
- यूनानी: Ieremias ("यिर्मयाह")

ख. विषय – मन फिराना या निकाल देना

ग. उद्देश्य – यहूदा को आनेवाले न्याय की चेतावनी देना ताकि वे मन फिराएँ और परमेश्वर की ओर फिरें, जिससे उन्होंने विद्रोह किया है और मुँह मोड़ लिया है।

घ. मूल वचन: (यिर्मयाह 4:14) "हे यरूशलेम, अपना हृदय बुराई से धो, कि तुम्हारा उद्धार हो जाए।"

विलापगीत: सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक – अज्ञात, यिर्मयाह को श्रेय दिया गया है।

ख. तारीख – लगभग 586 ई.पू., यरूशलेम के पतन के समय।

ग. अवसर – यरूशलेम के पतन के समय परमेश्वर के पवित्र नगर की दुखद तबाही पर परमेश्वर के नबी के दिल से एक मातमी शोकगीत निकलता है।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "विलापगीत"

- इब्रानी: ekah ("हाय! ओह! कैसे!")
- यूनानी: Threnoi ("शोकगीत / विलाप")

ख. विषय – यरूशलेम के दुखद विनाश पर दर्दभरे शोकगीत।

ग. उद्देश्य – यरूशलेम के पतन पर क्योंकि इसने इसके मूर्तिपूजक धर्मत्याग (परमेश्वर का त्याग) से मन फिराने का बारंबार इन्कार किया था, यिर्मयाह नबी द्वारा बड़ा दुख प्रकट करना।

घ. मूल वचनः (विलापगीत 2:17) "यहोवा ने जो कुछ ठान लिया था वही किया भी है, जो वचन वह प्राचीनकाल से कहता आया है वही उसने पूरा भी किया है।"

यहेजकेलः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – यहेजकेल
   - ख. तारीख – लगभग 597-571 ई.पू., यहोयाकीन और सिदकिय्याह के शासनकाल के दौरान (1:2)
   - ग. अवसर - बेबीलोन में निर्वासित किए गए यहूदियों को जानने की जरूरत है कि परमेश्वर ने यरूशलेम को 586 ई.पू. में इसके अन्तिम पतन के बारे में चेतावनी और पश्चातापियों के लिए पुनःस्थापना की प्रतिज्ञा के रूप में क्या कहा है।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "यहेजकेल"
     - इब्रानीः Yehezqel ("परमेश्वर बल बढ़ाता है")
     - यूनानीः Iesekiel ("यहेजकेल")
   - ख. विषय – परमेश्वर के पहरेदार की यहूदा को चेतावनियाँ, साथ में पश्चातापी के लिए देश और मन्दिर के पुनःस्थापना की प्रतिज्ञाएँ।
   - ग. उद्देश्य – यहूदा पर आनेवाले न्याय की चेतावनी देने और बचे हुए धर्मियों के भावी पुनःस्थापना के लिए दीवार पर पहरेदार के रूप में खड़े रहना।
   - घ. मूल वचनः (यहेजकेल 18:31-32) "अपने सब अपराधों को जो तुमने किए हैं, दूर करो; अपना मन और अपनी आत्मा बदल डालो! हे इस्राएल के घराने तुम क्यों मरो? क्योंकि, प्रभु की यह वाणी है, जो मरे, उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता, इसलिए पश्चाताप करो, तभी तुम जीवित रहोगे।"

दानिय्येलः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – दानिय्येल
   - ख. तारीख - लगभग 605-536 ई.पू., नबूकदनेस्सर, एवील्मरोदक, बेलतशस्सर, कुस्रू/दारा के शासनकाल के दौरान (1:1,21)।
   - ग. अवसर – परमेश्वर के लोग जो दवाब में हैं उन्हें दानिय्येल के भावी घटनाओं के छुटकारे और दर्शनों के अनुभवों से प्रोत्साहित करने की जरूरत।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "दानिय्येल"
     - इब्रानीः दानिय्येल ("परमेश्वर मेरा न्यायी है")
     - यूनानीः दानिय्येल ("दानिय्येल")
   - ख. विषय - अपने लोगों के छुटकारे के लिए संसार की शक्तियों को अभिभूत कर देने का परमेश्वर का प्रभुत्व।
   - ग. उद्देश्य – परमेश्वर के लोगों को यह दिखा कर प्रोत्साहित करना कि वह राष्ट्रों के सम्पूर्ण नियंत्रण में है और अपने लोगों को अब और भविष्य में भी छुड़ाने के लिए हस्तक्षेप करता है।
   - घ. मूल वचनः (दानिय्येल 7:13-14) "और देखो, मनुष्य के सन्तान-सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था ... तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।"

होशेः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – होशे
   - ख. तारीख – लगभग 760-723 ई.पू., यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के दौरान (1:1)
   - ग. अवसर – होशे इस्राएल के उत्तरी राज्य के अन्तिम वंश का नबी था, जिस समय परमेश्वर ने विश्वासघाती इस्राएल के प्रति अपने प्रेम के बारे में होशे के द्वारा बातें कीं जिन्होंने यारोबाम द्वितीय से होशे के शासनकाल के दौरान झूठे देवताओं के पीछे चलने और उनकी उपासना करने में खुद को बेच दिया था। (2 राजा 14:23 – 20:21)
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "होशे"
     - इब्रानीः होशे ("उद्धार")
     - यूनानीः Osee ("होशे")
   - ख. विषय - एक प्रेमी परमेश्वर के पास घर लौट आओ जो अपनी "विरक्त" पत्नी का धीरज के साथ इन्तज़ार करता है।
   - ग. उद्देश्य – अपने निरंकुश इस्राएली लोगों के प्रति, उन्हें लगातार अपने मार्गों पर चलने के लिए बुलाते रहने के द्वारा परमेश्वर की दया और प्रेम को चित्रित करना और घोषित करना।
   - घ. मूल वचनः (होशे 14:1) "हे इस्राएल, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आ, क्योंकि तू ने अपने अधर्म के कारण ठोकर खाई है।"

योएलः साराश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – योएल
   - ख. तारीख - अनिश्चित, 835 से 500 ई.पू. के बीच।
   - ग. अवसर - एक चारगुणा टिड्डियों की विपत्ति और सूखा परमेश्वर के लोगों के अगुओं के बुलावे का कारण बनते हैं कि वे लोगों को प्रार्थना, उपवास और पश्चाताप के लिए इकट्ठा करें।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "योएल"
     - इब्रानीः Yoel ("यहोवा परमेश्वर है")
     - यूनानीः Ioel ("योएल")
   - ख. विषय – टिड्डियों की विपत्ति के विनाश से पश्चाताप के द्वारा छुटकारा।
   - ग. उद्देश्य - आत्मिक अगुओं को परमेश्वर के लोगों को पश्चाताप करने के लिए बुलाने के लिए आग्रह करना, ताकि प्रभु उनके देश को पुनःस्थापित कर दे और प्रभु के दिन राष्ट्रों का न्याय करे।
   - घ. मूल वचनः (योएल 2:25-26) "जिन वर्षों की उपज अर्बे नामक टिड्डियों, और येलेक, और हासील ने, और गाजाम नामक टिड्डियों ने, अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिसको मैं ने तुम्हारे बीच भेजा, खा ली थी, मैं उसकी हानि तुम को भर दूँगा। ... मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी।"

आमोसः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक - आमोस (यहूदा में तकोआ से)
   - ख. तारीख – लगभग 760-750 ई.पू., यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के दौरान।
   - ग. अवसर – यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के दौरान बढ़ती हुई समृद्धि और आत्मिक पतन ने अभिमान, स्वार्थीपन, लालच, अत्याचार और नैतिक क्षय को जगह दे दी थी, और इसलिए आमोस के द्वारा पश्चाताप के आह्वान की जरूरत। (2 राजा 14:23-15:7; 2 इतिहास 26)

2. विषय-वस्तु
   क. शीर्षक – "आमोस"
      - इब्रानीः आमोस ("बोझ / बोझ-धारक")
      - यूनानीः आमोस ("आमोस")
   ख. विषय – परमेश्वर की वाचा के प्रति उसके विश्वासघात के कारण इस्राएल पर सन्निकट न्याय का बोझ।
   ग. उद्देश्य – इस्राएल को परमेश्वर के प्रति उसके विश्वासघात के फलस्वरूप उसके सामाजिक और आत्मिक पापों के कारण उस पर आनेवाले न्याय की चेतावनी देना।
   घ. मूल वचनः (आमोस 8:11) "देखो, ऐसे दिन आते हैं, जब मैं इस देश में महँगी करूँगा; उस में न तो अन्न की भूख और न पानी की प्यास होगी, परन्तु यहोवा के वचनों के सुनने ही की भूख प्यास होगी।"

ओबद्याहः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   क. लेखक - ओबद्याह
   ख. तारीख - अनिश्चित, सम्भवतः 586 ई.पू. के तुरन्त बाद।
   ग. अवसर - अगर यह यरूशलेम के पतन (586 ई.पू.) के आस-पास लिखी गई है तो यह पुस्तक एदोमियों की यहूदा को हराने में बेबीलोनियों की गलत और दुष्ट सहायता के कारण लिखी गई।
2. विषय-वस्तु
   क. शीर्षक – "ओबद्याह"
      - इब्रानीः Obedya ("परमेश्वर का सेवक")
      - यूनानीः Obdiou ("ओबद्याह")
   ख. विषय - एदोम का घमण्ड उसके सत्यानाश और न्याय का कारण बना क्योंकि वह वही काटा जो उसने बोआ।
   ग. उद्देश्य - एदोम जो इस्राएल की "सदा की परेशानी" था, पर आनेवाले न्याय का कारण और प्रकृति सूचित करना।
   घ. मूल वचनः (ओबद्याह 3) "हे पहाड़ों की दरारों में बसनेवाले, हे ऊँचे स्थान में रहनेवाले, तेरे अभिमान ने तुझे धोखा दिया है; तू मन में कहता है, "कौन मुझे भूमि पर उतार देगा?"

योनाः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   क. लेखक – योना
   ख. तारीख – लगभग 785-750 ई.पू. (2 राजा 14:25 देखो)।
   ग. अवसर – नीनवे के पाप के कारण परमेश्वर एक नबी को पश्चाताप का प्रचार करने को भेजता है, ताकि ईश्वरीय न्याय टाला जा सके हालाँकि नीनवे एक अन्यजाति (गैर-यहूदी) देश है। होता यह है कि नीनवे के लोग "प्रकृतिक" विपत्तियों के कारण योना द्वारा परमेश्वर के संदेश को सुनने के लिए "तैयार" थे (765 ई.पू. और 759 ई.पू. में विपत्तियाँ और 763 में सूर्य ग्रहण)।
2. विषय-वस्तु
   क. शीर्षक – "योना"
      - इब्रानीः Jonah ("पंडुक")
      - यूनानीः Jonas ("योना")
   ख. विषय – पश्चातापी गैर-यहूदी देशों के लिए परमेश्वर की असीम दया।
   ग. उद्देश्य – अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के प्रेम और दया की तुलना में एक यहूदी नबी की संकीर्ण अज्ञानता और पक्षपात दिखाना।

घ. मूल वचनः (योना 4:2) "इसी कारण मैं ने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शीश को भाग जाने के लिए फुर्ती की; क्योंकि मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, और विलम्ब से कोप करनेवाला करुणानिधान है, और दुख देने से प्रसन्न नहीं होता।"

मीकाः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – मीका
   - ख. तारीख – लगभग 735-700 ई.पू., योताम, आहाज और हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान (1:1)
   - ग. अवसर – मीका के समव्यस्क, यशायाह की पृष्ठभूमि के समान। यशायाह राजनीतिक बुराइओं के बारे में है; मीका ज्यादा आत्मिक और सामाजिक बुराइयों के बारे में है।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "मीका"
     - इब्रानीः Mikayahu ("परमेश्वर जैसा कौन है ?") (मीका 7:18-20 देखो)
     - यूनानीः Michaias ("मीका")
   - ख. विषय – परमेश्वर की धार्मिकता और प्रभुसत्ता पर आधारित सामाजिक सुधार और व्यक्तिगत धार्मिकता।
   - ग. उद्देश्य – यहूदा में उसके लोगों के साथ परमेश्वर के विवाद की रूपरेखा खींचना और व्यक्तिगत और देश के रूप में उनके पश्चाताप और प्रभु के पास लौट आने के लिए आग्रह करना।
   - घ. मूल वचनः (मीका 6:8) "हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय के काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले ?"

नहूमः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – नहूम
   - ख. तारीख – लगभग 660-630 ई.पू.
   - ग. अवसर – 627 ई.पू. में आशुरबनीपाल की मृत्यु के साथ, 626 ई.पू. में बेबीलोन का अपनी स्वतन्त्रता का दावा करने के द्वारा अश्शूरियों के साम्राज्य के अन्त की शुरूआत होने लगी, और अन्त में मादियों के साथ अश्शूर पर आक्रमण करके 612 ई.पू. में राजधानी नीनवे का तख्ता उलट दिया।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "नहूम"
     - इब्रानीः Nahum ("सान्त्वना / शान्ति")
     - यूनानीः Naoum ("नहूम")
   - ख. विषय – यहूदा के लिए सान्त्वना और नीनवे के सान्यवाद के लिए न्याय।
   - ग. उद्देश्य – नीनवे की बड़ी दुष्टता और क्रूरता के कारण, उसकी घेराबन्दी और सत्यानाश की चेतावनी।
   - घ. मूल वचनः (नहूम 1:7-8) "यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है, और अपने शरणागतों की सुधी रखता है। परन्तु वह उमड़ती हुई धारा से उसके स्थान का अन्त कर देगा, और अपने शत्रुओं को खदेड़कर अन्धकार में भगा देगा।"

हबक्कूकः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – हबक्कूक
   - ख. तारीख – लगभग 605-598 ई.पू.

ग. अवसर – यहूदा से बेबीलोन को निर्वासितों के पहले निर्वासन के समय जब यहोयाकीम राजा था, नबी अधर्मियों के हाथों धर्मियों के सताए जाने की समस्या की चर्चा करता है।

2. विषय-वस्तु

   क. शीर्षक – "हबक्कूक"

   - इब्रानी: Habakkuk ("आलिंगन")
   - यूनानी: Ambakoum ("हबक्कूक")

   ख. विषय - जब परमेश्वर के लोग एक ऐसे राष्ट्र के द्वारा सजा पाते हैं जो उनसे भी ज्यादा अधर्मी है, तब परमेश्वर की दया और न्याय में भरोसा करने की जरूरत होती है।

   ग. उद्देश्य – न्याय में परमेश्वर के मार्गों को प्रकट करना और उसमें भरोसे की प्रतिक्रिया की पुकार करना।

   घ. मूल वचन: (हबक्कूक 2:3-4) "क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होनेवाली है, वरन् इसके पूरे होने का समय वेग से आता है; इसमें धोखा न होगा। चाहे इसमें विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना, क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उसमें देर न होगी। देख, उसका मन फूला हुआ है, उसका मन सीधा नहीं है; परन्तु धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा।"

सपन्याह: सारांश

1. पृष्ठभूमि

   क. लेखक – सपन्याह (राजा हिजकिय्याह का परपोता)

   ख. तारीख – लगभग 640-620 ई.पू. (यशायाह और मीका के बाद यहूदा में पहला नबी)

   ग. अवसर – सम्भवतः दुष्ट मनश्शे और आमोन के शासनकाल के दौरान पश्चिमी यहूदा पर स्कूतियों के हमले की आशंका के कारण पश्चाताप के लिए एक बुलावा।

2. विषय-वस्तु

   क. शीर्षक – "सपन्याह"

   - इब्रानी: Sepanya ("परमेश्वर छुपता है")
   - यूनानी: Sophonias ("सपन्याह")

   ख. विषय – क्रोध के बीच दया, क्योंकि परमेश्वर उन्हें जो खुद को दीन करते हैं और धार्मिकता की खोज करते हैं छुपा रखता है।

   ग. उद्देश्य – दीनों को न्याय के क्रोध के मध्य दया के लिए प्रभु को खोजने का आह्वान।

   घ. मूल वचन: (सपन्याह 2:3) "हे पृथ्वी के सब नम्र लोगो, हे यहोवा के नियम के माननेवालो, उसको ढूँढते रहो; धर्म को ढूँढो, नम्रता को ढूँढो; सम्भव है तुम यहोवा के क्रोध के दिन में शरण पाओ।"

हाग्गै: सारांश

1. पृष्ठभूमि

   क. लेखक – हाग्गै

   ख. तारीख – लगभग 520 ई.पू.

   ग. अवसर - बाहरी विरोध और अन्दरूनी मग्नता से मन्दिर के पुन:निर्माण का कार्य रुक गया था।

2. विषय-वस्तु

   क. शीर्षक – "हाग्गै"

   - इब्रानी: Haggai ("पर्व")
   - यूनानी: Aggaios ("हाग्गै")

   ख. विषय – मन्दिर का पुन:निर्माण शुरू करो।

   ग. उद्देश्य – लौटे हुए निर्वासितों को मन्दिर का पुन:निर्माण तुरन्त शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करना, क्योंकि परमेश्वर उनके साथ है।

घ. मूल वचनः (हाग्गै 2:4-5) “हियाब बाँधकर काम करो, क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूँ, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय जो वाचा मैं ने तुम से बाँधी थी, उसी वाचा के अनुसार मेरा आत्मा तुम्हारे बीच में बना है; इसलिए तुम मत डरो।”

जकर्याहः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक - जकर्याह
   - ख. तारीख – लगभग 520-515 ई.पू.
   - ग. अवसर - जकर्याह और हाग्गै के अधीन मन्दिर के पुनःनिर्माण के कारण जकर्याह सन्निकट परिस्थिति से परे मसीही के युग और परमेश्वर के उसके शासन के अन्तिम समापन को देखता है।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – “जकर्याह”
     - इब्रानीः Zechariah (“परमेश्वर याद रखता है”)
     - यूनानीः Zechariah (“जकर्याह”)
   - ख. विषय - बचे हुओं को परमेश्वर की सुरक्षा और इस्राएल की अन्तिम विजय का आश्वासन देना।
   - ग. उद्देश्य - जरूब्बाबेल के अधीर मन्दिर के हो रहे काम को प्रोत्साहन देना; अन्तिम विजय के पूर्वाभास में प्रभु के लिए धार्मिक जीवन जीने को प्रोत्साहन देना।
   - घ. मूल वचनः (जकर्याह 8:13) “हे यहूदा के घराने, और इस्राएल के घराने, जिस प्रकार तुम जाति-जाति के बीच शाप के कारण थे उसी प्रकार मैं तुम्हारा उद्धार करूँगा, और तुम आशीष के कारण होगे। इसलिए मत डरो, और न तुम्हारे हाथ ढीले पड़ने पाएँ।”

मलाकीः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – मलाकी (क्योंकि नाम का अर्थ “संदेशवाहक” है, कुछ को लगता है कि “मलाकी” शायद लेखक का नाम न हो।)
   - ख. तारीख – लगग 433-420 ई.पू.
   - ग. अवसर – निराशा और ढीलेपन के कारण परमेश्वर के लोग उसके प्रेम पर शक करने लगते हैं और केवल अनिच्छा से उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, और कहते हैं कि परमेश्वर की शर्तों को मानना बेकार है।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – “मलाकी”
     - इब्रानीः Malachiah (“मेरा संदेशवाहक”)
     - यूनानीः Malachias (“मलाकी”)
   - ख. विषय – पवित्र जीवन जीने के द्वारा परमेश्वर की ओर वास्तविकता और निष्कपटता में लौट आओ।
   - ग. उद्देश्य – परमेश्वर के लोगों को आराधना में शुद्धता, जीवन जीने में पवित्रता, और देने में उदारता में लौट आने में बुलाना।
   - घ. मूल वचनः (मलाकी 3:7) “अपने पुरखाओं के दिनों से तुम लोग मेरी विधियों से हटते आए हो, और उनका पालन नहीं करते। तुम मेरी ओर फिरो, तब मैं भी तुम्हारी ओर फिरूँगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।”

पुराने नियम का सारांश

1. ईश्वरीय प्रकाशन
    क. सामान्य (उत्पत्ति 1-11)
        1. सृष्टि के द्वारा (बाहरी; रोमियों 1:18-21 देखो)
        2. विवेक के द्वारा (अन्दरूनी; रोमियों 2:12-16 देखो)
    ख. खास (उत्पत्ति 12 – मलाकी 4)
        1. वाचा के द्वारा
            अ. "मैं तेरा परमेश्वर रहूँगा"
            आ. "तुम मेरे लोग रहोगे"
            इ. "मैं तुम्हारे साथ वास करूँगा"
        2. आज्ञा के द्वारा
            अ. नबीयों से – परमेश्वर का वचन प्रकट करते हैं
            आ. याजकों से – परमेश्वर की शर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं
            इ. राजाओं से – परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में शासन करते हैं
2. मनुष्य की प्रतिक्रिया (न्यायियों - एस्तेर, यशायाह – मलाकी)
    क. आत्मिक – मूर्तिपूजा ("तू हमारा परमेश्वर नहीं रहेगा" ... अनेक देवता)
    ख. व्यक्तिगत - अनैतिकता और कामविकृति ("हम तेरे लोग नहीं रहेंगे" ... अनेक पत्नियाँ)
    ग. सामाजिक – भ्रष्टता और चरित्रहीनता ("तू हमारे मध्य वास नहीं करेगा" ... अनेक पाप और दुख)
3. आशा की प्रतिज्ञा
    क. बड़ा नबी - एक स्वर्गीय मनुष्य का पुत्र (व्यवस्था. 18:15-18; दानिय्येल 7:13-14)
    ख. सिद्ध याजक - एक दु:ख भोग दास (यशायाह 52:13-53:12)
    ग. धर्मी राजा – दाऊद का पुत्र (यशायाह 9:6-7; 11:1-5)

सुसमाचार की पुस्तकें: भूमिका

मत्ती से यूहन्ना

1. चारगुणा सुसमाचार
    क. एक सुसमाचार (1 कुरिन्थियों 15:3-8 देखो, "व्याख्या की गई घटनाएँ"; प्रेरितों 1:1)
        1. यीशु के कार्य
        2. यीशु के वचन
    ख. चार चित्र: एक अनोखा परिदृश्य (यहेजकेल 1:10 देखो)
        1. मत्ती: दाऊद के वंश का मसीहा (शेर-जैसा)
        2. मरकुस: दुख भोग दास (बैल-जैसा)
        3. लूका: दयालु उद्धारकर्त्ता (मनुष्य-जैसा)
        4. यूहन्ना: ईश्वरीय मसीहा (उकाब-जैसा)
    ग. दो दल
        1. सहदर्शी (सामान्य सामग्री और दृष्टिकोण)
        2. चौथा सुसमाचार (ज्यादा जानकारी के साथ 92% निराली सामग्री)
    घ. लेखक
        1. अधिकार / प्रामाणिकता
            अ. सीधी या अप्रत्यक्ष प्रेरितिक स्रोत

आ. प्रेरितिक शिक्षा

इ. कलीसिया का इस्तेमाल

मत्तीः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक - अज्ञात, प्रेरित मत्ती ("लेवी" नाम भी था – मरकुस 2:14 देखो) को श्रेय दिया गया है।
   - ख. लिखने का स्थान – पलिस्तीन या अन्ताकिया ?
   - ग. लिखने की तारीख – सन् 70-80
   - घ. गन्तव्य – पलिस्ती या अन्ताकियी यहूदी/अन्यजाति
   - च. अवसर – पलिस्तीन या अन्ताकिया में विश्वासियों को "सबकुछ जो मसीह ने आज्ञा दी थी" में शिक्षा की जरूरत थी।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "दाऊदी मसीहा का सुसमाचार"
   - ख. विषय – नए मसीहा के अधीन नए इस्राएल के लिए शिक्षा
   - ग. उद्देश्य – यूनानी/रोमी संस्कृति में रह रहे यहूदियों और अन्यजाति चेलों को उन सब चीजों को मानने में जिनकी आज्ञा मसीह ने नए इस्राएल के प्रतिज्ञात दाऊदी मसीहा के रूप में दी थी मदद करने में शिक्षा रूपी एक पुस्तिका उपलब्ध कराना।
   - घ. मूल वचनः (मत्ती 28:18-20) "...सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें ... बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।"

मरकुसः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक - अज्ञात, पतरस के रिपोर्टर, मरकुस को श्रेय दिया गया है (2 पतरस 1:14-15 देखो)।
   - ख. लिखने का स्थान – रोम (1 पतरस 5:13 देखो)
   - ग. लिखने की तारीख – सन् 65 (पहले लिखे सुसमाचार के रूप में मरकुस की प्राथमिकता पर आधारित)
   - घ. गन्तव्य – रोमी अन्यजाति
   - च. अवसर – रोम में नेरो द्वारा सताए जा रहे विश्वासी।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "दुख भोग सेवक का सुसमाचार"
   - ख. विषय – दुख भोगने के द्वारा विजय का मसीह का उदाहरण।
   - ग. उद्देश्य – रोम में दुख उठा रहे अन्यजाति मसीहियों को यह दिखा कर प्रोत्साहित करना कि किस प्रकार मसीह ने एक सेवक के रूप में जिसने परमेश्वर की इच्छा पूरी की दुख भोगने के द्वारा विजय प्राप्त की।
   - घ. मूल वचनः (मरकुस 10:45) "क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे।"

लूकाः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक - अज्ञात, लूका को श्रेय दिया गया है (दो-खंड ग्रन्थ का पहला खंड – प्रेरितों 1:1 और प्रेरितों 16:10-17; 20:5-21:18; 27:1-28:16 में "हम" अनुच्छेदों को देखो)।
   - ख. लिखने का स्थान – सम्भवतः कैसरिया/रोम
   - ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 70-85 ?

घ. गन्तव्य – थियुफिलुस को (सम्भवतः रोम में रह रहा था)

च. अवसर – रोमी अधिकारी को मसीहियत के बारे में जानने की जरूरत है।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "दयालु उद्धारकर्त्ता का सुसमाचार"

ख. विषय – मसीह के वचनों और कार्यों का क्रमानुसार विवरण

ग. उद्देश्य - एक रोमी अधिकारी, थियुफिलुस के लिए मसीह के जीवन का एक क्रमानुसार विवरण लिखना, ताकि वह मसीह और उसके चेलों के बारे में सच्चाई जान सके।

घ. मूल वचनः (लूका 2:10-11) "मत डरो; क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ जो सब लोगों के लिए होगा, कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।"

यूहन्नाः सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक - अज्ञात, प्रेरित यूहन्ना को श्रेय दिया गया है ("प्रिय चेला" – 13:23; 18:15; 19:26-27; 20:2, 8; 21:20-24 देखो)।

ख. लिखने का स्थान – इफिसुस

ग. लिखने की तारीख – सन् 90-100

घ. गन्तव्य – इफिसुस के आस-पास के यहूदी और अन्यजाति

च. अवसर – पंथों और विधर्मी शिक्षाओं के बढ़ने के समय में विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों को जानने की जरूरत है कि मसीह वास्तव में कौन है।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "ईश्वरीय मसीहा का सुसमाचार"

ख. विषय – यीशु का जीवन और चमत्कार उसके मसीही होने का प्रमाण हैं।

ग. उद्देश्य – लोगों को परमेश्वर के पुत्र, मसीह में विश्वास करने में मदद करना, और ऐसा करने में खुद परमेश्वर के साथ जीवन और सम्बंध महसूस करना।

घ. मूल वचनः (यूहन्ना 20:31) "परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाएँ।"

प्रेरितों के कामः सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक - अज्ञात, लूका को श्रेय दिया गया है (16:10-17; 20:5-21:18; 27:1-28:16 में "हम" परिच्छेद देखो)।

ख. लिखने की जगह – सम्भवतः कैसरिया/रोम

ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 70-85

घ. गन्तव्य – थियुफिलुस (सम्भवतः रोम में रह रहा था)

च. अवसर – रोमी अधिकारी को मसीहियत के बारे में जानने की जरूरत है।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "मसीह की सेवकाई का प्रसार"

ख. विषय - कलीसिया के जन्म और वृद्धि का क्रमानुसार विवरण

ग. उद्देश्य - एक रोमी अधिकारी, थियुफिलुस के लिए कलीसिया के जन्म और वृद्धि का क्रमानुसार विवरण लिखना, ताकि वह मसीहियत के बारे में सच्चाई जान सके (लूका 1:1-4 देखो)।

घ. रूपरेखा – प्रेरितों 1:8 पर आधारित आवर्ती सारांश के साथ तीनगुणा रूपरेखा।

1. यरूशलेम में (2:1-6:1)
2. यहूदिया और सामरिया में (8:1-12:1)

3. पृथ्वी की छोर तक (13:1-28:31)

च. सन्धान-प्रस्तर पुस्तक

1. सुसमाचारों को पहले से मान लेती है
2. पत्रों को पहले से जान लेती है
3. चयनात्मकता:

अ. पतरस के कार्य (1-2)

आ. पौलुस के कार्य (13-28)

छ. मूल वचनः (प्रेरितों 1:8) "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

पत्रों की भूमिका

रोमियों से प्रकाशितवाक्य

1. पत्र लिखने का ढंग

(नए नियम की 27 में से 21 पुस्तकें पत्र हैं)

क. रचना का तरीका

1. लेखक ने लिखा
2. एक सचिव ने लिखा
3. बोला हुआ संदेश लिखा गया
4. पानेवाले बोला गया संदेश लिख लेते हैं

ख. लिखने का उद्देश्य

1. एक स्थानीय कलीसिया के खास से लेकर आम मामले
2. सामान्य सिद्धान्त और उपदेश

ग. पत्र का ढांचा

1. भेजनेवाला (रोमियों 1:1)
2. पानेवाले (1 कुरिं. 1:2)
3. नमस्कार (गलातियों 1:3-5)
4. मुख्य भाग (इफि. 1:3-6:20)
5. अन्तिम विदाइयाँ (कुलु. 4:7-18)

2. पत्रों का वर्गीकरण

क. सामान्य (व्यापक) पत्र

ख. खास (पौलुस के) पत्र

1. अन्त के दिनों से सम्बंधितः 1 और 2 थिस्सलुनीकियों
2. उद्धार के सिद्धान्त से सम्बंधितः गलातियों, 1 और 2 कुरिन्थियों, रोमियों
3. जेल के पत्रः इफिसियों, कुलुसियों, फिलिप्पियों, फिलेमोन
4. पास्तरीय पत्रः 1 और 2 तीमुतियुस, तीतुस

3. नए नियम के पत्रों का कालक्रम

क. प्रारंभिक अवधिः गलातियों, याकूब

ख. द्वितीय मिश्नरी यात्राः 1 और 2 थिस्सलुनीकियों

ग. तीसरी मिश्नरी यात्राः 1 और 2 किरिन्थियों. रोमियों

घ. रोम की पहली कैदः इफिसियों, कुलुसियों, फिलेमोन, फिलिप्पियों

च. स्वतन्त्रता की अवधिः 1 तीमुथियुस, 1 पतरस, तीतुस

छ. रोम की दूसरी कैदः 2 तीमुथियुस, 2 पतरस

ज. -उत्तर – पौलुस के: इब्रानियों, 1, 2, 3 यूहन्ना, यहूदा

4. पौलुस के पत्रों का अनोखापन
    क. लम्बाई – लम्बे हैं (अधिकाँश दूसरे पत्रों से तीन गुणा लम्बे हैं)
    ख. विषय-वस्तु – सिद्धान्त सम्बंधी
    ग. पानेवाले - सामुदायिक (सारी कलीसिया को)
5. 13 पत्रों के पीछे व्यक्ति, पौलुस
    क. ईश्वरीय बुलावा और कार्याधिकार (गलातियों 1; 2 कुरिं. 3:1-18; इफि. 3:1-13)
    ख. ईश्वरीय प्रेरितिक अधिकार (2 कुरिं. 10-13)
    ग. लोगों के लिए गहरा प्रेम (1 थिस्स. 2:7-8; प्रेरितों 20:19 देखो)
    घ. सुसमाचार के अर्थ और उपयोग में ईश्वरीय अन्तर्दृष्टि (रोमियों 1-15)
    च. नम्य और अनुकूलनीय (1 कुरिं. 9:21-23)
    छ. शारीरिक सहनशक्ति (2 कुरिं. 11:23-29)
    ज. साहित्यिक पृष्ठभूमि; उत्तम संचारक (इफि. 1-6)
    झ. मसीह के साथ गहरा अनुभव (1 कुरिं. 12:2-10)

रोमियों: सारांश

1. पृष्ठभूमि
    क. लेखक – तिरतियुस पौलुस के लिए लिखता है (16:22)
    ख. लिखने का स्थान - कुरिन्थ (16:23)
    ग. लिखने की तारीख – सन् 55-56 (तीसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान)
    घ. गन्तव्य – रोम की कलीसिया। रोम एक सर्वदेशीय नगर था जिसमें करीब दस लाख लोग रहते थे। रोम साम्राज्य की राजधानी की सीमाएँ ब्रिटेन से अरेबिया तक फैली हुई थीं। यह तब के ज्ञात संसार का कूटनीतिक और व्यापार केन्द्र था। रोम की कलीसिया की शुरूआत नए नियम में नहीं बताई गई है; पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरितों 2:10) के तुरन्त बाद नए विश्वासियों के लौटने से यह शुरू हुई होगी।
    च. अवसर – स्पेन जाने के समय रोम की यात्रा करने की पौलुस की योजना (15:14-24)
2. विषय-वस्तु
    क. शीर्षक – "अनुग्रह का सुसमाचार"
    ख. विषय - अनुग्रह के सुसमाचार पर एक सम्पूर्ण पुस्तक
    ग. उद्देश्य – स्पेन जाने के समय रोम की यात्रा के लिए, उस सुसमाचार को जिसका पौलुस प्रचार करता था पूरी तरह समझाने के द्वारा मार्ग तैयार करना।
    घ. रूपरेखा – सिद्धान्त और उपयोग
    च. मूल वचन: (रोमियों 1:16-17) 'क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिए, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रगट होती है; जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।"'

1 कुरिन्थियों : सारांश

1. पृष्ठभूमि
    क. लेखक – पौलुस
    ख. लिखने का स्थान – इफिसिस
    ग. लिखने की तारीख – सन् 54 (तीसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान)
    घ. गन्तव्य - कुरिन्थ की कलीसिया। कुरिन्थ नगर रमियों ने 46 ई.पू. में दोबारा बसाया था और व्यापार का एक महत्त्व का केन्द्र बन गया था। यह एजियन और अड्रियाटिक समुद्रों के बीच दक्षिणी यूनान में एक छोटी पट्टी पर स्थित था। इसकी जमसंख्या यूनानी, रोमी, स्कूती, एशियाई, मिस्री और यहूदियों से मिली-जुली तीन लाख की थी। नगर पर

अफ्रोडाइट के मन्दिर (यूनान के धर्म में "प्यार की देवी") का दबदबा था; मन्दिर में 1000 धार्मिक वेश्याएँ थीं जिनके काम ने नगर के बदनाम अनैतिकता को बढ़ावा दिया। पौलुस ने अपनी दूसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान कलीसिया स्थापित की थी (प्रेरितों 18:1-18)। 1 कुरिन्थियों इस कलीसिया को लिखे चार पत्रों में से दूसरा पत्र है।

च. अवसर - खलोए के घराने के लोगों की नैतिक, सिद्धान्त सम्बंधित और व्यवहारिक समस्याओं की रिपोर्ट; कुरिन्थ की कलीसिया के तीन सदस्य पूछताछ का पत्र लाते हैं।

2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "एक मूर्तिपूजक समाज में व्यवहारिक मसीही जीवन"
   - ख. विषय - कुरिन्थ में कलीसिया की समस्याओं का सुधार करना।
   - ग. उद्देश्य - खलोए के घराने की मौखिक रिपोर्ट और खुद कुरिन्थियों द्वारा एक पत्र में उठाए मामलों और समस्याओं का उत्तर देना।
   - घ. रूपरेखा - खलोए की रिपोर्ट और कुरिन्थियों के पत्र का उत्तर।
   - च. मूल वचनः (1 कुरिन्थियों 16:13-14) "जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त होओ। जो कुछ करते हो प्रेम से करो।"

2 कुरिन्थियों: सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – पौलुस
   - ख. लिखने का स्थान – सम्भवतः मकिदुनिया
   - ग. लिखने की तारीख – सन् 55 (तीसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान)
   - घ. गन्तव्य - कुरिन्थ की कलीसिया। पौलुस कुरिन्थ में कम से कम तीन भिन्न अवसरो पर गया था। 2 कुरिन्थियों उसकी तीसरी यात्रा के बिलकुल पहले लिखा गया था, और कलीसिया को लिखे चार में से आखिरी पत्र है।
   - च. अवसर – तीतुस की अधिकाँश अशांति फैलानेवालों के पश्चाताप के बारे में रिपोर्ट। (7:13-15)
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "पौलुस की सेवकाई और प्रेरिताई का बचाव"
   - ख. विषय – पौलुस की सेवकाई और प्रेरिताई का स्पष्टीकरण
   - ग. उद्देश्य – पिछले पत्र में उठाए मामलों पर कुरिन्थ की कलीसिया के अधिकाँश लोगों के पश्चाताप पर खुशी जाहिर करने के लिए, और छोटी अल्पसंख्यक वर्ग को फटकारने के लिए जो अभी भी पौलुस का विरोध कर रहे थे।
   - घ. रूपरेखा – तीनगुणा भाग, सिद्धान्त से ज्यादा व्यक्तिगत है।
     1. अधिकाँश कोः पौलुस की सेवकाई का स्पष्टीकरण (1:12-7:16)
     2. यरूशलेम की कलीसिया के लिए दान (8:1-9:15)
     3. अल्पसंख्यक वर्ग कोः पौलुस की सेवकाई का बचाव (10:1-13:10)
   - च. मूल वचनः (2 कुरिन्थियों 4:5) "क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।"

गलातियों: सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – पौलुस
   - ख. लिखने का स्थान – सम्भवतः सीरिया में अन्ताकिया
   - ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 49-50 (गलातियों 2:1-10 अकाल की आत्रा के बारे में बताता जिसका जिक्र प्रेरितों 11:27-30 में है।)
   - घ. गन्तव्य - गलातिया की कलीसियाएँ। गलातिया एक विशाल रोमी प्रान्त था जो मध्य तुर्कीस्थान में से तट से तट तक फैला हुआ था। इसके कितने भाग में पौलुस ने सुसमाचार सुनाया स्पष्ट नहीं है। हम (प्रेरितों 13 और 14 से) जानते हैं कि उसने अपनी पहली मिश्नरी यात्रा में अन्ताकिया, इकुनियम, लुस्त्रा और दिरबे में कलीसियाएँ स्थापित कीं। वह दो

बार इस क्षेत्र में उनका पता लगाने भी गया (प्रेरितों 16:6; 18:23)। "दक्षिणी गलातिया मत" के अनुसार, यह पत्र उन नगरों और आसपास के क्षेत्रों के विश्वासियों को लिखा गया था।

च. अवसर – "यहूदा मत वालों" की गलत शिक्षा। यहूदा मत वाले यहूदी विश्वासी थे जो सिखाते थे कि अन्यजाति से आए विश्वासियों को उद्धार पाने के लिए खतना करवाना और मूसा की व्यवस्था को मानना जरूरी है

2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "व्यवस्था बनाम अनुग्रह"
   - ख. विषय – यहूदा मत वालों के कर्मकाण्डवाद का विरोध करना
   - ग. उद्देश्य – यहूदा मत वालों का "व्यवस्था के पालन का सुसमाचार" के विरूद्ध पौलुस के मुफ्त अनुग्रह के सुसमाचार का बचाव करना जिसका वह अन्यजातियों में प्रचार करता था।
   - घ. रूपरेखा – दोगुणा तर्क और उपयोग
     1. दोगुणा तर्क
        - अ. आत्मकथा द्वारा तर्क (1:6-2:21)
        - आ. सिद्धान्त द्वारा तर्क (3:1-4:31)
     2. मूल वचनः (गलातियों 2:16) "...मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, ... इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।"

इफिसियोंः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – पौलुस
   - ख. लिखने का स्थान – रोमी बन्दीग्रह (3:1; 4:1; 6:20)
   - ग. लिखने की तारीख – सन् 60-62
   - घ. गन्तव्य – इफिसुस और आसपास की कलीसियाएँ। इफिसुस जो एशिया प्रान्त का एक मुख्य नगर था, तुर्कीस्थान के पश्चिमी तट पर करीब तीन लाख लोगों के लिए एक धार्मिक और व्यापारिक केन्द्र था। इफिसुस की कलीसिया पौलुस की तीसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान शुरू हुई थी (प्रेरितों 19 देखो)। इफिसुस से सुसमाचार सारे प्रान्त में फैल गया; कलीसियाएं कुलुस्से, हिरोपोलिस और लौदीकिया जैसी जगहों में, और लीकुस घाटी की दूसरी जगहों में भी स्थापित की गई, जो प्रकाशितवाक्य 2 और 3 की सात कलीसियाओं का आम क्षेत्र है (प्रेरितों 19:8-10)।
   - च. अवसर – यहूदी विश्वासी खुद को उनके अन्यजाति भाइयों से अलग कर रहे थे जो शायद उनको तुच्छ समझ रहे थे। सम्भवतः इस स्थिति के कारण यह पत्र लिखा गया था।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "मसीह में सब एक"
   - ख. विषय - कलीसिया के द्वारा मसीह में सब चीजों का एकत्र किया जाना।
   - ग. उद्देश्य - कलीसिया के द्वारा मसीह में सब का एकत्र होना और एक कर देना दिखाना, जो "आने वाले युग की एकता का पूर्वदर्शन है।"
   - घ. रूपरेखा – सिद्धान्त सम्बंधी और व्यवहारिक भाग
     1. सिद्धान्त "धन" (1:3-3:21)
     2. व्यवहार "चाल" (4:1-6:20)
   - च. मूल वचनः (इफिसियों 1:9-10) "क्योंकि उसने अपनी इच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था कि समयों का पूरा होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।"

फिलिप्पियोंः सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक – पौलुस

ख. लिखने का स्थान – रोमी बन्दीग्रह (1:13-14)

ग. लिखने की तारीख – सन् 60-62

घ. गन्तव्य – फिलिप्पी की कलीसिया। फिलिप्पी उत्तरी यूनान के मकिदूनिया के प्रान्त में मिस्र महामार्ग पर जो विशाल सैनिक सड़क थी और रोम को पूर्व से जोड़ती थी, स्थित था। इसे पहले रोम ने इटली के नागरिकों से एक रोमी वसाहत के रूप में बसाया था; इसलिए इसे आत्मशासन और शाही करों से स्वतन्त्रता के रूप में खास अधिकारों और विशेषाधिकारों का आनन्द प्राप्त था। स्त्रियाँ एक उच्च स्थिति का आनन्द लेती थीं और सार्वजनिक और व्यवसायी जीवन में सक्रिय भाग लेती थीं। पौलुस ने अपने "मकिदूनिया के दर्शन" के फलस्वरूप अपनी दूसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान कलीसिया शुरू की थी (प्रेरितों 16:9-40)।

च. अवसर – फिलिप्पियों का हाल का पौलुस के लिए, जो मसीह के लिए रोम के बन्दीग्रह में था, दान (4:10-19)।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "बन्दीग्रह से धन्यवाद के साथ"

ख. विषय – व्यक्तिगत पत्र और उपदेश के साथ, दान के लिए धन्यवाद।

ग. उद्देश्य – इपफ्रुदीतुस द्वारा भेजे गए दान के लिए फिलिप्पियों का धन्यवाद (2:25; 4:18); एकता के लिए आग्रह; पौलुस के बन्दीग्रह के वर्तमान हालातों के बारे में जानकारी देना।

घ. रूपरेखा - कोई पक्की रूपरेखा के अनुसार नहीं है, फिर भी गहरे सिद्धान्त और उपयोगी अन्तर्दृष्टी देता है।

च. मूल वचनः (फिलिप्पियों 1:21) "क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है।"

कुलुस्सियोंः सारांश

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक – पौलुस

ख. लिखने का स्थान – रोमी बन्दीग्रह (4:18)

ग. लिखने की तारीख – सन् 60-62

घ. गन्तव्य - कुलुस्से की कलीसिया। कुलुस्से सुन्दर लीकुस घाटी में इफिसुस के पूव में करीब 100 मील दूर, एक छोटा नगर था, यह सबसे छोटा नगर था जो इस "त्री-नगरों" के भाग थे; हीरापोलिस और लौदीकिया दूसरे दो नगर थे। यहाँ कलीसिया कैसे शुरू हुई का कोई विवरण उपलब्ध नहीं है। ऐसा हो सकता है कि पौलुस के इफिसुस में बिताए तीन वर्षों के दौरान, कुलुस्से के मुख्य व्यक्ति जैसे कि फिलेमोन और इपफ्रदीतुस विश्वासी बनने के बाद अपने देश लौट गए और वहाँ कलीसिया शुरू हुई (1:7-8)।

च. अवसर – कुलुस्से में समन्वय (मिश्रति शिक्षा), जिसमें यहूदी कर्मकाण्डवाद (2:16-17, 21-23), यूनानी तत्त्वज्ञान (2:8) और गूढ़ज्ञानवादी रहस्यवाद (2:18) शामिल था।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "मसीह सर्वश्रेष्ठ"

ख. विषय – मसीही द्वारा उद्धार पर्याप्त है।

ग. उद्देश्य - कुलुस्से में अपसिद्धान्त का मसीह के व्यक्तित्व और विश्वासी के लिए और में मसीह के कार्य के सकारात्मक प्रदर्शन द्वारा खण्डन करना।

घ. रूपरेखा – सिद्धान्त सम्बंधी और उपयोगी भाग।

1. सिद्धान्त
    - अ. साकारात्मकः मसीह की सर्वश्रेष्ठता (1:13-2:7)
    - आ. नकारात्मकः अपसिद्धान्त के विरुद्ध (2:8-2:23)
2. व्यवहार
    - अ. मसीह से संयुक्ति (3:1-3:4)
    - आ. मसीह की मृत्यु में संयुक्ति (3:5-3:11)
    - इ. मसीह के पुनरुत्थान में संयुक्ति (3:12-4:6)

च. मूल वचनः (कुलुस्सियों 2:9-10) "क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है, और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शरोमणि है।"

1 थिस्सलुनीकियोंः सारांश

1. पृष्ठभूमि
    - क. लेखक – पौलुस
    - ख. लिखने का स्थान - कुरिन्थ
    - ग. लिखने की तारीख – सन् 50-51 (दूसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान)
    - घ. गन्तव्य – थिस्सलुनीके की कलीसिया। थिस्सलुनीके जो मकिदूनिया प्रान्त की राजधानी था, यूनान के पूर्वीय तट पर एक समृद्ध बन्दरगाह नगर था। यह फिलिप्पी नगर से करीब 90 मील दूर मिस्री महामार्ग पर स्थित था। पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा के समय यहा कलीसिया शुरू हुई थी (प्रेरितों 17:1-20 देखो)।
    - च. अवसर - कलीसिया के बारे में कि यह सताव में दृढ़ खड़ी है तीमुथियुस की रिपोर्ट।
2. विषय-वस्तु
    - क. शीर्षक – "पुनरागमन के सम्बंध में सान्त्वना"
    - ख. विषय – प्रोत्साहन, उपदेश और सान्त्वना
    - ग. उद्देश्य – थिस्सलुनीकियों को सताव में प्रोत्साहित करना और मसीह के शीघ्र लौटने पर पुनरुत्थान की आशा से उन्हें सान्त्वना देना।
    - घ. रुपरेखा – प्रोत्साहन और उपदेश
        1. प्रोत्साहन (1:2-3:13)
        2. उपदेश (4:1-5:22)
    - च. मूल वचनः (1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24) "शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे, और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें। तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।"

2 थिस्सलुनीकियोंः सारांश

1. पृष्ठभूमि
    - क. लेखक – पौलुस
    - ख. लिखने का स्थान - कुरिन्थ
    - ग. लिखने की तारीख – सन् 50-51 (1 थिस्सलुनीकियों के कई महिने बाद)
    - घ. गन्तव्य – थिस्सलुनीके की कलीसिया।
    - च. अवसर – मसीह के पुनरागमन की निकटता के बारे में गलत शिक्षा।
2. विषय-वस्तु
    - क. शीर्षक – "पुनरागमन के सम्बंध में सुधार"
    - ख. विषय – प्रभु के दिन का आगमन
    - ग. उद्देश्य – कि प्रभु का दिन पहले ही आ चुका है की गलतफहमी को सुधारना
    - घ. रुपरेखा – प्रोत्साहन, सुधार और उपदेश
        1. प्रोत्साहन (1:3-1:12)
        2. सुधान (2:1-2:17)
        3. उपदेश (3:1-3:14)
    - च. मूल वचनः (2 थिस्सलुनीकियों 2:15) "इसलिए हे भाइयो, स्थिर रहो; और जो जो बातें तुम ने चाहे वचन या पत्री के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो।"

पास्तरीय पत्रों की भूमिका

1 तीमुथियुस से फिलेमोन तक

1. नाम
    - क. व्यक्तितियों के नाम पर हैं
        1. स्थानीय पास्टर नहीं
        2. जिला/क्षेत्र निरीक्षक

2. लेखक
    - क. पारंपरिक – प्रेरित पौलुस
    - ख. लेखक का प्रमाणीकरण
        1. पास्तरीय पत्र पौलुस द्वारा लिखे होने का दावा करते हैं (1 तीमु. 1:1; 2 तीमु. 1:1; तीतुस 1:1)
        2. लेखक के प्रमाणीकरण के बारे में प्रारंभिक कलीसिया की चिन्ता ने निश्चय किया कि ये पत्र पौलुस द्वारा लिखे गए थे।
        3. बाहरी प्रमाण भी शुरू से और लगातार पौलुस द्वारा लिखे होने को समर्थन देते रहे हैं।

3. प्रेरितों 28 के बाद पौलुस की गतिविधियाँ
    - क. 2 वर्ष तक रोम में बन्दी (प्रेरितों 28:30-31; फिलि. 1:19, 25-27; 2:24 देखो)
    - ख. अतिरिक्त प्रचार और यात्राओं के लिए मुक्त किया गया (फिलेमोन 22)
    - ग. कलीसियाओं से मुलाकात करने के लिए पूर्व की दिशा में सफर
        1. इफिसुस (1 तीमु. 1:5)
        2. कुरिन्थ, त्रोआस, मीलेतुस (2 तीमु. 4:13,20)
        3. क्रेते (तीतुस 1:5)
        4. मकिदुनिया (तीतुस 3:12)
    - घ. रोम में दोबारा बन्दी बनाया गया (2 तीमु. 1:8, 16-17; 2:9; 4:10)

4. पौलुस के सहयोगी
    - क. तीमुथियुस
        1. दूसरी मिश्नरी यात्रा में पौलुस का सहयोगी बना (प्रेरितों (16:1-3)
        2. पौलुस के करीबी यात्रा-साथियों में से एक
            - अ. मकिदुनिया, अखाया, एशिया और रोम में पौलुस के साथ
            - आ. पौलुस के 13 पत्रों में से 6 में पौलुस के साथ नमस्कार में भागी है (2 कुरिं. 1:1; फिलि. 1:1; कुलु. 1:1; 1 थिस्स. 1:1; 2 थिस्स. 1:1; फिले. 1)
        3. जवान फिर भी भरोसेमन्द (1 तीमु. 4:12; 1 कुरिं. 16:11; 4:17; फिलि. 2:19-22)
        4. इफिसुस में और आसपास की कलीसियाओं के लिए जिम्मेवार (1 तीमु. 13; 3:14-15)
    - ख. तीतुस
        1. अन्यजाति जिसको लेकर यरूशलेम में विवाद उठा था (गलातियों 2:1-5)
        2. 10 वर्ष बाद कुरिन्थियों की कलीसिया से सम्बंधित जिक्र होता है (2 कुरिं. 1:23-2:18; 7:5-15; 8:6, 16-23)
        3. 8-10 वर्ष बाद क्रेते की कलीसियाओं के लिए जिम्मेवार (तीतुस 1:5)
        4. दलमतिया (इल्लुरिकुम) में सेवकाई (2 तीमु. 4:10)

1 तीमुथियुसः सारांश

1. पृष्ठभूमि
    क. लेखक – पौलुस
    ख. लिखने का स्थान – सम्भवतः मकिदुनिया
    ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 62-64
    घ. गन्तव्य – इफिसुस में तीमुथियुस
    च. अवसर – इफिसुस और आसपास के क्षेत्रों में कलीसियाओं की अगुआई करने में तीमुथियुस को निर्देशों की जरूरत।
2. विषय-वस्तु
    क. शीर्षक – "एक जवान पास्टर को सलाह"
    ख. विषय - कलीसिया की अगुआई और पोषण में निर्देश
    ग. उद्देश्य – तीमुथियुस को निर्देश देना कि पौलुस के आने तक कलीसिया के काम का प्रबंध और संगठन किस प्रकार करना।
    घ. रूपरेखा – संगठन और प्रबंध भाग
        1. कलीसिया का संगठन (1:3-3:13)
        2. कलीसिया का प्रबंध (3:14-6:19)
    च. मूल वचनः (1 तीमुथियुस 3:14-15) "...ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूँ, कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है और जो सत्य का खंभा और नींव है, कैसा बर्ताव करना चाहिए।"

2 तीमुथियुसः सारांश

1. पृष्ठभूमि
    क. लेखक – पौलुस
    ख. लिखने का स्थान – रोम
    ग. लिखने का तारीख – लगभग सन् 65-67
    घ. गन्तव्य – इफिसुस में तीमुथियुस
    च. अवसर – रोम में उसके प्राणदण्ड से पहले पौलुस के आखिरी शब्द।
2. विषय-वस्तु
    क. शीर्षक – "पौलुस की अन्तिम सलाह"
    ख. विषय – पौलुस का आखिरी इच्छापत्र और वसीयत (उत्पत्ति 49; व्यवस्थाविवरण; यहोशू 23-24; यूहन्ना 13-17, वगैरा देखो)
    ग. उद्देश्य - कलीसिया को उचित तरीके से मार्गदर्शन देने और शिक्षा देने में तीमुथियुस को प्रोत्साहित करना, और शीतकाल से पहले कुछ जरूरी चीजों को लाने के लिए उसे कहना।
    घ. रूपरेखा - अनौपचारिक
        1. पूर्व (1:3-18)
        2. वर्तमान (2:1-26)
        3. भविष्य (3:1-17)
        4. पौलुस का अन्तिम अभिवादन (4:1-18)
    च. मूल वचनः (2 तीमुथियुस 2:2) "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

तीतुसः सारांश

1. पृष्ठभूमि
    क. लेखक – पौलुस

ख. लिखने का स्थान – निकोपोलिस
ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 62-64
घ. गन्तव्य – क्रेते में तीतुस
च. अवसर - कलीसिया की अगुआई के लिए तीतुस को निर्देश की जरूरत

2. विषय-वस्तु
क. शीर्षक – "क्रेते में एक पास्टर को निर्देश"
ख. विषय - कलीसिया की अगुआई और पोषण में निर्देश
ग. उद्देश्य – क्रेते के द्वीप में तीतुस को कलीसिया का नेतृत्व करने में निर्देश
घ. रूपरेखा - संगठन और प्रबंध भाग
1. कलीसिया का संगठन (1:5-9)
2. कलीसिया का प्रबंध (1:10-3:11)
च. मूल वचनः (तीतुस 2:7-8) "सब बातों में अपने आप को भले कामों का नमूना बना। तेरे उपदेश में सफाई, गम्भीरता, और ऐसी खराई पाई जाए कि कोई उसे बुरा न कह सके, जिससे विरोधी हम पर कोई दोष लगाने का अवसर न पाकर लज्जित हों।"

फिलेमोनः सारांश

1. पृष्ठभूमि
क. लेखक – पौलुस
ख. लिखने का स्थान – रोम का बन्दीग्रह (आय. 1,9)
ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 60-62
घ. गन्तव्य – फिलेमोन और कलीसिया
च. अवसर - उनेसिमुस की वापसी

2. विषय-वस्तु
क. शीर्षक – "एक भागा हुआ दास लौटता है"
ख. विषय - एक दास के पक्ष में एक मैत्रीपूर्ण अनुनय का पत्र
ग. उद्देश्य – "मैत्रिपूर्ण अनुनय" के द्वारा अपने भागे हुए दास को वापस लेने के लिए फिलेमोन से आग्रह करना, जिसे पौलुस ने कैद में मसीह में विश्वास में लाया था (आय. 10)
घ. रूपरेखा - अनौपचारिक पत्र, कोई निश्चित रूपरेखा नहीं है।
च. मूल वचनः (फिलेमोन आय. 17) "अतः यदि तू मुझे अपना सहभागी समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे।"

सामान्य पत्रों की भूमिका

इब्रानियों से यहूदा तक

1. नाम
क. सामान्य पत्र
1. कुछ ही सामान्य है
अ. विषय-वस्तु भिन्न हैः नौतिक (1 यूहन्ना), अन्तिम दिनों के बारे में (2 पतरस)
आ. ढाँचा भिन्न हैः 1 यूहन्ना में कोई नमस्कार या अभिवादन नहीं है।
2. सामान्य पता आम है
अ. एक स्थानीय कलीसिया से दूर विश्वासियों के नाम
आ. लेखक के नाम से अधिकृत

ख. इब्रानियों
1. अनोखा: लेखक अज्ञात
2. कोई पता नहीं

2. पृष्ठभूमि
क. सताव
1. धार्मिक (इब्रानियों, याकूब)
2. राजनीतिक (1 पतरस)
ख. अपसिद्धान्त
1. गूढ़ज्ञानवाद (1, 2, 3 यूहन्ना गूढ़ज्ञानवाद अपसिद्धान्त को असत्य प्रमाणित करने के लिए लिखे गए थे) मसीह का शरीरिक देहधारण और विश्वास द्वारा उद्धार का इन्कार करता था। गूढ़ज्ञानवादी बदले में ज्ञान द्वारा उद्धार में विश्वास करते थे (यूनानः गूढ़ज्ञान – "ज्ञान")।
2. विधिविरोधिता: (2 पतरस, यहूदा, याकूब इस अपसिद्धान्तवादी शिक्षा का खण्डन करने के लिए लिखे गए थे) एक धारणा कि मसीह में विश्वास एक व्यक्ति को नौतिक व्यवस्था के दायित्व से पूरी तरह मुक्त कर देता है।

इब्रानियों: सारांश

1. पृष्ठभूमि
क. लेखक - अज्ञात। (पौलुस? अपुल्लोस? बरनबास?) कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है; केवल परमेश्वर ही निश्चय से जानता है कि यह पुस्तक किसने लिखी।
ख. लिखने का स्थान - अज्ञात
ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 67-68
घ. गन्तव्य – रोम
च. अवसर – यहूदी विश्वासियों के विरुद्ध बढ़ता विरोध
2. विषय-वस्तु
क. शीर्षक – "मसीह, श्रेष्ठ मार्ग"
ख. विषय – पुराने नियम पर मसीह की श्रेष्ठता ("श्रेष्ठ" 13 बार इस्तेमाल किया गया है)।
ग. उद्देश्य – यहूदी मसीहियों का यहूदा धर्म में लौटने से रोकने के लिए, जो मसीह में अपने विश्वास के कारण विरोध अनुभव कर रहे थे, मसीह की श्रेष्ठता दिखाना (10:32-36; 12:3-4)।
घ. रूपरेखा - उपदेश का एक वचन ("आओ हम" 13 बार इस्तेमाल किया गया है); उपयोग के साथ एक प्रवचन (13:22; 10:19-25 देखो)।
च. मूल वचनः (इब्रानियों 4:14) "इसलिए जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु, जो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें।"

याकूबः सारांश

1. पृष्ठभूमि
क. लेखक – याकूब (यीशु का सौतेला भाई)
ख. लिखने का स्थान – यरूशलेम
ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 48-62
घ. गन्तव्य – तितर-बितर हुए यहूदी विश्वासियों में वितरण के लिए
च. अवसर – यहूदी विश्वासी विरोध और विधिविरोधिता अनुभव कर रहे हैं (सामान्य पत्रों की भूमिका में अपसिद्धान्त के नीचे देखो)
2. विषय-वस्तु
क. शीर्षक – "सच्चा धर्म"

ख. विषय – सच्चा धर्म व्यवहारिक है और काम करता है।
ग. उद्देश्य – यहूदी विश्वासियों को समझाना कि सच्चा धर्म शुद्ध और व्यवहारिक है।
घ. रूपरेखा - चार उपदेश
1. परिक्षाएँ (1:2-18)
2. प्रेम का नियम (1:19-2:26)
3. बुरा बोलना (3:1-3:12)
4. धैर्य (4:13-5:20)
च. मूल वचनः (याकूब 1:27) "हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधी लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।"

1 **पतरसः सारांश**

1. पृष्ठभूमि
   क. लेखक – प्रेरित पतरस / सिलवानुस (5:12)
   ख. लिखने का स्थान – रोम
   ग. लिखने का तारीख – लगभग सन् 62-64
   घ. गन्तव्य - एशिया माइनर में मसीही
   च. अवसर – मसीहियों पर रोम से सताव आ रहा है।
2. विषय-वस्तु
   क. शीर्षक – "दुख द्वारा उद्धार"
   ख. विषय – दुख द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह में खड़े रहना
   ग. उद्देश्य – सताव सह रहे मसीहियों को प्रोत्साहित करना कि वे मसीह में विश्वास के लिए दृढ़ खड़े रहें।
   घ. रूपरेखा – तीन सिद्धान्त सम्बंधी और उपयोगी भाग
   1. घोषणाः उद्धार (1:3-12)
      उपदेशः पवित्र बनो (1:13-2:3)
   2. घोषणाः परमेश्वर के लोग (2:4-3:17)
      उपदेशः अधीन रहो (2:11-3:17)
   3. घोषणाः दुख (3:18-22)
      उपदेशः आनन्दित होना (4:1-5:11)
   च. मूल वचनः (1 पतरस 5:12) "मैं ने ... संक्षेप में लिखकर तुम्हें समझाया है, और यह गवाही दी है कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है, इसी में स्थिर रहो।"

2 **पतरसः सारांश**

1. पृष्ठभूमि
   क. लेखक – प्रेरित पतरस
   ख. लिखने का स्थान – रोम
   ग. लिखने का तारीख – लगभग सन् 65-67
   घ. गन्तव्य - एशिया माइनर में मसीही
   च. अवसर – मसीही अपसिद्धान्तवादियों का सामना कर रहे हैं।
2. विषय-वस्तु
   क. शीर्षक – "सच्चा और झूठा ज्ञान"
   ख. विषय – सच्चे और झूठे शिक्षकों को पहचानना

ग. उद्देश्य – विश्वासियों को झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी देना जो अपने प्रभु का इन्कार करते हैं और उसके आने की प्रतिज्ञा पर हँसते हैं।

घ. रूपरेखा – सच्चा और झूठा ज्ञान

1. सच्चा ज्ञान (1:3-21)
2. झूठा शिक्षक (2:1-22)
3. मसीह का आगमन (3:1-18)

च. मूल वचन (2 पतरस 3:17-18) "इसलिए हे प्रियो, तुम लोग पहले ही से इन बातों को जानकर चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फँसकर अपनी स्थिरता को कहीं हाथ से खो न दो। पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ।"

1 **यूहन्नाः सारांश**

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक - अज्ञात, लेकिन बहुत संभव है कि यह प्रेरित यूहन्ना था।

ख. लिखने का स्थान – इफिसुस

ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 90-100

घ. गन्तव्य – इफिसुस के आसपास के मसीही

च. अवसर – मसीही अपसिद्धान्तवादी गूढ़ज्ञानवाद का सामना कर रहे थे, जो विशेष ज्ञान पर जोर देते थे और मसीह की मानवता को तुच्छ समझते थे।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "एक सच्चे मसीही की परख"

ख. विषय – ईश्वरीय जीवन के अचूक चिन्ह

ग. उद्देश्य - विश्वासियों को गूढ़ज्ञानवाद की झूठी शिक्षा के विरुद्ध उद्धार के सच्चे ज्ञान में पक्का करना।

घ. रूपरेखा – तीनगुणा चक्र

1. ज्योति और प्रेम (1:5-2:28)
2. हक और प्रेम (2:29-4:6)
3. जीवन और प्रेम (4:7-5:21)

च. मूल वचनः (1 यूहन्ना 5:13) "मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।"

2 **यूहन्नाः सारांश**

1. पृष्ठभूमि

क. लेखक - अज्ञात, लेकिन बहुत संभव है कि यह प्रेरित यूहन्ना था।

ख. लिखने का स्थान – इफिसुस

ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 90-100

घ. गन्तव्य – इफिसुस के आसपास के मसीही

च. अवसर – मसीही अपसिद्धान्तवादी गूढ़ज्ञानवाद का सामना कर रहे थे, जो विशेष ज्ञान पर जोर देते थे और मसीह की मानवता को तुच्छ समझते थे।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "अपसिद्धान्तवादियों से कैसे निपटें"

ख. विषय - गूढ़ज्ञानवादी धोखेबाजों का अतिथि-सत्कार मत करो

ग. उद्देश्य - जो विश्वासी सत्य पर चलते हैं उन पर खुशी प्रकट करना, और उन्हें गूढ़ज्ञानवादी धोखेबाजों के बारे में चेतावनी देना जिनमें मसीह विरोधी आत्मा है।

घ. रूपरेखा - कोई नहीं; अनौपचारिक

च. मूल वचनः (2 यूहन्ना 9-10) "जो कोई मसीह की शिक्षा से आगे बढ़ जाता है और उसमें बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं; जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है और पुत्र भी। यदि कोई तुम्हारे पास आए और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो और न नमस्कार करो।"

3 यूहन्नाः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक - अज्ञात, लेकिन बहुत संभव है कि यह प्रेरित यूहन्ना था।
   - ख. लिखने का स्थान – इफिसुस
   - ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 90-100
   - घ. गन्तव्य – गयुस, जो अपसिद्धान्तवादी गूढ़ज्ञानवाद का सामना कर रहा था, जो विशेष ज्ञान पर जोर देते थे और मसीह की मानवता को तुच्छ समझते थे।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "अतिथि-सत्कार दिखाना"
   - ख. विषय – सफरी प्रचारकों का अतिथि-सत्कार करो
   - ग. उद्देश्य - अजनबियों और सुसमाचार के भ्रमणशील प्रचारकों की उचित सेवा करने के बारे में निर्देश देना।
   - घ. रूपरेखा - कोई नहीं; अनौपचारिक
   - च. मूल वचनः (3 यूहन्ना 5) "हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है, जो परदेशी हैं, उसे विश्वासी के रूप में करता है।"

यहूदाः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – यहूदा (यीशु का सौतेला भाई, याकूब का भाई)
   - ख. लिखने का स्थान - अज्ञात, सम्भवतः यरूशलेम
   - ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 67-80
   - घ. गन्तव्य – हर जगह के मसीही
   - च. अवसर – मसीही अपसिद्धान्तवादी शिक्षकों का सामना कर रहे हैं।
2. विषय-वस्तु
   - क. शीर्षक – "झूठे शिक्षकों से सावधान रहो"
   - ख. विषय - झूठे शिक्षकों के विरुद्ध विश्वास के लिए संघर्ष करो
   - ग. उद्देश्य – विश्वासियों को झूठे शिक्षकों के विरुद्ध विश्वास के लिए संघर्ष करने को आग्रह करना।
   - घ. रूपरेखा – समस्या और उत्तर
     1. समस्या – दुष्ट झूठे शिक्षक (3-16)
     2. उत्तर – विश्वास के लिए संघर्ष (17-23)
   - च. मूल वचनः (यहूदा 3) "... मैं ने तुम्हें समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।"

प्रकाशितवाक्यः सारांश

1. पृष्ठभूमि
   - क. लेखक – नबी यूहन्ना (1:1), परंपरा से प्रेरित यूहन्ना माना जाता है।
   - ख. लिखने का स्थान – पतमुस टापू, एशिया माइनर के तट से 35 मील दूर।

ग. लिखने की तारीख – लगभग सन् 90-100, शहनशाह दोमीतियन के शासनकाल के दौरान।

घ. गन्तव्य - एशिया माइनर की सात कलीसियाएँ जो इफिसुस के ईर्द-गिर्द जो प्रान्त का मुख्य नगर था, एक चक्करदार मार्ग पर स्थित थीं।

च. अवसर – शहनशाह दोमीतियन के अधीन मसीहियों पर बढ़ते हुए सताव के कारण, यूहन्ना (जो खुद मसीह की गवाही के कारण निर्वासित कर दिया गया था) एशिया माइनर की सात कलीसियाओं को जो जल्द घटने वाला था जिसके बारे में परमेश्वर ने जो उसे दर्शन दिए थे लिखता है: सन्तों के लिए क्लेश, अधर्मियों पर प्रकोप, और पुनरागमन पर परमेश्वर के लोगों की अन्तिम विजय और ईनाम।

2. विषय-वस्तु

क. शीर्षक – "समापन"

ख. विषय – इस दुष्ट युग की समाप्ति को दर्शाने वाली "प्रसव की पीड़ाएँ" जब यह नए युग को जन्म देगी, और जब प्रभु नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर शासन करेगा।

ग. उद्देश्य – सताए जा रहे मसीहियों को धैर्य रखने के लिए यह दिखाते हुए प्रोत्साहन देना कि अन्त करीब है जब परमेश्वर उन्हें जो शैतान की दुष्ट शक्तियों को हराएँगे और उसके साथ विजयी होंगे, ईनाम देगा।

घ. रूपरेखा – यीशु मसीह के बढ़ते हुए प्रभुत्व का चारगुणा दर्शन; हर दर्शन "आत्मा में" वाक्यांश के साथ शुरू होता है 1:10; 4:2; 17:3; 21:10)

1. पहला दर्शन: मसीह, कलीसिया का प्रभु (1:9-3:22)
2. दूसरा दर्शन: मसीह, इतिहास का प्रभु (4:1-16:21)
3. तीसरा दर्शन: मसीह, प्रभुओं का प्रभु (17:1-21:10)
4. चौथा दर्शन: मसीह, प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान (21:11-22:5)

उपसंहार (22:6-21)

च. मूल वचन: (प्रकाशितवाक्य 11:15) "जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।"

बाइबल की खोज खुद अपने लिए कैसे करें

- **<u>बाइबल तक सम्भव मार्ग</u>**

क. "भविष्यवाणी-सम्बंधी", "आत्मगत" या "भक्तिमय"

यह तब होता है जब आपको लगता है कि परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा एक परिच्छेद या आयत लेता है और उसके द्वारा आपसे सीधे बात करता है। वचन का संदर्भ महत्त्वपूर्ण नहीं है।

ख. "निगमनिक"

1. निगमनिक पहुँच में व्यक्ति विषय-वाक्य के पास एक धारणा लेकर आता है और फिर अपनी धारणा की पुष्टि के लिए परिच्छेद खोजता है।
2. व्यक्ति कुछ हद तक बाइबल का पूरा विषय-वाक्य संदर्भ में पढ़ने से पहले ही निष्कर्ष निकाल चुका होता है।
3. जब तक व्यक्ति की धारणा सही है तब तक निगमनिक पहुँच ठीक है।
4. इस प्रकार के बाइबल अध्ययन का प्रयास तब ही किया जाना चाहिए जब व्यक्ति को बाइबल का सम्पूर्ण ज्ञान है।

ग. "आगमिक"

1. यह पहुँच वचनों को खुद बात करने देने की कोशिश करती है।
2. यह प्रश्न पूछती है "लेखक (अतः पवित्र आत्मा) वास्तव में क्या कह रहा है?"
3. आपके निष्कर्ष जो आपने निरीक्षण किया से से उत्पन्न होते हैं।
4. यह वचनों का संदर्भ में अध्ययन करती है।

- **<u>बाइबल अध्ययन के आगमिक तरीके का महत्त्व</u>**

1. व्यक्तिगत वृद्धि और परिपक्वता के लिए; 2 तीमु. 3:16-17
2. दूसरों को सिखाने के योग्य होने के लिए; 2 तीमु. 2:15; इब्रा. 5:12
3. मिली शिक्षा को जाँचने के लिए; प्रेरितों 17:11

आगमिक बाइबल अध्ययन तमाम बाइबल अध्ययन का आधार है! मानव लेखक ने परमेश्वर के पवित्र आत्मा के प्रभाव में लिखा था तो इसलिए जब आप पता लगाते हैं कि मानव लेखक का तात्पर्य क्या था तो आप पाते हैं जो ईश्वरीय लेखक का अभिप्राय था।

- **<u>आगमिक बाइबल अध्ययन की निपुणताएँ और उपकरण</u>**

कोई भी कारीगर निपुणताओं को विकसित करता है और उपकरणों को इस्तेमाल करना सीखता है। बाइबल के अध्ययन में भी ऐसा ही है। यहाँ हम आपको आगमिक बाइबल अध्ययन की कुछ निपुणताओं को सिखाने का प्रयास करेंगे और कुछ उपकरण कैसे इस्तेमाल करने हैं दिखाएँगे।

1. <u>निपुणताएँ</u>

   ये अभ्यास, अभ्यास और ज्यादा अभ्यास से आती हैं।

2. <u>उपकरण</u>

   सबसे महत्त्वपूर्ण उपकरण अध्ययन के लिए एक अच्छी बाइबल इस्तेमाल करना है।

   अनेकों अनुवाद उपलब्ध हैं - कौन सा सबसे अच्छा है?

   <u>बाइबल इस्तेमाल करने के लिए दो प्रकार के विकल्प हैं:</u>

   1) मूलपाठ-विषयक: आप उन प्रारंभिक शब्दों के करीब से करीब जैसे वे लेखक के हाथ से लिखे गए थे, कैसे पहुँच सकते हैं।
   2) भाषा-विषयक: आप शब्दों और विचारों को कैसे अंतरित करेंगे:

      अ. एक भाषा से दूसरी में, और

      आ. एक एतिहासिक और संस्कृतिक समय से दूसरे में?

      दूसरे शब्दों में, क्या अनुवादक अन्तर को पार करता है या क्या वह पाठक के लिए अन्तर को पार करने के लिए छोड़ देता है? इस सम्बंध में नीचे दिए बाइबल अनुवादों के लेखचित्र को देखो:

शाब्दिक				गतिशील तुल्यता			भावानुवाद	
KJV								
NKJV	ASV	RSV	NIV	TEB	JB	NEB	P.	LB
		NASV						

दूसरे उपकरण

कुछ दूसरे उपकरण जिनकी आपको आगमिक अध्ययन में जरूरत पड़ेगी, वे हैं:

- बाइबल शब्दकोश
- बाइबल विश्वकोश
- बाइबल एटलस
- बाइबल शब्दानुक्रमणिका

ध्यान दीजिए कि टीका का उल्लेख नहीं किया गया है। यह इसलिए है कि आगमिक बाइबल अध्ययन में बाइबल का अध्ययन किया जाता है, न कि उसका जो दूसरे बाइबल के बारे में कहते हैं। टीकाओं को तब तक कभी भी इस्तेमाल न करें जब तक आपने अपना काम न कर लिया हो।

आपको नोट-बुक, विविध रंगों के पैन और पैन्सिलें और एक स्केल की भी जरूरत पड़ेगी।

आगमिक बाइबल अध्ययन के कदम

क. प्रार्थना – पवित्र आत्मा पर निर्भरता

ख. वचनों को पढ़ो - सही सही!

ग. ध्यानपूर्वक देखना सीखें।

घ. ध्यानपूर्वक अर्थ निकालना सीखें।

च. प्रयोग में लाना सीखें - जो सारे बाइबल अध्ययन का लक्ष्य है।

कदम 1 – प्रार्थना

भजन 119:18; 1 यूहन्ना 2:26-27; यूहन्ना 16:13; इफिसियों 1:17-18

कदम 2 – वचनों को पढ़ो

पुस्तकों और अनुच्छेदों के बारे में, और न कि अध्यायों और आयतों के बारे में सोचो।

कदम 3 - अवलोकन

विषय-वाक्य वास्तव में क्या कहता है?

अवलोकन विषय-वाक्य को बिना "सामान" के जो यह कहता है देखना सीखना है।

यहाँ पर छे प्रश्न पूछे जा सकते हैं: क्या - कब - कैसे - कहाँ - कौन - क्यों?

ध्यान से देखो कि क्या कोई अर्थपूर्ण शब्द हैं, जैसे:

क. विरोध	ख. तुलना
लेकिन	भी
हालाँकि	इसी तरह
बहुत ज्यादा	जैसा
फिर भी	जैसा कि
अब तक	उसी तरह
यद्यपि	वैसे ही
तब	और

अन्यथा

ग. नित्य सम्बधी
जैसे ... वैसे
क्योंकि
जैसा कि

घ. तर्क
क्योंकि
के कारण
चूँकि

च. निष्कर्ष
इस प्रकार
इसलिए
ऐसा
तब

छ. उद्देश्य/निष्कर्ष
कि
ताकि
इसलिए कि

ज. शर्त
अगर

झ. कालिक
अब
तक
जब
पहले
बाद में
जबकि
से अब तक

कदम 4 - अर्थ निकालना

- इस परिच्छेद का अर्थ क्या है ?
- लेखक का अभिप्राय क्या था ?
- लेखक ने जो लिखा है उससे वह क्या चाहता था कि उसके पहले पाठक समझें ?
- या, पहले पाठकों ने क्या समझा लेखक का अभिप्राय क्या था ?

अर्थ निकालने के लिए उपकरण - चार प्रश्नः

क. यह किस प्रकार का साहित्य है ?
ख. पुस्तक का मूल ढांचा क्या है ?
ग. एतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है ?
घ. विभिन्न शब्दों का अर्थ क्या है ?

पहला प्रश्न – यह किस प्रकार का साहित्य है ?

दो मुख्य वर्ग - काव्य (हृदय और भावनाओं की भाषा)
- गद्य (सिर और विचारों की भाषा)

विभिन्न प्रकार के गद्य, जैसे किः व्यवस्था, एतिहासिक वृतान्त, नाटक, नीतिवचन, भविष्यवाणी-सम्बंधी, सुसमाचार, पत्र।

दूसरा प्रश्न – पुस्तक का मूल ढांचा क्या है ?

क) ढांचे का महत्त्व
- लेखक ने अपना काम इस प्रकार बनाया है कि यह संदेश को व्यक्त करेगा।
- ढांचा कंकाल जैसा है जिस पर माँस लटकता है।
- अलग अलग परिच्छेदों को सम्पूर्ण के सम्बंध में देखने की जरूरत है।

ख) ढांचे का उदाहरण
- 1 कुरिन्थियों अध्याय 1-4, एकता के मामले, अध्याय 5-6 अनैतिकता, अध्याय 7 विवाह, अध्याय 9-10 मूर्तियों को चढ़ाया हुआ खाना, अध्याय 11 सिर को ढंकना और प्रभु भोज; अध्याय 12-14 आत्मिक वरदान, अध्याय 15 पुनरुत्थान, अध्याय 16 दान और नमस्कार।

- मरकुसः अध्याय 1:1:27, भीड़ के साथ यीशु
  8:27-अन्त तक, चेलों के साथ यीशु
  8:27-30, पतरस का अंगीकार और मोड़
- प्रेरितों – मूल वचनः अध्याय 1:8, सुसमाचार का प्रसारः (1) यरूशलेम, (2) यहूदिया, (3) सामरिया में, (4) पृथ्वी की छोर तक।

ग) <u>पत्र का ढांचा</u>
1. लेखक का नाम
2. पानेवालों के नाम
3. नमस्कार/आशीर्वाद
4. धन्यवाद और/या प्रार्थना
5. पत्र का मुख्य-भाग
6. अन्तिम नमस्कार/आशीर्वाद
7. संक्षिप्त हस्ताक्षर

<u>तीसरा प्रश्न - एतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है ?</u>
इस प्रश्न में हम प्रलेख के लिए परिस्थियाँ या अवसर बनाने का प्रयास करते हैं – किन परिस्थियों में इसे लिखा गया था?
कुछ प्रश्न जो पूछे जा सकते हैं: (क) लेखक कौन था?
(ख) कब लिखा गया था?
(ग) कहाँ से लिखा गया था?
(घ) कहाँ भेजा गया था?
(च) प्रलेख का उद्देश्य और/या अवसर क्या था?

<u>दो चरण हैं:</u>
- अन्दरूनी प्रमाण – हम खुद पुस्तक से क्या सीख सकते हैं ?
- बाहरी प्रमाण – हम दूसरे स्रोतों से क्या सीख सकते हैं: (क) बाइबल में, (ख) बाइबल से बाहर।

<u>चौथा प्रश्न</u> - विभिन्न शब्दों के अर्थ क्या हैं ?
- इस शब्द का संदर्भ में क्या अर्थ है ?
- जो वाक्यांश लेखक इस्तेमाल करता है उससे उसका क्या अभिप्राय है ?
- वाक्य और अनुच्छेद का क्या सम्बंध है ?

<u>विचार करने के लिए कुछ और बातें:</u>

(1) शब्दों का अध्ययन

एक शब्द के अध्ययन का लक्ष्य शब्द का जो अर्थ लेखक ने इस्तेमाल किया है पता लगाना है, जैसे कि यह समकालीन भाषा में कैसे इस्तेमाल किया गया था। एक शब्द के मूल (निरुक्ति) को जानने की कीमत सीमित ही है क्योंकि शब्द इस्तेमाल के साथ अर्थ बदलते रहते हैं।

शब्दों के अध्ययन में कुछ सहायताः
- Theological Dictionary of New Testament – Kittle/Friedrich
- Theological Wordbook of the Old Testament – Haris/Archer/Waltke
- Expository Dictionary of Old and New Testament words
- Vine Dictionary of New Testament Theology – Colin Brown

(2) अलंकार

जब लेखक के अभिप्रेत अर्थ का पता लगा रहे हैं तो यह जानना जरूरी है कि बाइबल में अनेक प्रकार के अलंकार इस्तेमाल किए गए हैं, उनमें से कुछ हैं:

1. <u>उपमा</u>
   दो चीजों की सीधी तुलना जो तत्त्वतः भिन्न हैं। उनका पता, जैसे, वैसे, समान जैसे शब्दों से चलता है। उदाहरणः याकूब 1:10-11; श्रेष्ठगीत 2:2-3; मत्ती 23:27।
2. <u>रूपक</u>
   दो चीजों की अप्रत्यक्ष तुलना। दावा करता है कि एक चीज दूसरी है। एक चीज का नाम दूसरे के लिए इस्तेमाल करना। उपमा की तरह, लेकिन 'समान', 'जैसे', 'वैसे' जोड़ने वाले शब्दों का इस्तेमाल नहीं होता है। उदाहरणः गलातियों 2:9 – 'खम्भे'; नीतिवचन 23:27; मत्ती 3:7 – 'हे साँप के बच्चो'।
3. <u>व्यंग्य</u>
   कुछ भिन्न ही अर्थ होता है, जो कहा गया है उसका उलटी भी। हँसी-मजाक या ताना के प्रभाव के लिए इस्तेमाल होता है। उदाहरणः 1 कुरिन्थियों 4:8 और 6:5।
4. <u>अतिशयोक्ति</u>
   अतिरंजना, धोखा देने के लिए नहीं, बल्कि एक विचार पर जोर देने और तीव्र करने के लिए। उदाहरणः गलातियों 4:15 – "यदि हो सकता तो तुम अपनी आँखें भी मुझे निकालकर दे देते", मरकुस 9:43 – "यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल।"
5. <u>मानवीकरण</u>
   मनुष्य के गुणों के साथ एक मनुष्य के रूप में परमेश्वर का संकल्पना।
   उदाहरणः उत्पत्ति 19:29; भजन 10:12; भजन 44:3.
6. <u>मुहावरा</u>
   एक विशेष भाषा की एक अभिव्यक्ति जिसका अर्थ अक्सर असली शब्दों से नहीं लगाया जा सकता है।
   उदाहरणः मत्ती 13:31-32 – "राई का एक दाना।"

<u>कदम 5 - उपयोगः सारे बाइबल अध्ययन का लक्ष्य</u>

<u>पूछने के लिए पाँच प्रश्नः</u>

1. पुस्तक के इस परिच्छेद में कौन सी मूल सच्चाइयाँ हैं ?
2. ये सच्चाइयाँ मेरे जीवन में कैसे लागू होती हैं ? निश्चित रहो।
3. इन सच्चाइयों को ध्यान में रखते हुए, मुझे अपने जीवन में क्या बदलाव लाने चाहिए ?
4. मैं इन बदलाव को किस प्रकार लागू करने वाला हूँ ?
5. ये सच्चाइयाँ और जो बदलाव मुझे लाने हैं, उनके बारे में मेरी व्यक्तिगत प्रार्थना क्या है ?

वचनों के उपयोग में, यह जरूरी है कि बाइबल इस्तेमाल की जाएः

क. व्यक्तिगत रूप से
ख. अनुग्रह की आँखों से
ग. यीशु की महानता देखने का प्रयास में

उपयोग में सम्भव फन्दे जिनके बारे में हमें सचेत रहना जरूरी हैः

1. 'अर्थ निकालने' को 'उपयोग करना' समझने की गलती करना
2. बाइबल की एक सच्चाई की ओर भावनात्मिक प्रतिक्रिया दिखाना, लेकिन सच्चाई को कार्य में लाने के लिए अन्त तक लगे नहीं रहना।
3. अपने जीवन में शीघ्र नतीजे और बदलाव नहीं देखने के कारण कुण्ठा।

<u>आगमिक अभिगम का एक सार</u>

1. प्रार्थना करो कि पवित्र आत्मा आपको सारी सच्चाई में ले चले। "पवित्र आत्मा के बिना बाइबल पढ़ना वैसा ही है जैसे धूप-घड़ी को चाँद की रोश्नी में पढ़ना।"
2. बाइबल जैसे है वैसे ही उसे पढ़ोः
   (क) सारे साधनों को परे रखो।
   (ख) एक नये RSV अनुवाद से शुरू करो।

(ग) एक बाइबल "जासूस" बन जाओ।

3. एक पुस्तक को एक ही बार में पढ़ो। बोल-बोल कर पढ़ो। जल्दी-जल्दी पढ़ो।
4. यह किस प्रकार का साहित्य है?
5. इसकी एतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है?
6. पुस्तक का मूल ढांचा क्या है?
7. इसमें "बड़ा विचार" क्या है? लेखक का उद्देश्य या विषय क्या है? क्या इसमें कोई मूल वचन है? क्या इसमें कोई मूल शब्द है? आप सारी पुस्तक का क्या शीर्षक रखेंगे?
8. जैसे जैसे आप पढ़ते जाएँ, महत्त्वपूर्ण शब्दों या वाक्यांशों को हल्के से रेखांकित करते जाएँ।
9. जिन शब्दों का और अध्ययन करना चाहते हैं उनके आगे प्रश्न चिन्ह लगा लें।
10. पुस्तक को कई बार पढ़ें।
11. अर्थ निकालने और उपयोग करने के प्रयास से पहले बड़े ध्यान से अवलोकन करो?
12. पुस्तक के शुरू में जाओ और हर परिच्छेद का अध्ययन करो।
13. सारे महत्त्वपूर्ण विस्तृत वर्णन को ध्यान में रखोः किसने किससे, कब, कहाँ, क्यों, कैसे, और किन नतीजों से क्या किया?
14. परिच्छेदों के बीच कड़ियों और संयोजक सम्बंधों को खोजो।
15. साहित्यिक अलंकारों, तर्क की प्रक्रिया, आवर्ती शब्द या विचार, कठिन विवरणों को समझाओ।
16. अब उपयोग करनेवाले प्रश्नों को लगाओ।

मृत्यु के बाद क्या होता है पर एक अध्ययन

परिचयः 2 कुरिन्थियों 5:1-11

मानव जीवन जैसे हम इसे जानते हैं, एक क्षण भर का ही है। आज हम यहाँ हैं और कोई गारंटी नहीं है कि कल भी हम यहाँ होंगे। बाइबल कहती है कि जीवन एक भाप है और हमारे और मृत्यु के बीच केवल एक परछाई ही है।

- मृत्यु अनिवार्य है। जीवतों के लिए मरना नियुक्त है (इब्रा. 9:27)। मृत्यु आदेशात्मक है, क्योंकि पाप संसार में आया है और इसकी मजदूरी या सजा मृत्यु है (रोमियों 6:23)। शारीरिक मृत्यु नौजवान और बूढ़े, अमीर और गरीब, विश्वासी और अविश्वासी दोनों को आती है। हम कह सकते हैं: मृत्यु अन्तकाल के लिए द्वार है, जो दोनों में से एक हो सकता है:
  - विश्वासियों के लिए: स्वर्ग में यीशु के साथ
  - अविश्वासियों के लिए: नरक में शैतान के साथ
- आजकल के संसार में हम मृत्यु के मामले को टालने की कोशिश करते हैं: कब्रिस्तान शहर से बाहर होता है। अनेक लोग मृत्यु की वास्विकता को टालने की कोशिश करते हैं और अक्सर मरने के लिए तैयार नहीं होते। जीवन का उद्देश्य हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास से परमेश्वर से मेल करने के द्वारा अनन्तकाल के लिए तैयार होना है।
- जीव-विज्ञान के अनुसार, मृत्यु हवा की कमी है। फिर भी अगर दिल धड़कना बंद कर दे तो साँस रुक जाती है और शरीर एक कड़ा शव बन जाता है।
- हम विश्वासियों को भी शरीर से आत्मा और प्राण के अलग होने के लिए शारीरिक मौत मरना होगा। (1 कुरिं. 15:53; सभोपदेशक 12:7)। जब तक प्रभु यीशु एल्लियाह की तरह हमें घर ले जाने के लिए नहीं लौटता है और हम पलक झपकते परिवर्तित हो जाते हैं (1 कुरिं. 15:51-52; 1 थिस्स. 4:16-17)।

<u>यीशु मसीह की मृत्यु के पहले मृत्यु के परिणाम</u>

पढ़ो: लूका 16:19-31, अमीर व्यक्ति और गरीब लाजर का दृष्टान्त।

मृत्यु के बाद: गरीब व्यक्ति स्वर्गदूतों द्वारा जो उद्धार पानेवालों के लिए सेवा करने को भेजी गई सेवा टहल करनेवाली आत्माएँ हैं (इब्रा. 1:14), ले जाया जाकर "अब्राहम की गोद" नामक जगह में पहुँचाया गया।

- अमीर व्यक्ति 'अधोलोक' में पहुँच गया।
- नोट करो: यह नरक नहीं है जो अनन्त यातना की जगह है।
- अधोलोक अधर्मियों की शरीर से मुक्त हुई आत्माओं की जगह थी। धर्मियों की आत्माएँ जो मृत्यु के समय शरीर से अलग हुई थीं, मसीह के पुनरुत्थान तक वहीं रहती थीं। ये जगहें एक गहरी और चौड़ी खाई से अलग की गई थीं। यह अस्थाई अधोलोक परमानन्द और सुख-चैन की जगह थी, जबकि नरक सजा और यातना की जगह थी।
- इस दृष्टान्त से पता चलता है कि दोनों व्यक्तियों की आत्माएँ सचेत बनी रहीं क्योंकि वे महसूस, तर्क, सुन, देख और बातचीत कर सकती थीं।
- विश्वासी को "अब्राहम की गोद" नामक जगह में ले जाया गया था जिसका सरल अर्थ है: अब्राहम की बाहों में विश्राम करना। दूसरे शब्दों में, विश्वास के पिता अब्राहम ने अधोलोक में उसका स्वागत किया और उसके ईर्द-गिर्द अपनी बाहें लपेट लीं।
- 'अधोलोक' एक फारसी शब्द है जिसका अर्थ है 'राजा का बगीचा', एक बहुत ही सुन्दर जगह।
- इस 'अदृश्य स्थिति' का एक और भाग है जिसे 'Tartarus' कहा जाता है, जो शब्द 2 पतरस 2:4 में ही इस्तेमाल किया गया है। यह अधोलोक से निम्न, धरती में अँधेरे कुण्डों और आग की जगह है।
- 'नरक' के इस भाग में (यहूदा 6 में इसे कैदखाना या जेल कहा है), गिरे और बँधे हुए स्वर्गदूतों को तब तक रखा गया है जब तक विशाल सफेद सिंहासन के सामने उनका न्याय न हो जाए (प्रकाशित. 20:11-15)।
- ऐसा लगता है 'नरक' की एक और निम्न जगह है जहाँ विभिन्न सृष्टि किए गए प्राणियों के लिए जिन्होंने बुरा करने के लिए खुद को बेच दिया है कैदखाने या जेल हैं! वे विशाल सफेद सिंहासन के न्याय तक यहीं रहेंगे, जहाँ सब पर मुकदमा चलेगा और अन्तिम नरक की अनन्त सजा दे दी जाएगी।
- बाइबल हमें सिखाती है कि नरक मनुष्जाति के लिए नहीं बनाया गया था बल्कि वास्तव में शैतान और उसके दूतों के लिए बनाया गया था। लेकिन अगर लोग इस जीवन में शैतान की सेवा करने का फैसला करते हैं तो वे सदा के लिए नरक में शैतान के साथ रहेंगे। (मत्ती 25:41)।

स्वर्ग

लेखाचित्रीय उदाहरण

अधोलोक

पृथ्वी

नरक
Abbys
Tartarus

<u>नरक की यह जगह कहाँ है ?</u>

यीशु ने कहा था कि जिस प्रकार योना मछली के पेट में था उसी प्रकार वह पृथ्वी के पेट में रहेगा।
(मत्ती 12:39-40; भजन 71:20)
दूसरे प्रमाण:
क) S.A. के शैतान का महा याजक की गवाही।
ख) अन्वेषकों ने गहरा बरमा चलाया – चिल्लाती हुई आवाजें सुनीं।

जब यीशु मरा तब क्या हुआ?

मन्दिर का मोटा पर्दा जो अति पवित्र स्थान को पवित्र स्थान से अलग करता था, ऊपर से नीचे तक दो भागों में फट गया (मत्ती 27:51; इब्रा. 9:8) और यह संकेत दिया कि जब यीशु ने कहा: "पूरा हुआ" तो स्वर्ग के लिए मार्ग खुल गया है।
क्रूस पर मरने के बाद यीशु कहाँ गया ?
स्पष्ट है कि उसका निर्जीव देह अरिमातिया के यूसुफ की कब्र में रख गया था। मरते हुए यीशु ने कहा: "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ ?" (लूका 23:46)।

इसके अतिरिक्त, यह परिणाम निकाल जा सकता है कि यीशु:
(क) अधोलोक में (प्रेरितों 2:27, 31) मृत्यु और अधोलोक की कुँजियाँ लेने के लिए गया था (प्रकाशित. 1:18)।
(ख) कैदी आत्माओं को अपनी विजय का प्रचार करने के लिए तारतारुस (Tartarus) को भी गया, जिन्होंने मानवजाति को भ्रष्ट करने की कोशिश की थी ताकि नहू के दिनों में यीशु मानव स्वभाव न ले सके (1 पतरस 3: 19-20)।
(ग) परलोक (paradise) भी गया, धर्मियों को कहने के लिए कि वे तैयार हों और स्वर्ग को चले चलें। इफि. 4:7-10, कहता है कि यीशु "बन्दियों को बाँध" ले गया। रोम साम्राज्य के दिनों में, जब एक युद्ध जीता जाता था, तो रोमी कुछ लोगों को "युद्ध के कैदियों" के रूप में अपने साथ वापस ले आते थे - यह अपने लोगों को दिखाने के लिए होता था कि कितना बड़ा युद्ध उन्होंने जीता है! एक नियत दिन विजयी सेना शहर में से परेड करती हुई निकलती थी जबकि सब लोग उन पर गुलाब के फूल वगैरा बरसाते थे। जब नागरिक युद्ध के कैदियों को जंजीरों में इकट्ठे जकड़े हुए देखते थे, तो वे बड़ी जोर से जय-ध्वनि करते थे क्योंकि वे जानते थे कि कितनी बड़ी विजय हासिल की गई है, और तब सिपाही युद्ध की लूट को दान के रूप में लोगों के लिए फेंकते थे।

उसी प्रकार मसीह भी क्रूस पर अपनी विजयी विजय के बाद (कुलु. 2:14-15) बन्दियों को बाँध ले गया और मनुष्यों को दान दिए। जब यीशु स्वर्ग लौटा, तो उसने तमाम "युद्ध के कैदियों" का स्वर्गदूतों के सामने प्रदर्शन कराया - उन विश्वासियों का जिन्हें उसने पृथ्वी पर जीता था - जंजीरों में जकड़े हुए नहीं लेकिन स्वतन्त्र उद्धार पाए हुए मनुष्य (भजन 24:7-10)।
उसने दान दिए: विश्वासियों को परिपक्वता में लाने के लिए कलीसिया को 5 सेवक (इफि. 4:11-16)।

प्रश्न: परलोक का क्या हुआ?

2 कुरिं. 12:1-4 में, प्रेरित पौलुस बताता है कि वह स्वर्ग लोक, यानि, तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया था। मनुष्य के दृष्टिकोण से:
- 1ला स्वर्ग – हमारे ईर्द-गिर्द वायुमण्डल, पृथ्वी है, यानि, वह क्षेत्र जहाँ पक्षी उड़ते हैं।

- 2रा स्वर्ग - ग्रहीय स्वर्ग जिसमें अरबों ग्रह, आकाशगंगाएँ, तारों का संसार और सूर्य हैं, यानि, अन्तरिक्ष जहाँ रॉकेट जाते हैं (विश्व)।
- 3रा स्वर्ग या स्वर्ग लोक - अनन्त परमेश्वर का सिंहासन कक्ष। परमेश्वर का निवासस्थान। (इसकी तुलना तम्बू और मन्दिर के 3 भागों से करो)। यह 3रा स्वर्ग ऊपर है और असली और अनन्त परलोक है, जहाँ विश्वासी अब जाते हैं!

वैसे भी पौलुस वहाँ कैसे पहुँचा?
सम्भव है लुस्त्रा में, जहाँ उस पर पथराव किया गया था। प्रेरितों 7:56, स्तिफनुस पर पथराव किया जा रहा था और उसने यीशु को देखा। प्रेरितों 14:19, सम्भव है पौलुस मर गया, स्वर्ग लोक गया, अत्यधिक अनुभव पाए, लेकिन प्रेरितों 14:20 में चलता रहा। पथराव के बाद प्रकट है मरे हुओं में से जिलाया गया: चमत्कार, न कोई हड्डियाँ टूटी थीं और न कोई शारीरिक हानि हुई थी, लेकिन अगले दिन अपनी सेवकाई का सफर जारी रखा।

<u>मसीह की मृत्यु के बाद, अब मृत्यु के परिणाम?</u>
आज, जब एक विश्वासी प्रभु में मरता है, तो यीशु खुद उसका, स्तिफनुस की तरह, स्वागत करता है, और स्वर्गदूत उसे सीधे परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाते हैं। फिली. 1:23; 2 कुरिं. 5:8; भजन 116:15। इसलिए, हमारे सामने रखी गई आशा की वास्तविकता को जानते हुए, इब्रा. 10:35-36 हमें प्रोत्साहित करता है कि हम हियाब न छोड़ें और धीरज धरें ताकि प्रतिज्ञा का फल पा सकें!
और, हमारे प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के लिए परमेश्वर का स्तुति हो जिसके द्वारा जीवन में से हम मृत्यु के भय के बिना बिलकुल स्वतन्त्र गुज़र सकते हैं (इब्रा. 2:14-15)।

<u>आगे क्या है?</u>

पुनरुत्थान और न्याय
परमेश्वर के अन्तिम न्याय को कार्यान्वित होने के लिए, जैसे बाइबल साफ-साफ सिखाती है पुनरुत्थान का होना जरूरी है (इब्रा. 6:1-2)। पुनरुत्थान न्याय से पहले आता है और न्याय पुनरुत्थान को अनिवार्य बनाता है। इसलिए, स्वर्ग में युग के अन्त में मसीह के लौटने पर, अन्तिम दिन हम पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करेंगे।
- पुनरुत्थान एक सच्चाई है! प्रकृति के नियमों में देखा है। यीशु ने खुद यूहन्ना 5:28-29 में पुनरुत्थान के बारे में बात की थी, खुद पुनरुत्थान था, यूहन्ना 11:25, और उसकी अपना पुनरुत्थान इसका प्रमाण है। 1 कुरिं. 15:3-4, 20 में उसे उनमें से पहला फल कहा गया है जो मरे हुओं में से जी उठेंगे।
- हमारे पुनरुत्थान के नए शरीर यीशु मसीह के शरीर जैसे होंगे: एक महिमामय शरीर, जो माँस और हड्डियों का है (लूका 24:39, 1 कुरिं. 15:50), आत्मिक (पृथ्वी के नियमों से अधीन नहीं), शक्तिशाली, महिमा से भरे हुए (मत्ती 17:2, रुपान्तर) और अविनाशी (मृत्यु और क्षय के अक्षम), सिद्ध जैसे हम हर एक को परमेश्वर देगा (1 कुरिं. 15:38, 42-44; फिलि. 3:21)। यह धर्मियों का या पहला पुनरुत्थान है, धन्य हैं वे जो इसके भागी हैं! (प्रकाशित. 20:4-6)

<u>दुष्ट या अधर्मी का क्या होगा?</u>

वे दूसरे पुनरुत्थान में जी उठेंगे, जो दण्ड का पुनरुत्थान होगा (प्रेरितों 24:15; यूहन्ना 5:29)। उनके लिए, उनके पुनरुत्थान के शरीरों का कोई विवरण नहीं दिया गया है, लेकिन उनकी एक जगह होगी, जैसे यीशु ने मत्ती 10:28 में कहा, उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को "नरक" में नष्ट कर सकता है। दूसरे पुनरुत्थान के लोगों को शापित और अपवित्र कहा गया है जिन्हें अनन्त नरक की भयानक सजा मिलेगी जहाँ वे सारे अनन्तकाल तक नरक की यातना भोगते रहेंगे (प्रकाशित. 21:8)।

<u>उद्धार पाए हुओं के लिए न्याय और ईनाम</u>

<u>न्याय:</u>
यूहन्ना 3:36 + यूहन्न 5:24। हमारे प्रभु की ये कहावतें हमारी अनन्त नियती के बारे में हैं जो हमारे व्यक्तिगत चुनाव के अनुसार है। अगर हम प्रभु यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में ठुकरा देते हैं तो हम परमेश्वर के अनन्त क्रोध में बने रहते हैं

और अन्त में यातना की अनन्त जगह, नरक में चले जाएँगे। लेकिन यीशु में पूरी तरह विश्वास करके हम इससे बच सकते हैं और जैसे दूसरा वचन कहता है: "उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।"
ध्यान दीजिए कि वो अविश्वासी जो यीशु में भरोसा करने से इन्कार करते हैं परमेश्वर के न्याय में है जो पहले से इस युग में एक व्यक्ति के जीवन में काम कर रहा है (रोमियों 1:18-28), जिसके पश्चात् यीशु के लौटने पर उनका अन्तिम न्याय होगा (मत्ती 25:31-46)।
जैसे ऊपर की बातों से स्पष्ट है कि हम पर दण्ड की आज्ञा नहीं (1 कुरिं. 5:21), और फिर भी हमें मसीह के न्यायासन के समुख खड़ा होना पड़ेगा (2 कुरिं. 5:10; रोमियों 14:10)। न्यायासन एक मंच था, जहाँ न्यायाधीश बैठ कर मुकदमों को सुनता और फैसला करता था, जो बात हम अपनी वर्तमान अदालतों में भी पाते हैं।
यहाँ उद्धार पाए विश्वासी का उनके कामों के लिए, न कि उनके पापों के लिए न्याय किया जाएगा (इब्रा. 10:17)। दूसरे शब्दों में, हमें प्रभु को उसके द्वारा हमें दी गई योग्यताओं, वरदानों, अवसरों और जिम्मेवारियों को हमने कैसे काम में लाया है, का हिसाब देना पड़ेगा (मत्ती 25:14-30)।

<u>यह न्याय क्यों? इसका उद्देश्य क्या है?</u>

<u>चार-गुणा उद्देश्य:</u>
1. हर व्यक्ति का सच्चा चरित्र प्रकट करना (1 कुरिं. 4:5)
2. मनुष्यों के सारे कामों की कीमत निर्धारित करना; मसीह पर या खुद की कोशिशों से बनाया (1 कुरिं. 3:13)।
3. सार्वजनिक ईनाम या सजा देना, क्योंकि इस जीवन में लोगों को अक्सर सजा या ईनाम नहीं मिलता है (मत्ती 16:27; रोमियों 2:6-9; लूका 16:25)।
4. मनुष्यों के साथ उसके बर्ताव में परमेश्वर की धार्मिकता को निर्दोष ठहराना। उसका न्याय स्वीकार किया जाएगा (प्रकाशित. 19:1-2)।

<u>न्याय का आधार या सिद्धान्त</u>

मनुष्य का न्याय किया जाएगा:
क) धर्म से न्याय होगा (प्रेरितों 17:31)
ख) परमेश्वर के पवित्र स्तर के अनुसार (प्रकाशित. 22:12)
ग) मसीह की ओर उनके रवैये के अनुसार (लूका 12:8-9)
घ) उन्हें दिए गए प्रकाश के परिमाण और अवसर के अनुसार (लूका 12:47-48)

<u>एक विश्वासी का किस लिए न्याय किया जाएगा?</u>

- हमारे कामों का (1 कुरिं. 3:13; सभोपदेशक 12:14)
- हमारे शब्दों का (मत्ती 12:36-37)
- हमारी रहस्यों का (रोमि. 2:16), और सम्भवत:
    - हमारे हृदयों के विचार, इब्रा. 4:12; मत्ती 15:19; लूका 12:2-3.
    - हमारे अभिप्राय / नीयतें: मसीह के प्रेम द्वारा बाध्य – 2 कुरिं. 5:14; 1 कुरिं. 4:5 या अपनी महिमा के लिए - 1 कुरिं. 3:21; मत्ती 6:1.

और न्याय का अन्तिम परिणाम क्या होगा?
जो काम बने हुए स्थिर रहेंगे और आग की परिक्षा में खड़े रहेंगे, वे ईनाम पाएँगे, लेकिन जो काम जल जाएँगे, तो व्यक्ति हानि उठाएगा, 1 कुरिन्थियों 3:14-15।

<u>मसीह में किए गए हमारे कामों के लिए ईनाम</u>

बाइबल में प्रभु ने अपने लोगों को ईनाम देने के बारे में अनेक प्रतिज्ञाएँ दी हैं। "ईनाम" शब्द नए नियम में एक सौ से भी ज्यादा बार इस्तेमाल किया गया है और अच्छी तरह दौड़ी एक दौड़, या अच्छी तरह किये गये एक काम के लिए एक विजयस्मारक के जैसे परमेश्वर की परोपकारिता प्रकट करता है। इस प्रकार प्रभु हमारी विश्वासयोग्यता और उसके लिए हमारी सेवा के अनुसार हमें ईनाम देना पसन्द करता है।

अधिकाँश ईनाम मुकुटों के रूप में हैं। आपने शायद किसी संग्रहालय या टीवी पर, सैकड़ों हीरों और दूसरे बहुमूल्य रतनों से जड़ा एक शाही मुकुट देखा होगा।

परमेश्वर के राज्य में, वफादारों को मिलने वाले मुकुट हैं:

क) आनन्द का मुकुट - मनुष्यों को जीतनेवालों के लिए (1 थिस्स. 2:19-20)। हर एक व्यक्ति जिसे आप प्रभु में लाते हैं आपके मुकुट में एक हीरा बने। आप कितने लोगों को प्रभु में लाए हैं ? (दानिय्येल 12:3)। वे आपके लिए आनन्द का स्रोत होंगे।

ख) अविनाशी मुकुट - उत्तम दौड़नेवालों के लिए (1 कुरिं. 9:24-25)। हम एक दौड़ में हैं और इब्रा. 12:1 हमें उपदेश देता है कि हम उस दौड़ में जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें, क्योंकि अगर हम अनुशासन/उत्तमता से दौड़ेंगे तो हम इस मुकुट को पाने योग्य ठहरेंगे।

ग) धार्मिकता का मुकुट - प्रत्याशियों के लिए (2 तीमु. 4:7-8)। आप प्रभु के लौटने की कितनी उम्मीद लगाए बैठे हैं ? क्या आप इस दृष्टिकोण से जी रहे हैं ? यह हमारे ईनाम को निर्धारित करेगा। 'मारानाथा' (प्रभु यीशु जल्दी आ!) हम सब के लिए वास्तविकता बन जाए, जैसे जैसे हम अपनी सेवकाई विश्वासयोग्यता से पूरी कर रहे हैं ?

घ) जीवन का मुकुट - विश्वासियों और शहीदों के लिए (याकूब 1:12; प्रकाशित. 2:10)। इसके लिए जाँचों और परिक्षाओं में स्थिर रहने की जरूरत है। और जैसे यीशु ने कहा: जो उसके लिए अपने प्राण खोएँगे वे उन्हें अनन्तकाल के लिए रख छोड़ेंगे। यीशु से प्रेम की खातिर मृत्यु और शहादत या सताव इस मुकुट द्वारा ईनाम पाएगा।

च. महिमा का मुकुट - पास्टरों और उन सब के लिए जो दूसरों की देखभाल करते हैं (1 पतरस 5:1-4)। जैसे हम प्रभु के झुंड की अधीन चरवाहों के रूप में सेवा करने/सिखने और देखभाल करने में विश्वासयोग्य होंगे, तो हम इन शब्दों के द्वारा प्रभु का अनुमोदन सुनेंगे "शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य सेवक" और इस मुकुट को पाएँगे। यह हमें सेवा में बलिदान देने और दूसरों की देखभाल करने में प्रेरित करे।

अब यह प्रकट है कि मुकुट लक्ष्य की प्राप्ती के बाद ही दिए जाएँगे और इसलिए आओ जैसे हम आगे बढ़ते जाते हैं तो विश्वासी बने रहें, और प्रकाशित. 3:11 के उपदेश को सुनें "जो कुछ तेरे पास है उसे थामे रह कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले।"

बेशक, हम अपने मुकुटों के स्वत्वबोधक नहीं होंगे, बल्कि परमेश्वर के मेमने के ईर्द-गिर्द चौबीस प्राचीनों की तरह उन्हें परमेश्वर अपने उद्धारकर्त्ता की आराधना के लिए इस्तेमाल करेंगे। अपने मुकुटों को उसके पैरों के पास नीचे रखते हुए हम उनमें शामिल हो सकते हैं। (प्रकाशित. 4:10-11)

ओह हाल्लेलुया! एक ऐसे अदभुत परमेश्वर को पाकर जो हमारा अनन्त यहोवा जायरा है हम धन्य हुए हैं।
जिसने - यीशु को हमारे उद्धार के लिए दे दिया
- अनन्त आराधना के लिए स्वर्गीय मुकुट दिए हैं।

मुझे निश्चय है कि उन चीजों का ज्ञान और अनुस्मारक जो परमेश्वर ने उनके लिए तैयार की हैं और जमा करके रखी हैं जो उससे प्रेम करते हैं, हमारे हृदयों में अत्यधिक आशा और सान्त्वना और सारी कठिनाइयों के विरोध में भी लगे रहने की शक्ति लाती हैं।

फिर भी, साथ ही, इस ज्ञान को प्रभावशाली होने में हमारे जीवनों और जीवन-शैली पर भारी उलझाव होंगे।

यह हमें प्रेरित और उत्तेजित करे:

- अनन्त, अदृश्य खजाने इकट्ठे करने के लिए, मत्ती 6:19-21.
- परमेश्वर के काम करने के लिए; विश्वास और आज्ञापलन का जीवन जीने के लिए, यूहन्ना 6:28-29.
- एक पवित्र, मसीह को महिमा लानेवाला जीवन जीने के लिए, 1 यूहन्ना 3:1-13; 1 कुरिं. 10:31; कुलु. 1:10.
- मसीह की सेवा और प्रभु का काम करने के लिए, यिर्म. 32:19; इफि. 2:10; 2 कुरिं. 6:1.

अन्त में, आओ हम प्रकाशितवाक्य 21:1-4 पढ़ें।

सम्बंध, व्यवहार, परिपक्वता और रवैया

किस प्रकार के परिवार और कलीसियाएँ हमारी होतीं अगर हम सब हमारे अपने चरित्र के लिए जिम्मेवारी लेते और जिनके साथ हम रहते हैं उनकी जरूरतें पूरी करने की कोशिश करते? वे लगभग स्वर्गीय होते! लेकिन अपना चरित्र विकसित करने और एक दूसरे की जरूरतों को पूरा करने में खुद को अर्पित करने के बदले, हम अक्सर एक दूसरे के चरित्र की आलोचना करने और स्वार्थीपन से अपनी जरूरतें पूरा करने में शैतान के उकसाने में आ जाते हैं। हम एक दूसरे को वृद्धि और परिपक्वता में प्रोत्साहित तब ही कर पाएँगे अगर हम पहले का अभ्यास करते हैं।

आओ हम रोमियों 14:4 पढ़ें, "तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बंध रखता है; वरन् वह स्थिर ही कर दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है।" यह वचन दूसरे के चरित्र की आलोचना करने के बारे में बात कर रहा है। आप में से हर एक परमेश्वर के समुख, अपने ही चरित्र के लिए जिम्मेवार हो। आओ हम फिलीप्पियों 2:3 भी पढ़ें, "विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।" यह वचन जरूरतों के बारे में बात कर रहा है। हर एक, परमेश्वर के समुख, एक दूसरे की जरूरतों को पूरी करने के लिए जिम्मेवार है।

जिम्मेवारी पर केन्द्र

एक दूसरे तरीके से शैतान ने हमें हमारे पारस्पारिक सम्बंधों में हमारी जिम्मेवारियों के बजाय हमारे अधिकारों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए उकसाने के द्वारा धोखा दिया है। उदाहरण के तौर पर, एक पति अपनी पत्नी को टोकता है क्योंकि उसे लगता है कि उसे उससे अधीन होने की उम्मीद करने का अधिकार है। एक पत्नी अपने पति का सिर खाती है क्योंकि वह उससे आत्मिक अगुआ होने की उम्मीद करती है। माँ-बाप अपने बच्चों को तंग करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि आज्ञापालन की माँग करना उनका अधिकार है। सदस्य स्थानीय कलीसिया में मुसीबत खड़ी करते हैं जब उन्हें लगता है कि उनके अधिकार पास्टरों या दूसरे सदस्यों द्वारा उल्लंघन किए जा रहे हैं।

परमेश्वर की प्रणाली में, हमारा केन्द्र हमारी जिम्मेवारियों को पूरा करने पर होना चाहिए, न कि अपने अधिकारों पर जोर देने पर। पति, एक आज्ञाकारी पत्नी होना तुम्हारा अधिकार नहीं है; लेकिन एक प्रेमी परवाह करनेवाला पति बनना तुम्हारी जिम्मेवारी है। प्रधानता कोई अधिकार नहीं है जिसका आप दावा कर सकते हैं, बल्कि निभाने के लिए एक विस्मयकारी जिम्मेवारी है। उसी प्रकार, पत्नियों, एक आत्मिक पति पाना तुम्हारा अधिकार नहीं है; लेकिन एक वशवर्ती, समर्थक पत्नी बनना तुम्हारी जिम्मेवारी है। माता-पिता, आज्ञाकारी बच्चों का पालन-पोषण करना आपका अधिकार नहीं है; लेकिन अपने बच्चों का प्रभु के पोषण और प्रशिक्षण में अनुशासित करना आपकी जिम्मेवारी है। मसीह की देह और एक स्थानीय कलीसिया का एक सदस्य होना एक अविश्वसनीय विशेषाधिकार है, कोई अधिकार नहीं। यह विशेषाधिकार परमेश्वर के बच्चों की तरह व्यवहार करने और लोगों का प्रेमी बनने की विस्मयकारी जिम्मेवारी के साथ आता है। जब हम मसीह के समुख खड़े होंगे, तब वह हमें यह नहीं पूछेगा कि जो कुछ हमें मिलने वाला था मिला कि नहीं। लेकिन वह हमें हमने कितनी अच्छी तरह अपनी जिम्मेवारियाँ निभाई हैं के अनुसार ईनाम देगा।

विवेक की भूमिका मत निभाओ

मैं एक अच्छी, नैतिक पृष्ठभूमि के साथ बड़ा हुआ, और मैं कलीसिया भी जाता था, लेकिन मैं एक मसीही नहीं था। उन दिनों मुझे बियर, खासकर गर्मी के दिन बगीचे की सफाई करने के बाद, बहुत अच्छी लगती थी। जब मैंने एक नौजवान के रूप में मसीह को स्वीकार किया तो मैं एक कलीसिया में जुड़ गया जो मादक पेयों से पूरी तरह परहेज के बारे में प्रचार करते थे। मैं शराबी नहीं था, इसलिए मैंने उस नियम को अनसुना करने का फैसला किया और अपनी बियर चालू रखी। दो साल के बाद, प्रभु ने मेरी बियर पीने की आदत के बारे में दोषसिद्धि दिलाई। दोषसिद्धि के साथ आज्ञापालन की शक्ति भी मिली। तब मैंने बियर पीना छोड़ दी।

कभी-कभी हम किसी दूसरे के जीवन में जहाँ बाइबल स्पष्ट नहीं है, पवित्र आत्मा या विवेक की भूमिका निभाने के लिए उकसाये जाते हैं: "मसीही शराब नहीं पीते हैं"; "तुम्हें हर दिन कम से कम 30 मिनट प्रार्थना और बाइबल में लगाने चाहिए"; "लाटरी की टिकटें खरीदना अच्छा भण्डारीपन नहीं है"; "मेक-अप मत करो", वगैरा। मुझे निश्चय है कि पवित्र आत्मा जानता है कि विवेक के मामलों में कब दोषसिद्धि लानी है। यह पवित्रीकरण की प्रक्रिया का एक भाग है जिसका वह संचालन करता है। जब हम उसकी भूमिका निभाने का प्रयास करते हैं तो हम अधिकतर आलोचना और बहिष्करण व्यक्त करते हैं। हमारा काम लोगों को स्वीकरण से घेरे रखना है और पवित्र आत्मा को उसका काम उसके समय में करने देना है।

अनुशासन हाँ, न्याय नहीं

क्या कभी ऐसे अवसर होते हैं जब मसीहियों को व्यवहार के मामलों में एक दूसरे का सामना करना चाहिए? हाँ। परमेश्वर अपेक्षा करता है कि हम उनका जिन्होंने बाइबल की सीमाओं का स्पष्ट रूप से उल्लंघन किया है सामना करें और उन्हें वापल लौटा ले आएँ। यीशु ने निर्देश दिया: "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया। यदि वह न सुने, तो एक या दो जन को अपने साथ और ले जा, कि 'हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुख से निश्चित की जाए'" (मत्ती 18:15-16)।

लेकिन मैं आपको इस क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण अन्तर के बारे में सतर्क कर दूँ: अनुशासन अवलोकित व्यवहार का सामना करने का एक मामला है – जिसे आपने खुद देखा है (गलातियों 6:1); न्याय चरित्र का मामला है। हमें निर्देश दिया गया है कि हम पापों के मामले में जिन्हें हमने देखा है दूसरों का सामना करें, लेकिन हमें उनके चरित्र का न्याय करने की अनुमति नहीं है (मत्ती 7:1; रोमियों 14:13)। व्यवहार का अनुसासन हमारा काम है; चरित्र का न्याय परमेश्वर का काम है।

उदाहरण के तौर पर, अनुमान लगाओ कि आपने अभी अभी अपने बच्चे को झूठ बोलते पकड़ा। "तुम झूठे हो," तुम उससे कहते हो। यह न्याय हुआ, यह उसके चरित्र पर हमला हो गया। लेकिन अगर आप कहते हो, "बेटा, तुमने अभी अभी झूठ बोला", यह अनुशासन हुआ। आप उसे एक अवलोकित व्यवहार के बारे में उत्तरदायी ठहरा रहे हो।

या आओ हम कहें कि आपका एक मसीही मित्र आपको बताता है कि उसने आयकर विवरण में धोखा किया है। अगर आप उसका एक चोर के रूप में सामना करते हो तो आप उसके चरित्र का न्याय कर रहे हो, और यह आपकी जिम्मेवारी नहीं है। आप उसका सामना जो आप ने देखा है के आधार पर ही कर सकते हो: "अपने करों में बेईमानी करके तुम सरकार से चुरा रहे हो, और यह गलत है।"

हमें लोगों को उनके व्यवहार के बारे में उत्तरदायी ठहराना चाहिए, लेकिन हमें उनके चरित्र को बदनाम करने की अनुमति नहीं है।

जब आप किसी को अनुशासित करते हो तो यह जो आपने खुद देखा या सुना है पर आधारित होना चाहिए, न कि कुछ जिसका आपको संदेह है या दूसरों के द्वारा आपने सुना है। अगर आप उसके व्यवहार का सामना करते हो और वह आपको उत्तर नहीं देता है तो अगली बार आपको दो या तीन गवाह लेकर आना है - आपके सामना करने के गवाह नहीं, लेकिन उसके पाप के दूसरे गवाह। अगर आप अकेले प्रत्यक्षदर्शी हैं तो आप अकेले उसका सामना करो और फिर रहने दो। हर बार जब वह आपको देखेगा तो परमेश्वर उसको उसके पाप की याद दिलाएगा। आखिरकार या तो वह ठीक कर लेगा या छोड़ जाएगा।

ज्यादातर जिसे हम "अनुसासन" कहते हैं कुछ और नहीं केवल चरित्र हत्या है। हम अपने अवज्ञाकारी बच्चों से कहते हैं: "तुम मूक बच्चे"; "तुम एक बुरे बच्चे हो"; "तुम निकम्मे हो।" हम असफल हो रहे मसीही भाई और बहनों को कहते हैं: "तुम अच्छे मसीही नहीं हो"; "तुम चोर हो"; "तुम कामुक हो।" इस प्रकार की बातें न तो सुधार लाती हैं और न उन्नति करती हैं; बल्कि वे चरित्र को नष्ट कर देती हैं और व्यक्ति और उसकी समस्याओं का अस्वीकरण प्रकट करती हैं। आपका बच्चा झूठा नहीं है; वह परमेश्वर का बच्चा है जिसने एक झूठ बोला है। आपका मसीही मित्र एक चोर नहीं है; वह परमेश्वर का बच्चा है जिसने कुछ ले लिया है जो उसका नहीं है। एक विश्वासी जो एक नैतिक असफलता में पकड़ा गया, एक पथभ्रष्ट व्यक्ति नहीं है; वह परमेश्वर का एक बच्चा है जिसने अपनी शुद्धता से समझौता किया है। हमें लोगों को उनके व्यवहार के बारे में उत्तरदायी बनाना चाहिए, लेकिन हमें उनके चरित्र को कभी भी बदनाम करने की अनुमति नहीं दी गई है।

<u>बिना न्याय किए अपनी जरूरतों को व्यक्त करो</u>

अगर एक सम्बंध में आपकी तर्कसंगत जरूरतें हैं, और वे पूरी नहीं हो रही हैं, तो क्या आपको अपनी जरूरतें व्यक्त करके आलोचना और अस्वीकरण व्यक्त करने का खतरा मोल लेना चाहिए? हाँ, लेकिन उन्हें इस प्रकार से व्यक्त करो कि आप दूसरे व्यक्ति के चरित्र पर संदेह प्रकट न करो। उदाहरण के तौर पर, आप एक सम्बंध में प्रेम नहीं किया जा रहा महसूस करते हो, तो आप कहते हो, "तुम मुझे अब प्रेम नहीं करते हो।" या आपको लगता है कि आपका पति/पत्नी आपकी कदर नहीं करती है, तो आप कहते हो, "तुम मुझे बेकार महसूस करवाती हो।" या आपको लगता है कि आपके और आपके मित्र के बीच फासला बढ़ रहा है, तो आप कहते हो, "तुम कभी लिखते या बुलाते नहीं।" आपने अपनी जरूरत व्यक्त कर दी है, लेकिन आपने प्रक्रिया में दूसरे व्यक्ति को भी पटक दिया है। आप उसके विवेक की भूमिका हड़प रहे हो। और अपनी जरूरत को उसकी समस्या के रूप में बताने से, वह शायद रक्षात्मक रुख अपना लेगा जो सम्बंध को और खराब कर देगा।

क्या हो अगर आप अपनी जरूरतें इस प्रकार व्यक्त करोः "मैं अब प्रेम किया जा रहा महसूस नहीं करता", "मैं एक बेकार, महत्त्वहीन व्यक्ति महसूस करता हूँ"; "जब हम लगातार बातचीत नहीं करते तो मैं कमी महसूस करता हूँ?" "तुम" दोषरोपन को "मैं" संदेश में बदलकर, आप बिना किसी पर दोष लगाए अपनी जरूरत व्यक्त करते हो। आपका न्याय नहीं करनेवाला तरीका परमेश्वर को व्यक्ति के विवेक से निपटने देता है और एक सम्भावित झगड़े को सेवकाई के अवसर में बदल देता है। दूसरा व्यक्ति आपके हमले के सामने खुद का बचाव करने के बदले आपकी जरूरत का उत्तर देने को स्वतन्त्र है।

हम सबकी प्रेम पाने, स्वीकृत होने और लाभकर होने की मूल मानवीय जरूरतें हैं। जब ये जरूरतें पूरा हुए बिना रह जाती हैं, तो बहुत जरूरी है कि हम उन्हें अपने परिवार के सदस्यों और साथी मसीहियों के सामने एक सकारात्मक तरीके से व्यक्त करें और दूसरों को उन जरूरतों को पूरा करने दें।

उसी प्रकार, हर मसीही अपने मसीही सम्बंध के संदर्भ में एक सलाहकार और सलाह पानेवाला दोनों है। शिष्यता और सलाह के बीच के अन्तर को याद रखोः शिष्यता आत्मिक विकास और परिपक्वता उत्तेजित करने के लिए भविष्य की ओर देखती है; सलाह समस्याओं को सुधारने और कमजोरी के क्षेत्रों को मजबूत करने के लिए भूत को देखती है। आपकी भूमिका या परिपक्वता का स्तर शायद माँग करता है कि आप बहुत सी मसीही सलाह देते हों। लेकिन फिर भी समय होंगे जब आपको खुद दूसरे मसीहियों की सलाह खोजने या पाने की जरूरत पड़ेगी। या आप एक नए मसीही हों या एक समस्या से भरे भूत से आए हों, और आप अभी भी काफी सारी सलाह प्राप्त कर रहे हों। आपको अवसरों के लिए सचेत रहना है जो परमेश्वर आपको आपके आसपास के दूसरे विश्वासियों को सहायक सलाह देने के लिए देगा।

शिष्यता के लिए नमूने

दूसरों को चेला बनाने की प्रगतीशील सेवकाई में मैं तीन स्तर देखता हूँ जो पौलुस ने कुलुस्सियों 2:6-10 में सुझाये हैं। शिष्यता के स्तरों का सार प्रस्तुत किया गया है।

मसीह में चेला बनानाः

संघर्ष और विकास के स्तर

	स्तर 1:	**स्तर** 2:	**स्तर** 3:
	अभिज्ञान मसीह में सम्पूर्ण (कुलु. 2:10)	परिपक्वता मसीह में निर्मित (कुलु. 2:7)	चाल मसीह में चलना (कुलु. 2:6)
आत्मिक	संघर्षः उद्धार या आश्वासन की कमी (इफि. 2:1-3)	संघर्षः शरीर के अनुसार चल रहा (गला. 5:19-21)	संघर्षः आत्मा की अगुआई की ओर असंवेदनशीलता (इब्रा. 5:11-14)
	विकासः परमेश्वर की सन्तान (1 यूहन्ना 3:1-3; 5:11-13)	विकासः आत्मा के अनुसार चल रहा (गला. 5:22-23)	विकासः आत्मा के द्वारा चलाए चलना (रोमियों 8:14)
बुद्धिसंगत	संघर्षः अंधेरी बुद्धि (इफि. 4:18)	संघर्षः जीवन के तत्त्व-ज्ञान की गलत धारणाएँ (कुलु. 2:8)	संघर्षः घमण्ड (1 कुरिं. 8:1)

	विकासः नया मन (रोमि. 12:2; इफि. 4:23)	विकासः सत्य का वचन ठीक रीति से काम में लाना (2 तीमु. 2:15)	विकासः सिद्ध, हर भले काम के लिए तत्पर (2 तीमु. 3:16-17)
भावात्मक	संघर्षः भय (मत्ती 10:26-33)	संघर्षः क्रोध (इफि. 4:31), चिन्ता (1 पतरस 5:7), उदासी (2 कुरिं. 4:1-18)	संघर्षः निरुत्साहन और दुख (गला. 6:9)
	विकासः स्वतन्त्रता (गला. 5:1)	विकासः आनन्द, शान्ति, धीरज (गला. 5:22)	विकासः संतोष (फिलि. 4:11)
सांकल्पिक	संघर्षः विद्रोह (1 तीमु. 1:9)	संघर्षः आत्मसंयम की कमी, बाध्यकारी (1 कुरिं. 3:1-3)	संघर्षः अनुशासनहीन (2 थिस्स. 3:7,11)
	विकासः वशवर्ती (रोमि. 13:1-2)	विकासः आत्मसंयम (गला. 5:23)	विकासः अनुशासित (1 तीमु. 4:7-8)
सम्बंधात्मक	संघर्षः अस्वीकरण (इफि. 2:1-3)	संघर्षः क्षमाहीनता (कुलु. 3:1-3)	संघर्षः स्वार्थीपन (फिलि. 2: 1-5; 1 कुरिं. 10:24)
	विकासः स्वीकरण (रोमि. 5:8; 15:7)	विकासः क्षमाशीलता (इफि. 4:32)	विकासः भाईचारा (रोमि. 12:10; फिलि. 2:1-5)

स्तर 1 लोगों की मसीह में उनकी पहचान को स्थापित करने और समझने की बुनियादी मामलों में सहायता करने से सम्बंधित है। पौलुस ने जो हम मसीह में हैं के समाप्त कार्य को घोषित किया थाः "तुम उसी में भरपूर हो गए हो" (कुलु. 2:10)।

स्तर 2 मसीह में परिपक्वता के मामलों से निपटता है, जिसके बारे में पौलुस "उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ" (आय. 7) में संकेत देता है।

स्तर 3 मसीह में हमारी रोजाना की चाल को दर्शाता है, जो हमारी पहचान और परिपक्वता पर आधारित है। पौलुस ने निर्देश दियाः "अतः जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो" (आय. 6)।
हर स्तर पहले स्तर की सफलता पर निर्भर है। एक मसीही एक प्रभावशाली चाल (स्तर 3) नहीं चल सकता है अगर वह परिपक्वता (स्तर 2) में नहीं बढ़ रहा है, और वह परिपक्वता के समीप नहीं जा सकता है अगर वह मसीह में अपनी पहचान (स्तर 1) को नहीं समझता है।

ध्यान दीजिए कि हर स्तर के लिए उपयोग के पाँच विमा हैंः आत्मिक, बुद्धिसंगत, भावात्मक, सांकल्पिक और सम्बंधात्मक। उपयोग के हर विमा में, संघर्ष का एक विषय और विकास का एक कदम दोनों हैं। संघर्ष के विषय पता लगाते हैं कि

किस प्रकार पाप, संसार, शरीर और शैतान शिष्यता की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करते हैं। याद रखोः शैतान विश्वासी की मसीह में पहचान, परिपक्वता और चाल को धोखा देने, व्यर्थ करने और भंग करने के लिए वचनबद्ध है। संघर्ष के विषय उसके काम की अभिव्यक्ति को प्रकट करते हैं जिनको विकास के विशेष कदमों के द्वारा समाधान करना और बदलना चाहिए।

कृपया समझिए कि जैसे चार्ट बताता है शिष्यता के तीन स्तरों या उपयोग के पाँच विमाओं के बीच कोई बाइबल की सीमाएँ नहीं हैं। चार्ट तो केवल विशेष, बुनियादी मामलों को प्रकाशमय करने के लिए बनाया गया है जिनका विश्वासियों की वृद्धि - और एक दूसरे की वृद्धि में मदद, और परमेश्वर के विश्वस्त, प्रभावी सेवक बनने के लिए समाधान करना जरूरी है।

स्तर 1: पहचान

इस स्तर पर आत्मिक संघर्ष का विषय व्यक्ति के उद्धार की कमी है (अगर उसने नया जन्म नहीं पाया है) या उद्धार के आश्वासन की कमी है (अगर उसने नया जन्म पाया है)। उद्धार का आश्वासन देना आपका काम नहीं है, यह परमेश्वर देता है (रोमियों 8:16; 1 यूहन्ना 5:13)। विकास के इस कदम में आपकी भूमिका लोगों को बाइबल की ओर ले जाना है जो परमेश्वर की सन्तान के रूप में उनकी आत्मिक पहचान घोषित करती है।

बुद्धिसंगत से, लोग परमेश्वर के राज्य में उसके सच्चे ज्ञान के बिना आ जाते हैं। परमेश्वर में विश्वास करने और वो बनने जो वह चाहता है वे बनें, उसके लिए उन्हें कुछ जानने की जरूरत है (होशे 4:6)। जब तक उनके मन नये न हो जाएँ और वे विश्वास की एक सही प्रणाली न विकसिक कर लें, वे मूल जरूरतों को गलत तरीके सेः परमेश्वर से स्वतन्त्र - पूरी करने की कोशिश करेंगे।

इस स्तर पर भावात्मक संघर्ष भय है। भय लोगों को वह करने के लिए विवश करता है जो उन्हें नहीं करना चाहिए और जो उन्हें करना चाहिए करने से रोकता है। जब लोग परमेश्वर के अलावा किसी व्यक्ति या किसी चीज के भय से प्रेरित होते हैं, तब वे स्वतन्त्र नहीं हैं, और स्वतन्त्रता मसीह में हमारी मिरास है। शैतान भय के द्वारा बँधन में रखता है, लेकिन परमेश्वर का भय दूसरे सब डरों को निकाल देता है (नीतिवचन 1:7)।

सांकल्पिक तौर पर, लोगों ने परमेश्वर से स्वतन्त्र, हठी विद्रोह में जीवन जीना सीख लिया है। वे या तो स्वतन्त्र जीवन जीने के बारे में सोच रहे होते हैं या एक माता/पिता, पति/पत्नी या दूसरे व्यक्ति या संस्था पर अस्वस्थ निर्भरता से जीवन जीते हैं। अधिकाँश लोग जो उन पर अधिकारी हैं उन पर न्यायी बनकर बैठना चाहते हैं। इस विमा के विकास में एक प्रेमी पिता के रूप में परमेश्वर में और दूसरों में बाइबल की अधीनता को समझना और उपयोग में लाना शामिल है।

सम्बंधात्मक रूप से, क्योंकि संसार का स्वीकरण का मापदण्ड प्रदर्शन पर निर्भर है, अधिकाँश लोग बचपन से अस्वीकरण अनुभव करते आए हैं। परन्तु, परमेश्वर का राज्य परमेश्वर के अप्रतिबन्ध प्रेम और स्वीकरण पर आधारित है (तीतुस 3:5)। इसलिए, सम्बंधों का आधार दूसरों को वह देना नहीं है जिसके वे हकदार हैं - जो न्याय है - बल्कि जिसके वे नहीं हैं - जो दया है। दूसरों का निर्माण अधिकार से शुरू नहीं होता है जो जवाबदेही की माँग करता है। यह स्वीकरण से शुरू होता है जिसके पीछे अभिपुष्टि होती है। एक बार जब लोगों को स्वीकार किया गया है और अभिपुष्टि की गई है, तो वे खुद अधिकार की ओर जवाबदेह हो जाएँगे।

इसलिए शिष्यता का पहला लक्ष्य मसीह में पहचान को स्थापित करना है। इसके लिए आवश्यक है:

- व्यक्तियों को मसीह में लाना और उन्हें उनके बाइबल पर आधारित उद्धार के आश्वासन में ले जाना।
- उन्हें परमेश्वर के सच्चे ज्ञान में और वे मसीह में कौन हैं में ले जाना, और उन्हें परमेश्वर के मार्गों को जानने के तरीकों को सिखाना।
- लोगों और हालातों के डर के उनके मूल प्रेरणा को परमेश्वर के भय में बदलना।
- उनकी यह देखने में मदद करना कि वे किस प्रकार अभी भी परमेश्वर की भूमिका निभा रहे हैं या परमेश्वर के अधिकार के प्रति विद्रोह कर रहे हैं।
- उन्हें स्वीकार करके और उनकी अभिपुष्टि करके अस्वीकरण के विरुद्ध उनके रक्षात्मक तरीकों को तोड़ गिराना।

स्तर 2: परिपक्वता

लोगों का मसीह में निर्माण करना, जो पवित्रीकरण की प्रक्रिया है, आत्मिक विमा में शुरू होता है जिसे हम शरीर के अनुसार चलने और आत्मा के अनुसार चलने के अन्तर को पहचानने में उनकी मदद करके कर सकते हैं। जितना ज्यादा वे शरीर के अनुसार चलने का फैसला करेंगे उतने ज्यादा समय वे अपरिपक्व (कच्चे) रहेंगे। जितना ज्यादा वे आत्मा के अनुसार चलने का फैसला

करेंगे, उतनी जल्दी वे परिपक्व होंगे। इस सच्चाई का आधार विश्वासी की समझ है कि बाहरी हालात निर्धारित नहीं करते हैं कि वह कौन है, वह कैसे चलता है या वह क्या बनता है। केवल परमेश्वर और उसकी ओर व्यक्ति की प्रतिक्रिया ही यह निर्धारित कर सकती है।

तर्कसंगत तौर पर, जब मसीही शैतान के झूठ या संसार के तत्त्व-ज्ञान में फँस जाते हैं, तो वे बढ़ नहीं पाएँगे (कुलु. 2:8)। युद्ध मन के लिए है, और हमें शैतान की युक्तियों को प्रकट करना और हर विचार बँदी बनाना सीखना चाहिए (2 कुरिं. 10:4-5)। शिष्यता के लिए मन के अनुशासन की जरूरत पड़ती है। जो लोग उनके विचारों के लिए जिम्मेदारी नहीं लेते, चेले नहीं बनाए जा सकते हैं।

भावात्मक विमा में, भावनाएँ विचारों के जीवन की उपज हैं। एक व्यक्ति को सफल, महत्त्वपूर्ण, सुखी, वगैरा क्या बनाता है, इसके बारे में अगर एक व्यक्ति के विचार और विश्वास गलत हैं तो वह नकारात्मक विचारों द्वारा सताया जाएगा। क्रोध, चिन्ता और उदासी अक्सर एक गलत विश्वास की प्रणाली का परिणाम होते हैं। मानसिक और भावात्मक स्वास्थ्य के सबसे बड़े निर्धारक परमेश्वर का सच्चा ज्ञान, उसके मार्गों का स्वीकरण और उसकी क्षमा का आश्वासन हैं।

सांकल्पिक तौर पर, मसीहियों को शरीर द्वारा प्रेरित बाध्याकारिता में पड़ने के बजाय आत्मसंयम के आत्मिक फल को अभ्यास में लाना चाहिए।

सम्बंधात्मक तौर पर, क्षमा परिपक्वता की कुँजी है। यह वो सरेस है जो परिवारों और कलीसियाओं को जोड़ता है। शैतान व्यक्तियों और सेवकाइयों के विकास को रोकने के लिए क्षमाहीनता को और किसी भी दूसरी मानवीय कमी से बढ़कर इस्तेमाल करता है। क्षमा न करनेवाला व्यक्ति बीते समय से या एक व्यक्ति से जुड़ा हुआ है और मसीह में आगे बढ़ने के लिए स्वतन्त्र नहीं है।

शिष्यता का दूसरा लक्ष्य पवित्रीकरण और मसीह के स्वरूप में विकास के परमेश्वर के लक्ष्य को स्वीकार करना है। इसके लिए आवश्यक है:

- आत्मा के अनुसार और विश्वास द्वारा चलना सीखने में लोगों की मदद करना।
- सत्य पर विश्वास करने के लिए उनके मनों को अनुशासित करने में मार्गदर्शन करना।
- उन्हें आत्मसंयम विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- उन्हें व्यक्तिगत समस्याओं को हल करने के लिए दूसरों को क्षमा करने और उनकी क्षमा पाने के लिए चुनौती देना।

स्तर 3: चाल

कितने सारे मसीही शिष्यता का उनका सफर स्तर 1 और 2 के बजाय इस स्तर से शुरू करना चाहते हैं। वे पूछते हैं, "मैं मसीही के रूप में बढ़ने के लिए क्या करूँ?" जबकि उन्हें पूछना चाहिए, "मैं क्या बनूँ?" मसीही सेवकाई की सबसे बड़ी असफलता, इससे पहले कि लोग मसीहियों के रूप में परिपक्व हो जाएँ (स्तर 1 और 2), उनसे मसीहियों (स्तर 3) के रूप में व्यवहार करने की उम्मीद करना है। ऐसा करने में, हम लोगों से एक प्रकार से व्यवहार करने के लिए कह रहे हैं जो उनकी पहचान और परिपक्वता के उनके स्तर के उनके प्रत्यक्षज्ञान से अस्थिर है, और यह तो एक नामुमकिन कार्य है। लेकिन, जैसे विश्वासी मसीह में अपनी पहचान दृढ़ करते हैं और परिपक्वता में बढ़ते हैं, हम उन्हें उनके रोजाना के जीवन में मसीह जैसा व्यवहार लगातार दिखाने के लिए चुनौती देकर, और अधिक चेला बना सकते हैं।

आत्मिक तौर पर परिपक्व लोगों की पहचान है वे लोग जिनकी ज्ञानेंद्रियाँ अभ्यास करते करते भले-बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं (इब्रा. 5:14)। परखना अक्सर एक गलत समझा हुआ विचार है। सच्चा बाइबल का परखना केवल मन का ही कार्य नहीं है; यह आत्मा का भी एक कार्य है। अपने आत्मा के द्वारा परमेश्वर आत्मिक तौर पर परिपक्व विश्वासी के लिए एक अनुकूल आत्मा की पहचान कराएगा और एक विरोधी आत्मा की चेतावनी देगा। आत्मिक युद्ध में आत्मिक परख रक्षा की पहली नीति होती है।

हालाँकि ज्यादा ज्ञान इसे प्रेरित करता हुआ लगता है, बुद्धिसंगत प्रक्रिया में धमण्ड हमेशा एक सम्भावित खतरा है। लेकिन विश्वासी कभी भी परमेश्वर और उसके मार्गों को इतना नहीं जान जाएगा कि उसे परमेश्वर की जरूरत ही नहीं पड़े। अगर मसीही ऐसे स्थान में पहुँच जाएँ जहाँ वे अपनी समझ का सहारा लेते हैं तो वे परमेश्वर को स्वीकारना बंद कर देंगे। परमेश्वर के वचन का सच्चा विद्यार्थी स्वीकार करेगा कि जितना ज्यादा वह परमेश्वर के बारे में जानता है उतना ज्यादा वह परमेश्वर पर निर्भर होता है।

भावात्मक तौर पर, परिपक्व विश्वासी सब परिस्थियों में संतुष्ट होना सीखता है (फिलि. 4:11)। इस जीवन में बहुत सारी निराशाएं आती हैं, और विश्वासी की अनेक इच्छाएँ बिना पूरी हुए रह जाएँगी। लेकिन उसका कोई भी लक्ष्य पूरा हुए बिना नहीं रहेगा अगरचे वे भक्तिपूर्ण लक्ष्य हैं। जीवन की परिक्षाओं के मध्य, मसीहियों को प्रोत्साहन की जरूरत पड़ती है। प्रोत्साहन देने का अर्थ लोगों को चलते रहने के लिए हिम्मत देना है। हर सिखानेवाला एक प्रोत्साहन देनेवाला होना चाहिए।

किसी ने कहा है कि सफल मसीही का जीवन उसकी इच्छा-शक्ति के इस्तेमाल पर निर्भर रहता है। अनुशासनहीन व्यक्ति एक उत्पादक जीवन जीने के योग्य नहीं है। लेकिन अनुशासित व्यक्ति एक आत्मा से भरा हुआ व्यक्ति है जिसके कोई भी अनसुलझे संघर्ष नहीं हैं और जो मसीह में अपनी सारी जरूरतें पूरी करने का प्रयत्न करता है।

सम्बंधात्मक तौर पर, परिपक्व व्यक्ति अपने लिए जीवन नहीं जीता है बल्कि दूसरों के लिए जीता है। सम्भवतः विश्वासी की परिपक्वता की सबसे बड़ी परिक्षा इस बुलावे में पाई जाती है "भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो" (रोमियों 12:10)। वैसे भी संसार हमें सच्चे मसीहियों के रूप में हमारे बाइबल के ज्ञान, हमारी पदवियों, हमारी शैक्षिक उपाधियों, हमारे रूप-रंग या हमारी ईमारतों के द्वारा नहीं, बल्कि हमारे प्रेम के द्वारा पहचानेगा।

सच्च तो यह है कि शिष्यता का तीसरा लक्ष्य विश्वासियों को उनके घरों, उनकी नौकरियों और समाज में विश्वासियों के रूप में कार्य करने में मदद करना है। प्रभावी मसीही चाल में आत्मिक वरदानों, कुशलताओं और बुद्धि का दूसरों की सेवा में उचित उपयोग और संसार में एक सकारात्मक गवाह बनना शामिल है। ये व्यवहार के लक्ष्य तब ही तर्कसंगत हैं जब एक व्यक्ति मसीह में अपनी पहचान स्वीकार करता है और परिपक्वता अनुभव करता है।

मेरा अवलोकन यह है कि अधिकाँश मसीही प्रचार का लक्ष्य स्तर 3 होता है, जिससे सुननेवालों में एक व्यवहार सम्बंधी प्रतिक्रिया पैदा की जाए। लेकिन अधिकाँश मसीही स्तर 1 में ही फँसे हैं, बीते जीवन में बंद हैं, डर से निश्चल हुए हैं, अस्वीकरण के कारण अकेले पड़े हैं। उन्हें कोई विचार नहीं कि वे मसीह में कौन हैं, इसलिए मसीही चाल में सफल होने का उनके पास कोई तरीका नहीं है। अपरिपक्व विश्वासियों को बर-बार बताने के बजाय कि उन्हें क्या करना चाहिए, आओ हम उनके साथ मनाएँ जो मसीह ने पहले से ही किया है और जो वे पहले से ही उसमें हैं बनने में उनकी मदद करें।

नए स्वभाव की स्वतन्त्रता में जीवन जीना

सारा एक मध्यवय की स्त्री है जिसने अपने जीवन में बचपन से दुख ही दुख देखे हैं। धर्मविधि और यौन दुरूपयोग की यादें जो उसने एक जवान बच्चे के रूप में सही थीं, उसके सारे मसीही जीवन में लगातार उसे तंग करती आई हैं। जब वह मुझे मिलने आई उस समय उसका क्षतिग्रस्त आत्मरूप सुधार से बाहर लग रहा था। जैसे उसने मुझे अपनी कहानी बताई, उसने एकदम भाव प्रकट नहीं किये, लेकिन उसके शब्द पूर्ण निराशा दिखा रहे थे।

"तुम कौन हो, सारा? तुम खुद को किस प्रकार देखती हो?" उसके बोलना बंद करने पर मैंने पूछा। "मैं बुरी हूँ", उसने कठोरता से उत्तर दिया। "मैं किसी के भी कुछ काम की नहीं हूँ। लोग मुझे बताते हैं कि मैं बुरी हूँ, और मैं केवल मुसीबत ही लाती हूँ।"

"तुम बुरी नहीं हो," मैंने तर्क किया। "परमेश्वर की सन्तान बुरी कैसे हो सकती है? क्या तुम खुद को इसी प्रकार देखती हो?" सारा ने सर हिलाया।

मैंने एक छपा हुआ कागज निकाला जिसमें बाइबल के वचनों पर आधारित मसीह में हमारी पहचान के बारे में अनेक वाक्याँश लिखे हुए थे और उसे सारा को दिया। "मैं चाहता हूँ कि तुम इसी समय जोर से इन वाक्याँशों को पढ़ो," मैं ने आदेश दिया। "वे तुम्हें तुम्हारी बाइबल की पहचान की याद कराएँगे।" सारा ने कागज लिया और पहला वाक्याँश जोर से लेकिन थोड़ा रुक-रुककर पढ़ना शुरू किया: "मैं पृ-थ्वी का न-म-क हूँ..." अचानक उसका चरित्र बदल गया। उसने सर उठाकर देखा और उपहास से हँसी। "कभी नहीं, तुम...!"

शैतान को सारा जैसे शिकार के द्वारा अपना बदसूरत व्यक्तित्व व्यक्त करते हुए देखना कभी भी मजे की चीज नहीं है। लेकिन मैं ने मसीह के नाम में प्रार्थना के द्वारा उस पर अधिकार लिया और सारा को स्वतन्त्रता के कदमों में से ले गया। वह आत्मिक बन्धन की जंजीरों को उतार फेंकने में सफल रही और परमेश्वर की सन्तान के रूप में अपनी सच्ची पहचान के अनुसार जीवन जीने लगी। बाद में उसने मुझे बताया कि जो कागज मैं ने उसे पढ़ने को दिया था जैसे वह उसे पढ़ने लगी थी कोरा लगने लगा था। क्या कागज या उस पर जो वाक्याँश छपे थे उनके बारे में कुछ जादू था? नहीं, यह तो कागज पर केवल स्याही थी। लेकिन सारा के पूर्ण रूप से समझने में कि वह मसीह में कौन है कुछ अत्याधिक महत्त्वपूर्ण था। शैतान ने उससे धोखे से विश्वास करवा लिया था कि वह बेकार और बुरी है, जो एक झूठ था। वह उसके परमेश्वर की सन्तान के रूप में उसकी पहचान के बारे में उन वाक्याँशों को पढ़ने के बिलकुल विरुद्ध था। उसे पता था कि परमेश्वर का सत्य उसके झूठ को निरस्त्र कर देगा बिलकुल उसी प्रकार जैसे रोश्नी अंधेरे को निरस्त्र करती है। और वह बिना लड़ाई के हार मानने वाला नहीं था।

शैतान के बन्धन से आपकी स्वतन्त्रता के लिए कुछ भी इतना मूलभूत नहीं है जितना जो परमेश्वर ने मसीह में आपके लिए किया है और फलस्वरूप आप कौन हो उसको समझना और उसकी अभिपुष्टि करना। हम सब अपनी महसूस की हुई पहचान के अनुसार जीते हैं। वास्तव में, कोई भी उस तरीके से लगातार व्यवहार नहीं कर सकता है जो वह खुद को कैसे देखता है से परस्पर-विरोधी है। जीवन के हालातों की ओर आपके रवैये, कार्य, उत्तर, और प्रतिक्रियाएँ आपके सचेतन और अवचेतन आत्मज्ञान द्वारा निर्धारित होती हैं। अगर आप खुद को शैतान और उसकी युक्तियों के एक असहाय शिकार के रूप में देखते हो, तो आप उसके शिकार के रूप में जीवन जीओगे और उसके झूठ के बन्धन में रहोगे। लेकिन अगर आप खुद को परमेश्वर के अति प्रेमी और स्वीकृत सन्तान के रूप में देखते हो जो आप वास्तव में हो तब आप परमेश्वर की सन्तान की तरह जीवन जीओगे।

यहाँ पर मैं मसीह में हमारी पहचान के अनेक क्रांतिक पहलुओं को प्रकाशमय करना चाहता हूँ। आप में से अनकों ने यहाँ सार प्रस्तुत की गई बाइबल की सच्चाइयों को अपना बना लिया होगा, और आप में से दूसरों को यह भाग इसके सिद्धान्त के विषय-वस्तु के कारण भारी लगा होगा। लेकिन मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप इसे छोड़ न दें। ये विचार परमेश्वर की सन्तान के रूप में आत्मिक संघर्ष से आपकी स्वतन्त्रता के लिए मूलभूत हैं। मसीह में आत्मिक पहचान और परिपक्वता का मामला कितना अत्यावश्यक है!

आप अनन्तकाल तक जीवित और ठीक-ठाक हो

आप कम से कम दो मुख्य भागों से बने हैं: आपका भौतिक व्यक्तित्व और आपका निराकार व्यक्तित्व। बाहर से तो आपकी शारीरिक देह है, और अन्दर से आपका एक प्राण/आत्मा है: सोचने, महसूस करने, फैसला करने (मन, भावनाएँ, और इच्छा-शक्ति अक्सर सामूहिक रूप से प्राण कहे जाते हैं), और परमेश्वर से सम्बंध बनाने (आत्मा) की योग्यता। आपकी देह आपके प्राण/आत्मा से संयोग में है, और यह आपको शारीरिक रूप से जीवित बनाता है। एक मसीही के रूप में, आपके उद्धार के कारण आपका प्राण/आत्मा परमेश्वर के साथ एक है, और यह आपको आत्मिक तौर पर जीवित बनाता है।

जब परमेश्वर ने आदम को बनाया, तो वह सम्पूर्ण रूप से जीवित था – शारीरिक और आत्मिक तौर पर। लेकिन आदम के पाप और अनुवर्ती आत्मिक मृत्यु के कारण, हर व्यक्ति जो इस संसार में पैदा होता है शारीरिक रूप से जीवित लेकिन आत्मिक तौर पर

मरा हुआ होता है। परमेश्वर से पृथक् होकर, आप अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थित और बुद्धि की कमी महसूस करते हो, इसलिए आपने अपनी रुचियाँ खुद पर केन्द्रित करते हुए, परमेश्वर से स्वाधीन जीवन जीना सीख लिया। यह सीखी हुई परमेश्वर से स्वाधीनता, बाइबल में इसे शरीर कहा गया है।

जब आपका नया जन्म हुआ था, आपका प्राण/आत्मा परमेश्वर से जुड़ गया था और आप आत्मिक रूप से जीवित हो गए - उतने ही जीवित जितना पाप करने से पहले आदम उद्यान में था। जैसे इफिसियों की पत्री बारम्बार घोषित करती है, अब आप मसीह में हो, और मसीह आप में है। क्योंकि मसीह जो आप में है अनन्त है, आत्मिक जीवन जो आपने उससे पाया है अनन्त है। आपको अनन्तकाल का जीवन पाने के लिए मरने का इन्तज़ार नहीं करना होगा; यह इसी समय आपका है! और शैतान जो चाहेगा आप विश्वास करें उसके विपरीत, वह आपसे आपका अनन्तकाल का जीवन छीन नहीं सकता है क्योंकि वह यीशु को आपसे छीन नहीं सकता है, जिसने आपको न कभी छोड़ने और न कभी त्यागने की प्रतिज्ञा की है (इब्रानियों 13:5)।

आप पापी से सन्त बन गए हो

क्या आपने कभी एक मसीही को अपने बारे में "केवल अनुग्रह से उद्धार पाया एक पापी" कहते सुना है? क्या आपने अपने बारे में ऐसा कहा है? अगर आप खुद को एक पापी के रूप में देखोगे तो आप पाप करोगे; आप एक पापी से और क्या उम्मीद कर सकते हो? आपका मसीही जीवन ज्यादा से ज्यादा मध्यम ही रहेगा - एक गैर-मसीही से आपको भिन्न देखना कठिन होगा, जिसके द्वारा हार की भावनाओं से आप दोषी बने रहोगा। शैतान अवसर को हाथ में ले लेगा, दोष को बढ़ाएगा, और आपको मनवा लेगा कि आप एक ऊपर-नीचे के आत्मिक अस्तित्व में फँसे रहने वाले हो। एक हारे हुए मसीही के रूप में आप अपना पाप स्वीकार करोगे और अच्छा करने की कोशिश करोगे, लेकिन अन्दर ही अन्दर आप स्वीकार करोगे कि आप अनुग्रह से उद्धार पाए एक पापी हो, और यीशु के पुनरागमन तक किसी प्रकार टिके हुए हो।

क्या आप वास्तव में वही हो? बिलकुल नहीं! बाइबल विश्वासियों को पापी करके नहीं बुलाती है, न ही अनुग्रह से उद्धार पाए पापी। विश्वासियों को सन्त - पवित्र लोग - कहा गया है, जो कभी कभार पाप करते हैं। हम उद्धार पाते (धर्मी ठहराए जाते) ही सन्त बन जाते हैं और अपने रोजाना के अनुभव में (पवित्रीकरण) सन्तों की तरह जीवन जीते हैं - जैसे हम विश्वास करते रहते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है और जैसे हम अभिपुष्टि करते रहते हैं जो हम मसीह में वास्तव में हैं। अगर आप अपने को परमेश्वर की सन्तान के रूप में नहीं देख सकोगे, तो आप उस प्रकार जीने में व्यर्थ संघर्ष करते रहोगे, और शैतान को आपको निश्चय दिलाने में जरा भी दिक्कत नहीं होगी कि आप जो मसीह में आने से पहले थे उससे बिलकुल भिन्न नहीं हो और कि परमेश्वर या किसी दूसरे के लिए आपकी कोई कीमत नहीं है। लेकिन पापी से सन्त में अपनी आंतरक पहचान का क्रांतिक रूपान्तर विश्वास द्वारा अपना बना लेने से आपके रोजाना के पाप और शैतान के विरोध पर शक्तिशाली, सकारात्मक प्रभाव होगा।

आप ईश्वरीय स्वभाव में भागीदार हो

इफिसियों 2:1-3 मसीह में आने से पहले हमारे स्वभाव का वर्णन करता है: "... जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है... स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।" मसीही बनने से पहले हमारा स्वभाव पापी था, और हमारे पाप का परिणाम मृत्यु (परमेश्वर से विच्छेद) था। उसी रूप में हम अपनी और शैतान की सेवा करते थे।

लेकिन उद्धार के समय परमेश्वर ने हमारे सत्त्व को ही बदल दिया; और हम "... इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर , जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ" (2 पतरस 1:4)। आप अब शरीर में नहीं हो; आप मसीह में हो। अपने उद्धार से पहले आपका एक पापी स्वभाव था, और अब आप मसीह के ईश्वरीय स्वभाव में भागीदार हो। आप न तो अनन्त और न ही ईश्वरीय हो, लेकिन आप मसीह के ईश्वरत्व से अनन्तकाल के लिए जुड़ गए हो। पौलुस इस प्रकार कहा: "तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान के समान चलो" (इफिसियों 5:8); "इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है" (2 कुरिं. 5:17)। शैतान के दोषारोपन के सामने जो कोई भिन्न नहीं होते, हमें सत्य पर विश्वास करना और उसके साथ समन्वय में रहना चाहिए क्योंकि हम मसीह में अनन्तकाल के लिए भिन्न हैं।

मसीह को अंगीकार करने से पहले जो व्यक्ति आप थे नया नियम उसे आपका पुराना मनुष्यत्व कहता है। उद्धार के समय आपका पुराना मनुष्यत्व, जो परमेश्वर से स्वाधीन जीने के लिए प्रेरित था और इसलिए पाप की विशेषता पाया हुआ था, मर गया (रोमियों 6:6), और आपका नया मनुष्यत्व, मसीह में आपकी नई पहचान से प्रेरित और परमेश्वर पर निर्भरता की विशेषता पाया हुआ, जीवित हो गया (गलातियों 2:20)। आपके पुराने मनुष्यत्व को पाप के साथ आपके सम्बंध को तोड़ने के लिए मरना था जो इस पर अधिकार किए था। नया व्यक्ति बनने का अर्थ यह नहीं कि आप अब निष्पाप हैं (1 यूहन्ना 1:8)। लेकिन क्योंकि आपका पुराना

मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया और गाढ़ा गया है, आपको पाप करने की अब आवश्यकता नहीं है (1 यूहन्ना 2:1)। आप पाप करते हैं जब आप परमेश्वर से स्वाधीन कार्य करने का चुनाव करते हैं।

आप शरीर और पाप पर विजयी हो सकते हो

पाप के लिए आपकी मृत्यु ने पाप के साथ स्वामी के रूप में आपके सम्बंध को समाप्त कर दिया, लेकिन इसने पाप के अस्तित्व को समाप्त नहीं किया। पाप तो अभी भी जीवित, मजबूत, और आकर्षक है, लेकिन इसकी शक्ति और अधिकार टूट चुके हैं (रोमियों 8:2)। इसके अतिरिक्त, आपका शरीर, आपका वो भाग जो आपके मसीह से मिलने से पहले परमेश्वर से स्वाधीन जीने के लिए सिखाया हुआ था, भी मरा नहीं। आपकी अभी भी यादें, आदतें, अनुकूलित प्रतिक्रियाएँ हैं और आपके दिमाग में पक्के हुए सोचने के तरीके हैं जो आपको अपनी ही रुचियों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए उत्तेजित करते हैं। आप अपने पुराने मनुष्यत्व की तरह अब शरीर में नहीं हो; आप अब मसीह में हो। लेकिन आप अभी भी परमेश्वर के बजाय अपनी सेवा के लिए उन पुरानी लालसाओं को पूरा करके, शरीर के अनुसार जीना चुन सकते हो (रोमियों 8:12-13)। शरीर को रोजाना के आधार पर आत्मा के द्वारा चलने के द्वारा (गला. 5:16) और परमेश्वर के वचन से अपने मन को नया करने से अपने पुराने विचारों को पुनःबनाने के द्वारा (रोमियों 12:2) क्रूस पर चढ़ाना आपकी जिम्मेवारी है (रोमियों 8:13)।

हालाँकि आप पाप के लिए मरे हुए हैं, पाप का मजबूत आकर्षण अभी भी आपको इन भावनाओ के साथ संघर्ष करने पर मजबूर करेगा कि आप मसीह की तुलना में पाप के लिए ज्यादा जीवित हो। लेकिन रोमियों 6:1-11 हमें सिखाती है कि जहाँ तक पाप का सम्बंध है जो कुछ प्रभु यीशु के लिए सच है वह हमारे लिए भी सच है। परमेश्वर पिता ने अपने बेटे को "पाप बनने" दिया (यानि पाप के साथ सम्बंध बनाने दिया) ताकि संसार के सारे पाप – भूत, वर्तमान और भविष्य - उस पर आ पड़ें (2 कुरिं. 5:21)। जब वह क्रूस पर मरा तब हमारे पाप उस पर थे। लेकिन जब वह मरे हुओं में से जी उठा, उस पर कोई पाप नहीं था। जब वह पिता के पास ऊपर चढ़ गया, तब उस पर कोई पाप नहीं था। और आज जैसे वह पिता के दाहिने बैठा है, उस पर कोई पाप नहीं है। और क्योंकि हम स्वर्गीय स्थानों में मसीह में बैठे हैं, हम भी पाप के लिए मर चुके हैं।

जब हम बाइबल में कोई प्रतिज्ञा पाते हैं तो हम उस पर दावा करते हैं। जब हम एक आज्ञा सुनते हैं तो हम उसका पालन करते हैं। लेकिन जब हम एक सच्चाई पढ़ते हैं, तो हम उसका विश्वास करते हैं। रोमियों 6:1-11 में दिए गए वचन मानने के लिए आज्ञाएँ नहीं हैं; वे विश्वास करने के लिए सच्चाइयाँ हैं। मसीह पहले ही से पाप के लिए मर चुका है, और क्योंकि आप उस में हैं, आप भी पाप के लिए मर गए हैं। आप पाप के लिए मर नहीं सकते हैं क्योंकि आप पहले ही मर चुके हैं; आप केवल इसका विश्वास कर सकते हैं। मैं कई मसीहियों से मिला हूँ जो अभी भी पाप के लिए मरने की कोशिश कर रहे हैं, और फलस्वरूप उनके जीवन दुखद और फलहीन हैं क्योंकि वे ऐसा कुछ करने का संघर्ष कर रहे हैं जो पहले ही किया जा चुका है।

रोमियों 6:1-11 में भूतकाल के उपयोग पर ध्यान दो: "हम जब पाप के लिए मर गए" (आय. 2); "हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया" (आय. 3); "हम उसके साथ गाड़े गए" (आय. 4); "हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें" (आय. 6); "क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा" (आय. 7); "यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ जीएँगे भी" (आय. 8)। क्योंकि ये आयतें भूतकाल में हैं, जो संकेत देता है जो हमारे बारे में पहले से सत्य है, तो हम केवल उनका विश्वास कर सकते हैं।

आय. 11 उसका सार प्रस्तुत करती है जो हमें मसीह में अपनी स्थिति के कारण पाप से सम्बंधित विश्वास करना है: "ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो।" इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप पाप के लिए मरा हुआ महसूस करते हैं या नहीं; आपको इसे ऐसा ही मानना चाहिए क्योंकि यह ऐसा ही है। लोग गलत सोचते हैं, "यह सच होने के लिए मुझे किस प्रकार का अनुभव होना जरूरी है?" केवल एक ही आवश्यक अनुभव, जो क्रूस पर मसीह है, जो पहले हो चुका है। जब हम अपने और पाप के बारे में जो सच है विश्वास करने का फैसला करते हैं, और उसके अनुसार चलते हैं, तो पाप के साथ हमारा सही सम्बंध हमारे अनुभव में कार्यान्वित हो जाएगा। लेकिन जब तक हम अपने अनुभव को अपने विश्वास से पहले रखते हैं तो जो स्वतन्त्रता मसीह ने क्रूस पर हमारे लिए मोल ली है उसे कभी पूरी तरह समझ नहीं पाएँगे।

उस आधार पर जो रोमियों 6:1-11 हमें विश्वास करने का निर्देश देता है, रोमियों 6:12-13 हमे बताता है कि पाप से सम्बंध कैसे रखना है: "इसलिए पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो; और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंपो।" पाप एक अधिराज मालिक है जो इसके पराधीनों से सेवा की माँग करता है। आप पाप के लिए मरे हुए हैं, लेकिन आपके पास अपने शरीर को पाप के अधिकार में देने के द्वारा इसकी सेवा करने

की अभी भी क्षमता है। यह चुनना आपके हाथ में है कि क्या आप अपना शरीर को पाप या धर्मिकता के लिए इस्तेमाल करने देने वाले हैं। शैतान जो सारे पाप की जड़ है, हर उसका मसीही का लाभ उठाएगा जो अनिश्तिच होता है।

उदाहरण के लिए, मान लेते हैं कि आपका पास्टर आपकी कार को जरूरतमंदों को खाना पहुँचाने के लिए इस्तेमाल करना चाहता है, और एक चोर भी बैंक में डाका डालने के लिए इसे माँगता है। यह आपकी कार है और आप फैसला कर सकते हैं कि आप किसे देना चाहते हैं, भलाई के लिए या बुराई के लिए। आप क्या चुनेंगे इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए!

आपकी देह आपकी अपनी है , परमेश्वर की सेवा करने के लिए या पाप और शैतान की सेवा करने के लिए, लेकिन फैसला आपका है। इसी लिए पौलुस इतने आग्रहपूर्वक लिखता है: "इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हू कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है" (रोमियों 12:1)। पाप पर मसीह की विजय के कारण, पाप का मालिक के रूप में कहना न मानने के लिए आप सम्पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं। यह आपकी जिम्मेवारी है कि आप पाप को अपने नश्वर देह में राज्य न करने दें।

आप पाप की शक्ति से स्वतन्त्र हो सकते हो

आप शायद सोच रहे हों, "अपनी देह में पाप को राज्य नहीं करने देना – विचार तो बहुत अच्छा लगता है, लेकिन आपको पता नहीं पाप के साथ मेरा युद्ध कितना तीव्र है। जो मुझे नहीं करना चाहिए वही मैं करता रहता हूँ और जो मुझे करना चाहिए नहीं करता हूँ। यह एक निरन्तर संघर्ष है।"

हाँ, मैं जानता हूँ कि युद्ध कितना तीव्र है; मैं ने भी इसका सामना किया है। और प्रेरित पौलुस ने भी किया है। उसने रोमियों 7:15-25, कुण्ठा की वैसी ही भावनाओं के कारण लिखा था जिन्हें आप अनुभव कर रहे हैं। इस परिच्छेद में हम पाप की शक्ति से परमेश्वर की स्वतन्त्रता के मार्ग का पता लगाते हैं। जैसे मैं भाई स. के साथ जो अपने जीवन में पाप की शक्ति को जीतने की वास्तव में कोशिश कर रहा है, बातचीत करता हूँ तो मैं आपको आमंत्रित करता हूँ कि आप सुनें:

शिक्षक: भाई स., आओ हम बाइबल के एक परिच्छेद को देखें जो उस अनुभव का वर्णन करता है जिसमें से आप इस समय गुज़र रहे हैं। रोमियों 7:15 में लिखा है, "जो मैं करता हूँ उस को नहीं जानता; क्योंकि जो मैं चाहता हूँ वह नहीं किया करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है वहीं करता हूँ।" क्या तुम कहोगे यह आयत आपकी स्थिति का वर्णन करती है ?

भाई स.: बिलकुल! मैं वहीं करना चाहता हूँ जो परमेश्वर कहता है सही है, लेकिन कभी-कभी मैं उसका उलटा कर देता हूँ।

शिक्षक: तुम सम्भवतः आय. 16 को भी समझ पाएँगे: "यदि जो मैं नहीं चाहता वही करता हूँ, तो मैं मान लेता हूँ कि व्यवस्था भली है।" भाई स., इस आयत में कितने व्यक्तियों या खिलाड़ियों के बारे में बात की गई है ?

भाई स.: एक ही व्यक्ति है, और वह स्पष्ट रूप से "मैं" हूँ।

शिक्षक: बड़ी निराशा की बात होती है जब हमें पता होता है हमें क्या करना है, लेकिन किसी कारणवश नहीं कर पाते हैं। आपने इसे अपने मन में कैसे हल करने की कोशिश की है ?

भाई स.: कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या मैं मसीही हूँ। ऐसा लगता है यह दूसरों के लिए काम करता है लेकिन मेरे लिए तो नहीं। अक्सर मैं सोचता हूँ कि क्या मसीही जीवन मुमकिन है या क्या परमेश्वर वास्तव में है।

शिक्षक: अगर इस दृश्य में तुम और परमेश्वर ही खिलाड़ी होते तो कह सकते थे कि तुम अपनी दशा के लिए या तो परमेश्वर को या खुद को दोष देते। लेकिन अब आय. 17 को देखो, "तो ऐसी दशा में उसका करनेवाला मैं नहीं, वरन् पाप है जो मुझ में बसा हुआ है।" भाई स., अब बताओ कितने खिलाड़ी हैं ?

भाई स.: स्पष्ट है, दो हैं, लेकिन मुझे समझ नहीं आया।

शिक्षक: आओ हम आय. 18 पढ़ें और देखें कि क्या कुछ समझ आता है: "क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझ में अथात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती। इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते।"

भाई स.: मैं ने यह वचन बहुत पहले ही सीख लिया था। यह मान लेना काफी आसान था कि मैं किसी काम का नहीं हूँ।

शिक्षक: भाई स., यह ऐसा तो नहीं कहता है। वास्तव में, यह तो उलटा कहता है। जो कुछ भी तुम्हारे अन्दर है वह तुम नहीं हो। अगर मेरी अँगुली में लकड़ी की छिपटी घुस जाती है तो मैं कहता मेरी अँगुली में "कुछ भी अच्छा नहीं" घुस गया है। लेकिन यह "कुछ भी अच्छा नहीं" मैं नहीं हूँ, यह तो छिपटी है। यह भी जानना जरूरी है कि यह "कुछ भी अच्छा नहीं" मेरा शरीर नहीं है, लेकिन यह मेरे शरीर के अन्दर है। अगर इस संघर्ष में हम केवल खुद को देखते हैं तो धर्मी जीवन जीना बड़ा आशाहीन हो जाता है. ये परिच्छेद हमें बड़े विस्तार से बता रहे हैं कि हमारे पाप के साथ संघर्ष में एक तीसरा पक्ष भी शामिल है जिसका स्वभाव हमसे भिन्न है।

क्या तुम समझे, भाई स., जब तुम और मैं पैदा हुए थे तो हम पाप की सजा के अन्तर्गत पैदा हुए थे। और हम जानते हैं कि शैतान और उसके प्रतिनिधि हमें उस सजा में रखने के लिए हमेशा काम करते रहते हैं। जब परमेश्वर ने हमारा उद्धार किया, तो शैतान

युद्ध हार गया, लेकिन उसने न तो अपनी दुम दबा ली या न ही दाँत अन्दर कर लिए। वह हमें अब पाप की शक्ति के अधीन रखने के लिए तुला हुआ है। हम यह भी जानते हैं कि वह शरीर के द्वारा काम करने वाला है, जो उद्धार के बाद रह गया है।

आओ हम आगे पढ़ते रहें यह सीखने के लिए कि यह युद्ध किस प्रकार किया जा रहा है: "क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूँ, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता हूँ। अतः मैं वही करता हूँ जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करनेवाला मैं नहीं रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है। इस प्रकार मैं यह व्यवस्था पाता हूँ कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूँ, तो बुराई मेरे पास आती है।" (आय. 19-21)।

भाई स., क्या तुम इन परिच्छेदों से जो "कुछ भी अच्छा नहीं" तुम्हारे अन्दर वास करता है की प्रकृति बता सकते हो ?

भाई स.: बिलकुल, यह स्पष्ट रूप से बुरा और पाप है। लेकिन क्या यह मेरा ही पाप नहीं है ? जब मैं पाप करता हूँ तो कितना दोषी महसूस करता हूँ।

शिक्षकः इसमें कोई संदेह नहीं कि तुम और मैं पाप करते हैं, लेकिन हम "पाप" नहीं हैं। बुराई हमारे अन्दर उपस्थित है, लेकिन हम स्वभावतः बुरे नहीं हैं। लेकिन यह हमें पाप करने से निरपराध सिद्ध नहीं करता है, क्योंकि पौलुस ने पहले लिखा था कि अपने नश्वर शरीरों में पाप को राज्य न करने देना हमारी जिम्मेदारी है (रोमियों 6:12)। क्या तुम कभी इतने हारे हुए महसूस करते हो कि तुम किसी को या खुद को मारना चाहते हो ?

भाई स.: लगभग हर दिन !

शिक्षकः लेकिन जब तुम ठण्डे हो जाते हो, तो क्या तुम दोबारा उन विचारों को सोचते हो जो एक मसीही के रूप में आपकी पहचान के अनुसार हैं ?

भाई स.: हमेशा, और तब मैं अपने फूट पड़ने पर बहुत बुरा महसूस करता हूँ।

शिक्षकः आय. 22 इस चक्र को समझाती है। "क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ।" जब हम जो हम वास्तव में हैं अपने उस चरित्र से बाहर कार्य करते हैं, तो पवित्र आत्मा हमारे परमेश्वर के साथ संयोग के कारण तुरन्त दोषसिद्धि लाता है, और हम अक्सर इसके लिए खुद को जिम्मेदार ठहराते हैं। लेकिन तुरन्त ही हमारा सच्चा स्वभाव दोबारा व्यक्त होता है और हम परमेश्वर की ओर चले आते हैं। यह एक कुण्ठित पत्नी की तरह है जो घोषित करती है कि वह अब अपने पति के साथ नहीं रह सकती है। वह उसे छोड़ना चाहती है और उसे अपने पति की कोई चिन्ता नहीं है। लेकिन जब वह अपने दर्द को स्वीकारती और भावनाओं को व्यक्त कर लेती है, वह नरम हो जाती है और कहती है, "मैं तो उसे प्यार करती हूँ, और मुझे तलाक नहीं चाहिए। लेकिन मुझे कोई और रास्ता नज़र नहीं आता है।" यह भीतरी, असली व्यक्ति है, जो व्यक्त हो रहा है।

आय. 23 पाप के साथ इस युद्ध की प्रकृति को वर्णन करती है: "परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है।" भाई स., इस परिच्छेद के अनुसार युद्ध कहाँ चल रहा है।

भाई स.: युद्ध मन में चलता नज़र आता है।

शिक्षकः युद्ध ठीक-ठीक यहीं पर चलता है। अब अगर शैतान तुम्हें सोचने पर मजबूर कर दे कि तुम ही अकेले युद्ध में हो तो जब तुम पाप करोगे तो तुम या तो खुद को या परमेश्वर को दोषी ठहराओगे। आओ मैं इसे इस प्रकार व्यक्त करूँ। अगर एक कुत्ता आकर तुम्हें टाँग पर काट ले, तो क्या तुम खुद को मारोगे या कुत्ते को ?

भाई स.: कुत्ते को। लेकिन पाप के साथ मेरे संघर्ष में, किसी ने मुझे कभी नहीं बताया कि यह "कुत्ता" है – पाप - जो तकलीफ दे रहा है।

शिक्षकः बिलकुल! तो तुम खुद को पीटते हो। लेकिन मैं देखता हूँ कि लोग खुद को पीटते पीटते थक जाते हैं, और हार और दण्ड के बादल के अधीन परमेश्वर से दूर हो जाते हैं। पौलुस इन भावनाओं को आय. 24 में व्यक्त करता है: "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा ?" वह यह नहीं कह रहा है "मैं कैसा बुरा मनुष्य हूँ!" वह कह रहा है "मैं कैसा अभागा मनुष्य हू!" वह हारा हुआ है क्योंकि वह स्वतन्त्र नहीं है। सही चीज करने की उसकी कोशिशें के हाथ हार ही लगती है। वह सोचता है, "क्या जीत हाथ लगेगी ?"

आय. 25 उत्तर देती है, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो। इसलिए मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूँ।"

भाई स.: मुझे लगता है मुझे समझ आ रहा है। मैं मसीही जीवन जीने की अपनी अक्षमता का दोष खुद को दे रहा था। मैं पौलुस को अपनी असफलता के बारे में कुण्ठित होते हुए देख सकता हूँ, लेकिन वह खुद को दोष नहीं देता है। वह अपनी जिम्मेवारी स्वीकार करता है, लेकिन वह खुद को दोष नहीं देता है। सबसे जरूरी, वह परमेश्वर की ओर फिर कर विश्वास व्यक्त करता है क्योंकि प्रभु यीशु मसीह उसे पाप से ऊपर जीने की योग्यता देगा।

शिक्षक: तुम सही दिशा में जा रहे हो। खुद को दोष देने से कोई फ़ायदा नहीं क्योंकि अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं चलते (रोमियों 8:1)। तुम्हें अपने मन के लिए हो रहे युद्ध की प्रकृति को समझना चाहिए। तब आपको पता लगाना है कि तुम अपने शरीर में पाप को राज्य करने देने के द्वारा अपने जीवन में युद्ध कहाँ हार रहे हो। जब तुम इसका पता लगा लेते हो और इससे निपटते हो, तब तुम मसीह में स्वतन्त्रता पा सकते हो।

आप अपने मन के युद्ध को जीत सकते हो

रोमियों 7:23 और 8:5-7 दिखाता है कि सारे आत्मिक बन्धन का केन्द्र मन है। अगर तुम्हें मसीह में स्वतन्त्रता को, जो तुम्हारी मिरास है, अनुभव करना है तो यही वो जगह है जहाँ पर युद्ध लड़ा और जीता जाना चाहिए। पौलुस लिखता है: "क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। इसलिए हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहचान में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।" (2 कुरिन्थियों 10:3-5)।

बुरी आदतों और पापी विचारों के कुछ गढ़ उस समय स्थापित हुए थे जब हमने परमेश्वर से स्वाधीन अपना जीवन जीना सीखा था। तुम्हारे गैर-मसीही वातावरण ने तुम्हें एक गैर-मसीही तरीके से जीवन के बारे में सोचने और की ओर प्रतिक्रिया दिखाना सिखाया था, और वे बनावटें और प्रतिक्रियाएँ आपके मन में गढ़ों के रूप में पक्की हो गई थीं। लेकिन जब आप एक मसीही बने तब किसी ने भी आपके मन में "मिटाओ" बटन नहीं दबाया। आपके पुराने शरीर की आदतें और बनावटें मिटी नहीं थीं: वे अभी भी आपके शरीर का एक भाग हैं जिनसे रोजाना के आधार पर निपटना जरूरी है। फिर भी धन्यवाद की बात यह है कि आप अपने भूत की ही उपज नहीं हैं; आप मसीह में एक नई सृष्टि हैं (2 कुरिन्थियों 5:17), और अब आप मुख्य रूप से क्रूस पर मसीह के कार्य की उपज हैं। पुराने गढ़ ढाए जा सकते हैं!

केवल इसलिए कि आप अब एक मसीही हैं, ऐसा मत सोचो कि शैतान अब आपको आपके मन के द्वारा उसके उद्देश्यों के लिए चालाकी से प्रभावित करने में दिलचस्पी नहीं रखता है। शैतान का चिरस्थाई लक्ष्य अपने विचारो को आपके विचारों में फैला देना है और परमेश्वर के सत्य के सामने अपने झूठ को बढ़ावा देना है। वह जानता है कि अगर वह आपके विचारों को नियंत्रित कर सकता है तो वह आपके व्यवहार को नियंत्रित कर सकता है। लेकिन शैतान चतुर है। वह चीनी के बर्तनों की दुकान में एक बैल की तरह गड़गड़ाते हुए नहीं घुसता है; वह घास में साँप की तरह चुपके से आ जाता है (2 कुरिं. 11:3)। वह आपको परमेश्वर से स्वाधीन कुछ करने को उकसाने के लिए अपने विचार डाल देता है, जैसे कि वे आपके अपने विचार हैं या परमेश्वर के ही विचार हैं। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि शैतान आपके मन में अपने विचार डाल सकता है जैसे उसने दाऊद (1 इतिहास 21:1), यहूदा (यूहन्ना 13:2), और हनन्याह (प्रेरितों 5:3) के साथ किया था।

अगर आप शैतान की परिक्षा को अपने मन की दहलीज पर ही नहीं जीतते हो तो आप उसके विचार को एक विकल्प के रूप में मानते हुए उस पर चिन्तन करने लगोगे, और आखिरकार इसके अनुसार करने का फैसला करोगे। बार-बार किए गए कार्यों से एक आदत बनती है, और अगर आप एक पापी आदत को काफी समय तक करते रहोगे, तो आपके मन में एक गढ़ बन जाएगा। एक बार जब एक गढ़ बन जाता है तो उस क्षेत्र में अपने व्यवहार को नियंत्रण करने की योग्यता आप को बैठते हैं।

गढ़ कैसे नष्ट किए जाते हैं ? नकारात्मक सोच-विचार और व्यवहार के नमूने सीखे जाते हैं, और वे अनुशासित बाइबल अध्ययन और सलाह के द्वारा भुलाए भी जा सकते हैं। कुछ गढ़ शैतानी प्रभावों और भूत के आत्मिक संघर्षों और वर्तमान मानसिक हमलों में फँसे होते हैं जो अपने शिकारों को बन्धन में बंद कर देते हैं। इन लोगों को परमेश्वर के सत्य के द्वारा शैतान की झूठ की बेड़ियों से स्वतन्त्र करने की जरूरत होती है। यीशु ने कहा: "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (यूहन्ना 8:31-32)।

मैं आशा करता हूँ कि इस सच्चाई को महसूस कर रहे हैं कि जो मसीह में हैं उनके लिए जीत वास्तव में उपलब्ध है। एक युद्ध चल रहा है, लेकिन हम जीतनेवाले पक्ष में हैं क्योंकि हम मसीह में जयवन्त से भी बढ़कर हैं!

एक अच्छा रवैया विकसित करना

श्रीमान् क ने श्रीमान् ख को मोटर बाइक पर जाते देखा। दोनों एक ही आफिस में एक ही श्रेणी में काम करते थे। श्रीमान् क को दूसरे की समृद्धि से ठेस लगी। वह श्रीमान् ख से दूर होने लगा। अगर उसने बाइक को केवल छुआ होता और प्रशंशा का एक शब्द कहा होता, तो वे आज भी अच्छे मित्र होते।

श्रीमति च के प्रिय पुत्र ने श्रीमति छ का प्रिय गुलाब तोड़ा। श्रीमति च ने न जानते हुए कि वह क्या करे अपनी स्थिति का बचाव किया। श्रीमति छ साही की तरह क्रुद्ध हो गई। श्रीमति च को पता नहीं था कि क्षमायाचना के एक शब्द से घाव भर सकता था या क्या उसके धमण्ड ने उसे रोके रखा था?

श्रीमित त श्रीमति थ की रसोई में झांकती थी और अदरक के एक टुकड़े की माँग करती थी। थोड़ी ही देर में वह कुछ हरी मिर्चियों के लिए आ जाती थी। श्रीमति त एक बड़ी मुस्कुराहट के साथ जो कुछ भी माँगा जाता था बिना थके दे देती थी। लेकिन अपने दिल में वह अपने पड़ोसी से उब गई थी और विपत्ति की तरह उससे दूर रहने की कोशिश करने लगी थी। ऐसी छोटी-छोटी घटनाएँ इतनी हैं कि बताया नहीं जा सकता। अच्छे सम्बंधों के लिए नीचे दस इमारती पत्थर दिए गए हैं।

1. **निस्संकोच नमस्कार करो** !

अच्छे पड़ोसी भी एक दूसरे को नमस्कार नहीं करते हैं। एक निस्संकोच मुस्कान सबसे अच्छा नमस्कार है, चाहे यह मित्र हों या अजनबी जिन्हें आप जानना चाहते हैं। मुस्कान को अपने मुँह में बंद मत रखो। स्वेच्छा से मुस्कराओ। "हैलो" या "कैसे हो" कहो और पूछ-ताछ के कुछ शब्द भी कह दो। परिवार में भी, सदस्यों को जोड़ने के लिए अभिवादन करना बहुत जरूरी है। एक मनोहर चेहरे के साथ और बिना 'गुड मार्निग' कहे चाय के कॅप की माँग मत करो।

अगर कोई आपको देखे बिना चला जा रहा है, तो "जान छूटी" मत फुसफुसाओ। ध्यान खींचने के लिए ताली बजाओ और हाथ हिलाओ। नए पड़ोसियों के पास मुस्कराते हुए जाओ और पूछ-ताछ करो और उनके चेहरे की संदेहजनक झुर्रियाँ मिट जाएँगी और उनके बंद हृदय खुल जाएंगे। नमस्कार कैसे करना है मरियम से सीखो। सुननेवाला पवित्र आत्मा से भर जाना और उसके अन्दर का जीवन उछलना चाहिए। कितनी सच्चा, पवित्र और हार्दिक नमस्कार (लूका 1:41)।

2. **उदारता से धन्यवाद करो** !

"अन्तिम दिनों में..मनुष्य..कृतध्न..होंगे" (2 तीमु. 3:1-2)। आप कहेंगे कि आप अपने दिल में कृतज्ञ थे। लेकिन लोग आपकी भावनाओं को देख नहीं सकते हैं। अपनी कृतज्ञता खुलेआम व्यक्त करो। स्पष्ट करो कि किस प्रकार उनकी सहायता से आपको मदद मिली थी। "आह, जो खाना आपने भेजा था वास्तव में आशीष था ! मैं ने सारी दोपहर आराम किया और मेरी पीठ का दर्द चला गया !" या "यदि आप न होते तो मैं आज इस स्थिति में नहीं होता।" छोटी छोटी सहायताओं के लिए भी धन्यवाद दो। और बड़ी बड़ी सहायताओं के लिए, जो सहायता आपके उपकारक ने दी थी उन्हें याद दिलाओ, ताकि उन्हें पता चले कि आप अभी भी इसे कृतज्ञता के साथ याद करते हो। सहायता के लिए प्रार्थना करने का अर्थ यह नहीं कि आपको धन्यवाद देने की आवश्यकता नहीं है। जब टैक्सी से उतरते हो तब धन्यवाद करो। दुकानदार का धन्यवाद करो जब वह आपकी खारीदारी आपको देता है। अगर यीशु ने 10 % कृतज्ञता पर निराशा प्रकट की थी तो हम में से कोई भी उससे ज्यादा दिव्य तो नहीं है ! (लूका 17:16-17)।

3. **स्वेच्छा से खेद प्रकट करो** !

खेद प्रकट करने में पहला कदम अपनी गलती मान लेना है। दुर्घटना तो हर एक का भाग है। धमण्ड या डर को आपना रास्ता रोकने मत दो। अपनी गलती के लिए जिम्मेवारी लेने से हिचको मत। परिणाम का सामना करने और नाराज व्यक्ति से मिलने के लिए कमर कस लो। खेद प्रकट करते हुए बातचीत शुरू करो। नाराज व्यक्ति को पता लगने दो कि आपको इसके बारे में कितना दुख है। अगर वह उग्र प्रतिक्रिया भी दिखाता है तो उसे शान्त करने की भरपूर कोशिश करो। हुई हानि को भरने की कोशिश करो। यह आपका अपना बच्चा, आपका अधीनस्थ कर्मचारी, आपका बॉस या एक अजनबी हो सकता है जिसे आपने नाराज किया हो। कभी भी हिचको मत। अगर आपके पास खुद को छुपाने का हर अवसर क्यों न हो, फिर भी स्वीकार करने और क्षमायाचना करने के लिए बाहर निकल आओ। तब, न केवल दूसरे लेकिन आप खुद भी अपना सम्मान कर पाओगे। याकूब ने एसाव को धोखा दिया था। लेकिन जिस प्रकार उसने खेद प्रकट किया, वाह, कठोर से कठोर हृदय भी पिघल जाएगा (उत्पत्ति अध्याय 32, 33)। उस व्यक्ति को देखो जिसने अपने भाई का कत्ल करने की प्रतिज्ञा की थी, क्या किया। "तब एसाव उससे भेंट करने को दौड़ा, और उसको हृदय से लगाकर, गले से लिपटाकर चूमा; फिर वे दोनों रो पड़े।" याकूब अपने धोखे के लिए रोया और एसाव अपने प्रतिशोधी रवैये के

लिए। यह सच्चा पश्चाताप और खेद प्रकट करना है। एक बार हमने एक दम्पती पर एक बड़ी रकम चुराने का दोष लगाया। एक सप्ताह बाद यह स्पष्ट हो गया कि वे अपराधी नहीं थे। हमने सोचा कि चुप रहें या क्षमायाचना का एक शब्द भज दें। लेकिन हमने दीनता के दुखद अनुशासन में से गुज़रने का फैसला किया। जैसे ही हमने खेद प्रकट करना शुरू किया उनके चेहरे पर से आँसू की बड़ी बड़ी बूँदें गिरने लगीं। हमने उनके दर्द को महसूस किया। बड़े सुन्दर तरीके से संगति पुनःस्थापित हो गई।

4. उपयुक्त ढंग से प्रशंसा करो !

तुम्हें चापलूसी करने की जरूरत नहीं है। दूसरे व्यक्ति की उसके रूप-रंग, कपड़ों, प्रदर्शन, गुण, वरदानों, सम्पत्ति, सहायता, वगैरा की सच्चाई से प्रशंसा करो। इससे उसे क्या पता चलेगा? प्रशंसा के कुछ शब्दों के द्वारा तुम उसे बता रहे हो कि तुम उससे बिलकुल ईर्ष्यालु नहीं हो और तुम उसका कल्याण चाहते हो। पौलुस ने एक अच्छे सहयोगी को खो दिया क्योंकि उसने यूहन्ना मरकुस का नकारात्मक पहलू ही देखा। लेकिन उसके बारे में कुछ सकारात्मक देखने के लिए एक बरनाबस की जरूरत थी। जब पौलुस सयाना हुआ और प्रशंसा करना सीख गया तब वह मरकुस की सिफारिश करता है (1 तीमु. 4:11)। लेकिन एक भावी सेवक को बचाने का श्रेय बरनाबस को ही जाता है। प्रशंसा बच्चों और पति/पत्नी के लिए टॉनिक है। हर दिन खाना खाने से पहले तीन बार दो। बाइबल को लगता है कि एक व्यक्ति की उपयुक्त रूप से प्रशंसा होनी चाहिए (नीतिवचन 12:8)। मन की वृद्धि लेने से होती है, लेकिन हृदय की वृद्धि देने से होती है।

5. आदतन् सहायता करो !

इसके विचार से ही हमें अपना पर्स हल्का होता हुआ नज़र आता है। फिर भी सहायता हमेशा रुपये-पैसे से ही नहीं होनी चाहिए। अगर आप सहायता करने के बारे में और ज्यादा जानना चाहते हैं तो अय्यूब से पूछो और वह आपको सिखाएगा (अय्यूब 31)। अगर आप एक टूटे हुए सम्बंध को जोड़ने में संघर्ष कर रहे हो, तो सहज ही मदद के लिए हाथ बढ़ाओ। या एक खास अभिवादन कार्य भेजो। कुछ समय तक तो आपका शत्रु मित्र आपके अभिप्राय को गलत समझने वाला है। वह शायद इसे स्वीकार ही न करे। लेकिन यह आपको हताश न करने पाए। एक मददगार आत्मा का एक धूर्त शत्रु है बदले में सहायता की उम्मीद करना। ऐसा कभी मत करो। लोगों को जो वे आपके रवैये से बिना संकेत सीखते हैं उससे आपकी मदद करने दो। लोगों की मदद करना गारंटी तो नहीं देगा कि वे सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाएँगे। आप दस में से एक पर भरोसा कर सकते हो, और वह एक बाकियों की कमी पूरी कर देगा। आपको शायद कुछ अकृतज्ञ टिप्पणियों का भी सामना करना पड़ सकता है। इससे आपकी आत्मा निरुत्साह न हो जाए। वर्षों से एक वचन ने भलाई करते रहने में मेरी बहुत मदद की है। "यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर" (भजन 37:3)। अगर आप मदद पानेवाले पर भरोसा करते हो तो आपकी मददगार आत्मा जल्दी ही टिमटिमाएगी और बुझ जाएगी।

6. बिना शर्त स्वीकार करो !

मनोवैज्ञानी चार मूल स्वभाव के बारे में बताते हैं। आओ हम इसकी चिन्ता न करें। इतना जानना काफी है कि हर व्यक्ति शरीर से, मन से, आत्मा से और भाव से या स्वभाव से भिन्न है। दूसरे व्यक्ति के साथ समन्वय करना बहुत कठिन है जब तक आप उसके स्वभाव के लिए एक उदार छूट न दें। जहाँ तक सम्बंधों का प्रश्न है अपनी शब्दावली में से "अगर" शब्द निकाल दो। "अगर वह इतना संवेदनशील न होता", "अगर वह इतना मूर्ख न होता", "अगर वह इतना बातूनी न होता", "अगर...अगर...अगर।" इस सूची का कोई अन्त नहीं है। लेकिन 'अगर' को खुद पर लगाओ और कहो, "अगर मैं इतना संवेदनशील न होता ...अगर...अगर... अगर।" अब ठीक है, एक ऐसा व्यक्ति जिसके साथ जीना आसान है। आओ "जो-कोई-मेरे-पास-आएगा-उसे -मैं-कभी-न-निकालूँगा" भी हमारी आत्मा हो! छोटों को एक भारी छूट दो। जब आप उसकी उम्र के थे तो आपने भी कुछ वैसे ही किया होता।

7. एकाग्रता से सुनो !

जब कोई आप से बात कर रहा होता है तब उस समय आपके विचार कितनी बार कहीं और चले जाते हैं? जिसके कान हों वह सुन ले ! संसार को सुननेवालों की जरूरत है। माँ-बाप जो विलाप करते हैं, "हमारा बच्चा हमारी कभी नहीं सुनता है", सुनने की कोशिश करो ! सुनना क्या है? यह उस व्यक्ति को जो हमसे बात कर रहा है अविभाजित ध्यान देना है। क्या आप ऐसा करते हो? या क्या आप हाथ में अखबार लिए या आँखें टीवी पर लगाए हुए या पैर चले जाते हुए सुनते हो? आँखों को व्यक्ति पर केन्द्रित किए हुए सुनो और आपके चेहरे की मुद्रा या शब्दों से पता चले कि जो कहा गया था आपने समझ लिया है। सुनना पीड़ितों की आधी से ज्यादा पीड़ा कम कर देता है। यह प्रफुल्ल बातें करनेवाले को उत्साह देता है और एक दुर्बल, डरपोक व्यक्ति को प्रोत्साहन देता है।

8. **बिरले ही उधार लो** !

बाइबल कहती है, "उधान लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है" (नीतिवचन 22:7)। गहरे मित्र भी एक छोटे से लेन-देन के कारण मालिक और सेवक बन सकते हैं। अगर बिना उधार लिए आप अपना काम किसी प्रकार चला सकते हो तो चलाओ। कोशिश करो कि कभी उधार न लो, और खासकर रुपये-पैसे का कभी नहीं! देनेवाला हो सकता है खुशी से, स्वेच्छा से, मदद करने के लिए दे, लेकिन वह अनजाने में अपने दिल में एक डर या दुर्भाव बनाए रखेगा। अगर किसी कारणवश कोई चीज उधार ली जाती है जैसे कि एक पुस्तक, हथौड़ी, बर्तन, कैसेट, वगैरा तो निश्चय करके ज्यादा से ज्यादा एक या दो हफ्ते के अन्दर लौटा दो। दूसरी जरूरतों के लिए, यह जानते हुए कि प्रभु पूरी करेगा क्योंकि वह यहोवा-जायरा है, विश्वास से जीवन जीना सीखो! "आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो" (रोमियों 13:8)।

9. **आलोचना कम करो** !

आलोचना, चाहे यह प्रेम के कम्बल में ही क्यों न लिपटी हो, डँसती है। इस संसार में लोग वैसे ही काफी चोट खाए होते हैं। उन्हें छोड़ दो। किसी भी कीमत पर आलोचना करने से दूर रहो। अगर कुछ कहना ही है तो कोई दूसरे तरीके से कहा जाए ताकि अनिवार्य पीड़ा को कम करने के लिए यह प्रेम से शुरू हो और क्षमायाचना से समाप्त हो। उस व्यभिचारिणी के बारे में सोचो जिसे न्याय के लिए यीशु के पास लाया गया था। जो वर्षों की सार्वजनिक आलोचना नहीं कर पाई, क्षमा ने कर दिया। एक उपयोगी सहायक यह होगा कि आप रुकें और सोचें कि अगर आप खुद एक आलोचना की स्थिति में होते तो आप किस प्रकार चाहते कि आपसे निपटा जाता। "तू भी ऐसा ही कर।" हम एक स्त्री के बारे में चुगली कर रहे थे जो हमेशा ऊँची आवाज में बातें करती थी। एक वर्ष के बाद हमें पता चला कि उसके पति को कम सुनाई देता था। अफसोस, हमें अपने आलोचक रवैये पर कितना दुख हुआ। अफवाहों को सुनकर कभी भी आलोचना मत करो। एक सम्बंध को कभी भी खराब मत होने दो क्योंकि किसी ने उसके बारे में कुछ कहा था। जाओ, उसके पास बैठो और खुले दिल से बात करो, हालाँकि मध्यस्थ ने आपको कहा था कि इस बारे में उससे बात न करना। आप ज्यादातर पाओगे कि जो बात आपको पता चली थी झूठ थी या प्रेम बिना कही गई आधी सच्चाई थी। सम्बंधित व्यक्ति के साथ सुलझा लो और अच्छे और मित्रभाव से हाथ मिलाकर विदा लो।

परमेश्वर के समान प्रेम करो। यीशु के समान प्रेम करो। प्रेम से परे न कोई परिस्थिति है और न कोई व्यक्ति। प्रेम में पक्के हो जाओ और बढ़ते जाओ, तब सम्बंध बनाना कोई समस्या नहीं होगा।

10. **परमेश्वर के समान प्रेम करो** !

परमेश्वर के समान प्रेम करो। यीशु के समान प्रेम करो। प्रेम से परे न कोई परिस्थिति है और न कोई व्यक्ति। प्रेम में पक्के हो जाओ और बढ़ते जाओ, तब सम्बंध बनाना कोई समस्या नहीं होगा। क्या आपके जीवन में कुछ प्रेम न कर सकने योग्य लोग हैं ? उन्हें परमेश्वर की नज़रों से देखो और आपके हृदय में प्रेम उमड़ने लगेगा, क्योंकि "पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है" रोमियों 5:5)। चिड़ दिलानेवाले पड़ोसी के बच्चे, तकलीफ देनेवाले पड़ोसी, प्रतिद्वन्द्वी सहकर्मी, और ऐसे और भी लोगों से प्रेम करो। यह स्तिफनुस के पुराने सहयोगी और मित्र थे जिन्होंने विचारों के कुछ मतभेद के कारण उस पर पत्थरवाह किया। फिर भी उस ने उन पर जो उस पर दाँस पीस रहे थे दाँत नहीं पीसे बल्कि अपने सारे हृदय से परमेश्वर को बताया कि वे ऐसा अनजाने में कर रहे हैं और उनकी क्षमा के लिए याचना की। यह ईश्वर जैसा प्रेम है।

परमेश्वर के प्रेम का अर्थ है बलिदान। परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने दिया (या त्याग दिया)! देखो कि अब्राहम किस हद तक एकता बनाए रखने के लिए जाता है। "मेरे और तेरे बीच, और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न होने पाए; क्योंकि हम लोग भाई-बन्धु हैं। यदि तू बाई ओर जाए तो मैं दाहिनी ओर जाऊँगा; और यदि तू दाहिनी ओर जाए, तो मैं बाई ओर जाऊँगा" (उत्पत्ति 13:9)। खुद को जो अधिकारपूर्ण आपका है दे देने के लिए अनुशासित करो और अब्राहम की तरह आशीषों का आनन्द लो। "सब से मेल मिलाप रखो" (इब्रा. 12:14)।

==

यह पुस्तक कुल 16 पुस्तकों के सेट की संख्या: 3 है,

जिसका Ministry and Leadership Training Course में साथ-साथ अध्ययन करना, जो "केवल-एक-बार" – M.L.T.C. Ministries की परियोजना है। (केवल व्यक्तिगत वितरण के लिए !! – बिकाऊ नहीं !! – "केवल-एक-बार" परियोजना का एक भाग)

दँ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी, पी. ओ. बॉक्स 19106, वरली, मुम्बई - 400 030

+ या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**